Azim Premji Foundation

प्राथमिक कक्षाओं में हिन्दी भाषा शिक्षण

Azim Premji Foundation

Website: www.azimpremjifoundation.org
www.azimpremjiuniversity.edu.in

Illustrations by Lohitha Kurmala

Printed at: SCPL, 2nd Flr | 2/1 JC Indl Area
Kanakapura Road, Bengaluru - 560 062, India

CC BY NC ND

© 2023 Azim Premji Foundation

This publication may be reproduced by any method without fee for teaching or non-profit purposes. The publication shall not be used for commercial purposes. Rights are reserved under Creative Common Licence. Any derivative works shall also be protected under the same licence. Rights are reserved under Creative Common Licence: Attribution + Non- Commercial + Share Alike. For copying in any other circumstances, or for reuse in other publications, or for translation or adaptation, prior written permission must be obtained from the publisher.

प्राथमिक कक्षाओं में हिन्दी भाषा शिक्षण

Contents

प्रस्तावना	viii
अध्याय 1: प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण	1
1.1 प्राथमिक भाषा शिक्षण	1
1.1.1 आरम्भिक भाषा शिक्षण	2
1.1.2 पढ़ने-लिखने का विस्तार	3
1.2 ज़मीनी वास्तविकताएँ और चुनौतियाँ	4
1.2.1 बच्चों की पृष्ठभूमि और उनके समक्ष आने वाली चुनौतियाँ	4
1.2.2 सामान्यतः प्रचलित भाषा शिक्षण सम्बन्धी मान्यताएँ, शिक्षण प्रक्रियाएँ और इनसे जुड़ी चुनौतियाँ	6
1.2.3 भाषा सम्बन्धी शिक्षण प्रशिक्षणों से आशानुरूप सफलता न मिल पाना	10
1.3 बच्चों की भाषा सीखने की प्रक्रिया और शिक्षक से अपेक्षाएँ	13
1.3.1 पहली भाषा सीखने की प्रक्रिया	13
1.3.2 दूसरी भाषा सीखने की प्रक्रिया	16
1.4 भाषा शिक्षक से अपेक्षाएँ	19
1.4.1 दूसरी भाषा सीखने की प्रक्रिया	19
1.4.2 बच्चे की पूर्व समझ का उपयोग	22
1.4.3 बातचीत	22
1.4.4 पाठ्यपुस्तक का उपयोग	22
1.4.5 प्रिंट रिच माहौल और पुस्तकालय उपलब्ध कराना	23
1.4.6 लोक साहित्य का उपयोग	24
1.5 शिक्षकों के साथ कार्य की रूपरेखा	26
1.5.1 शिक्षक क्षमता संवर्द्धन हेतु कुछ सामान्य सैद्धांतिक बिंदु	26
1.5.2 भाषा के शिक्षक की क्षमता संवर्द्धन हेतु कुछ सैद्धांतिक बिन्दु	26

1.6 भाषा शिक्षण सम्बन्धी बुनियादी समझ 35

1.6.1 भाषा, परिवेश और सीखना 35

1.6.2 भाषा के कौशल 35

मौखिक भाषा विकास 35

मौखिक भाषा और लिखित भाषा का सम्बन्ध 37

पढ़ना माने क्या? 38

फिर पढ़ना किसे कहेंगे? 39

पढ़ना सीखने की प्रक्रिया 40

लिखना माने क्या? 42

लिखना- तब और अब 43

बच्चे कैसे सीखते हैं लिखना 43

बच्चों में लेखन का विकासक्रम और स्कूली प्रक्रियाएँ 44

प्राथमिक स्तर पर क्या है लिखना 47

अच्छा लेखन किसे कहेंगे 47

क्या करें 49

1.6.3 भाषा कौशल– समन्वित शिक्षण की ज़रूरत 51

अध्याय 2- प्राथमिक भाषा शिक्षण : कक्षागत प्रक्रियाएँ 53

2.1 भाषा शिक्षण के आयाम और सीखने के प्रतिफल 53

2.2 प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण के उद्देश्य और इनसे सम्बन्धित सीखने के प्रतिफल 56

2.2.1 प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण से संबन्धित कक्षा प्रक्रियाएँ 59

2.3 आरंभिक कक्षा में भाषा शिक्षण- चुनौतियाँ एवं प्रक्रियाएँ 61

2.3.1 प्रचलित प्रणाली से प्रस्तावित प्रणाली की ओर 87

2.4 कक्षा में बातचीत और आरंभिक गतिविधियों द्वारा पढ़ना-लिखना सीखना 95

2.4.1 चुनौतियाँ / मान्यताएँ 100

2.4.2 कक्षा में बातचीत– मुद्दे और प्रक्रियाएँ 101

2.4.3 सहायक गतिविधियाँ 112

2.4.4 आरंभिक गतिविधियाँ, बातचीत और पढ़ना-लिखना 117

2.5 चित्रों का महत्त्व और इनके द्वारा पढ़ना-लिखना सीखना 125

2.5.1 भाषा की कक्षा में चित्रों से संबन्धित विभिन्न प्रक्रियाएँ और गतिविधियाँ 125

2.5.2 चित्रों पर कार्य की प्रक्रिया 133

2.6 लिखित भाषा समृद्ध (प्रिंट रिच) वातावरण, बाल साहित्य और रीडिंग कॉर्नर का महत्त्व 143

2.6.1 भाषाई समृद्ध कक्षा की आवश्यकता 146

2.6.2 बाल साहित्य और अन्य पठनीय सामग्रियों का पढ़ने-लिखने की संस्कृति विकसित करने में योगदान 152

2.7 दीवार पत्रिका और बाल अखबार 172

2.7.1 दीवार पत्रिका 172

2.7.2 बाल अखबार 174

2.8 कविताएँ और पढ़ना-लिखना सीखना 175

2.8.1 कविता पर कार्य की प्रक्रिया 187

2.9 कहानियाँ और पढ़ना-लिखना सीखना 201

2.9.1 कहानी की परंपरा 202

2.9.2 भाषा की कक्षा और कहानी 204

2.9.3 प्रक्रिया 216

2.10 अन्य विधाओं पर कार्य 225

2.10.1 भाषाई कौशलों के विकास में डायरी की भूमिका 225

2.10.2 भाषाई कौशलों के विकास में यात्रा साहित्य की भूमिका 228

2.10.3 भाषाई कौशलों के विकास में संस्मरण की भूमिका 230

2.10.4 भाषाई कौशलों के विकास में एकांकी की भूमिका 231

2.10.5 भाषाई कौशलों के विकास में जीवनी की भूमिका 232

2.10.6 भाषाई कौशलों के विकास में निबंध की भूमिका 234
2.10.7 बाल शोध मेला 237
2.11 भाषा विश्लेषण- व्याकरण पक्ष पर कार्य प्रक्रिया 242
2.11.1 भाषा में शुद्धता का आग्रह 242
2.11.2 भाषा शिक्षण में व्याकरण 245
2.12 आकलन प्रक्रिया- अभ्यास प्रश्नों पर कार्य प्रक्रिया 253
2.12.1 सतत और व्यापक आकलन 254
2.12.2 सीखने के प्रतिफल और आकलन 256
2.12.3 आकलन के विभिन्न रूप 265
2.12.4 सतत आकलन की प्रक्रिया में पाठ के अभ्यास प्रश्नों का महत्त्व 270
2.13 पाठ्यपुस्तक केन्द्रित शिक्षण की सीमाएँ और सुझाव 274
2.13.1 पाठ्यपुस्तक पर काम के सुझाव 280
2.13.2 कक्षा में अपनाई जा रही शिक्षण प्रक्रियाओं की चुनौतियाँ 282
2.13.3 पाठ्यपुस्तकों में विविध विधाओं को शामिल करने के उद्देश्य 284
2.14 कक्षा 3 से 5 में पढ़ने-लिखने में संघर्ष कर रहे बच्चों के साथ कार्य कैसे करें 286

अध्याय 3- शिक्षकों के साथ काम की रूपरेखा और उसका क्रियान्वयन 294
3.1 आवश्यकता आधारित शिक्षक समूह (नीड कोहॉर्ट) निर्मित करने की ज़रूरत 294
3.2 हिन्दी भाषा शिक्षण में नीड कोहॉर्ट यानी आवश्यकता आधारित समूहों के लिए निर्धारित फ्रेमवर्क 296
3.2.1 काम का चरणबद्ध प्रवाह 298
3.3 प्रभावी शिक्षण व आकलन से संबंधित अपेक्षित शिक्षण प्रक्रियाएं 299
3.4 आवश्यकता समूह के आधार पर अपने काम को व्यावहारिक रूप देना 306
3.4.1 शिक्षकों की आवश्यकताओं की पहचान करना 306

3.4.2 कक्षा 1-2 और 3 से 5 के स्तर पर कार्य हेतु विषयवस्तु चयन सम्बन्धी सुझाव 308

3.4.3 विविध कोहॉर्ट के साथ काम करने के मोड्स (modes) 309

3.4.4 आवश्यकताओं (needs) को पहचानने के तरीके 309

आभार 313

आवश्यक पठन सामग्री की सूची 315

प्रस्तावना

अजीम प्रेमजी फाउंडेशन की स्थापना 2001 में हुई थी। फाउंडेशन का विजन अधिक न्यायसंगत, समतामूलक, मानवीय और टिकाऊ समाज की स्थापना में योगदान करना है। फाउंडेशन देश भर में 'व्यापक' और 'गहरे' दोनों अर्थों में जमीनी स्तर पर कार्य करता है। यह कार्य सीधे अपनी टीम के द्वारा और पार्टनर संस्थाओं के साथ भागीदारी के माध्यम से किया जाता है।

फाउंडेशन का अपना काम हमारे जिला स्तर के फील्ड संस्थानों द्वारा किया जाता है। हमारी टीम की ब्लॉक स्तर पर उपस्थिति गहरे जमीनी स्तर के कार्य को संभव बनाती है। साथ ही हम सामाजिक क्षेत्र के लिए क्षमता विकास और शोध कार्य में योगदान के उद्देश्य से विश्वविद्यालय परिसरों का एक नेटवर्क भी बना रहे हैं। पहला अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय 2010 में बैंगलोर में स्थापित किया गया था और दूसरा 2023 से भोपाल में शुरू होने जा रहा है।

फाउंडेशन के द्वारा सीधे तौर पर किए जाने वाले काम का एक बड़ा हिस्सा भारत की सार्वजनिक (सरकारी) स्कूली शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने में मदद करना है। इस कार्य को देश के अधिक वंचित क्षेत्रों को प्राथमिकता देते हुए किया जाता है। यह कार्य शिक्षक क्षमता और नेतृत्व विकास से लेकर शिक्षा नीति और पाठ्यचर्या जैसे विभिन्न पहलुओं पर होता है।

शिक्षकों की केन्द्रीय भूमिका

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रभावी शिक्षण की अहम भूमिका होती है। हमारे अनुभव और दुनिया भर के शोध से भी इस बात की पुष्टि होती है। इसलिये जमीनी स्तर पर हमारा काम मुख्य रूप से सार्वजनिक स्कूलों के शिक्षकों के पेशेवर विकास पर केंद्रित है। हम शिक्षकों के साथ सभी स्कूली विषयों पर और शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य, विषय-वस्तु और शिक्षण-प्रक्रियाओं पर कार्य करते हैं। शिक्षकों की आवश्यकता की पहचान कर, उनके समूह बनाकर विभिन्न माध्यमों से यह कार्य किया जाता है।

भाषा और गणित

प्राथमिक स्तर पर बच्चों द्वारा पढ़ना-लिखना और संख्या ज्ञान हासिल करना एक बुनियादी आवश्यकता है, जिस पर आगे की कक्षाओं में होने वाली उपलब्धियाँ काफी हद तक निर्भर करती हैं। स्कूलों में बहुत-से बच्चे इसी स्तर पर संघर्ष करते पाए जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप स्कूली व्यवस्था में बिताए समय का उन्हें कुछ लाभ नहीं मिल पाता और शिक्षा से उनके जीवन में जिन संभावनाओं के साकार होने की अपेक्षा की जाती है, वे फलीभूत नहीं होतीं। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान समय में हम मुख्य रूप से प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 1 से 5) के शिक्षकों के क्षमता वर्धन पर कार्य कर रहे हैं।

भाषा शिक्षण के लिए हैंडबुक

यह हैंडबुक प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के साथ भाषा शिक्षण के काम को सुगम बनाने के लिए विकसित

की गई है। इसे सार्वजनिक स्कूलों और शिक्षकों के साथ पिछले दो दशकों के हमारे अनुभव के आधार पर विकसित किया गया है। इस कार्य में अन्य संस्थानों के अनुभवों से भी लाभ मिला है।

कक्षा 5 तक भाषा शिक्षण को बेहतर करने के लिए शिक्षकों के साथ कार्य करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह हैंडबुक एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका के रूप में उपयोग में लायी जा सकती है।

हैंडबुक की संरचना

इस हैंडबुक में तीन बड़े अध्याय हैं:

पहला अध्याय सार्वजनिक स्कूलों में भाषा शिक्षण में सुधार हेतु एक संदर्भ रखता है और शिक्षकों के साथ किए जाने वाले काम के प्रति हमारे अप्रोच को बताता है। इसकी शुरुआत यह स्पष्ट करने से होती है कि बच्चे घर पर भाषा (या भाषाएँ) कैसे सीखते हैं; स्कूल में दूसरी भाषा सीखने के लिए क्या ज़रूरी है और ज़मीनी स्तर पर किस तरह की चुनौतियाँ हमें नजर आती हैं। फिर कुछ मुख्य कक्षा-कक्ष प्रक्रियाओं की पहचान की जाती है जिन्हें अपनाने से भाषा शिक्षण प्रभावी होता है। यहाँ, संक्षेप में, भाषा शिक्षण के उन महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी बात की गई है जिन पर शिक्षकों की सैद्धांतिक स्पष्टता होनी जरूरी है।

दूसरा अध्याय कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के इर्द-गिर्द बुना गया है। यहाँ कक्षा कक्ष में अपेक्षित कार्य-प्रक्रियाओं (Desired Classroom Teaching Practices) का विस्तार से वर्णन किया गया है जो प्रभावी शिक्षण के लिए जरूरी हैं। ये कार्य पद्धतियाँ कुछ बुनियादी भाषा शिक्षण प्रक्रियाओं में निहित हैं, जैसे कविता-कहानी, पोस्टर, बातचीत, प्रिंट-समृद्ध कक्षा वातावरण आदि के उपयोग द्वारा भाषा शिक्षण। किसी चयनित विषय-वस्तु (content) को लेकर कैसे काम करें, किस प्रकार की सामान्य गलतियाँ होती हैं और उनके क्या समाधान हो सकते हैं, इसके कक्षा-कक्षीय उदाहरण दिए गए हैं। आमतौर पर शिक्षक पाठ्यपुस्तकों की मदद से पढ़ाते हैं, इसलिए पाठ्यपुस्तकों से संदर्भ लेकर भी बात की गई है जिससे शिक्षक पाठ्यपुस्तक सामग्री का रचनात्मक उपयोग कर सकें।

तीसरा अध्याय शिक्षकों के साथ काम करने के अप्रोच और प्रक्रिया को बताता है। यह एक 'आवश्यकता-आधारित' अप्रोच है जिसमें 'अपेक्षित कक्षा शिक्षण कार्य-प्रक्रियाओं' को संदर्भ में रखते हुए कक्षा शिक्षण के प्रत्यक्ष अवलोकन और शिक्षकों और छात्रों के साथ बातचीत के माध्यम से एक-एक शिक्षक की आवश्यकता की पहचान की जाती है। जो अपेक्षित प्रक्रियाएं शिक्षक नहीं कर रहे होते हैं, उन्हें ही आवश्यकता के रूप में चिह्नित किया जाता है और समान आवश्यकताओं वाले शिक्षकों का एक समूह बनाकर उनके साथ निश्चित योजना के तहत विभिन्न माध्यमों से पेशेवर विकास कार्यक्रम किया जाता है। विभिन्न माध्यमों में छोटे-छोटे सत्र, एक या अधिक दिन की कार्यशालाएं, चुनिंदा पठन सामग्री को साझा करना, स्कूल में जाकर सहयोग करने जैसे तरीके शामिल हैं। शिक्षकों के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखने से हमें अपने कार्य के 'प्रभाव' के बारे में भी जानकारी मिलती रहती है। यह अध्याय इस प्रक्रिया को विस्तार से बताता है। यह उन सभी संस्थानों के लिए उपयोगी है जो शिक्षकों के साथ स्कूल स्तर पर उनकी शैक्षणिक कार्य प्रक्रियाओं में अपेक्षित परिवर्तन लाने के लिए काम कर रहे हैं।

हमारा अनुभव यह कहता है कि बड़े पैमाने पर शिक्षकों के समग्र क्षमता वर्धन के लिए हैंडबुक के अलावा अन्य सामग्रियों की भी आवश्यकता होती है, जैसे - कार्यशाला मॉड्यूल्स, सत्र योजनाएँ, पाठ योजनाएँ, वर्कशीट्स, वीडियोज़, अन्य शिक्षण अधिगम सामग्री (Teaching Learning Material – TLM)। इस हैंडबुक के भावी डिजिटल रूप (Web Version) के साथ इस सहायक सामग्री को उपलब्ध कराया जाएगा।

हमें विश्वास है कि यह हैंडबुक शिक्षकों के साथ कार्य कर रहे व्यक्तियों एवं संस्थाओं, शिक्षकों और स्कूली शिक्षा में रुचि लेने वाले अन्य लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

अध्याय 1- प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण

यह अध्याय शिक्षकों के साथ हमारे कार्य से संबन्धित इन महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को समझने में सहायक है–

- **प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण से जुड़ी चुनौतियाँ और भाषा शिक्षण की सैद्धांतिक समझ**
- **भाषा सीखने की प्रक्रिया**
- **शिक्षकों के साथ कार्य और इससे जुड़े विभिन्न मुद्दों की बुनियादी समझ**
- **भाषाई कौशलों और उनके प्रमुख अवयवों की समझ**

1.1 प्राथमिक भाषा शिक्षण

भाषा को मानव के एक मुख्य बुनियादी कौशल के रूप में देखा जाता है। यह हमारी पहचान का एक महत्त्वपूर्ण आधार है और इसके माध्यम से हम विचार करने और उनके सम्प्रेषण में सक्षम होते हैं। हम जो कुछ सीखना-समझना चाहते हैं, हमारी भाषागत क्षमता उसे सहज बनाती है। हमारे जीवन में भाषा का महत्त्व इसी से समझा जा सकता है कि मातृभाषा सीखने के लिए हमें किसी प्रकार के अतिरिक्त प्रयास की ज़रूरत नहीं होती। बच्चे एक पारिवारिक, सामाजिक परिवेश में डेढ़-दो वर्ष में ही भाषा प्रयोग करने लगते हैं।

आमतौर पर भाषा को महज़ अभिव्यक्ति के साधन के तौर पर ही देखा जाता है जो एक अधूरी बात है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन ही नहीं, बल्कि हमारे सोचने-समझने और दुनिया को देखने का ज़रिया भी है। यह कौशलों का एक ऐसा पुंज है जिसमें तमाम अलग-अलग लेकिन एक-दूसरे से जुड़े कौशलों का समन्वय दिखता है। अपने लिए विचार बनाना, कल्पना करना, तर्क गढ़ना और किसी पूछी गई बात का सोचकर जवाब देना आदि बगैर भाषा के संभव नहीं है।

स्कूली शिक्षा व्यवस्था में भाषा के संदर्भ में सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने को ही केन्द्र में रखकर सारे क्रियाकलाप तय किए से प्रतीत होते हैं। स्कूल जाने का मतलब ही पढ़ना-लिखना सीखना मान लिया जाता है और प्राथमिक स्तर के स्कूल तो इसी तैयारी के लिए खोले गए प्रतीत होते हैं। यह बात भाषा के बारे में उपरोक्त समझ से कुछ भिन्न है। इसमें उन सारे कौशलों की तैयारी और दक्षता पर ज़ोर कम दिया जाता है जो कि समझ के साथ पढ़ने

और लिखने को सुनिश्चित करते हैं। यह माना जा सकता है कि प्राथमिक स्तर की शिक्षा का एक उद्देश्य पढ़ने-लिखने के बुनियादी कौशल में निपुणता हासिल करना है। लेकिन यह समझ लेना बात को अधूरा समझना है। इसमें बच्चे के समस्त भाषिक कौशलों को शामिल करना ज़रूरी है, जिन्हें यहाँ दिया गया है।

प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण के उद्देश्य

- जिस भाषा को बच्चा सीख रहा है, उसमें सुनकर समझना और बोलकर व्यक्त कर पाना
- लिखे हुए को पढ़कर समझना और अपने विचारों को लिखकर व्यक्त कर पाना
- जो पढ़ते हैं उस पर अपनी प्रतिक्रिया लिखित और मौखिक रूप से व्यक्त कर पाना
- बोलने अथवा लिखने में सृजनशीलता की ओर बढ़ना
- भाषा विज्ञान की कुछ बुनियादी समझ जैसे- शब्दों के प्रकार, वाक्य संरचना और उनके परस्पर संबंधों को समझने की ओर बढ़ना
- भाषिक क्षमताओं का अन्य विषयों को समझने में उपयोग कर पाना

इसलिए स्कूल के शुरुआती वर्षों में यह बेहद महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि बच्चे का भाषा के सभी कौशलों पर अधिकार हो जाना चाहिए। ऐसा नहीं होने पर बच्चे के लिए सीखने-समझने के अवसर और सीखने-समझने से प्राप्त होने वाले अन्य अवसर बहुत सीमित हो जाते हैं, जिसका असर जीवन की गुणवत्ता पर पड़ता है। प्राथमिक भाषा शिक्षण चूँकि मुख्यधारा की वर्तमान स्कूली प्रणाली में पाँच अलग-अलग कक्षाओं में बँटा है और हर कक्षा के लिए भी हमने प्रत्येक विषय में सीखने के प्रतिफल तय किए हुए हैं। इसलिए एक ओर तो हम पूरी प्राथमिक शिक्षा से भाषा कौशलों में एक स्तर की उपलब्धि की अपेक्षा करते हैं, वहीं दूसरी ओर हर एक वर्ष में भी उपलब्धि के मानक तय हैं।

हम अपनी सुविधा के लिए इस पूरी प्राथमिक अवधि (पाँच वर्ष) के लक्ष्यों को भाषा के सन्दर्भ में मोटे तौर पर दो खण्डों में देख रहे हैं– 'आरंभिक भाषा शिक्षण' और 'पढ़ने-लिखने का विस्तार'। समझने में आसानी की दृष्टि से इन दो स्तरों के कौशलों को कुछ इस प्रकार से वर्गीकृत किया है-

1.1.1 आरम्भिक भाषा शिक्षण

बच्चे के भाषा विकास में बुनियादी महत्त्व रखने वाली बातों को हम आरंभिक भाषा शिक्षण कह रहे हैं। आरंभिक हिंदी भाषा शिक्षण में एक ओर तो मौखिक अभिव्यक्ति को कविता, कहानी, दैनिक अनुभव, मन की बात आदि के सहारे बेहतर किया जाता है, वहीं दूसरी ओर लिपि से परिचय को प्रगाढ़ किया जाता है। इस दौरान अपेक्षा यह होती है कि बच्चे ध्वनि और उसके लिए निर्धारित चिह्नों में सम्बन्ध बिठा पाएँ, अक्षर/वर्णमाला, सरल शब्दों और सरल वाक्यों को पढ़, लिख और समझ पाएँ। इस प्रकार पढ़ने-लिखने के जगत से उनका आरंभिक परिचय हो जाए। दूसरे शब्दों में कक्षा दो-तीन तक के लिए जो भाषा शिक्षण के उद्देश्य हैं, वे आरंभिक भाषा शिक्षण के दायरे में आ जाते हैं।

Figure 2 आरंभिक भाषा शिक्षण से संबन्धित प्रमुख उद्देश्य

1.1.2 पढ़ने-लिखने का विस्तार

जब बच्चे अपनी बात कुछ वाक्यों में व्यवस्थित रूप से रखने लगते हैं और साथ ही सरल वाक्यों का पठन और लेखन करने लगते हैं तो अगला कार्य उनकी इन क्षमताओं में विस्तार का होता है। मौखिक अभिव्यक्ति में उनसे ज़्यादा विस्तृत और व्याकरणीय रूप से ज़्यादा सटीक विवरण की अपेक्षा होती है। जहाँ वे किसी घटना, कहानी या कविता पर अपने विचार बेझिझक व्यक्त कर पाएँ और कैसे, क्यों आदि प्रश्नों को पूछ भी सकें और इनके जवाब भी दे पाएँ। वहीं पढ़ने और लिखने में उनसे अपेक्षा होती है कि वे जो पढ़ें उसका अपने संदर्भों से जोड़कर अर्थ निकाल पाएँ, अपने स्तर के अनुसार किस्से-कहानियों को पढ़कर उसके मर्म को समझ पाएँ, अपरिचित शब्दों के संदर्भ के आधार पर अनुमान लगा पाएँ और पढ़े हुए या सुने हुए पाठ के आधार पर अपनी समझ को सही वाक्य व आधारभूत व्याकरण और विरामचिह्नों का उपयोग करते हुए मौखिक और लिखित रूप में व्यक्त कर पाएँ। अपने अनुभवों और कल्पना के आधार पर किस्से-कहानी या कविता जैसा कुछ सृजनात्मक काम कर पाएँ। कुछ वाक्यों से आगे बढ़कर एक-दो पैराग्राफ में व्यवस्थित रूप से कोई बात लिखकर व्यक्त कर पाएँ। यह कार्य मुख्य रूप से कक्षा 3 में शुरू हो जाता है, पर ज़्यादा अपेक्षा कक्षा 4 और 5 में इस दिशा में बढ़ने की होती है।

Figure 3 पढ़ने-लिखने के विस्तार से संबन्धित प्रमुख उद्देश्य

1.2 ज़मीनी वास्तविकताएँ और चुनौतियाँ

1.2.1 बच्चों की पृष्ठभूमि और उनके समक्ष आने वाली चुनौतियाँ

आज के माहौल में सरकारी विद्यालयों में आने वाले ग्रामीण और उपनगरीय परिवेश के अधिकतर बच्चों के लिए अपने घरेलू परिवेश में पढ़ने-लिखने के अनुभव लगभग नदारद होते हैं। इनमें अधिकतर बच्चे विद्यालय आने वाली पहली या दूसरी पीढ़ी के होते हैं। अभिभावक दैनिक आवश्यकताओं में व्यस्त होने के कारण बच्चों की शिक्षा पर अपेक्षित ध्यान नहीं दे पाते और न ही उनकी मदद कर पाने की क्षमता रखते हैं। फलस्वरूप इन्हें लिखित संदर्भ का कुछ खास एक्सपोजर नहीं मिल पाता। जो थोड़ा बहुत भी एक्सपोजर इन्हें मिलता है, वह बाजार से या आसपास से मिल पाता है, जैसे घर में आने वाले डिब्बा-बंद सामान के रैपर पर लिखे नाम, बाजार में लगे साइनबोर्ड, सरकारी और राजनैतिक विज्ञापन आदि। ये सब संदर्भ ऐसे हैं जो एक हद तक लिपि से उनका दूर का परिचय तो करवा देते हैं, लेकिन पढ़ सकने की दक्षता तक पहुँचने के लिए जिस सुनियोजित हस्तक्षेप की ज़रूरत होती है, उसका अभाव बना रहता है। अतः सही मायनों में देखा जाए तो इन परिवेशों से आने वाले बच्चे पढ़ने-लिखने से पहली बार विद्यालय आकर ही रूबरू होते हैं।

ये बच्चे स्कूल में भी कई चुनौतियों का सामना करते हैं। अधिकतर विद्यालयों का परिवेश इन बच्चों का स्वागत करता हुआ व उत्साहित करने वाला नहीं लगता और पहले दिन से ही बच्चों को अपेक्षाओं और नियमों में ढाला जाने लगता है। कतिपय विद्यालयों में उनका सामना अपरिचित चेहरों और व्यवस्थाओं के साथ ही साथ अपरिचित भाषा से भी होता है। कुछ कक्षाओं या विद्यालयों में अनुशासन की चिंता इस कदर हावी रहती है कि बच्चे स्वेच्छा से न तो अपने विचारों को अभिव्यक्त कर पाते हैं और न ही उत्पन्न हो रही जिज्ञासाओं या प्रश्नों को ही पूछ पाते हैं। बहुत सी कक्षाओं में अपनाई जाने वाली अधिकतर शिक्षण प्रक्रियाएँ अर्थहीन और मशीनी कवायद जैसी ही होती हैं।

जिन विद्यालयों में बच्चों की अपनी भाषा को स्थान नहीं दिया जाता और सारा वार्तालाप हिंदी में ही करने पर ज़ोर दिया जाता है, वहाँ लक्ष्य भाषा यानी हिंदी में बच्चे की मौखिक अभिव्यक्ति और साथ ही इससे जुड़ी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास अवरुद्ध होता है। कुछ ऐसा ही लिखने-पढ़ने के दौरान भी होता है, जहाँ शिक्षक शुरुआत से ही भाषा की शुद्धता का आग्रह लिए होते हैं। मसलन बच्चे की मातृभाषा से आए शब्दों के स्वाभाविक इस्तेमाल को हतोत्साहित करते हुए सीधे-सीधे वर्णमाला पद्धति से भाषा शिक्षण शुरू करते हैं और साल-दो साल इसी में निकल जाते हैं। रोज़ अर्थपूर्ण तरीके से व्यवस्थित माहौल में और कुछ हद तक प्रत्येक बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान के साथ सीखना-सिखाना नहीं हो पाने के कारण बहुत से बच्चे पाँचवी कक्षा तक जाकर भी पढ़ना-लिखना नहीं सीख पाते हैं। भाषा शिक्षण के दौरान अपनाई गई प्रक्रियाओं के कारण वे हिज्जे करके पढ़ते हैं, मात्राओं में भटक जाते हैं, पढ़े हुए का अर्थ ग्रहण नहीं कर पाते हैं और फिर इन सबके कारण पढ़कर समझना नहीं हो पाता है। ऐसे में पढ़ाई-लिखाई में अरुचि होना, उपस्थिति पर असर पड़ना आदि स्वाभाविक परिणाम के रूप में नज़र आते हैं।

अधिकतर विद्यालयों का परिवेश इन बच्चों का स्वागत करता हुआ व उत्साहित करने वाला नहीं लगता और पहले ही दिन से बच्चों को अपेक्षाओं और नियमों में ढाला जाने लगता है।

बच्चों के समक्ष आने वाली इन चुनौतियों को निम्नांकित तालिका के माध्यम से भी देखा जा सकता है। इसमें बच्चे की भाषा सीखने से संबन्धित घर और विद्यालय के परिवेश के बीच के अंतर को समझने का प्रयास किया गया है। इसके द्वारा हम यह समझ सकते हैं कि बच्चा जब घर के अनौपचारिक परिवेश से विद्यालय के औपचारिक परिवेश में प्रवेश करता है तो उसे आमतौर पर सीखने से जुड़ी किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

घर-परिवेश के अनौपचारिक माहौल में भाषा सीखना	स्कूल के औपचारिक माहौल में भाषा सीखने की प्रक्रिया
एक परिचित, अनौपचारिक माहौल जहाँ भाषा अपनी सम्पूर्णता में पहले दिन से ही उपस्थित। भाषा के विभिन्न रूप और उपयोगों को सुनने-समझने के मौके।	एक अपरिचित, भयभीत करता औपचारिक वातावरण।
विभिन्न आयुवर्ग और अनुभवों वाले लोगों का सान्निध्य और उनसे संवाद के मौके।	अधिकांशतः एकमात्र पाठ्यपुस्तक के ज़रिए भाषा शिक्षण, जिसमें बच्चे अपने संदर्भ से जुड़ी चीज़ें कम ही देख पाते हैं।
अपने अनुभवों, रुचियों और चिंताओं को अभिव्यक्त करने और उनके समाधान खोजने के अवसर।	कक्षा-कक्ष की प्रक्रिया में परिचित संदर्भ बेहद सीमित और अपरिचित संदर्भों की भरमार।
सीखने की अपेक्षाओं का कोई दबाव नहीं।	कक्षा प्रक्रिया में बच्चे के अपने पूर्व या रोज़मर्रा के अनुभवों, जिज्ञासाओं और समस्याओं का स्थान कम या नहीं के बराबर।
गलतियाँ करने और सुधार के बेशुमार मौके।	प्रतिस्पर्धा का माहौल और सीखने-पढ़ने की अपेक्षाओं का टेस्ट और परीक्षा के रूप में दबाव।
भाषा में स्वयं से जोड़-तोड़ करने या नए प्रयोगों के मौके।	शुद्धता की अपेक्षा के चलते शुरू से ही यह डर बैठ जाना कि कहीं गलत बोल/लिख दिया तो सज़ा मिलेगी व हँसी उड़ेगी।
सुनने-बोलने के समृद्ध मौके, किन्तु पढ़ने-लिखने के माहौल में काफी विविधता– किन्हीं परिवारों में पर्याप्त तो कहीं अत्यंत सीमित या नहीं के बराबर।	भाषा में सृजन या नए प्रयोगों के मौके अत्यंत सीमित।
भाषा सीखने की कोई निश्चित निर्धारित प्रक्रिया नहीं।	सीखने की स्वाभाविक प्रक्रियाओं की अनदेखी।
	सीखने की एक निश्चित और निर्धारित प्रक्रिया।

1.2.2 सामान्यतः प्रचलित भाषा शिक्षण सम्बन्धी मान्यताएँ, शिक्षण प्रक्रियाएँ और इनसे जुड़ी चुनौतियाँ

- हिंदी भाषा शिक्षण के बारे में, विशेषकर प्राथमिक स्तर पर तो बहुत हद तक यह मान्यता रहती है कि हिंदी तो कोई भी पढ़ा सकता है, क्योंकि उसमें वर्णमाला, बारहखड़ी, मात्रा ज्ञान और कुछ बिना मात्रा वाले सरल शब्दों से शुरू करके मात्रा वाले सरल शब्दों तक बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाना होता है। गणित और अंग्रेजी विषयों को कठिन माना जाता है और कम ही प्राथमिक शिक्षक ख़ुशी-ख़ुशी उनको पढ़ाना

स्वीकार करते हैं। लेकिन भाषा शिक्षण आसान काम नहीं है, ऐसा शायद ही आपने किसी शिक्षक को बोलते हुए सुना हो। बी.एड. जैसे कोर्स में चाहे कितनी भी सैद्धांतिक बातें शामिल की गई हों, सामान्यतः स्कूल स्तर पर तो शिक्षक उसी प्रकार की प्रक्रियाएँ अपनाते दिखते हैं जिनसे वे स्वयं गुज़रकर आए होते हैं। क्योंकि उन प्रक्रियाओं से वे पढ़ना-लिखना सीखे होते हैं तो उनके बच्चे कैसे उन्हीं प्रक्रियाओं से नहीं सीख पाएँगे, ऐसा ख्याल आना मुश्किल होता है। यहाँ कुछ प्रचलित मान्यताओं और प्रक्रियाओं का विवरण दिया जा रहा है जो भाषा शिक्षण को सहज करने की बजाय एक चुनौतीपूर्ण कार्य बना देती हैं।

Figure 4 वर्णमाला से भाषा शिक्षण की शुरुआत को प्रदर्शित करता चित्र

- आमतौर पर बोली जाने वाली भाषा के रूप में देखे जाने के कारण, हिन्दी भाषा को आसान-सी भाषा मान लिया जाता है। इसलिए मान्यता यह बन जाती है कि कोई भी हिन्दी पढ़ा सकता है। ऐसे में 'कोई भी' कैसे भी पाठ्यपुस्तक को 'पढ़ाकर' इतिश्री कर लेता है।

- शिक्षकों को यह लगता है कि अगर बच्चों को वर्णमाला ज्ञान और बारहखड़ी आ जाए तो पढ़ना-लिखना आ ही जाएगा। अतः पूरा ज़ोर वर्णमाला और बारहखड़ी रटाने और नकल करके लिखने जैसी प्रक्रियाओं पर ही रहता है। शुरुआती कक्षाओं में बच्चों से वर्ण पहचान, बारहखड़ी, मात्राएँ, नकल आदि की कवायदें करवाई जाती हैं। उसके बाद बारी आती है, बिना मात्रा के शब्दों की और फिर एक मात्रा वाले शब्द और उसके बाद दो मात्रा वाले शब्द। धीरे-धीरे बच्चे इन वर्णों और मात्राओं को कुछ त्रुटियों के साथ पहचानने लगते हैं, जिसे पढ़ना मान लिया जाता है।

- कक्षा एक की ऐसी पाठ्यपुस्तकें जो परंपरागत वर्णमाला पद्धति से इतर अन्य सार्थक और संदर्भयुक्त प्रक्रियाओं की हिमायत करती हैं, शिक्षक उनका उपयोग नहीं कर पाते। उन्हें यह समझ ही नहीं आता कि बिना अक्षर और मात्रा सिखाए बच्चे शब्दों या कविता-कहानी से भाषा कैसे सीख सकते हैं।

- अक्सर मातृभाषा और स्कूली भाषा अलग-अलग होती है। ऐसे में बच्चे का भाषा ज्ञान एक नई भाषा में उसके प्रवेश को कैसे सुगम बना सकता है, इस ओर ध्यान नहीं दिए जाने से बच्चे को नई भाषा सीखने में मातृभाषा के प्रयोग का अवसर नहीं मिलता और नई भाषा सीखने की प्रक्रिया ज़्यादा जटिल, लम्बी और थकाऊ हो जाती है।

प्राथमिक स्तर की अधिकतर कक्षाओं में कल्पनाशीलता, तर्कशीलता, विश्लेषण, पढ़कर समझना, अपने विचारों को लिखित रूप में प्रकट करना, भाषाई सौंदर्यबोध की सराहना करना आदि कौशलों पर काम को प्राथमिकता नहीं दी जाती।

- शुद्ध-उच्चारण व सुलेख पर ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है और अन्य महत्त्वपूर्ण कौशल जैसे कि अनुमान लगाना, पूर्व-ज्ञान, संदर्भ की समझ आदि पीछे छूट जाते हैं। प्राथमिक स्तर की अधिकतर कक्षाओं में कल्पनाशीलता, तर्कशीलता, विश्लेषण, पढ़कर समझना, अपने विचारों को लिखित रूप में प्रकट करना, भाषाई सौंदर्यबोध की सराहना करना आदि कौशलों पर काम को प्राथमिकता नहीं दी जाती है।

Figure 5 बच्चों के उच्चारण को एकदम से ख़ारिज ना किया जाए

- ये भी देखने में आता है कि शिक्षक कई बार बच्चों के परिवेश और संस्कृति के साथ तादात्म्य नहीं बिठा पाते और उनके नज़रिए में ‘इन’ बच्चों को सिखाना और पढ़ाना जबरन किया जाने वाला काम है और इसका असर बच्चों को सिखाने की प्रक्रियाओं और उनके सीखने पर भी पड़ता है। इसमें वर्ग, धर्म और जाति के बारे में समाज में फैली मान्यताएँ भी शिक्षकों के मानस पर असर डालती हैं।

- शुरुआती कक्षाओं की प्रक्रियाओं में अक्सर बच्चों के साथ की गई मौखिक बातचीत और पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं के बीच कोई जुड़ाव नहीं होता। बातचीत में क्या खाया, कहाँ गए किस्म की बातें होती हैं और पढ़ने-लिखने में पाठ्यपुस्तक की सामग्री का उपयोग होता है, जिसका आमतौर पर बच्चे के अपने जीवन अनुभव से कोई खास जुड़ाव देखने को नहीं मिलता।

- पाठ्यपुस्तकों पर अत्यधिक निर्भरता के चलते बच्चों को पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों और बाल साहित्य आदि का अनुभव कम ही मिल पाता है, जिससे वे पढ़ने के आनंद से वंचित ही रह जाते हैं। ऐसे में भाषा के अन्य कौशल किनारे छूट जाते हैं और शिक्षक भाषा सिखाने की बजाय भाषा के बारे में सिखाने लगते हैं, और फिर व्याकरण जैसे मुद्दों को बिना किसी संदर्भ के शिक्षण में शामिल कर लिया जाता है।

- आमतौर पर हर विधा के पाठ को पढ़ाने का एक ही तरीका काम में लिया जाता है। जैसे- पाठ को पैरा-वार पढ़ना या बच्चों से पढ़वाना और कठिन शब्दों के अर्थ बताते हुए आगे बढ़ते जाना और अंत में अभ्यास के प्रश्नोत्तर बच्चों से पूछना, फिर न बता पाने की स्थिति में स्वयं बोलकर या बोर्ड पर उत्तर लिखवा देना। ऐसे

में बच्चों में पाठों की विधाओं और उसके शिल्प की विविधताओं से संबन्धित कोई समझ विकसित नहीं हो पाती। इससे एक ओर उनका लिखने और बोलने का कौशल प्रभावित होता है तो दूसरी ओर वे उस जैसा कुछ और पढ़ने के लिए भी प्रेरित नहीं होते। बच्चे 'उत्तर' देने के लिहाज़ से पाठ की विषयवस्तु से तो परिचित हो जाते हैं, पर उनकी पढ़ने के प्रति रुचि विकसित नहीं हो पाती।

बच्चे 'उत्तर' देने के लिहाज़ से पाठ की विषयवस्तु से तो परिचित हो जाते हैं, पर उनकी पढ़ने के प्रति रुचि विकसित नहीं हो पाती।

- गैर-अकादमिक कार्यों के चलते भी शिक्षक भाषा शिक्षण में नियमितता नहीं रख पाते, जिस वजह से बच्चों के अभ्यास की निरंतरता नहीं बन पाती। विभागीय अधिकारियों द्वारा विद्यालयों में आगमन के दौरान बच्चों के अधिगम स्तर को जाँचने-समझने के लिए जिस प्रकार के प्रश्न शिक्षकों से पूछे जाते हैं, वे भी शिक्षकों को मजबूर करते हैं कि वे पाठ्यपुस्तक को केंद्र में रखते हुए कुछ सामान्य जानकारी रटवाते रहें। इससे रचनात्मक रूप से भाषा या किसी भी विषय के शिक्षण की सम्भावना क्षीण हो जाती है।

- आकलन के नाम पर बच्चों की ली जानेवाली परीक्षा भी उसी तरह आयोजित की जाती है जिस तरह अध्ययन-अध्यापन का तरीका अपनाया जाता है। अर्थात प्रश्नपत्रों में लिए जाने वाले अधिकांश सवाल भी विषयवस्तु से सम्बंधित ही होते हैं, जिससे बच्चे भी वहीं तक सीमित रह जाते हैं और शिक्षक भी इससे आगे सोच नहीं पाते। इसके अलावा यह भी देखने को मिलता है कि उत्तर पुस्तिकाओं में कल्पना और सृजन से संबन्धित प्रश्नों को भी शिक्षक ऐसे जाँचते हैं जैसे इनका कोई एक ही पूर्वनिर्धारित सही उत्तर हो।

यह भी देखने को मिलता है कि उत्तर पुस्तिकाओं में कल्पना और सृजन से संबन्धित प्रश्नों को भी शिक्षक ऐसे जाँचते हैं जैसे इनका कोई एक ही पूर्वनिर्धारित सही उत्तर हो।

संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि भाषा के कौशलों को अलग-अलग करके देखने, बच्चे की भाषा को कक्षा में अपेक्षित और आवश्यक स्थान न मिलने, लक्ष्य- भाषा के मौखिक विकास पर अपेक्षित ध्यान न दिए जाने और पढ़ना-लिखना सिखाने में अर्थ निर्माण पर अपेक्षित कार्य न किए जाने और रटाने, नकल करवाने के कार्य के सतत चलने से बच्चे रुचि खो देते हैं और दबाव में कुछ कार्य करते तो दिखते हैं, लेकिन वास्तव में ये बच्चे समझ के साथ पढ़ने-लिखने की स्तर अनुरूप अपेक्षित दक्षताएँ हासिल नहीं कर पाते।

1.2.3 भाषा सम्बन्धी शिक्षण प्रशिक्षणों से आशानुरूप सफलता न मिल पाना

पिछले दो-तीन दशकों से, और विशेषकर NCF-2005 के बाद से भाषा शिक्षण के लिए जो सेवारत प्रशिक्षण हुए हैं और हम जैसी संस्थाओं ने भी जो प्रयास किए हैं, उनमें समग्र भाषा पद्धति या फिर संतुलित या कॉम्प्रिहेंसिव[1] अप्रोच की बात की जाती रही है, उसके बावजूद छिटपुट सफलताएँ ही मिली हैं। आज भी

1 अध्याय दो में भाषा शिक्षण की विभिन्न पद्धतियों के समालोचनात्मक विश्लेषण के दौरान इस पद्धति को भी समझेंगे।

बहुसंख्यक विद्यालयों में वर्णमाला लिखवाने, रटाने वाले कार्य में कोई बदलाव नज़र नहीं आता है। इसके पीछे जो संभावित कारण लगते हैं, वे इस प्रकार हैं:

- बैलेंस्ड या कॉम्प्रिहेंसिव अप्रोच को समझने-समझाने में कहीं-न-कहीं चूक हुई है, जिससे शिक्षकों तक यह समझ नहीं पहुँच पाई है कि उनके द्वारा इस्तेमाल में लाए जा रहे तरीके से यह किस प्रकार बेहतर हो सकता है।

- भाषा शिक्षण के नए तरीकों में विश्वास बनाने के लिए ज़रूरी है कि इसे अपनाकर बच्चों के साथ काम किया जाए और इसके परिणामों को देखा-समझा जाए। अपेक्षित परिणाम आने पर उसमें शिक्षकों का विश्वास जगेगा। इसके लिए शिक्षक से जिस स्तर की तैयारी, सक्रियता और प्रतिबद्धता की ज़रूरत है, उसका कई बार अभाव नज़र आता है।

- एक कारण यह भी समझ में आता है कि प्रशिक्षणों में किसी भी दूसरी अधिक सार्थक प्रक्रिया की हिमायत करते वक़्त शिक्षकों द्वारा अपनाए जाने वाली प्रक्रियाओं को नकार दिया जाता है। इससे शिक्षकों के मन में यह बात उठती है कि हम उनको समझाने के प्रयास न कर केवल अपनी समझ को ही उन पर थोप रहे हैं। जबकि उनका यह कहना भी तार्किक ही है कि वे इतने सालों से इन्हीं प्रक्रियाओं का उपयोग कर रहे हैं और ऐसा भी नहीं है कि इनसे बच्चे कुछ भी नहीं सीख रहे हैं।

- कहने का तात्पर्य यह है कि प्रशिक्षणों में शिक्षकों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं को पूरी तरह से नकारते हुए उन्हें ऐसी पद्धति अपनाने को कहा जाता है जिसका उपयोग उन्होंने पहले कभी नहीं किया है।

कुछ शिक्षकों की कक्षाओं में विविध गतिविधियाँ, खेल और कविता, कहानी तो समय-समय पर नज़र आती हैं, लेकिन उनका जैसा उपयोग पढ़ना-लिखना सिखाने में अपेक्षित है, वह नहीं हो पाता। ऐसी कक्षाओं में हम पाते हैं कि बच्चों को बातचीत के अवसर भी उपलब्ध हैं और उन्हें शिक्षक पुस्तक के अतिरिक्त अन्य कविताएँ और कहानियाँ भी सुनाते हैं, लेकिन ये सब मात्र मौखिक कौशल और वातावरण निर्माण तक ही सीमित होकर रह जाता है।

- यह स्थिति उनके लिए एक समस्या बन जाती है, फिर अधिकतर शिक्षक या तो बचाव की मुद्रा में आ जाते हैं और इसे न अपनाने के पीछे के ढेर सारे तर्क और आग्रह प्रशिक्षक के सामने रखते हैं, या फिर प्रशिक्षक की बात चुपचाप सुनकर चले जाते हैं और कक्षा में अपने ही तरीकों का उपयोग ज़ारी रखते हैं।

“कुछ शिक्षक प्रशिक्षणों के दौरान दूसरी विभिन्न विधियों को सैद्धांतिक रूप से तो समझ जाते है और वे यह भी समझते हैं कि उनके द्वारा अब तक अपनाई जा रही शिक्षण विधियों में कुछ समस्याएँ हैं, जिनमें परिवर्तन आवश्यक है।” फिर इस परिवर्तन के लिए वे अपने स्तर पर प्रयास भी करते हैं, लेकिन अक्सर यह प्रयास आधा-अधूरा होकर रह जाता है, क्योंकि इस दौरान उन्हें जिस प्रकार के सहयोग तथा चरणवार सहायता और संबलन की आवश्यकता होती है, वह उपलब्ध नहीं हो पाता।

परिणाम स्वरूप कुछ शिक्षकों की कक्षाओं में विविध गतिविधियां (खेल, कहानी, कविता) समय-समय पर नजर आती हैं। लेकिन उनका जैसा उपयोग पढ़ना-लिखना सिखाने में अपेक्षित है, वह नहीं हो पाता। ऐसी कक्षाओं में हम पाते हैं कि बच्चों को बातचीत के अवसर भी उपलब्ध हैं और उन्हें शिक्षक पुस्तक के अतिरिक्त अन्य कविताएँ और कहानियाँ भी सुनाते हैं, लेकिन ये सब मात्र मौखिक कौशल और वातावरण निर्माण तक ही सीमित होकर रह जाता है। पढ़ना-लिखना सीखने से इनका अपेक्षित जुड़ाव नहीं हो पाता। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसी चुनौतियाँ भी हैं जिनका सामना हम (फाउंडेशन के साथी) शिक्षकों के साथ काम करते हुए करते हैं। जैसे- एक शिक्षक की प्रैक्टिस में बदलाव और उनकी कक्षा के बच्चों के शैक्षणिक स्तर में सुधार के लिए जितने समय की अपेक्षा प्रत्येक शिक्षक हमसे करता है, वह हमारे लिए संभव नहीं है। हम हर चरण का हर शिक्षक के लिए डेमो नहीं दे सकते या सभी सुझाई जा रही प्रक्रियाओं को सभी शिक्षकों की कक्षाओं में करके नहीं दिखा सकते। अतः हमें इस चुनौती को भी ध्यान में रखकर शिक्षकों के साथ अपने कार्य की योजनाओं का निर्माण करना चाहिए।

Figure 6 एक कार्यशाला का दृश्य

बात व्यक्तिगत स्तर पर आने वाली चुनौतियों की करें तो हममें से अधिकतर साथियों के पास भाषा की आरंभिक कक्षाओं से संबन्धित कक्षा-शिक्षण का औपचारिक अनुभव बेहद सीमित होता है। इसकी भरपाई हम भाषा की अपनी अकादमिक समझ, फाउंडेशन में इस मुद्दे से जुड़े ओरिएंटेशन, कुछ महीनों से लेकर एक साल तक कक्षा में शिक्षण के अनुभव और शिक्षकों के साथ इन मुद्दों पर कार्य के अनुभवों के आधार पर करते हैं। ऐसे में एक चुनौती कक्षा-कक्ष से जुड़े सटीक उदाहरणों को सत्रों के संचालन के दौरान प्रस्तुत कर पाने की भी रहती है। क्योंकि ये उदाहरण जहाँ एक ओर हमारे प्रति शिक्षक की विश्वास बहाली में सहायक होते हैं, वहीं दूसरी ओर बच्चों को आ रही समस्याओं या उन समस्याओं को सुलझाने से संबन्धित शैक्षणिक प्रक्रियाओं को कम समय में अधिक प्रभावी तरीके से शिक्षकों के समक्ष रखने में भी हमारी मदद करते हैं। अतः यह आवश्यक है कि हम इस प्रकार के उदाहरणों के चयन हेतु मौकों का निर्माण करें।

1.3 बच्चों की भाषा सीखने की प्रक्रिया और शिक्षक से अपेक्षाएँ

1.3.1 पहली भाषा सीखने की प्रक्रिया

इंसान में जन्म के समय से अनुभवों को व्यवस्थित करने, उन्हें याद रख पाने तथा पुनःस्मरण कर पाने की क्षमताएँ होती हैं। इन क्षमताओं के मेल से ही तुलना करने, विश्लेषण करने की क्षमताएँ भी विकसित होती हैं। ये क्षमताएँ सामाजिक परिवेश से प्राप्त सुरक्षा, निर्देश, सहयोग आदि अनुभवों को आपस में जोड़कर देखने में मदद करती हैं। इंसान जन्म से ही इन क्षमताओं का उपयोग करने लगता है। धीरे-धीरे अनुभव प्राप्त करते हुए ये क्षमताएँ निरन्तर विकसित होती रहती हैं। इन्हीं अनुभवों के संचयन से बच्चे अपने परिवेश के बारे में अपनी अवधारणाएँ बना रहे होते हैं।

बच्चा उपर्युक्त क्षमताओं के साथ बड़े होते हुए (जन्म से डेढ़ साल तक) अपनी इंद्रियों के माध्यम से अपने परिवेश के साथ संवाद स्थापित करते हुए, किए हुए व देखे हुए अनुभवों और सुनी हुई ध्वनियों के बीच संबंध स्थापित करता चलता है। इस प्रक्रिया में अपने लिए बाह्यजगत की अवधारणाएँ बनाता है। ये अवधारणाएँ उसकी स्मृति में संचित होती जाती हैं। उदाहरण के लिए बच्चा भूख लगने या बिस्तर गीला होने पर रोता है और दूध मिलने या सूखापन महसूस होने के बाद चुप हो जाता है। इस पूरे अंतराल में वह दूध, उसकी बोतल, उसका रंग, गंध और स्वाद आदि से बार-बार परिचित होता चलता है। बिस्तर और कपड़ों के बदले जाने की प्रक्रिया में भी वह अनेकानेक रंग, गंध, सूखापन इत्यादि के बारे में अपनी समझ बना रहा होता है। वह आसपास की चीज़ों को देखता है, टोह लेता है।

हालाँकि इस आयु में न तो उसकी स्वर-तंत्री पूरी तरह विकसित होती है और न ही जीभ पर उसका पूर्ण नियंत्रण होता है, इसलिए उन अवधारणाओं को अभिव्यक्त कर पाना उसके लिए संभव नहीं होता, लेकिन अपनी जन्मजात क्षमताओं के कारण उन्हें अपनी स्मृति में संचित करते जाना उसके लिए बेहद आसान होता है। इसे भाषाविद् विंडो-पीरियड कहते हैं। धीरे-धीरे ये अवधारणाएँ संचित होती रहती हैं और लगभग सवा-डेढ़ साल की उम्र में वह कुछ शब्दों को बोलने की कोशिश करते हुए दिखता है, जिसे बैबलिंग कहते हैं। बैबलिंग में बोले गए शब्द सुनने वाले के लिए अस्पष्ट और अधूरे होते हैं, लेकिन बोलने वाला बच्चा उसे अपने पूरे संदर्भ में उपयोग कर रहा होता है। दो वर्ष तक आते-आते वह कुछ शब्दों को स्पष्ट रूप से और कुछ छोटे वाक्य बोलने लगता है।

Figure 7 घर-परिवार और पारिवारिक सदस्यों के बीच में रहते हुए बच्चे जाने-अनजाने ऐसे अनगिनत अवसरों, अनुभवों और क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सम्मिलित होते हैं जो उनकी भाषा अर्जित करने की प्रक्रिया को सरल, सुखद और सारगर्भित बनाती है।

तीन से चार वर्ष तक का बच्चा अपने आस-पास बोले जाने वाली भाषा को समझते हुए संवाद करने लगता है। अपने परिवेशीय अनुभवों से वह भाषा की संरचना का एक बड़ा हिस्सा सीख चुका होता है। साथ ही अपने अनुभवों को व्यवस्थित करने तथा उन्हें अभिव्यक्त करने में भाषा का उसी प्रकार उपयोग करने लगता है जैसे कोई वयस्क करता है। यह अमूर्त भाषा सीखने की आरंभिक स्थिति होती है। इसका आशय है कि कबूतर कहने, पेड़ कहने, तालाब में तैरना कहने के बाद उसे कबूतर, पेड़, तालाब या तैरकर दिखाने की ज़रूरत नहीं होती है। बच्चा अवधारणा के स्तर पर यह सब समझने लगता है। इस अवस्था में बच्चे को अपने घर की भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त होता है और वह हर तरह के भाषाई कौशल का मौखिक उपयोग करने लग जाता है। चॉम्स्की के शब्दों में अब बच्चा 'भाषाई रूप से वयस्क' हो चुका होता है।

पाँच वर्ष के आस-पास का बच्चा सामान्यतः चीज़ों, संबंधों, परिवेश को अपनी तरह से समझने लगता है और अपने अनुभव, समझ के आधार पर प्रतिक्रिया देने लगता है। वह हम बड़ों से अपनी तरह से भाषा का उपयोग करने लगता है। इस उम्र के बच्चे के पास अपने अनुभव, अपनी अवधारणाएँ होती हैं, जिनका उपयोग वह नया सीखने, चिंतन करने तथा चीज़ों को व्यक्त करने के लिए करने लगता है। इस उम्र के बच्चों के पास उनकी अपनी भाषा होती है, जिसके आधार पर वे कई नई भाषाएँ सीख सकते हैं। उनकी अपने घर की भाषा ही उनके लिए न केवल पढ़ने-लिखने, बल्कि अपने अनुभवों को विस्तार देने, अपनी समझ को विकसित करने, अपनी रुचियों और विचारों को विकसित करने में मददगार होती है।[2]

- **जन्म** (कुछ जन्मजात क्षमताएँ- मस्तिष्क, इंद्रियाँ)
- **डेढ़ वर्ष तक** (विंडो पीरियड- इस दौरान बच्चा बहुत-से अनुभवों का अपनी स्मृति में संग्रह कर चुका होता है। बहुत सी अवधारणाएँ उसके मन में बन चुकी होती हैं।)
- **डेढ़ से दो वर्ष तक** (बैबलिंग- कुछ अधूरे, कुछ पूरे शब्द बोलने का प्रयास, खुद से बात करना)
- **दो से तीन वर्ष तक** (भाषा का उपयोग, पूरे शब्द बोलना, कुछ वाक्य बोलने का प्रयास, खुद से बात करना)
- **तीन से चार वर्ष** (अपने घर की भाषा, उसके व्याकरण के उपयोग की समझ, ध्वनियों के उपयोग की समझ, भाषाई दृष्टि से वयस्क लेकिन शब्द भंडार, अनुभव सीमित)
- **पाँच वर्ष के आस-पास** (सामान्यतः चीज़ों, संबंधों, परिवेश की समझ, अनुभव, समझ के आधार पर प्रतिक्रिया देना, बड़ों से अपनी तरह से भाषा का उपयोग करना। इस उम्र के बच्चों के पास उनकी अपनी भाषा होती है, जिसके आधार पर वे कई नई भाषाएँ सीख सकते हैं।)

2 भाषा सीखने की प्रक्रिया को और विस्तार से समझने के लिए रमाकांत अग्निहोत्री जी के आलेख 'बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता, भाग 1 व 2' को पढ़ा जा सकता है।

1.3.2 दूसरी भाषा सीखने की प्रक्रिया

हिंदीभाषी क्षेत्रों के तौर पर जाने जाने वाले अधिकतर क्षेत्रों की स्थानीय भाषा भी अक्सर हिन्दी नहीं होती, इसके बावजूद भी इन राज्यों में हिंदी भाषा का शिक्षण आमतौर पर प्रथम भाषा मानकर ही होता है। यहाँ यह समझना होगा कि 'हिंदी' बच्चे की अपनी भाषा से कितनी भिन्नता या कितनी समानता लिए हुए है। बहुत-सी स्थानीय भाषाओं की शब्दावली हिंदी भाषा की शब्दावली से बहुत कम मेल खाती है। ऐसे में स्कूल के परिवेश में बच्चे की भाषा और स्कूल की प्रथम भाषा में भेद दिखने लगता है। उदाहरण के लिए जौनसारी भाषा का यह वाक्य लेते हैं-'चोरूणी खेल्दिया आंऊँ वोबरै पूंडा था रआ चोरूए तबेई तुमारै हेरूणा ना'। माने 'छुपम-छुपाई खेलते हुए मैं घर की निचली मंजिल में छुप गया था, तभी तुम खोज नहीं पाए'। यह भाषा हिंदी से नजदीक नहीं लगती। इसीलिए जौनसारी भाषी बच्चों को हिंदी सीखने में काफी संघर्ष करना पड़ता है। हालाँकि भाषा सीखने के सिद्धान्त तथा प्रक्रियाएँ सभी भाषाओं के लिए एक समान हैं, इसीलिए एक भाषा का उपयोग दूसरी भाषा सिखाने में किया जाना चाहिए। ऐसा न होना या फिर यूँ कहें कि बच्चे की भाषा को स्कूल और किताब में स्थान न मिल पाना बच्चे के मन में किताब के प्रति अरुचि पैदा करता है।

कुछ बच्चों को हिंदी भाषा का एक्सपोज़र विभिन्न माध्यमों से मिलता रहता है, जो रेडियो, टीवी, पोस्टर्स, प्रचलित गानों और नारों इत्यादि के रूप में होता है। लेकिन कक्षा में उनका उपयोग कर पाने की स्थिति नहीं बन पाती। इसलिए ज़रूरी है कि शुरुआती कक्षाओं में ऐसा प्रिंट रिच माहौल बनाया जाए जो उनके अपने अनुभवों से जुड़ पाए। इससे एक अपेक्षाकृत अपरिचित भाषा को सीखने में मदद मिलेगी।

जब बच्चे की भाषा स्कूली भाषा से अलग होती है तो पढ़ने-लिखने से पूर्व बोलने-सुनने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना पहला काम होता है, जिससे बच्चे उन ध्वनियों के प्रति न सिर्फ सहज हो जाएँ, बल्कि उन्हें बोलने का अभ्यास भी करें। ग्रामीण क्षेत्रों में हिंदी परिवेश में होने के बावजूद बच्चे शायद घर पर टीवी पर ही सीमित मात्रा में हिंदी सुनते हों और बोलने का अभ्यास न के बराबर करते हों। ऐसे में मौखिक स्तर पर सहजता हासिल करने को ज़्यादा प्राथमिकता देने से पढ़ने-लिखने के लिए आधार तैयार होता है। बच्चे जो कुछ बोल-सुन रहे होते हैं, उसे पढ़ना-लिखना उतना मुश्किल नहीं होता जितना ऐसा कुछ जिससे बच्चे पूर्णतया अपरिचित होते हैं।

सीखने में रुचि और गति प्रत्येक बच्चे में अलग-अलग होती है और यह बात भाषा सीखने में भी लागू होती है। अतः यह स्वाभाविक है कि एक ही कक्षा में हिन्दी भाषा सीखने के दौरान बच्चे अलग-अलग स्तर पर हों और सीखने की उनकी गति भी भिन्न हो। ये विभिन्नता आमतौर पर बच्चों को भाषा-भाषी परिवेश में मिलने वाले इनपुट और उससे जुड़े अनुभवों पर निर्भर करती है। ऐसे में अगर बच्चों को कक्षा में ही अतिरिक्त अनुभव उपलब्ध कराने पर ध्यान दिया जाए तो इस गति को काफी हद तक समरूपता की ओर लाया जा सकता है।

Figure 8 भाषा सीखने से जुड़ी बच्चों की अपनी अपेक्षाओं को स्पष्ट करता एक चित्र

सभी बच्चों का सीखना सुनिश्चित करने के लिए कक्षा का माहौल भय रहित और रुचिकर बनाना

बच्चों का लिखित भाषा से जुड़ाव सुनिश्चित करने के लिए रोचक और सार्थक प्रिंट रिच माहौल का निर्माण करना

बच्चों को आड़ी-तिरची लकीरें खींचने और चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करना जिससे कि वे धीरेधीरे स्वयं को लिखित भाषा के द्वारा अभिव्यक्त करने की ओर बढ़ सकें

शुरुआत में बच्चों को खुद से लिखने और इस दौरान वर्तनी और व्याकरण आदि से जुड़ी गलतियाँ करने के अवसर दें

आकलन की उचित प्रक्रियाओं के साथ ही साथ शिक्षण के दौरान निर्देशों की स्पष्टता को भी सुनिश्चित करें

भाषायी कौशलों के विकास में बच्चों की मातृभाषा का उपयोग करें

Figure 9 स्कूल में भाषा सीखने से संबन्धित अनिवार्य प्रक्रियाएँ

1.4 भाषा शिक्षक से अपेक्षाएँ

बच्चे का भाषा सीखना जिन चीज़ों पर निर्भर करता है, वे बेहद सरल सी दिखने वाली चीज़ें हैं, जिनका ज़िक्र पहले किया जा चुका है। ऐसे में भाषा के एक शिक्षक से अपेक्षा है कि वह उन सामग्रियों और तरीकों का बेहतर इस्तेमाल कर सके। ये बेहतर इस्तेमाल, शिक्षक की कुछ बिन्दुओं पर समझ पर निर्भर करेगा। शिक्षक भाषा शिक्षण के लिए कौन-से तरीके उपयोग में लाए, इसके लिए ज़रूरी है कि वह बच्चे के परिवेश और संदर्भ को समझे। इस बात को समझे कि बच्चों के सीखने की गति अलग-अलग हो सकती है, उनकी रुचियाँ अलग हो सकती हैं, उनकी पृष्ठभूमि अलग हो सकती है आदि। इन बातों की समझ शिक्षक को सामग्री चुनने में मदद करेगी।

यहाँ यह समझना होगा कि हिन्दी बच्चे की अपनी भाषा से कितनी भिन्नता या कितनी समानता लिए हुए है। बहुत-सी स्थानीय भाषाओं की शब्दावली हिन्दी भाषा की शब्दावली से बहुत कम मेल खाती है। ऐसे में स्कूल के परिवेश में बच्चे की भाषा और स्कूल की प्रथम भाषा में भेद दिखने लगता है।

कक्षा में काम में लिए जाने वाले तरीकों को चुनने के लिए शिक्षक को यह पता होना ज़रूरी है कि सीखना होता कैसे है और इसमें कौन से सिद्धान्त लागू होते हैं। मसलन, सीखने में भय एक बड़ी बाधा बनता है और सीखने में अरुचि पैदा करता है। यह जानना ज़रूरी है कि सीखना समग्रता में होता है और अर्थ का निर्माण होना सीखने की ज़रूरी शर्त है। यह भी कि गलतियाँ सीखने की प्रक्रिया का अहम हिस्सा हैं और अपरिहार्य हैं। सीखने में बच्चे की सक्रिय भूमिका होती है और वह अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करता है। यह भी ज़रूरी है कि सीखने वाले के पास सीखने की पूरी आज़ादी हो।

उद्देश्य की स्पष्टता किसी भी तरीके को चुनने में बेहद अहम भूमिका निभाती है। इसलिए एक भाषा शिक्षक को 'भाषा शिक्षण के उद्देश्यों' की स्पष्ट समझ होनी चाहिए। इन बातों के अलावा बहुतेरी सामग्री और तरीके यहाँ सुझाव के तौर पर दिए जा रहे हैं जो उपरोक्त बताई गई बातों के साथ साम्य स्थापित करते हैं। इसमें बच्चे की मातृभाषा का कक्षा में उपयोग, बच्चे की पूर्व समझ का उपयोग, बच्चे से बातचीत, पाठ्यपुस्तक का उपयोग, प्रिंट रिच माहौल का उपयोग, लोक साहित्य, बाल साहित्य और पुस्तकालय का उपयोग आदि शामिल हैं।

1.4.1 दूसरी भाषा सीखने की प्रक्रिया

भाषा व्यक्ति की पहचान से जुड़ा मसला है, अतः यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि हिन्दी भाषा शिक्षण की प्रक्रियाओं से कहीं भी यह संदेश न जाए कि बच्चों की अपनी भाषा, सिखाई जा रही भाषा के मुक़ाबले कमतर है। इससे बच्चों में हीन-भावना पैदा होती है। अपेक्षा यह है कि शिक्षण प्रक्रियाओं में स्थानीय भाषा को पर्याप्त स्थान मिले, जिससे बच्चे बेहिचक अपनी बात रख पाएँ और सीखने की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से जुड़ें।

बच्चे मातृभाषा को जानते हैं, आस-पास के परिवेश में उसका उपयोग होते हुए देख रहे हैं। अब ज़रूरत इस बात की है कि उनकी अपनी भाषा को मज़बूत आधार देकर उनकी भाषा और दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा हिन्दी) के बीच एक पुल बनाया जाए। कक्षा-कक्ष में बच्चों के लिए जिस प्रिंट रिच परिवेश को विकसित करने की बात आगे की जा रही है, उसमें भी बच्चों की अपनी भाषा को स्थान दिया जाए और जहाँ तक हो सके, इस परिवेश को बहुभाषी बनाने की कोशिश करनी चाहिए। वैसे भी हमारे पाठ्यक्रम में दो भाषाएँ तो हैं ही- हिन्दी और अंग्रेजी। इसमें कक्षा-कक्ष के परिवेश की दृष्टि से बच्चे की अपनी भाषा को जोड़ लिया जाए तो बच्चे के लिए अवधारणाओं का निर्माण करना, उन्हें समझना और भाषाओं के बीच आवाजाही के बेहतर मौके मिल सकेंगे। अधिकांश बच्चे स्कूल आने से पहले केवल एक भाषा नहीं, बल्कि अक्सर अनेक भाषाएँ (यदि ये भाषाएँ

भाषा शिक्षण के लिए शिक्षक की तैयारी

बच्चों की समझ

- बच्चों की पृष्ठभूमि को समझना
- बच्चों की शारीरिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक ज़रूरतों को समझना
- बच्चों की रुचि, गति, मज़बूत पक्ष, चुनौतियों को समझना

सीखने की समझ

- प्रत्येक बच्चा सीख सकता है और सबके सीखने की गति भिन्न-भिन्न होती है
- सीखने की प्रक्रिया सतत होती है और सीखना समग्रता में होता है
- बच्चे एक-दूसरे से बेहतर ढंग से सीखते हैं, और अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं
- गलतियाँ सीखने की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा हैं
- भय सीखने को बाधित करता है, जबकि स्वतन्त्रता सीखने में मदद करती है

भाषा के बारे में समझ

- भाषा की प्रकृति और उसके उद्देश्यों को समझना
- भाषा की बुनावट को समझना
- मातृभाषा और स्कूली भाषा को सीखने की प्रक्रिया में फ़र्क समझना
- भाषा के उपयोग और उसमें रचनात्मकता को समझना
- साहित्य की समझ

Figure 10 भाषा शिक्षक की तैयारी के आयाम

उनके परिवेश में उपस्थित हों तो) सीख लेते हैं। यहाँ तक कि दूर-दराज के गाँवों का 'एकल भाषी' भी अनेक संप्रेषणात्मक स्थितियों में सही तरीके की भाषा इस्तेमाल करने की क्षमता रखता है। अनेक अध्ययनों से पता चला है कि बहुभाषिकता का संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक सहनशीलता, विकेंद्रित चिंतन एवं शैक्षिक उपलब्धि से सकारात्मक संबंध होता है। भाषाएँ एक दूसरे के सान्निध्य में फलती-फूलती हैं, साथ ही अपनी विशेष पहचान भी बनाकर रखती हैं। बहुभाषिक कक्षा में यह बिलकुल अनिवार्य होना चाहिए कि हर बच्चे की भाषा को सम्मान दिया जाए और बच्चों की भाषाई विविधता को शिक्षण विधियों का हिस्सा मानकर भाषा सिखाई जाए।[3]

Figure 11 कविता की सहायता से लिखित भाषा से परिचय की प्रक्रिया

शिक्षक बच्चों से स्थानीय भाषा सीखने-समझने की कोशिश करें और विद्यालय स्तर पर एक शब्दकोश (चित्र सहित) भी विकसित करें। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों की भाषा को समझें और बहुभाषी संवाद कायम करें, जिसमें उनकी भाषा का भरपूर उपयोग हो सके। बहुभाषी संवाद में एक ओर बच्चे अपनी बात को सहज रूप से व्यक्त कर पाएँगे तो दूसरी ओर शिक्षक भी बच्चों की भाषा और उसकी प्रचलित शब्दावली का अपनी चर्चा में उपयोग कर पाएँगे। धीरे-धीरे बच्चे इन भाषाओं, परिवेश में उपस्थित भाषाओं और हिन्दी पर अपनी पकड़ बना पाएँगे।

यह जानना ज़रूरी है कि सीखना समग्रता में होता है और अर्थ का निर्माण होना सीखने की ज़रूरी शर्त है। यह भी कि गलतियाँ सीखने की प्रक्रिया का अहम हिस्सा हैं और अपरिहार्य हैं।

3 एनसीईआरटी द्वारा संपादित और प्रकाशित 'समझ का माध्यम' पुस्तक से।

भाषा शिक्षण में शिक्षक क्या-क्या कर सकते हैं

- मातृभाषा के कक्षा में उपयोग के अवसर दें
- यदि यह भाषा शिक्षक नहीं जानते हों तो स्वयं इसे सीखें, बच्चों से मदद लें
- बच्चे की पूर्व समझ का कक्षा में उपयोग
- बातचीत का पढ़ना-लिखना सीखने में उपयोग
- पाठ्यपुस्तक का बेहतर उपयोग
- प्रिंट रिच माहौल और उपलब्ध पुस्तकालय का उपयोग
- लोक साहित्य का उपयोग

1.4.2 बच्चे की पूर्व समझ का उपयोग

बच्चे स्कूल आने के पहले से ही लिखित सामग्री से सीमित रूप से परिचित होते हैं और उनको संदर्भ और अर्थ के साथ समझते हैं। जैसे पारले-जी और टाइगर बिस्किट के पैकेट को पहचानने में पाँच वर्ष के बच्चे गलती नहीं करेंगे। वे पैकेट पर लिखे टेक्स्ट को चित्र, रंग इत्यादि से संपूर्णता में समझते और पढ़ते हैं। उसे पढ़ने के लिए उनको किसी वर्णमाला या अक्षर-ज्ञान की ज़रूरत नहीं होती। शब्द की पूरी छवि उनके समक्ष होती है और वे उसको अपनी अवधारणा में उस वस्तु के साथ जोड़कर देखते हैं। यह प्रक्रिया बच्चे ने कैसे पूरी की? अगर यह समझ बन जाती है तो शिक्षक वर्णमाला को रटाने की मशक्कत किए बिना सीधे छोटे-छोटे वाक्यों से शुरू कर पाठ तक संदर्भ के साथ पढ़ने की संभावना पर काम कर सकता है।

1.4.3 बातचीत

Figure 12 बच्चों से बातचीत के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें ध्यान से और पूरी गंभीरता के साथ सुना जाए

अगर हम उपरोक्त तथ्यों के केंद्र में भाषा के शिक्षक और उसकी कक्षा को रखकर देखें तो अपेक्षा है कि कक्षाएँ भाषाई रूप से समृद्ध हों और बच्चों को अपनी भाषा बरतने के उचित अवसर प्रदान करें। इसमें बातचीत और किसी मुद्दे पर चर्चा एक महत्त्वपूर्ण ज़रिया बन सकता है। इनमें मुद्दों को बच्चों के स्तर और रुचि के आधार पर सावधानी से चुनने की ज़रूरत है। जैसे- कक्षा एक और दो में बच्चों को उनके स्तर की कोई

कहानी सुनाकर उसमें से कुछ बातें चर्चा के लिए चुनी जा सकती हैं। जैसे- कछुआ और खरगोश की कहानी में खरगोश का बार-बार आराम करने के लिए रुक जाना, या शेर और खरगोश की कहानी में खरगोश का शेर को धोखा देना या झूठ बोलना। बच्चों के परिवेश से भी मुद्दे खोजे जा सकते हैं, जैसे- गाँव में या कक्षा में बच्चों के बीच हुई बातचीत या कोई छोटा-मोटा झगड़ा।

1.4.4 पाठ्यपुस्तक का उपयोग

अधिकतर विद्यालयों में बच्चों के पास औपचारिक रूप से टेक्स्ट से जुड़ने का एकमात्र माध्यम पाठ्यपुस्तकें ही होती हैं। वहीं एक ओर जहाँ औपचारिक शिक्षण के पाठ्यपुस्तक आधारित हो जाने की समस्या है, वहीं दूसरी ओर कक्षा एक और दो में आरंभिक भाषा शिक्षण से जुड़े हमारे अनुभव यह बताते हैं कि आमतौर पर पाठ्यपुस्तक का उपयोग भी नहीं किया जाता और न ही उसमें सुझाई गई प्रक्रियाओं का। ऐसे में यह ज़रूरी हो जाता है कि हम यह समझाने का प्रयास करें कि यदि बाल साहित्य उपलब्ध नहीं है तो ऐसे में पाठ्यपुस्तकों का उपयोग और भी आवश्यक हो जाता है। जिससे कि वे लिखित भाषा को सिर्फ़ और सिर्फ़ वर्णमाला के रूप में चार्ट या बोर्ड पर न देखकर उसे उसके व्यवस्थित रूप में पुस्तक में देख और समझ सकें। साथ ही यह इसलिए भी आवश्यक है कि अब अधिकतर राज्यों की पाठ्यपुस्तकें (कुछ राज्यों को छोड़कर) भाषा सिखाने की सार्थक प्रक्रियाओं को स्वयं में समाहित किए हुए अर्थपूर्ण विधियों को प्रस्तुत करती हैं। जैसे इनमें बच्चों की रुचि और स्तर के अनुरूप कहानी, कविता, बातचीत, चित्र और इनको कक्षा में पढ़ना, लिखना और रोचक पाठान्त अभ्यास होते हैं। ऐसे में इस बात की संभावना बढ़ जाती है कि कक्षा में इनका उपयोग शिक्षण प्रक्रिया को बोरिंग और मशीनी होने से कुछ हद तक बचाएगा।

1.4.5 प्रिंट रिच माहौल और पुस्तकालय उपलब्ध कराना

अगर कक्षा-कक्ष में बच्चों के सामने टेक्स्ट के उदाहरण अधिक से अधिक मौजूद हों और उन पर बच्चों की बार-बार नज़र पड़े तो संभव है कि वे उन शब्दों और वाक्यों को भी उसके संदर्भों और अर्थ के साथ समझ

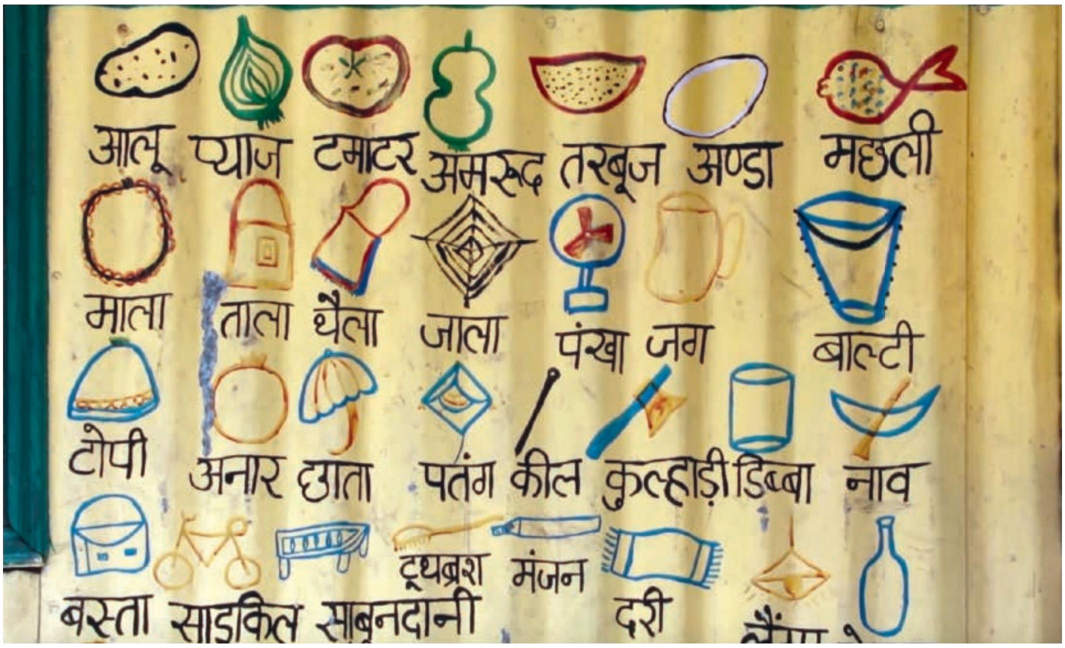

Figure 13 प्रिंट रिच वातावरण के अंतर्गत कक्षा में बनाए गए शब्द-दीवार का चित्र

पाएँगे। इसलिए कक्षा-कक्ष में बच्चों के स्तर की कहानियों, कविताओं, विज्ञापनों आदि का डिस्प्ले होना उनके भाषा सीखने में सहायक होगा। इसमें शिक्षक की मदद से बच्चों द्वारा गढ़ी गई कविताएँ और कहानियाँ, चित्र आदि को भी शामिल करना चाहिए और उनको बदलते भी रहना चाहिए। टेक्स्ट से परिचय को और बेहतर करने के लिए पुस्तकालय में मौजूद बच्चों के लिए लिखी गई चित्रात्मक पुस्तकें, चित्र-कथाएँ, कॉमिक्स आदि भी बेहद मददगार होती हैं।

Figure 14 एक प्राथमिक शाला के पुस्तकालय का दृश्य

अवधारणा बनाने की सहज प्रक्रिया है, जो वे बचपन से करते आ रहे हैं। आप सब ने देखा होगा कि अक्सर बच्चे अपने पिता को दादा या दद्दा कहते हैं। इसमें भी बच्चे अपने पिता को उसी छवि में देखते और अवधारणा बनाते हैं जिस नाम से उन्हें घर के बाकी लोग बुलाते हैं।

1.4.6 लोक साहित्य का उपयोग

कोई भी भाषा उसमें मौजूद कहानियों, गीतों, पहेलियों, कहावतों आदि से ही समृद्ध होती है। बच्चा भी अपने परिवेश में मौजूद भाषा को सीखने-समझने के क्रम में इनको सुनता, समझता और आनंद लेता चलता है। अतः कक्षा के वातावरण को बच्चों के लिए आकर्षक और सीखने के अनुकूल बनाने के क्रम में आरंभिक वर्ष में पढ़ना-लिखना सिखाने में लोक साहित्य जैसे कि चुनिन्दा कहानियों, गीतों का उपयोग होना चाहिए। इससे बच्चों में यह समझ बनती है कि स्कूल में जो पढ़ा-लिखा जाता है, वह कुछ अलग न होकर वही है जो वे अक्सर बोलते-सुनते हैं। ऐसे में बच्चा इन प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी निभाता है।

बच्चे की भाषा से सामग्री को चुनकर उसके माध्यम से पढ़ने-लिखने की शुरुआत की जा सकती है। इसके लिए लोकगीतों और लोककथाओं का उपयोग बेहद प्रभावी होता है। बच्चे उन्हें पहले से जानते हैं। ऐसे में टेक्स्ट के साथ उनका सामंजस्य बेहतर बन पाता है। आमतौर पर हमारे स्कूलों में अनेक भाषाओं की बजाय स्कूली भाषाओं- हिन्दी, अंग्रेजी के अतिरिक्त उनकी घरेलू भाषा का ही परिवेश होता है, जिसे हम बहुभाषिक कह सकते हैं। ये बहुभाषिकता बच्चों और शिक्षक के संवाद को समृद्ध करती है और बच्चे अन्य भाषा की अवधारणाओं की बेहतर समझ बना पाते हैं।

1.5 शिक्षकों के साथ कार्य की रूपरेखा

1.5.1 शिक्षक क्षमता संवर्द्धन हेतु कुछ सामान्य सैद्धांतिक बिंदु

1. शिक्षकों की अकादमिक आवश्यकता की पहचान ज़रूरी है, ताकि उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुरूप सहयोग (संवाद / प्रशिक्षण / प्रेरणा आदि) दिया जा सके।

2. शिक्षकों को स्थानीय स्तर (स्कूल/पीईईओ/क्लस्टर/ब्लॉक) पर ही नियमित रूप से सहयोग उपलब्ध होना चाहिए।

3. शिक्षकों की क्षमता संवर्द्धन के लिए सतत और विभिन्न माध्यमों से उनके साथ संवाद बनाए रखने की आवश्यकता होती है।

4. शिक्षक जब स्वेच्छा और रुचि के आधार पर क्षमता संवर्द्धन के कार्यक्रम में भागीदारी करते हैं तो बेहतर परिणाम मिलते हैं।

5. शिक्षकों के प्रति सम्मान रखना और सहज सम्बन्ध स्थापित करना, उनके साथ कार्य करने का आधार है। उनकी अपनी ज़िम्मेदारियों के प्रति समझ एवं प्रतिबद्धता और प्रभावी रूप से शिक्षण कार्य करने में जो कमियाँ नज़र आती हैं, उनके पीछे कई ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय और पेशेवर-विकास की प्रक्रिया से जुड़े कारण हैं। इन्हें समझने के लिए इनसे सम्बंधित सामग्री खोजकर नियमित रूप से पढ़ते रहने की ज़रूरत है।

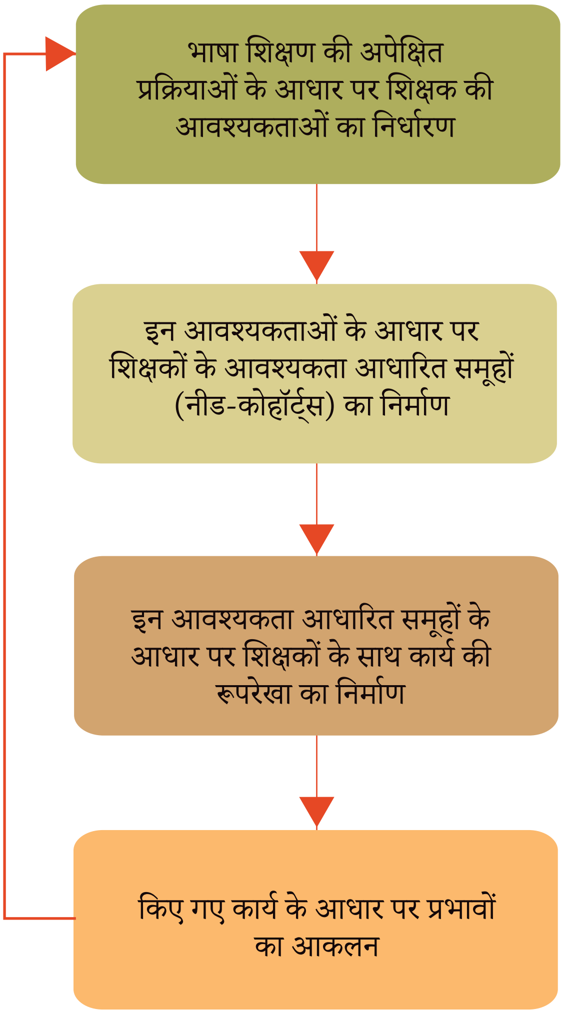

Figure 15 शिक्षकों के साथ काम के चरण

1.5.2 भाषा के शिक्षक की क्षमता संवर्द्धन हेतु कुछ सैद्धांतिक बिन्दु

i. यह समझना कि भाषा महज़ सम्प्रेषण का माध्यम भर नहीं है, वरन बच्चे के हाथ में एक ऐसा औज़ार (टूल) है, जिसके द्वारा वह अपने आस-पास के संसार को अर्थ देता है, इसके तौर-तरीकों को समझता है। अतः भाषा शिक्षण के केंद्र में होता है– अर्थ निर्माण और अर्थ सम्प्रेषण।

ii. यह समझना ज़रूरी है कि भाषा अर्जित करने की क्षमता जन्मजात होती है और किसी भी नस्ल, वर्ग, स्तर या सामाजिक पृष्ठभूमि के बावजूद प्रत्येक बच्चा भाषा सीखने की समान क्षमता के साथ विद्यालय आता है। इस क्षमता का तात्पर्य विभिन्न प्रयोजनों के लिए भाषा के अर्थ को समझने और इसका उपयोग करने की योग्यता से है। विद्यालय का कार्य इस क्षमता को पूर्णरूपेण विकसित ऐसी योग्यता में परिवर्तित करना है, जो बच्चे को समाज में रहते हुए दिन-प्रतिदिन आने वाली चुनौतियों से निपटने तथा ज्ञान के अर्जन और निर्माण में मदद कर सके। साथ ही साथ अमूर्त जटिल अवधारणाओं को समझने में सहायता कर सके।

Figure 16 कार्यशाला के दौरान संभागी शिक्षकों के साथ एक गतिविधि

iii. यह समझना कि विद्यालयी शिक्षा के शुरुआती वर्षों में बच्चे के घर/परिवेश की भाषा के उपयोग के संज्ञानात्मक तथा शैक्षणिक लाभ हैं, क्योंकि दुनिया की उसकी आरंभिक समझ, उसकी घर की भाषा के ज़रिए ही आकार लेती है। इसलिए बच्चों की घर की भाषा को स्कूल की भाषा सिखाने के लिए एक संसाधन के रूप में देखा जाए, न कि सीखने में बाधा के रूप में।

iv. यह समझना कि मनुष्य जगत के लिए, सांस्कृतिक पहचान, सम्मान और उसकी निरंतरता के लिए भाषाई विविधता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। समाज की बहुभाषी वास्तविकता को भी इसी संदर्भ में समझा जाना चाहिए। इसलिए अधिक भाषाओं का मतलब है– अधिक समृद्ध भाषाई अनुभव और संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास के अधिक अवसर। कक्षा-कक्ष में सीखने के समावेशी और सहज वातावरण के लिए भी आवश्यक है कि वहाँ परिवेश में मौजूद भाषाई विविधता को स्थान मिले। बच्चे के सम्मान में उसकी मातृभाषा का सम्मान शामिल होता है।

v. यह समझना कि मातृभाषा में अर्जित संज्ञानात्मक क्षमताओं से युक्त भाषाई प्रवीणता सभी भाषाओं को सीखने में काम आती है। इसीलिए यदि आपने एक भाषा की रणनीतियाँ सीख ली हैं तो नई भाषा सीखने में यह ज्ञान आसानी से नई भाषा में स्थानांतरित हो जाता है। अतः पूर्व में सीखी भाषा को नई भाषा सीखने के लिए उपयोग में लाया जाना चाहिए।

vi. यह समझना कि बच्चा अपने साथ अपनी भाषा में जीवन और दुनिया से संबन्धित जो समझ और अनुभव लेकर आता है, वह उसके पढ़ना-लिखना सीखने के लिए आवश्यक बुनियाद का काम करते हैं। इसलिए भाषा की कक्षा में मौखिक भाषा के प्रयोग के विभिन्न अनुभवों तथा अवसरों के निर्माण की आवश्यकता और महत्त्व को भी पर्याप्त स्थान देना ज़रूरी है।

vii. यह समझना कि भाषा तथा पढ़ना-लिखना सीखना जीवन-पर्यन्त चलता रहता है, इसलिए इसे प्रत्येक स्तर पर उचित समय और सहायता की आवश्यकता होती है।

viii. यह समझना कि सीखने के किसी भी अन्य क्षेत्र की तरह ही भाषा सीखना भी आयु-उपयुक्त और रुचिकर सामग्रियों तथा निर्देशों की मांग करता है।

ix. यह समझना कि सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशलों को अलग-अलग कौशलों के रूप में देखा या सिखाया नहीं जाना चाहिए, क्योंकि ये कौशल परस्पर गुँथे हुए हैं और इन्हें अलग-अलग टुकड़ों में विकसित नहीं किया जा सकता।

x. तमाम विषयों की सीमाएँ सीखने को आसान बनाने के लिए हैं, न कि उन्हें विषयों में बांधने के लिए। भाषा का सूत्र हर विषय के गले से लिपटकर गुजरता है।

अब यदि भाषा शिक्षण से संबन्धित उपरोक्त सिद्धांतों को व्यावहारिकता के चश्मे से देखें तो पाते हैं कि हम यह बात अभी तक शिक्षकों के बड़े समूह तक नहीं पहुँचा पाए हैं। इस मान्यता के भी कुछ खास उत्साहवर्द्धक परिणाम नहीं मिले हैं कि यदि शिक्षकों के पास 'भाषा, सीखने की प्रक्रिया और बच्चों से जुड़ी सैद्धांतिक समझ' हो तो इन्हें ध्यान में रखते हुए शिक्षक अपनी-अपनी कक्षाओं में भाषा शिक्षण हेतु अपनाई जा रही पद्धतियों या प्रक्रियाओं का स्वतः ही समालोचनात्मक विश्लेषण कर पाएँगे और उनमें निहित कमियों को दूर करते हुए प्रक्रिया को बच्चों की दृष्टि से और अधिक सरल, सार्थक, रोचक, समावेशी और संयोजित बना पाएँगे।

उदाहरण के लिए यदि हम शिक्षकों को यह समझा पाने में कामयाब हो जाते हैं कि उनके द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं या पद्धति में क्या समस्याएँ हैं, या फिर यह कि सभी बच्चे सीख सकते हैं, उनमें सीखने की स्वाभाविक इच्छा और क्षमता होती है, सभी बच्चों की सीखने की क्षमता और गति अलग-अलग होती है, सिखाने के तरीके सार्थक हों तो सीखना आसान हो जाता है और यदि एक तरीका काम न कर रहा हो तो संभव है कि कोई दूसरा तरीका काम में लाया जा सकता है; तो समझ के एक स्तर पर शिक्षक इन सिद्धांतों से सहमत हो जाते हैं, लेकिन जब बात विद्यालय आधारित भाषा की शिक्षण प्रक्रियाओं को इन सिद्धांतों के अनुरूप ढालने की होती है तो इसके अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते।

इसके पीछे के कारणों को देखें तो समझ में आता है कि हम उन्हें सुझाई जा रही प्रक्रिया को (जो कि उनके लिए नई है) प्रदर्शित करके नहीं दिखा पाते। न दिखा पाने के पीछे का एक कारण यह है कि इसके लिए बच्चों के साथ कक्षा में एक से दो वर्ष तक इस प्रक्रिया के आधार पर भाषा शिक्षण का प्रदर्शन होना चाहिए, जिससे कि इसके परिणामों को देखा जा सके, लेकिन यह संभव नहीं है। अतः ये बातें शिक्षकों के साथ सेवारत शिक्षण

प्रशिक्षणों, हमारे द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यशालाओं, अन्य गतिविधियों या फिर हम जैसी संस्थाओं द्वारा कभी-कभार कक्षा शिक्षण के प्रदर्शन द्वारा की जाती हैं। लेकिन इतना भर शिक्षण प्रक्रियाओं में आमूल-चूल परिवर्तन के लिए प्रभावी नहीं होता। हाँ, इसके फलस्वरूप इतना ज़रूर हो जाता है कि कुछ शिक्षक अपनी प्रक्रियाओं को इस अनुरूप ढालने की कोशिश करते हैं और फलस्वरूप अपनी कक्षाओं को बच्चों के सीखने के लिए और अधिक रोचक, आकर्षक और सरल बना पाते हैं, लेकिन भाषा शिक्षकों का एक बड़ा वर्ग इन परिवर्तनों को आत्मसात नहीं कर पाता।

ज़रूरत इस बात की है कि हम सटीक रूप से शिक्षकों को यह सुझा पाएँ कि वे अपनी प्रक्रियाओं में ऐसा क्या या क्या-क्या परिवर्तन करें, जिससे कि उनकी प्रक्रियाएँ बच्चों के लिए अधिक सार्थक और ग्राह्य हो सकें। इसके लिए हमें उनके द्वारा वर्तमान में अपनाई जा रही प्रक्रियाओं को देखना, समझना और विश्लेषित करना होगा।

इस परिवर्तन को सुनिश्चित करने के लिए हमें कुछ बिन्दुओं का ध्यान रखना होगा, जैसे- हम शिक्षक की प्रक्रियाओं को सीधे-सीधे नकारें नहीं। यह ध्यान में रखते हुए कि हमें शिक्षक को सार्थक सिखाने की प्रक्रियाओं और अर्थपूर्ण सीखने की तरफ ले जाना है, हम धीरे-धीरे उनकी अपनी प्रक्रियाओं में ही सार्थक बिन्दुओं या प्रक्रियाओं को जोड़ते जाने या सुझाने का प्रयास करें। फिर जैसे-जैसे उनकी स्वीकृति हमारे प्रति और हमारे काम के प्रति बढ़ती जाएगी, हम उनकी प्रक्रियाओं में अपेक्षित बदलावों को और बेहतर एवं सशक्त ढंग से सुझा पाएँगे। इस हेतु शिक्षक/शिक्षकों को विश्वास में लेते हुए चर्चा का आरंभ इस प्रकार से भी किया जा सकता है:

“ आज जबकि सभी यह मानते हैं कि बच्चे स्वाभाविक रूप से समझना और सीखना चाहते हैं और प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति और तरीका एक जैसा नहीं होता, अतः शिक्षक द्वारा अपनाई जा रही एक ही तरह की प्रक्रिया से (भले ही वह एक बेहतर प्रक्रिया क्यों न हो) सभी बच्चों का सीखना सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। अतः यदि कक्षा के 60-70 प्रतिशत बच्चे शिक्षक द्वारा अपनाई जा रही प्रक्रिया से सीख रहे हैं और 20 प्रतिशत नहीं, तो बहुत हद तक संभव है कि इन प्रक्रियाओं में थोड़ा-बहुत बदलाव या फिर कुछ और सार्थक और रोचक गतिविधियों का समावेश सीखने वाले बच्चों के प्रतिशत को बढ़ा कर 90-95 प्रतिशत कर दे। अतः प्रक्रियाओं में परिवर्तन सिर्फ़ इसलिए करने को नहीं कहा जा रहा है कि अब तक अपनाई जा रही प्रक्रियाएँ सही नहीं थीं, बल्कि इसलिए भी अपेक्षित है कि प्रक्रियाओं में विविधता उन बच्चों को भी आकर्षित और प्रेरित करेगी जिनकी पहले से अपनाई जा रही प्रक्रियाओं में कोई दिलचस्पी नहीं है। ”

बात अलग-अलग पद्धतियों की करें तो हम देखते हैं कि सभी में कुछ-न-कुछ सुधार की गुंजाइश बनी रहती है। उदाहरण के लिए बात संदर्भ या समग्र पद्धति से भाषा-शिक्षण की करें तो उसमें भी किसी कहानी या कविता को सुनाने या उस पर कार्य करने के बाद हम उनमें से कुछ शब्दों का चुनाव, सिखाए जाने वाले वर्णों को ध्यान में रख कर करते हैं। लेकिन दो-चार स्टेप के बाद देखें तो हम वर्ण तक आते-आते शायद उतनी ड्रिलिंग या अभ्यास बच्चों के साथ नहीं करते जितनी कि उन अक्षरों और उनसे संबन्धित ध्वनियों की समझ बनाने के लिए आवश्यक है। मतलब टॉप-डाउन अप्रोच में जहाँ हम टॉप से बॉटम तक तो जाते हैं, लेकिन

अक्सर बॉटम पर उतना प्रयास नहीं करते जितना कि अच्छे से अक्षर ज्ञान के लिए आवश्यक होता है। वहीं इसके उलट बॉटम-अप में हम वर्णों को सिखाने में ही इस तरह से फँसकर रह जाते हैं कि इन्हें संदर्भ से जोड़ने के लिए उतना प्रयास नहीं होता जितना कि पढ़ने-लिखने को सार्थक, रोचक और जीवन से जोड़ने के लिए आवश्यक है। अतः बेहतर रहेगा कि हम एक ऐसी बैलेंस्ड अप्रोच की बात करें, जिसमें अक्षरों की पहचान और उनसे संबन्धित ध्वनियों पर भी उसी सार्थकता और शिद्दत से काम हो रहा हो जितनी कि उन्हें व्यापक अनुभवों, संदर्भों और पठित या लिखित सामग्री से जोड़ने से।

इस हेतु हमारे पास कुछ ऐसे सुझाव होने चाहिए जो शिक्षक अपनी प्रक्रियाओं में परिवर्तन लाने और उन्हें सार्थक बनाने के लिए कर सके। जैसे हम उनसे यह कह सकते हैं कि क पर काम करते हुए वे बस कबूतर तक ही सीमित न रहें, बल्कि अन्य ऐसे शब्दों को भी शामिल करें जो क से संबन्धित हों। जैसे NCERT की हिंदी भाषा पाठ्यपुस्तक 'रिमझिम' देख सकते हैं। हम यह सुझाव दें कि पूरी वर्णमाला के बाद शब्द तक आने से पहले यदि हम सिर्फ़ क वर्ग के चारों अक्षरों (क, ख, ग, घ) को ही पढ़ाने के बाद ऐसे शब्दों को बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करें जो इन वर्णों से बने हैं। जिससे कि बच्चे सिर्फ़ चार वर्णों के पारायण के पश्चात ही यह आत्मविश्वास पा जाएँगे कि वे पढ़ सकते हैं। उन वर्णों से जुड़े शब्दों को सोच सकें। शब्दों से जुड़े चित्रों का उपयोग करें, चित्र-शब्द कार्ड का उपयोग कर सकें, पूरी वर्णमाला के बाद मात्राओं पर आने के स्थान पर एक वर्ग के अक्षरों को पढ़ाने के बाद ही किन्हीं एक या दो मात्राओं से बच्चों को परिचित करवाएँ। उदाहरण के लिए सुझाया जा सकता है कि क, ख, ग, घ पढ़ाने के बाद ही आ या इ-ई की मात्रा से परिचित कराया जाए। फिर च वर्ग के वर्णों पर काम हो और फिर उनके बाद किसी अन्य मात्रा पर कार्य किया जाए। यदि शिक्षक इस प्रकार शिक्षण कार्य करवाने लगें तो फिर आगे चलकर हम उन्हें यह भी सुझा सकते हैं कि भाषा शिक्षण के दौरान वर्णों को निश्चित क्रम में सिखाया जाए, यह ज़रूरी नहीं। इन्हें किसी भी ऐसे क्रम में सिखाया जा सकता है जिनसे संबन्धित शब्द या अवधारणाएँ बच्चों के परिवेश में आसानी से उपलब्ध हों। इससे एक तरफ जहाँ और अधिक सार्थक शब्दों का उपयोग वर्णों को सिखाने और उनकी पहचान को पुख्ता करने में किया जा सकेगा, वहीं हम ऐसी कतिपय कहानियों और कविताओं का चुनाव भी कर सकते हैं जिनमें पूर्व में सिखाए गए वर्ण और मात्राएँ शामिल हों। फिर हम पाएँगे कि इनका उपयोग प्रक्रियाओं को रोचक और आकर्षक बनाने के साथ ही साथ उन्हें सार्थक भी बनाता है। कहने का तात्पर्य यह कि हम कुछ ऐसे छोटे-छोटे सुझाव शिक्षकों के समक्ष प्रस्तुत करें जो व्यावहारिक हों, आसानी से समझाए और किए जा सकते हों और शिक्षक की प्रक्रियाओं को सार्थक बनाने में सहायक हों। यहाँ इन सुझावों के दौरान यह भी ध्यान रखा जाए कि ये धीरे-धीरे चरणवार ढंग से क्रमशः दिए जाएँ, जिससे कि इन्हें आसानी से स्वीकार किया जा सके और उन्हें यह भी न लगे कि अब तक उनके द्वारा अपनाई गई प्रक्रियाएँ गलत थीं।

इसके साथ ही साथ हमारे लिए भाषा शिक्षण से संबन्धित किसी भी पद्धति या प्रक्रिया का समालोचनात्मक अध्ययन और उसे अपनाने या न अपनाने से जुड़े स्पष्ट कारणों और तर्कों को समझना भी आवश्यक है। इसे ध्यान में रखते हुए एनेक्स्ज़र (annexure) में वर्तमान में मौजूद प्रचलित तरीकों पर एक संक्षिप्त लेख सन्निहित है। यह लेख भाषा शिक्षण की प्रचलित पद्धतियों के साथ ही साथ व्यवहारवाद, संज्ञानवाद और ज्ञानसृजनवाद जैसे सीखने के महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों के आलोक में भी इन पद्धतियों और अन्य प्रचलित भाषा शिक्षण प्रक्रियाओं को देखने का प्रयास करता है।

भाषा के शिक्षक की क्षमता संवर्द्धन हेतु अपनाई जाने वाली प्रक्रियाएँ

भाषा शिक्षण की प्रक्रिया अन्य विषयों की शिक्षण प्रक्रियाओं से अलग होती है। अन्य विषयों की तरह भाषा में केवल विषयवस्तु जैसे कहानी, कविता, चित्र, लिपि पहचान के मॉडल इत्यादि केंद्र में नहीं होती, वरन् भाषा की कक्षा का वातावरण और शिक्षण के दौरान अपनाई जाने वाली प्रक्रियाएँ महत्त्वपूर्ण होती हैं। आशय यह कि भाषा की कक्षा में अपनाई जाने वाली प्रक्रियाएँ और कक्षा का वातावरण भाषा सीखने को सीधे-सीधे प्रभावित करता है। इसलिए ज़रूरी है कि शिक्षण में इनके केंद्रीय महत्त्व को समझते हुए प्रक्रियाओं का निर्माण

Figure 17 भाषा की एक कार्यशाला में समूह कार्य का दृश्य

किया जाए, जिससे बच्चे भाषा के विभिन्न रूपों और प्रयोगों को उनके पूरे संदर्भ के साथ उपयुक्त माहौल में सीख सकें। भाषा सीखना, मुख्य रूप से इसके कौशलों को व्यवहार में बरतना है; इसलिए ज़रूरी यह भी है कि बच्चों के लिए इन कौशलों के पर्याप्त अनुभव शिक्षण प्रक्रिया में शामिल किए जाएँ। यहाँ विषयवस्तु का चयन विभिन्न स्रोतों से बच्चों की रुचि, भाषा के स्तर, चिह्नित प्रक्रिया और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए होना चाहिए। इन प्रक्रियाओं हेतु आवश्यक विषयवस्तु के चयन और उनपर कार्य के तरीकों पर अगले अध्याय में विस्तार से चर्चा की गई है।

अब यहाँ हम उन रणनीतिक पहलुओं को चिह्नित कर रहे हैं जो शिक्षकों के साथ हमारे काम के केंद्र में हैं-

- शिक्षकों के साथ हमारे कार्य का सबसे महत्त्वपूर्ण बिन्दु है, उनकी अकादमिक और शिक्षणशास्त्रीय ज़रूरतों को समझना। ज़रूरतों को समझने की यह प्रक्रिया अपने आदर्श रूप में इस प्रकार होनी चाहिए कि हम शिक्षक का कक्षा में शिक्षण के दौरान अवलोकन करें, या सहयोगात्मक अभ्यासों के दौरान महसूस करें, और फिर पूरी प्रक्रिया पर शिक्षक के साथ चर्चा कर आवश्यक शैक्षणिक सहयोग के बिन्दुओं को निर्धारित करें।

- यह आवश्यक है कि कक्षा अवलोकन या कक्षा अभ्यास के लिए पूर्व तैयारी के साथ जाएँ और अवलोकन के बिन्दु और शिक्षण योजना पूर्व निर्धारित हों। एक या दो सरसरे अवलोकनों के आधार पर बच्चों के सीखने के स्तर या शिक्षक के बारे में कोई भी राय कायम करने से बचें।
- बच्चों के सीखने के स्तर को समझने के लिए बच्चों के साथ गतिविधियाँ व बेसलाइन आकलन करना ज़रूरी है। बच्चों का सीखना कक्षा में हो रही प्रक्रियाओं का परिणाम होता है। अतः यह समझने के लिए कि शिक्षक द्वारा अपनाई जा रही प्रक्रियाओं में किसी बदलाव की आवश्यकता है, हमें बच्चों के शैक्षणिक स्तर को समझना होगा।
- आकलन व कक्षा अवलोकन के आधार पर शिक्षक के लिए मदद के बिन्दु व माध्यम सुनिश्चित करना व शिक्षक से चर्चा करना।

उदाहरण

कक्षा 3 के हिन्दी भाषा के शिक्षक से चर्चा के दौरान उनका कहना था कि उनकी कक्षा के 10 में से 8 बच्चों को पढ़ना आता है। इसके बाद कक्षा अवलोकन के दौरान समझ में आया कि उन आठ बच्चों में से 4 बच्चे अपने पढ़े हुए के अर्थ बता पाने में परेशानी महसूस करते हैं। इस तथ्य से यह समझ में आया कि शिक्षक के साथ पढ़ने की समझ को लेकर कार्य की आवश्यकता है, जिससे वे इस बात को समझ सकें कि डिकोडिंग पढ़ने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है न कि पढ़ना, और पढ़ने में अर्थ निर्माण निश्चित रूप से शामिल है। शिक्षक के साथ कार्य के तरीकों का चुनाव चिह्नित मुद्दों और शिक्षकों की संख्या के आधार पर किया जा सकता है। यदि हम उपरोक्त उदाहरण को ध्यान में रखें तो इस विषय पर शिक्षकों के साथ वीटीएफ़ या वन-टू-वन डिस्कशन द्वारा कार्य किया जा सकता है।

- कुछ बिन्दुओं को चुनकर उनपर स्वयं काम करके शिक्षक को दिखाएँ, कुछ बिन्दुओं को शिक्षक के साथ योजना बनाकर कक्षा में काम करें।
- बिन्दुवार मदद सुनिश्चित करना और कक्षावलोकनों के माध्यम से देख पाना कि की गई मदद का लाभ बच्चों को कक्षा-कक्ष में मिल रहा है।
- समय-समय पर कक्षावलोकनों के दौरान आकलन प्रपत्र के माध्यम से बच्चों की प्रगति का अवलोकन करना और इसे शिक्षक के साथ साझा करना।
- फील्ड की वास्तविकताओं को देखें तो अधिकतर संभव नहीं हो पाता है कि हम प्रत्येक शिक्षक की शैक्षणिक प्रक्रियाओं का अवलोकन कर पाएँ। ऐसा अक्सर होता है कि हमारी उपस्थिति में शिक्षक क्लास की ज़िम्मेदारी हमारे ऊपर छोड़ देते हैं और हम उनकी शैक्षणिक प्रक्रियाओं का अवलोकन नहीं कर पाते।
- ऐसी स्थिति में हमें कक्षा में बच्चों से चर्चा कर उनके शैक्षणिक स्तर को समझने का प्रयास करना चाहिए, जिससे बच्चों के सीखने की तुलना उनके साथ होने वाली भाषा शिक्षण की प्रक्रिया से की जा सके। फिर शिक्षक विशेष की शिक्षण प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने से संबन्धित बिन्दुओं का चुनाव कर सकें।
- एक निश्चित संख्या में शिक्षकों के साथ कार्य के लिए आवश्यक है कि अधिक से अधिक शिक्षकों की आवश्यकता पहचान ठीक से की जाए। ऐसा तभी संभव होगा जब हम इस हेतु स्कूल विजिट और कक्षा-कक्ष अवलोकन से इतर इस प्रकार की अन्य संभावनाओं को तलाशें। ऐसी संभावनाएँ उन

सभी अवसरों और स्थानों पर मौजूद होती हैं जहाँ-जहाँ हम शिक्षकों से मिलते हैं। कार्यशालाएँ, सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षक मंच की बैठकें, सेमीनार, शिक्षकों या विभिन्न मुद्दों से जुड़े विशेष समारोह आदि ऐसे संभावित अवसर हो सकते हैं, जहाँ हम शिक्षकों के साथ औपचारिक या अनौपचारिक चर्चा के द्वारा उनकी शैक्षणिक आवश्यकताओं का निर्धारण कर सकते हैं।

- शिक्षकों के साथ कार्य के साथ ही साथ हमें विभागीय अधिकारियों के साथ भी समय-समय पर बात करते रहना चाहिए, जिससे कि बेहतर शिक्षण विधियों के उपयोग और सीखने की प्रक्रिया से जुड़ी उनकी समझ तथा उनकी कार्यप्रणाली शिक्षक के कार्य में बाधा न बनकर उत्प्रेरक बने।

भाषा के शिक्षक की क्षमता संवर्द्धन के तरीके क्या हों

फाउंडेशन का मानना है कि शिक्षकों के अकादमिक संबलन का काम सतत और क्रमबद्ध रूप में होना चाहिए और किसी एक तरीका- मिसाल के तौर पर वार्षिक अंतराल पर आयोजित होने वाली कार्यशाला से कभी भी कारगर नहीं हो सकता। अकादमिक संबलन के लिए यह भी ज़रूरी है कि उन मुद्दों की ठीक से पहचान हो सके जिन पर उन्हें मदद की दरकार है। यह संभव नहीं कि एक शिक्षक साल भर आने वाली कठिनाइयों को संकलित करता रहे और वर्षांत में उनका निराकरण किया जाए। दूसरी ओर यह भी संभव नहीं कि शिक्षकों को बार-बार स्कूल से बाहर लाया जाए और बच्चों की पढ़ाई बाधित हो। ऐसे संबलन से बच्चों के परिणाम में उसका प्रतिफल देखने को नहीं मिलेगा।

ऐसे में आवश्यक है कि वे मौके तलाशे जाएँ जो शिक्षकों की ज़रूरत और कठिनाइयों को उस वक्त दूर करने में मदद करें जब उनकी ज़रूरत हो। यह क्रम उनके साथ काम करते हुए उनकी चुनौतियों को सतत रूप से समझते हुए हो। क्योंकि हमारे लिए यह संभव ही नहीं है कि हम प्रत्येक शिक्षक के साथ उनकी कक्षाओं में व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करें। अतः हमें अपनी कार्यशालाओं की योजना इस तरह से निर्मित करनी चाहिए कि इस दौरान ही कक्षागत प्रक्रियाओं को भी प्रदर्शित किया जाए और वो भी इस तरह से कि कार्यशाला के बाद शिक्षक अपनी कक्षाओं में इसे आसानी से लागू कर सकें। इसका एक तरीका यह भी हो सकता है कि यदि हमें विद्यालयों में ही ऐसे सत्रों के आयोजन का अवसर मिले तो हम सत्र का एक हिस्सा बच्चों के साथ डेमो के रूप में प्लान कर सकते हैं। ऐसा करना इसलिए भी प्रभावी होगा क्योंकि यहाँ हम बच्चों को आ रही समस्याओं और कार्य के प्रभाव दोनों को स्पष्ट रूप से दिखा सकते हैं।

सब जानते हैं कि स्कूल में पढ़ाने के दौरान न सीख पाने या न सिखा पाने की कशमकश से हर शिक्षक जूझता है और वह उन उपायों की तलाश में रहता है जो उसे इस मुश्किल से बाहर निकाल पाएँ। इसके लिए उससे सतत संवाद स्थापित करने के लिए उसके स्कूल में जाना, कक्षा अवलोकन करना, सुझाए जा सकने वाले तरीकों पर खुद काम करके दिखाना आवश्यक होगा। कक्षाओं का अवलोकन और कक्षाओं में शिक्षक की उपस्थिति या अनुपस्थिति में कार्य के द्वारा हम बच्चों के सीखने और प्रक्रियाओं के बेहतर क्रियान्वयन के उदाहरणों का भी चयन कर पाएँगे, जो शिक्षकों के साथ हमारे कार्य को और अधिक प्रभावी और ग्राह्य बनाएगा। साथ ही साथ जब भी मौका मिले, शिक्षकों के साथ समेकित रूप से मिल-बैठकर समस्याओं पर चर्चा करना ज़रूरी होगा। समेकित रूप से बैठना कई रूपों में संभव है, जैसे-

- स्कूल में ही साप्ताहिक/मासिक बैठक जिसमें उस स्कूल के सभी शिक्षकों के साथ बैठकर चर्चा करें।

- संकुल/पंचायत स्तर पर होने वाली बैठकों में एक ही विषय को पढ़ा रहे शिक्षकों या मिश्रित समूह, जैसा भी अवसर मिले, उनके साथ योजनाबद्ध तरीके से काम करके।
- सायंकाल में स्कूल बंद होने के बाद किसी कॉमन जगह पर बैठकर चर्चा करना आदि, जैसे- वीटीएफ या सब्जेक्ट फोरम।

शिक्षक के साथ हमारे काम को सतत और सघन रूप से देखने की ज़रूरत है। शिक्षक के साथ काम को सतत रूप में देखने से आशय है कि शिक्षक के साथ हमारा संबंध इस स्तर का हो कि वे हमसे बेझिझक राय या मदद मांग सकें, कक्षा अवलोकनों और उनसे बातचीत के आधार पर उनकी ज़रूरतों का हमें पता हो और उन्हें यह विश्वास हो कि हमारे बताए तरीकों से उन्हें मदद मिलेगी और वे कक्षा में बच्चों के साथ बेहतर काम कर पाएँगे। सघनता से आशय है कि हमारे द्वारा की गई मदद के परिणामों पर हमारी नज़र हो, ताकि अगर बताई गई प्रक्रिया में कोई चूक हो रही है या उसमें कक्षा के अनुरूप किसी बदलाव की ज़रूरत हो तो हम उनके लिए समय रहते उपस्थित रह सकें।

संक्षेप में कहें तो इसमें कोई दो राय नहीं कि इस सम्पूर्ण कार्य का अंतिम उद्देश्य बच्चों को भाषा में पारंगत करना ही है। अतः यह समझना होगा कि बच्चों को सिखाने के तरीके भले ही भिन्न-भिन्न हों, लेकिन उनमें ये तीन बिन्दु आवश्यक रूप से समाहित हों-

i. भाषा सिखाने के तरीके बच्चों के सहज वातावरण में सीखने से मेल खाते हों, यानी वे तरीके ऐसे हों जो बच्चों को एक स्वयं से सीखने वाली एजेंसी के तौर पर देखते हों। वे उस सीखने में अपने पूर्व-अनुभवों और परिवेश में रहते हुए सीखे गए ज्ञान को काम में ला सकें।
ii. भाषा सिखाने के तरीके भाषा की प्रकृति के अनुकूल हों, यानी उनमें सीखने के लिए सदैव एक संदर्भ और अर्थ की संभावना हो, जैसा कि भाषा में अर्थ प्राकृतिक रूप से सदैव ही मौजूद रहता है।
iii. बच्चे के बारे में समझ से जुड़ते हों, यानी हर बच्चे की सीखने की गति, उसकी रुचि से मेल खाते हों। भय और अरुचिकर दबाव से रहित हों।

इन प्रक्रियाओं को पहचानने, समझने, विश्लेषित करने और इन्हें सार्थक बनाने हेतु आवश्यक समझ और तरीकों को हम अध्याय तीन (नीड-कोहॉर्ट से संबन्धित) में विस्तार से देखेंगे। वहीं हम यह भी समझने का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार विभिन्न आवश्यकता वाले शिक्षकों की आवश्यकताओं को समझा जाए, उन्हें वर्गीकृत किया जाए, उनपर कार्य किया जाए और फिर इन कार्यों के प्रभाव का आकलन किया जाए।

1.6 भाषा शिक्षण सम्बन्धी बुनियादी समझ

ऊपर प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण से जुड़ी हुई तमाम अपेक्षित बातों की चर्चा की गई है। इसमें कक्षा-कक्ष में आने वाली चुनौतियों, कक्षा-कक्ष और बच्चे के घर के माहौल में फ़र्क और ऐसी परिस्थिति में शिक्षक से अपेक्षाओं की बात की गई है। साथ ही शिक्षक की क्षमता संवर्द्धन हेतु कुछ सैद्धांतिक बिन्दुओं, अपनाई जाने वाली प्रक्रियाएँ और क्षमता संवर्द्धन के तरीकों पर भी बात की गई है। अब हम भाषा शिक्षण सम्बन्धी बुनियादी समझ पर थोड़ा विस्तार से बात करेंगे और इस क्रम में भाषा के विभिन्न कौशलों को भी थोड़ा गहराई से समझेंगे। इसमें बोलने-सुनने को मौखिक भाषा के रूप में और पढ़ने-लिखने को समझने का प्रयास करेंगे। इन पर बात करने का उद्देश्य यह है कि शिक्षकों के साथ काम करते हुए इन कौशलों की बारीकियों पर काम किए जाने के लिए उनसे चर्चा की जा सके और जो गैप आमतौर पर शिक्षण में छूट जाते हैं, उन्हें भरा जा सके।

1.6.1 भाषा, परिवेश और सीखना

पहले भी कहा जा चुका है कि सीखने का सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है भाषा। भाषा संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास का आधार बनती है। इसलिए यह समझना ज़रूरी है कि भाषा शिक्षण केवल भाषा सिखाना नहीं, बल्कि यह सिखाना भी है कि भाषा के ज़रिए शेष ज्ञान तक पहुँच कैसे बनाई जाए। सीखने के लिए समझना आवश्यक होता है और समझ के निर्माण के लिए अर्थ निर्माण आवश्यक है तथा अर्थ निर्माण के लिए भाषा आवश्यक है। अतः भाषा हमें सोचने, तर्क करने, विश्लेषण करने, प्रश्न करने, और निष्कर्ष तक पहुँचने में मदद करती है। इन्हीं संज्ञानात्मक क्षमताओं की सहायता से हम बहुत कुछ सीख भी रहे होते हैं, या अवधारणाओं का निर्माण कर रहे होते हैं। इसमें हमारे आस-पास का परिवेश काफी मददगार होता है। यह परिवेश हमें बहुत-सी अवधारणाएँ और समझ अनजाने ही दे देता है। हमारी सारी व्यावहारिक समझ परिवेश के साथ अंतःक्रिया करते हुए ही विकसित होती है। हमारी संवेदना, हमारी संस्कृति, हमारा सौंदर्यबोध, ये सब कुछ हमारे परिवेश पर ही निर्भर करता है और यह सत्य है कि ये सब बिना भाषा के संभव नहीं। साथ ही यह भी उतना ही सत्य है कि संस्कृति, संवेदना और सौंदर्यबोध के बिना हम अपनी कल्पना भी नहीं कर सकते। इस तरह हम स्वयं भी अपनी पहचान भाषा से ही करते हैं।

किसी भी विषय को जब जीवन से काटकर देखे जाने की कोशिश की जाती है तो उसमें कृत्रिमता और बोझिलता आ जाती है। यही बात भाषा पर भी लागू होती है। जब हम भाषा को बच्चों के और अपने जीवन से जोड़ देते हैं तो वह जीवंत हो जाती है। जीवन से जोड़े बिना भाषा को सीखने-सिखाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। वहीं जब हम किसी भी कविता, कहानी या लेख को जीवन से जोड़ देते हैं तब भाषा में परिवेश का समावेश अपने आप हो जाता है। इसके लिए किसी अतिरिक्त प्रयास की ज़रूरत नहीं पड़ती।

1.6.2 भाषा के कौशल

मौखिक भाषा विकास

बच्चे जब पहली बार विद्यालय आते हैं तो वे अपने घर से भाषा का एक भरा-पूरा संसार अपने साथ लिए हुए होते हैं। वे जब स्कूल में दाखिला लेते हैं तब अपनी मातृभाषा को पूरे प्रवाह के साथ बोल रहे होते हैं। मौखिक भाषा पढ़ने और लिखने का आधार होती है। छोटे बच्चे मुख्य रूप से बातचीत या फिर बोलकर ही सोचते हैं।

अतः बच्चों को बातचीत और अभिव्यक्ति के विभिन्न अवसर देना, उनके सोचने और समझने के कौशलों को विकसित करने में मदद करता है।

जिन क्षेत्रों में हम कार्य करते हैं, उनमें यह बहुत संभव है कि बच्चे की घर की भाषा और उसके विद्यालय की भाषा या उसे पढ़ाई जाने वाली भाषा (हिंदी) में अंतर हो। अतः बच्चों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह पढ़ना और लिखना सीखने से पहले उसके आधार के रूप में मौखिक भाषा को उसके पूरे परिवेश के साथ सीखें और उसे सुनने, समझने, बोलने और विभिन्न परिस्थितियों में प्रयोग करने के अवसर पाएँ। ये अवसर बच्चे के लिए पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया को सार्थक और आकर्षक बनाने में मदद करते हैं। यह लक्ष्य शुरुआती कक्षाओं में केवल पाठ्यपुस्तक से पढ़ने और लिखने से हासिल नहीं हो सकता। शुरुआत से ही बच्चों के साथ बातचीत, चर्चा, उनसे स्तरीय प्रश्न पूछना, उन्हें सोचने और तर्क करने के लिए प्रोत्साहित करना और प्रचुर शब्दावली के विकास से इस प्रक्रिया में मदद मिलती है। अतः विशेष रूप से पहली कक्षा में यह हमारा प्रयास होना चाहिए कि बच्चों को मौखिक भाषा विकास के सार्थक और प्रचुर मौके दिए जाएँ।

Figure 19 कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत

मौखिक भाषा के विकास पर बहुत अधिक ध्यान न दिए जाने के पीछे की समझ यह है कि मौखिक भाषा से तात्पर्य बोलने और सुनने से है और यह तो बच्चों को पहले से ही आता है। लेकिन मौखिक भाषा का विकास बोलने और सुनने से कहीं अधिक की मांग करता है, इसमें निहित कौशल कुछ इस प्रकार हैं–

i. सुने हुए पर प्रतिक्रिया देना- सुनना एक सक्रिय कार्य हो सकता है, जब बच्चे बात को ध्यान से सुनें, उसे समझने की कोशिश करें, याद रखें कि क्या कहा गया है और बात पर अपनी टिप्पणी, राय या प्रतिक्रिया दे सकें।
ii. समृद्ध शब्दावली- समझते हुए सुनें और अपनी बात को अच्छी तरह कहने के लिए अच्छी शब्दावली का प्रयोग करें जो बहुत ज़रूरी होती है। बच्चों की मौखिक भाषा के अच्छे विकास के लिए उनका शब्द भंडार लगातार समृद्ध होते रहना चाहिए।

iii. दोबारा सुनना या बताना- किसी कहानी, घटना या अनुभव को, दूसरों को अच्छी तरह बताने के लिए केवल शब्द ही नहीं चाहिए। अच्छे वाक्य बनाना, उन्हें सही क्रम में ढाल पाना और समझाते हुए कह पाने का कौशल बोलने को कहीं ज़्यादा प्रभावी बनाते हैं।

iv. सोचने के लिए बातचीत का प्रयोग- एक कुशल विद्यार्थी सहपाठियों से पूछकर या संवाद करके अपनी समझ, विचार व जानकारी को बेहतर कर सकता है।

अब तक की चर्चा को समेकित करें तो यह समझ में आता है कि विद्यालय की भाषा और घर की भाषा के बीच की खाई को पाटने के लिए मौखिक भाषा विकास पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। पढ़ने और लिखने में शामिल सोचने और समझने से जुड़े सभी कौशलों की मौजूदगी मौखिक भाषा में भी होती है और यहाँ आसानी से इसे बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है। इसके लिए कक्षा में चर्चा, तर्क-वितर्क, सवाल-जवाब, और अनुभवों, घटनाओं आदि को सुनने-सुनाने के मौके अनिवार्य रूप से देने होंगे।

लेखन में प्रयुक्त होने वाली औपचारिक शब्दावली और जटिल वाक्य संरचनाओं से यदि बच्चों का परिचय एक पायदान पहले यानी कि मौखिक भाषा के दौरान ही करा दिया जाए तो पढ़ना और लिखना अपेक्षाकृत आसान हो जाता है। मौखिक भाषा ही वह नींव है जिस पर पढ़ने और लिखने की क्षमता विकसित होती है। अगर प्रारम्भिक कक्षाओं में मौखिक भाषा का दृढ़ विकास हो जाए तो यह बहुत कुछ सीखने की प्रक्रियाओं के लिए एक ठोस नींव बनती है।

इसीलिए आरंभिक कक्षाओं में यह आवश्यक है कि बच्चों को सुनकर समझने और बोलने के पर्याप्त अवसर मिलें। इसके साथ ही यह भी उतना ही ज़रूरी है कि बच्चों को शुरुआत में उसी भाषा में बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए जिसे वे स्कूल में आने से पहले से जानते हैं और फिर इस भाषा से हिन्दी की ओर बढ़ा जाए।

मौखिक भाषा और लिखित भाषा का सम्बन्ध

जैसे ही हम मौखिक भाषा से लिखित भाषा की ओर आते हैं, हमारे सामने एक नया और जटिल संसार खुल जाता है। मौखिक भाषा इन्सानों के लिए नैसर्गिक है और हम इसे प्राकृतिक रूप से बोलने के लिए सक्षम हैं। बोलना अधिक स्वाभाविक प्रक्रिया है और इसमें हम निपुण भी होते हैं, जबकि पढ़ने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत कम स्वाभाविक है। पढ़ने और लिखने के लिए अक्षर और ध्वनि के बीच के आपसी संबंध को समझने की योग्यता आवश्यक है। लिखित भाषा को सीखने और समझने के लिए अतिरिक्त प्रयास आवश्यक है। इस प्रक्रिया में यह ज़रूरी है कि हम बच्चों को लिपि-चिह्नों और उनसे संबन्धित ध्वनियों के बीच के संबंध को स्पष्टता से सिखाएँ और इसके लिए उन्हें पर्याप्त समय और सार्थक संदर्भ उपलब्ध कराएँ।

लेकिन यह समझना भी ज़रूरी है कि लिखित भाषा का मतलब केवल बोलने वाली भाषा को लिख देना भर नहीं है। यह कहीं अधिक सतर्कता और समझ की मांग करता है। मौखिक बातचीत में बात करने वाले आमने-सामने होते हैं और एक साझे संदर्भ पर बातचीत होती है। इसके साथ ही यहाँ हावभाव, इशारों और शारीरिक संकेतों का भी इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन लिखित भाषा में इसी संवाद को प्रस्तुत करने के लिए हमें बातचीत के साथ ही साथ उस विषय के संदर्भ, संवाद के दौरान की स्थिति और संवाद के दौरान होने

वाले हावभाव, संकेतों और इशारों आदि को भी लिखते चलना होगा। हम पाएँगे कि दोनों में उपयोग किए गए शब्दों और वाक्यों की बुनावट भी भिन्न है। इस अंतर को दो स्तरों पर देखा जा सकता है- उद्देश्य के स्तर पर और लेखन शैली के स्तर पर। मौखिक भाषा में एक से अधिक व्यक्ति की उपस्थिति अनिवार्य होती है। लेकिन लिखित भाषा के उद्देश्य इससे अलग हो सकते हैं- यह समय और स्थान की सीमाओं के पार जाकर भी सम्प्रेषण को मुमकिन बनाती है और एक बड़े समूह को लिखित भाषा से संबोधित किया जा सकता है। इस कारण यह अधिक औपचारिक होती है। इस औपचारिकता और अर्थ की सटीकता के लिए ही इसका मानक होना भी ज़रूरी हो जाता है।

विद्यालय की भाषा और घर की भाषा के बीच की खाई को पाटने के लिए मौखिक भाषा विकास पर ध्यान देना आवश्यक है। पढ़ने और लिखने में शामिल सोचने और समझने से जुड़े सभी कौशलों की मौजूदगी मौखिक भाषा में भी होती है और यहाँ आसानी से इसे बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है।

पढ़ना माने क्या?

पढ़ने के बारे में पहले भी बात की जा चुकी है कि 'पढ़ना' का मतलब है पढ़कर अर्थ निर्माण करना। स्कूल की शुरुआती कक्षाओं के संदर्भ में पढ़ने का जो अर्थ लिया जाता है, उसमें सबसे ज़्यादा ज़ोर लिपि-चिह्नों की पहचान पर होता है। परम्परागत रूप में जो परिपाटी चली आ रही है, उसमें भी लिपि-चिह्नों की पहचान, मात्राओं की पहचान, दो वर्णों के बिना मात्रा वाले शब्द बनाना और उसके बाद धीरे-धीरे दो वर्णों के मात्रा वाले शब्दों की ओर बढ़ना दिखता है। इस तरह से बढ़ते हुए अपेक्षा रहती है कि पढ़ना आ जाएगा। इसमें अर्थ निर्माण की संभावना बेहद सीमित होती है जो ऊब पैदा करती है। इसे समझने के लिए हमें भाषा सिखाने से जुड़ी कक्षा की परम्परागत पद्धति और उससे जुड़े नज़रिए को समझना ज़रूरी होगा। साथ ही ज़रूरी यह समझना होगा कि पढ़ना है क्या?

आइए, बच्चों के पढ़ने से जुड़े कुछ उदाहरण देखते हैं-

उदाहरण

अरण्या कक्षा 1 की विद्यार्थी है। वह अभी पढ़ना सीखने के पहले पायदान (वर्णमाला) पर है। वह बिना मात्रा वाले शब्दों को पढ़ने का प्रयास करती है। कुछ इस तरह से– कबूतर का क, मटर का म, लड़की का ल,'क-म-ल'।

पढ़ने के लिए वह इसी प्रक्रिया का पालन करती है।

निशि कक्षा 3 की विद्यार्थी है। निशि वाक्यों को पढ़ने लगी है। देखते हैं कि वह नीचे दी गई पंक्तियों को कैसे पढ़ती है- "बरसात आने वाली थी। शांति अभी घर नहीं आई थी।"

निशि इन्हें कुछ इस तरह से पढ़ती है– "बस का ब रस्सी का र सपेरे का स उसमें आ का डंडा फिर तकली का त इससे बना ब... र... सा... त। आम का आ नल का न इसपे एड़ी वाली मात्रा बना आने, वन का व उसमें आ का डंडा फिर लट्टू का ल उसमें बड़ी ई की मात्रा बना वाली, फिर थन का थ और उसपे बड़ी ई की मात्रा बना थी। ...

इमरान कक्षा 5 का विद्यार्थी है। वह पाठ्यपुस्तक के किसी पाठ को कहे जाने पर खोल कर फर्राटे से पढ़ देता है, लेकिन पाठ्यपुस्तक से इतर किसी भी अन्य पाठ्यसामग्री को पढ़ते समय वर्णों को जोड़ने में ही अटक जाता है।

अगर इसे पढ़ना मान लिया जाए तो हमारी शिक्षा व्यवस्था में न तो कोई दिक्कत है और न ही हमें काम करने की ज़रूरत है। लेकिन ऐसा नहीं है, तमाम किस्म के आकलन और रिपोर्ट बताती हैं कि इमरान और निशि को पढ़ना नहीं आता। ऐसे में क्या करें? क्या इसी पद्धति को बार-बार दोहराकर निशि और इमरान को भी पढ़ सकने वालों की सूची में शामिल कर लिया जाए? क्या यह बात दावे के साथ कही जा सकती है कि अरण्या भी कक्षा पाँच में आते-आते इमरान की ही तरह न पढ़ पाने वालों की सूची में शामिल नहीं होगी?

- लिखित को पढ़कर समझने का सारा दारोमदार मौखिक भाषा पर ही होता है। जितनी बेहतर पकड़ मौखिक भाषा पर होगी, उतनी ही बेहतर समझ पढ़ने-लिखने में बनेगी।
- यह समझना कि लिखित को पढ़ना केवल लिपि चिह्नों को समझने से होता है, एक बड़ी भूल है। पढ़े हुए के अर्थ को समझने के लिए उन शब्दों का पूर्व परिचय, एक ओर लिपि को डिकोड करने में मदद करता है तो दूसरी ओर अर्थ को समझने में भी मदद करता है।
- बोलकर पढ़ना, पढ़ने की गति बढ़ाने में मदद करता है।

फिर पढ़ना किसे कहेंगे?

इन उदाहरणों को देखकर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि पढ़ना सिखाने की प्रक्रियाओं में कुछ छूट रहा है। बच्चे किसी प्रकार लिखे हुए लिपि-चिह्नों को उनसे संबन्धित ध्वनियों से जोड़ ले रहे हैं और किसी प्रकार उन्हें एक शब्द के रूप में उच्चरित कर ले रहे हैं। लेकिन यह प्रक्रिया इतनी लंबी, उबाऊ और नीरस है कि वे इसके अर्थ तक पहुँच ही नहीं पाते और फिर टेक्स्ट से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते। या फिर इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि टेक्स्ट उनमें कोई भाव नहीं जगा पाता। क्या बरसात आने की संभावना और शांति का घर न पहुँचना, पढ़ने के दौरान निशि के मन में कोई भाव जगा पा रहा है? क्या निशि पढ़ते-पढ़ते बरसात के अपने किसी पूर्व-अनुभव को याद कर पाई, या फिर घर देर से पहुँचने से जुड़ा उसका कोई अपना अनुभव उसे शांति के घर न पहुँच पाने से जुड़ी चिंताओं और कठिनाइयों से जोड़ पाया? शायद नहीं और यह 'नहीं' पढ़ने से जुड़ी इस प्रचलित कवायद की सीमा तय कर देता है। यहीं यह स्पष्ट हो जाता है कि पढ़ना सिर्फ़ शब्द के हिज्जे करके बोलना भर नहीं है, बल्कि पढ़ने का अर्थ है लिखे हुए के साथ संवाद करना, अपने अनुभवों के साँचे में लिखे हुए को ढालना, उससे सामंजस्य स्थापित करना और इस पूरी प्रक्रिया से लिखे हुए के अर्थ तक पहुँचना।

कृष्ण कुमार जी के शब्दों में- "पढ़ने के संदर्भ में यह समझना बहुत ज़रूरी है कि एक शब्द उसमें अक्षरों और मात्राओं का कुल योग या जमा भर नहीं है और न ही उस शब्द का अर्थ उन अक्षरों को बार-बार लिख या बोलकर समझा जा सकता है। यदि एक बच्चा 'रोटी' शब्द में आए चिह्नों को पहचानकर उन्हें पढ़ सकता है, तो भी ज़रूरी नहीं कि वह 'बुढ़िया की रोटी' की कहानी में खुद को प्रवेश दे सके। 'र', 'ओ' की मात्रा 'ट', बड़ी 'इ' की मात्रा जोड़ देने से 'रोटी' बन अवश्य जाएगी, पर जब तक वह बनेगी, उसकी गर्माहट बहुत कम हो चुकी होगी।"

आरंभिक कक्षा में भाषा सिखाने के दौरान अधिकतर लोगों की मान्यता है कि इसकी शुरुआत वर्ण परिचय से होनी चाहिए। इसके पीछे सोच संभवतः यह है कि उन्होंने भी तो पढ़ना ऐसे ही सीखा है। लेकिन बदली हुई परिस्थितियों में जिस वर्ग के बच्चे आज स्कूल में हैं, वे आज से बीस-तीस बरस पहले नहीं थे। आज से बीस-तीस बरस पहले स्कूलों में पहुँचने वाले बच्चों के घरों में ऐसा बहुत कुछ था जिसकी बात आज हम कक्षा में एक्सपोज़र के रूप में कर रहे हैं। उस पीढ़ी के पास स्कूल के अलावा भी आस-पास बहुत कुछ था, जो उन्हें पढ़ना-लिखना सीखने में मदद करता था।

जहाँ प्रचलित पद्धतियाँ ज़रूरत से अधिक मशीनी कवायद जैसी नज़र आती हैं, वहीं कुछ अन्य पद्धतियाँ इस बात से दूर होती नज़र आती हैं कि लिपि पढ़ने और लिखने का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है, अतः इसे सिखाना भी उतना ही ज़रूरी है जितना कि इस पूरी प्रक्रिया को बच्चों से संबन्धित सार्थक संदर्भों से जोड़ना। इन्हीं विरोधाभासों को ध्यान में रखते हुए हम यहाँ किसी एक पद्धति की वकालत न करते हुए बच्चों को केंद्र में रखते हुए प्रक्रियाओं की पड़ताल करेंगे। यह समझने की कोशिश भी करेंगे कि हमारे विद्यालयों में आमतौर पर पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए प्रचलित प्रक्रियाओं को बच्चों की दृष्टि से और अधिक सार्थक, रुचिकर और ग्राह्य कैसे बनाया जाए। साथ ही विशेष रूप से एक ऐसी संतुलित प्रक्रिया का पालन किया जाए जो वर्ण पहचान और अर्थ की खोज को समान महत्त्व प्रदान करती हो, क्योंकि लिखे हुए का अर्थ गढ़ना ही पढ़ना है।

पढ़ना सीखने की प्रक्रिया

यदि हम पढ़ने की प्रक्रिया को समझने का प्रयास करें तो पाते हैं कि इस दौरान कई स्तरों पर एक साथ कार्य हो रहा होता है:

i. लिखित लिपि चिह्न का परिचित ध्वनि प्रतीक से मिलान सुनिश्चित करना।
ii. अलग-अलग पहचाने गए लिपि-चिह्नों को मिलाकर उच्चरित करना और अनुमान लगाना कि सभी उच्चरित ध्वनि प्रतीकों को मिलाने से कौन-सा शब्द बनता है, यह पहचानने का प्रयास करना।
iii. इसी तरह तमाम शब्दों को 'पढ़कर' सम्पूर्णता में वाक्य के रूप में पहचानना और उसके अर्थ का अनुमान लगाना।

पहली प्रक्रिया में डिकोडिंग के द्वारा लिपि-चिह्नों को स्वर दिया जाता है और फिर उन्हें एक शब्द के रूप में पहचानते हुए उससे अर्थ ग्रहण किया जाता है। उदाहरण के लिए 'रोटी' शब्द को पढ़ने के लिए पहले तो इसमें शामिल लिपि-चिह्नों को पहचानकर उनसे जुड़ी ध्वनियों को एक साथ लाना होगा और फिर इन्हें एक साथ जोड़कर पूरे शब्द का उच्चारण करना होगा। इस पूरी प्रक्रिया को कुछ अन्य गतिविधियों की सहायता से आसान बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि आरंभिक दौर में पढ़े जाने वाले शब्द के साथ ही साथ उसका चित्र भी मौजूद हो तो पढ़ने की प्रक्रिया आसान हो जाती है और बच्चे लिखे हुए शब्द को उससे संबंधित चित्र के साथ संयोजित करते हुए अनुमान लगाकर पढ़ पाते हैं। यह प्रक्रिया एक और स्तर पर पढ़ने में मदद करती है और वह यह कि इसकी सहायता से बच्चे पूरे शब्द को एक इकाई यूनिट की तरह देखने की शुरुआत कर पाते हैं और पढ़ने के अगले पायदान की ओर बढ़ पाते हैं। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि पढ़ने की प्रक्रिया में अर्थ निर्माण तक पहुँचने के लिए शब्द की अर्थ छवि गढ़ना अनिवार्य है और यह तभी संभव है जब शब्द को टुकड़ों में न देखकर पूरा देखा जाए। फिर 'रोटी' को पढ़ने में इतना समय नहीं लगेगा कि रोटी की गर्माहट ही खत्म हो जाए। इस प्रकार के अभ्यास से बच्चे कुछ प्रचलित और बार-बार उपयोग में आने वाले

शब्दों की आकृति से कुछ इस प्रकार परिचित हो जाते हैं कि वो एक चित्र के रूप में अंकित हो जाते हैं। फिर ये शब्द चित्र पढ़ने की प्रक्रिया को गति प्रदान करते हैं और अर्थ तक पहुँचना आसान हो जाता है। जैसे-जैसे पढ़ने में शब्द चित्रों की भूमिका बढ़ती जाती है, पढ़ना धाराप्रवाह होता जाता है, क्योंकि किसी टेक्स्ट से अर्थ निर्माण के लिए आवश्यक है कि शब्दों को आसानी से और तीव्रता से पहचाना जा सके। यहाँ शब्दों को पहचानने से आशय उनके अर्थ तक पहुँचने से है।

भाषा की समझ या अर्थ से जुड़ी दूसरी प्रक्रिया भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी कि डिकोडिंग की सहायता से शब्दों को पढ़ पाना। यही प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि पढ़कर अर्थ का निर्माण किया जाए।
इसे नीचे दिए एक उदाहरण (दोहे) की सहायता से समझने का प्रयास करते हैं

उदाहरण

"अदोमना मसि पारबा, मतुंग दाझा तान
लौसिन्बा डम्मब्रमा, अदोमना मसि फान"

आइए, उपरोक्त वाक्य को पढ़ने का प्रयास करते हैं। क्या हम इसे पढ़ पा रहे हैं? उत्तर हाँ भी हो सकता है और ना भी। यदि वाचन की दृष्टि से देखें तो हम सब इसे पढ़ पा रहे हैं। कारण यह कि हम लिपि-चिह्नों को उनसे संबन्धित ध्वनियों के रूप में उच्चरित कर पा रहे हैं, शब्दों के रूप में उन्हें संयोजित करके बोल पा रहे हैं, लेकिन क्या हम लिखे हुए को समझ भी पा रहे हैं? अब हम आसानी से इस प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं कि जब तक पढ़े हुए को समझा न जाए तो क्या उसे पढ़ना कहा जा सकता है? नहीं! ये पंक्तियाँ दोहे की परिभाषा के अनुसार तो दोहा बनाती हैं पर अर्थ की दृष्टि से नहीं। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पढ़कर समझना ही पढ़ना है।

अब यदि यह समझने की कोशिश करें कि इसे पढ़कर समझने में बाधाएँ क्या हैं तो स्पष्ट होता है कि लिपि के ज्ञान के कारण हम लिखे हुए को उच्चरित तो कर पाए, किन्तु भाषा का ज्ञान न होने के कारण हम अर्थ का निर्माण नहीं कर पाए।

इसी प्रकार यदि नीचे लिखे अनुच्छेद को देखें
"ग्लोबल बाज़ारों की कमजोरी और विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा बड़े पैमाने पर पूंजी निकासी ने भी बीएसई के इस संवेदी सूचकांक को नीचे धकेल दिया।"

उपरोक्त वाक्य को पढ़ने में भी कुछ दिक्कत महसूस हुई होगी। इसका कारण क्या रहा, जबकि यहाँ लिपि और भाषा दोनों ही से हम परिचित हैं? निष्कर्षतः पढ़े हुए को समझने के लिए यह भी आवश्यक कि जिस विषय या अवधारणाओं के बारे में हम पढ़ रहे हैं, हमें लिपि और भाषा के साथ ही साथ उनका भी थोड़ा-बहुत पूर्वज्ञान या पूर्वानुभव या परिचय होना आवश्यक है। अन्यथा पढ़े हुए को समझ पाना टेढ़ी खीर बना रहेगा।
इससे यह स्पष्ट होता है कि पढ़ने के दौरान शब्द पहचान और अर्थ निर्माण की प्रक्रियाएँ एक साथ चलती हैं और एक दूसरे की पूरक होती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि पढ़ना लिखे हुए से अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को सीखने-समझने के लिए लिपि और ध्वनियों के बीच के संबंध, उन्हें डिकोड कर पाने की समझ, उन्हें शब्द और वाक्य और फिर आगे चलकर अनुच्छेद के रूप में एकीकृत तरीके से देख पाने की समझ तथा उन्हें अपने पूर्वज्ञान या संचित अनुभवों और ज्ञान से जोड़ पाने की क्षमता का होना आवश्यक

है। पढ़ने के दौरान डिकोडिंग और अर्थ निर्माण की ये प्रक्रियाएँ एक साथ संचालित हो रही होती हैं, इसलिए आवश्यक है कि पढ़ना सिखाने के दौरान इन दोनों मुद्दों पर बराबर ध्यान दिया जाए और इन्हें समग्र रूप से सिखाया जाए। संक्षेप में कहा जा सकता है कि पढ़ने का सामान्य अर्थ है समझ के साथ पढ़ना। समझ के साथ पढ़ना तब कहेंगे जब कोई व्यक्ति किसी छपी सामग्री को पढ़ते हुए उसे अपने अनुभवों के साथ जोड़कर देख सके, उसमें निहित बातों या दृश्यों को महसूस कर सके, उसमें दर्ज विचारों को ग्रहण कर सके, उनके साथ अपनी सहमति या असहमति रख सके, लिखी गई बातों के बीच उन इशारों को भी ग्रहण कर सके जो पाठ में सीधे-सीधे नहीं कहे गए हैं और आवश्यकता पड़ने पर उनसे जुड़ी अन्य संदर्भ सामग्रियों को टटोल सके। अतः कहा जा सकता है कि:

- पढ़ना एक समग्र प्रक्रिया है जिसमें डिकोडिंग और अर्थ निर्माण दोनों शामिल है।
- पढ़ना सीखने के लिए निरंतर अभ्यास आवश्यक है या फिर यूँ कहें कि पढ़ना पढ़ने से ही आता है। अतः बच्चों को कक्षा में टेक्स्ट से जुड़ने के जितने अधिक व विविध मौके मिलेंगे, पढ़ने का कौशल उतना ही बेहतर होता जाएगा।
- पढ़ने के दौरान अर्थ का निर्माण सिर्फ़ और सिर्फ़ लिखित टेक्स्ट के आधार पर नहीं होता, वरन पाठक टेक्स्ट के साथ अंतःक्रिया करते हुए अपने लिए अर्थ का निर्माण स्वयं करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि एक ही टेक्स्ट के विभिन्न पाठकों के लिए अलग-अलग अर्थ भी हो सकते हैं।

पढ़ना लिखे हुए टेक्स्ट और पाठक की दुनिया के बीच का संबंध है। पढ़ने की यह प्रक्रिया लिखित टेक्स्ट, पढ़ने वाले के मस्तिष्क और टेक्स्ट तथा पाठक के संदर्भों के बीच की आवाजाही है। अतः पढ़ने की इस पूरी प्रक्रिया में पढ़ने वाले (बच्चे), स्कूल से बाहर की उसकी अपनी दुनिया, उसके अनुभव व समाज तथा उससे जुड़े अनुभवों को कतई नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है। अतः पढ़ना सिखाने के आरंभिक दौर में भाषा की कक्षाओं को सीमित होने के बजाय बच्चों की अपनी दुनिया का ही एक विस्तार होना पड़ेगा। जिससे कि बच्चे स्वाभाविक रूप से अपने संदर्भों में अपनी भाषा को सिखाई जाने वाली भाषा (हिन्दी) के साथ सुगमता से जोड़ सकें और पढ़ने-लिखने की सार्थकता को अपने व्यक्तिगत जीवन और क्रियाकलापों के ज़रिए स्थापित कर पाएँ। पढ़ने और लिखने के कौशल का विकास जीवनपर्यंत होता रहता है, अतः सीखने के इस आरंभिक दौर में यह आवश्यक है कि एक ऐसा आधार तैयार किया जाए जो बच्चों को जीवन भर के लिए पाठक, लेखक और एक विचारशील व्यक्तित्व के रूप में विकसित होने में सहायता प्रदान करे। जिससे कि वे आगे चलकर स्वतंत्रचेता और स्वायत्त व्यक्ति के रूप में स्वयं का निर्माण कर सकें।

लिखना माने क्या?

लिखना 'पढ़ने', 'सुनने' और 'बोलने' पर ही निर्भर करता है। लिखने के लिए जो भी तथ्य या सामग्री हमारे पास होती है, वह हमारी विचार प्रक्रिया पर ही निर्भर करती है। इमला या श्रुतलेख को लेखन कौशल का अभ्यास तो माना जा सकता है, लेकिन स्वयं में वह लेखन नहीं है। लिखने में पहली शर्त है कि उसमें विचार हो। ये विचार आपको पढ़ने से मिल सकता है, कुछ सुनकर आपके मन में लिखने लायक विचार बन सकता है। इस अर्थ में लिखने को बोलने का ही विस्तार मान सकते हैं। बोलने में आप अपने मन के विचारों को मस्तिष्क में मौजूद भाषिक व्यवस्था के अनुरूप ध्वनि प्रतीकों से व्यक्त करते हैं और लिखने में आप उन विचारों को एक और कदम आगे जाकर भाषिक व्यवस्था के साथ ही लिपि प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

- लिखना सुनने, बोलने और पढ़ने के कौशलों पर ही निर्भर करने वाला कौशल है।
- पुराने दौर में लेखन में वर्तनी, विराम चिह्नों के साथ ही सुन्दरता और सुस्पष्टता पर भी काफी बल दिया जाता रहा है। लेकिन लेखन महज़ इतना ही नहीं है। लेखन में इन चीज़ों के साथ ही विचार भी महत्वपूर्ण है।
- लेखन, जैसा पहले कहा जा चुका है, लिखने वाले की विचार प्रक्रिया पर ही निर्भर करता है। गांधी की लिखावट को देखने में सुन्दर नहीं कहा जा सकता, लेकिन विचारों में उनका कोई सानी नहीं।

लिखना- तब और अब

एक समय था जब हस्तलेखन को लेखन का एक महत्त्वपूर्ण अवयव माना जाता था। सुंदर और अच्छी लिखावट के साथ मात्राओं की शुद्धता और विरामचिह्नों के प्रयोग को बेहद महत्त्वपूर्ण माना जाता था। यह समझना आसान है कि ऐसा क्यों था। टाइपराइटर और कंप्यूटर युग से पहले लोग विचारों के सही और सटीक सम्प्रेषण के लिए अच्छी और शुद्ध लिखावट पर पूरे तरीके से निर्भर थे।

अतः जब बच्चों को लिखना सिखाना शुरू किया जाता था तो शिक्षकों का पूरा ध्यान अच्छे, सुंदर और स्पष्ट हस्तलेखन, मात्राओं, व्याकरण और विरामचिह्नों के उपयोग पर होता था। इसके बाद जब वे कुछ बड़े होते थे तो उन्हें निश्चित खाँचों में लिखना सिखाया जाता था। इसके लिए उन्हें पत्र, आवेदन या कुछ निश्चित विषयों पर निबंध लिखने को कहा जाता है और फिर वे आवश्यकतानुसार संक्षिप्त या विस्तृत रूप में लिखते थे। इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका बच्चों के लेखन को 'ठीक' करने की होती थी। वे ऊपर बताए गए आधार पर लिखे हुए को जाँचते थे और इन्हीं आधारों पर बच्चों को अंक दिए जाते थे। जो जितना सही लिखता था, वह उतना ही अच्छा लेखक माना जाता था। लेकिन बेहतर लेखक बनाने के लिए बच्चों के साथ क्या किया जा सकता है, इस प्रक्रिया के बारे में सोचा भी नहीं जा रहा था।

सत्तर और अस्सी के दशक में मनोविज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण और रोचक परिवर्तनों की शुरुआत हुई। लोगों ने इस ओर ध्यान देना शुरू किया कि लिखने और पढ़ने के दौरान हमारे मस्तिष्क के अंदर क्या प्रक्रियाएँ घटित हो रही होती हैं। फिर उन्होंने कुछ दिलचस्प सवाल पूछने शुरू किए जैसे कि "लिखते समय लेखक सोचते कैसे हैं?" इन सवालों के जवाब में अब तक जो निकलकर आया, उसका लब्बोलुआब यह है कि बेहतर लिखने की एक पूरी प्रक्रिया है और आरंभिक भाषा शिक्षण में इसके महत्त्वपूर्ण निहितार्थ हैं। पहले लोग लिखने को एक उत्पाद की तरह देखते थे, लेकिन अब लेखन को एक प्रक्रिया के तौर पर देखे जाने की ज़रूरत महसूस होने लगी है। अतः अब हमारे लिए भी प्रश्न "बच्चों को लिखना कैसे सिखाएँ" से बदलकर "बच्चों को लेखन प्रक्रिया के बारे में कैसे समझाएँ" हो गया है। लेखन, जैसा पहले कहा जा चुका है, लिखने वाले की विचार प्रक्रिया पर ही निर्भर करता है। गांधी की लिखावट को देखने में सुन्दर नहीं कहा जा सकता, लेकिन विचारों में उनका कोई सानी नहीं।

बच्चे कैसे सीखते हैं लिखना

जब हम यह देखते हैं कि छोटे बच्चे लिखना सीख रहे होते हैं तो वे कई अलग-अलग 'प्रतीक प्रणालियों' के बारे में एक साथ समझ बना रहे होते हैं। यहाँ प्रतीक से आशय उस वस्तु से है जो किसी दूसरी वस्तु या चीज़

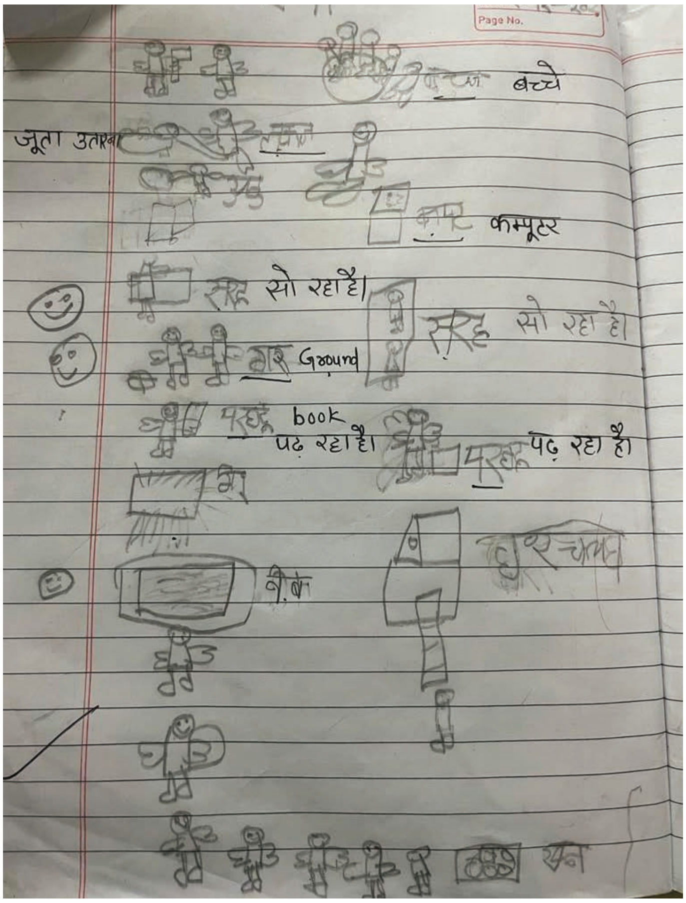

Figure 20 अवसर मिलने पर एक बच्चे द्वारा अपनी पसंद का चित्र बनाना और उसे नाम देना

का प्रतिनिधित्व करती है। उदाहरण के लिए जब हम '1' लिखते हैं तब इसका अर्थ होता है कि वो किसी एक चीज़ का प्रतिनिधित्व करता है। जब हम कुछ उकेरते हैं या बनाते हैं तो हम वस्तुओं, व्यक्तियों, भावों और विचारों आदि को व्यक्त करने के लिए आकृतियों का उपयोग करते हैं। इसी तरह जब हम लिखते हैं तो हम पेज पर निशान बनाते हैं और प्रत्येक निशान (या अक्षर) एक ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता है। अतः बोलना, गिनना, चित्र बनाना, लिखना– ये सब 'प्रतीक प्रणालियाँ' हैं। जब बच्चे इन प्रतीक प्रणालियों को सीख रहे होते हैं तो इनकी अलग-अलग सीमाएँ उनके मस्तिष्क में बहुत स्पष्ट नहीं होतीं। संभव है कि बच्चा पेज पर मात्र एक बिन्दु बना दे, लेकिन जब वह उस बिन्दु के पीछे की कहानी सुनाए तो वह उस ट्रक के बारे में बताए जो बूम करके बहुत तेजी से निकल जाता है और पूरी कक्षा के चक्कर लगाता है। लिखना, बोलना, संकेत करना और खेलना सभी इस कहानी के एक समान प्रमुखता लिए हुए भाग हैं। इसके आधार पर यह सलाह दी जाती है कि जब बच्चे लिखने की शुरुआत कर रहे हों तो उन्हें इन सभी प्रतीक प्रणालियों को इस्तेमाल करने की छूट दी जाए।

लिखना सीखने के दौरान उपयोग में आने वाली प्रतीक प्रणालियाँ–

- गोदा-गादी और अमानक प्रतीकों व चित्रों का उपयोग
- आड़ी-तिरछी लाइनें बनाना और प्रतीकात्मक चित्र बनाना
- ध्वनियों के लिए मानक लिपि प्रतीकों की पहचान व सृजन
- विभिन्न प्रकार के मानक व अमानक प्रतीकों की पहचान एवं उनका विचारों के साथ जुड़ाव

बच्चों में लेखन का विकासक्रम और स्कूली प्रक्रियाएँ

बच्चों के लिखने के शुरुआती प्रयासों से लेकर लिखना सीखने तक की पूरी प्रक्रिया के विकासक्रम में रोचक पैटर्न उभरते हैं। बच्चे लिखने की शुरुआत पेज पर स्पष्ट अक्षरों को उकेरने से नहीं करते, बल्कि सबसे पहले वे पेजों पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना शुरू करते हैं। कभी-कभी वे कुछ चित्र बनाने का प्रयास भी करते हैं या फिर दोनों कार्य साथ-साथ करते हैं।

कुछ समय बाद उनकी ये आड़ी-तिरछी रेखाएँ कुछ-कुछ उन अक्षरों जैसे लगने लगती हैं जिन्हें हम पहचान पाते हैं। कुछ समय बाद वे पहचाने जा सकने वाले अक्षरों को लिखते हैं, अक्सर ये अक्षर एक समूह में लिखे जाते हैं जो शब्द जैसे लगते हैं। लेकिन इन शब्दों को पढ़ने का प्रयास करें तो बहुत संभव है कि इनका कोई अर्थ न हो। यहाँ देखना दिलचस्प होगा कि बच्चे स्ववर्तनी का इस्तेमाल करते हैं और ध्वनियों को उनके चिह्नों से मिलान करते हुए लिखने का प्रयास करते हैं। यानी वे भाषा की व्यवस्था की एक बारीकी को पकड़ चुके होते हैं। इसमें वे कभी सही लिख लेते हैं तो कभी गलत और कभी-कभी आंशिक रूप से सही या गलत। इसके बाद वे सही तरीके से शब्दों को लिखने का प्रयास करते हैं, लेकिन अभी भी संभव है कि वे उस तरीके से न लिखें जैसे वयस्क लिखते हैं। इस प्रकार की एक लंबी, प्राकृतिक, तार्किक और चरणबद्ध प्रक्रिया के बाद वे शब्दों और वाक्यों को उस तरह से लिखना, पढ़ना और सुगठित करना सीख जाते हैं जैसी उनसे अपेक्षा की जाती है।

इस प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि शुरुआती प्रयासों से ही जब बच्चा आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना आरंभ करता है, तभी से ये उसके विचारों को प्रकट करना भी शुरू करता है। जैसे-जैसे लेखन का विकास होता है, उसी तरह से विचारों में भी उत्तरोत्तर प्रगति होती नज़र आती है। फिर ये विचार ही उसके लेखन को बेहतर और परिष्कृत करते चलते हैं, सरल वाक्यों से साधारण विवरणों तक, फिर उससे आगे विस्तृत विवरणों और संवादों तक। इसलिए ज़रूरी है कि लिखना सीखने की इस प्रक्रिया में किसी भी स्तर पर भाषा के मौखिक कौशलों से अलग करके न देखा जाए।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए अगर स्कूल में होने वाले कार्यकलापों पर ध्यान दिया जाए तो हम पाएँगे कि उनमें से बहुत सी चीज़ों, जैसे बच्चों की गोदा-गादी, आड़ी-तिरछी रेखाएँ बनाना या अपने मन के चित्र बनाना वगैरह काम बेकार के काम माने जाते हैं और अपेक्षा की जाती है कि बच्चे कागज़ पर कलम चलाना सीख जाएँ और अक्षरों को उतारना शुरू कर दें। इसके लिए कुछ नियत प्रक्रियाएँ बनाई गई हैं; जैसे- वर्णमाला, बारहखड़ी, बिना मात्रा वाले शब्द, मात्रा युक्त शब्द, सुलेख और इसके आगे बंधे-बंधाए विषयों पर एक ख़ास ढंग से लिखने का अभ्यास। इसके लिए लिखना सिखाने का जो तरीका अपनाया जाता है, उसमें बच्चों को बिना जाने-समझे किताब या बोर्ड से देखकर यानी नकल करके लिखना होता है। इसके बाद बच्चों को श्रुतलेख या इमला बोलकर लिखने के अभ्यास कराए जाते हैं।

संक्षेप में देखें तो कक्षा में लिखना सिखाने के नाम पर बच्चों को लेखन के मशीनी पहलुओं जैसे कि अक्षरों की बनावट कैसी हो, सही मात्राओं के साथ शुद्ध शब्दों को कैसे लिखा जाए, पाठ्यपुस्तकों में से पंक्तियों को कैसे उतारा जाए, बोर्ड पर से सही उत्तर को कैसे नकल करके लिखा जाए और कुछ चिह्नित प्रार्थना पत्रों और निबंधों को एक निश्चित खाँचे में कैसे लिखा जाए। इस प्रक्रिया में सभी इस तरह से खो जाते हैं कि लेखन में विचारों और भावनाओं की आवश्यकता तक ध्यान मुश्किल से ही पहुँच पाता है। पूरा ध्यान शुद्ध लिखने पर होने के कारण बच्चे के पास उस लेखन से कोई अर्थ निर्मित कर पाने का अवसर ही समाप्त हो जाता है। पर क्या यह ज़रूरी है कि लेखन का अभ्यास हमेशा एक ख़ास ढर्रे पर ही चले? क्या लेखन कौशल को सिखाने के लिए जिन प्रक्रियाओं का इस्तेमाल हम करते आए हैं, उनमें कुछ बदलाव की गुंजाइश है? क्योंकि लेखन में आँखों और हाथ के साथ ही साथ मस्तिष्क की भी बराबर की भूमिका होती है। लेखन के दौरान हमारा दिमाग मूकदर्शक बनकर सिर्फ़ इस बात का ध्यान नहीं रख रहा होता है कि कोई वाक्य छूट ना जाए, या कोई मात्रा गलत ना लग जाए, बल्कि वो सक्रिय रूप में इस प्रक्रिया में शामिल रहते हुए यह सुनिश्चित करता है कि वही और उसी तरह से लिखा जाए जिस तरह से सोचा जा रहा है। लेकिन क्या इसे लिखना माना जा सकता है?

Figure 21 बच्चों में लेखन कौशल के विकास से जुड़े विभिन्न चरणों से संबन्धित उदाहरण

प्राथमिक स्तर पर क्या है लिखना

तो फिर लिखना क्या है? लिखना दरअसल अनुभवों और विचारों का, हर पढ़ी हुई चीज़ की ऐसी विवेचना है जो पढ़ने वाले के लिए लिखने वाले के मंतव्य को स्पष्ट कर सके। वह लिखा भी ऐसे अंदाज़ में हो कि पढ़ने वाले को पढ़ने में कुछ इस तरह से आनन्द आए कि वह कुछ नया जानते हुए समझ रहा है। स्कूली शिक्षा का मंतव्य लेखक पैदा करना नहीं है, लेकिन लिखना सिखाने के क्रम में ये गुंजाइश ज़रूर होनी चाहिए कि सीखने वाला अपनी रुचि के अनुसार अपने कौशल को स्वयं भी तराश सके। प्राथमिक स्तर पर लेखन को बातचीत का विस्तार माना जा सकता है, इसलिए बच्चों में अपनी बात कहने की इच्छा को जीवित रखना और उसे लेखन कार्य से जोड़ना बहुत ज़रूरी है। अतः हमें यह ध्यान रखना होगा कि बच्चों को लिखना सिखाने के लिए जो भी तरीके उपयोग में लाए जाएँ, वे बच्चों की दृष्टि से सार्थक और रोचक हों, साथ ही वे बच्चों के अपने अनुभवों से जुड़े हुए भी हों। संक्षेप में, लिखना खुद के विचारों को सुस्पष्ट तरीके से लिखित रूप से अभिव्यक्त करना है। कक्षा पाँच तक बच्चे में इतनी दक्षता आ जानी चाहिए कि वह अपने मन में आए विचारों को विचारक्रम और वाक्य संरचना का ध्यान रखते हुए लिखकर व्यक्त कर सके। लिखना बच्चों के लिए अर्थपूर्ण प्रक्रिया होती है, क्योंकि यह उन्हें अपनी भावनाओं और अनुभवों को प्रकट करने का मौका देती है। जब हम बच्चों को पढ़ने, लिखने और अपने कार्यों को प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं तो परोक्ष रूप से हम उन्हें यह बता रहे होते हैं कि उनके द्वारा दिए गए जवाब या साझा किए गए अनुभव और भावनाएँ हमारे लिए महत्त्वपूर्ण हैं। अतः बच्चों में लेखन कौशल का विकास उन्हें बेहतर तरीके से सोच पाने और अभिव्यक्त कर पाने में मदद करने का एक तरीका हो सकता है। आसान शब्दों में कहें तो लिखना, कहने का एक खास अंदाज़ है। यह अपने आप से जुड़ने और दुनिया को समझने का एक बेहतरीन तरीका है। हर इंसान कुछ न कुछ कहना चाहता है और यह कई बार बोलकर कह पाना संभव या आसान नहीं होता, ऐसी परिस्थितियों में लेखन एक बेहतरीन विकल्प के रूप में सामने आता है। बात वर्तमान दौर की करें तो कहा जा सकता है कि लेखन हर एक शख्सियत के लिए निहायत बुनियादी संस्कार है। क्योंकि लेखन सिर्फ़ संवाद को एक निश्चित तरीके से दूसरों तक पहुँचाने का माध्यम भर नहीं है, बल्कि इससे कहीं आगे लिखना एक अंदाज़-ए-बयाँ है। यानी कि हर इंसान एक ही चीज़ को अलग-अलग ढंग से लिख सकता है, कुछ इस हद तक कि लिखने के अंदाज़ से कभी-कभी मामूली तो कभी-कभी बड़ा सा फ़र्क पैदा हो जाए और हमें नए अर्थ सूझने लगे। लिखना सिखाने की सभी प्रक्रियाओं में इतनी गुंजाइश होनी चाहिए कि वो लेखन की विविधता का सम्मान कर सके, उसे पहचान सके और उसको प्रोत्साहित कर सके।

अच्छा लेखन किसे कहेंगे

बच्चे को अपनी बात को आड़ी-तिरछी लकीरों में उतार पाने में जो आनंद मिलता है, वह अध्यापक द्वारा बोर्ड पर लिखे हुए काम की नकल करने से ज़्यादा संतोषजनक होता है। तो फिर बच्चों को इस एहसास से क्यों वंचित किया जाए। बच्चों को भी कक्षा में अभिव्यक्ति के अवसर मिलने चाहिए। बच्चों का मन भी बहुत सारी बातें कहने, बताने, बाँटने के लिए उत्सुक होता है। ज़रूरत है कि उन अवसरों को समझा और सराहा जाए। शुरुआती दौर में बच्चों के लिए आड़ी-तिरछी लकीरें अभिव्यक्ति का माध्यम होती हैं। इन लकीरों में बातें हैं, अर्थ हैं, भाव हैं और पारंपरिक लेखन की ओर बढ़ने की क्षमता और विश्वास है। ये आड़ी-तिरछी रेखाएँ पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया का एक बेहद ज़रूरी हिस्सा हैं। अगर हम इन आड़ी-तिरछी लकीरों को नहीं सराहेंगे तो बच्चे पढ़ने-लिखने की यांत्रिकता में ही उलझकर रह जाएँगे। बच्चों की इन पहली लकीरों को कक्षा में बिना रोक-टोक स्वीकारना और उस पर बातचीत करना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ये लकीरें बच्चों के लेखन के वे पहले महत्त्वपूर्ण पड़ाव हैं जहाँ बच्चा लिखने को सार्थकता से देखता है। वह यह समझ रहा है कि अपने मन की बात को लिखा जा सकता है और उस लिखी गई बात को पढ़ा जा सकता है।

अब तक की चर्चा से इतना तो स्पष्ट है कि अच्छा लेखन सुंदर लिखावट और शुद्ध मात्रा युक्त लेखन से कहीं बढ़कर है और लिखने वाले अपने लेखन के ज़रिए अपने विचारों को अभिव्यक्त कर रहे होते हैं। इसके ज़रिए वे प्रभावी तरीके से अपने विचारों, अनुभवों और भावनाओं का सम्प्रेषण करते हैं। वे इस बात का भी ध्यान रखते हैं कि इसे कौन पढ़ेगा और पढ़ने वाले की रुचि को कैसे बनाए रखा जाए।

Figure 22 स्कूल में लेखन से जुड़े विभिन्न अवसर बच्चों को लिखने के लिए प्रेरित करते हैं

अच्छे लेखन से जुड़े कुछ प्रमुख बिन्दु इस प्रकार हो सकते हैं:

i. **विचार**- विचार लेखन के केंद्र में होते हैं। यदि 'क्या लिखना' इससे जुड़े विस्तृत विचार लिखने वालों के पास हों तो लिखना आसान होता है और उसका प्रवाह भी बना रहता है। अतः हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि लिखना शुरू करने से पहले बच्चों से उन विषयों पर विस्तृत बातचीत हो जिन पर लिखना अपेक्षित है। इससे वे लिखने का एक ढाँचा बना पाएँगे और उससे संबन्धित प्रमुख बिन्दुओं और विवरणों को भी एकत्रित कर पाएँगे।

ii. **संगठन**- यहाँ संगठन से आशय उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा विचारों और संबन्धित विवरणों को लेखन में व्यवस्थित किया जाए। लेखन के शुरुआती दौर में बच्चे अक्सर चित्रों के आगे उनका नाम लिख देते हैं, या फिर उस चित्र के बारे में यह बताते हुए एक वाक्य लिख देते हैं कि वो क्या है। लेकिन इससे आगे बढ़ते हुए जब वे कोई विवरण, विचार, घटना या कहानी जैसा कुछ लिख रहे होते हैं तो फिर यह आवश्यक हो जाता है कि लिखे गए सभी वाक्यों का एक दूसरे से जुड़ाव हो, वे घटनाओं के क्रम में हों और आरंभ से अंत तक एक तारतम्यता नज़र आए।

iii. **भाव**- लेखन में भाव से आशय इस बात से है कि लिखे हुए से भावनाओं का भी सम्प्रेषण हो। उदाहरण के लिए, क्या लेखक पढ़ने वालों को आश्चर्यचकित करना चाहता है, प्रसन्न करना चाहता है या फिर डराना चाहता है? यदि लेखन से ऐसा कोई भाव नहीं आ रहा है तो वह लेखन बहुत ही सतही विवरण से अधिक कुछ नहीं है। अतः यह आवश्यक है कि लेखन में लेखक या उसके किरदारों की भावनाएँ स्पष्ट रूप से आएँ।

iv. **शब्द चयन**- जब बच्चे लिखने की शुरुआत करते हैं तो वे सबसे साधारण और प्रचलित शब्दों का उपयोग करते हैं। लेकिन आगे चलकर जब वे बेहतर लिखने की ओर बढ़ते हैं तो उनके पास चुनने के लिए शब्दों का एक बड़ा भंडार होना चाहिए। यह देखना महत्त्वपूर्ण है कि क्या वे लेखन के दौरान अधिक सटीक, उपयुक्त और दिलचस्प शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं या नहीं।

v. **वाक्य प्रवाह**- वाक्य प्रवाह से यहाँ आशय इस तथ्य से है कि जब कोई लेखन पढ़ा जाता है तो वो कैसा भाव देता है। क्या वह सही और सटीक लगता है या फिर जबरन लिखा हुआ और कृत्रिम लगता है? जैसे-जैसे लेखन कौशल का विकास होता जाता है, वाक्य की संरचनाएँ भी अत्यंत साधारण से हटकर पाठक के आकर्षण को बनाए रखने के लिए अलग-अलग तरह की होती जाती हैं।

vi. **व्याकरण**- इस प्रक्रिया के अंतर्गत सामान्यतया वे सभी बिन्दु शामिल हैं जो हमारी कक्षाओं में लिखना सिखाने के दौरान सिखाया जाता है। जैसे कि त्रुटिहीन लेखन, विरामचिह्नों का प्रयोग, व्याकरण के विभिन्न प्रयोग आदि।

यह स्पष्ट है कि लेखन प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए उपरोक्त बिन्दुओं का ध्यान रखना आवश्यक है और ये सभी बिन्दु एक दूसरे के पूरक और समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। अतः हमारी कक्षा-कक्ष प्रक्रियाएँ ऐसी होनी चाहिए जो कि इन सभी बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए लिखना सिखाने की ओर अग्रसर हों।

क्या करें

लिखना सीखने का पढ़ने के कौशल से गहरा संबंध है। पढ़ने के दौरान हम प्रत्येक शब्द को अलग, और साथ ही समूचे पाठ के संदर्भ में समझते हैं। इसी कारण हम पढ़े हुए शब्दों का एकदम अलग संदर्भों में उपयोग कर पाते हैं। पढ़ते समय वाक्य की संरचना और लिखे जाने के पैटर्न को भी हमारी नज़रें बारीकी से पकड़ती हैं और बाद में कभी लिखने में ये सब हमें मदद करते हैं। इसीलिए कई बार बच्चों को ही नहीं, बड़ों के लिए भी लिखे हुए के नमूने देखकर लिखना आसान हो जाता है। पढ़ने की ही तरह लिखना भी विभिन्न उद्देश्यों के लिए होता है- सूची बनाना, रिपोर्ट लिखना, कहानी लिखना, पत्र लिखना आदि। सामान की एक सूची बनाना या कविता और कहानी लेखन- एक ही तरह का लिखना नहीं है। इनमें से हर उद्देश्य के लिए लिखने की प्रक्रिया में अंतर होता है। हमारे लिखने का तरीका उद्देश्य पर ही निर्भर करेगा।

अतः यह ज़रूरी हो जाता है कि लिखने के कौशल को विकसित करने के लिए बच्चों का ध्यान भाषा के अलग-अलग रूपों की ओर दिलाया जाए, ताकि वे भाषा की बारीकियों को पकड़ सकें और लिखते समय उनका उचित उपयोग कर सकें। भाषा के इन विभिन्न रूपों को देखने-समझने का मौका बच्चों को बाल साहित्य से ही मिल सकता है। अतः कक्षावार या स्तरानुसार रोचक विषय सामग्री का चयन किया जाना चाहिए, साथ ही बच्चों को हिन्दी की विभिन्न शैलियों और रंगतों से परिचित होने के बाद उसी प्रकार के लेखन के अवसर भी दिए जाने चाहिए। पढ़ने की तरह ही लिखने में भी समझ शामिल है और समझ के साथ लिखने के लिए यह अनिवार्य होगा कि लिखने वाला अपने विचारों, भावनाओं या अनुभवों को स्वयं अपनी भाषा में अपने तरीके से लिख सके।

कक्षा में मौजूद पढ़ने की सामग्री और पढ़ने की प्रक्रिया के साथ सार्थक लेखन के अनगिनत मौकों की सम्भावना छुपी होती हैं। आवश्यकता उन्हें पहचानने और बच्चों को उपलब्ध कराने की है। जैसे-जैसे बच्चे लिखते हैं, वे प्रिंट को बारीकी से देखते हैं और अक्षर व ध्वनि के संबंध पर गौर करते हैं, उनकी यह समझ बननी शुरू होती है कि बाईं से दाईं ओर पढ़ते और लिखते हैं। फिर जब उनके लेखन को पूरी उत्सुकता से समझने का प्रयास किया जाता है और उसे जानने की कोशिश की जाती है तो यह उनकी समझ बनती है कि लिखना अपनी बात को कहने का एक सार्थक माध्यम है।

शुरुआती दौर में लिखते समय बच्चे जब अभी ध्वनि और संकेतों के संबंध को समझ ही रहे होते हैं, कई बार वे शब्दों को अधूरा ही छोड़ देते हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि कई बार बच्चे के मस्तिष्क में बातें इतनी तेजी से आगे बढ़ती हैं कि उनकी कलम उस गति का मुकाबला नहीं कर पाती। ऐसी स्थिति में उनका सार्थक प्रिंट से जुड़ाव जितना ही अधिक होगा और पढ़ने-लिखने के मौके जितने अधिक मिलते रहेंगे, उतना ही उनका लेखन परिपक्व होगा।

लेखन की प्रक्रिया में बच्चों का आगे बढ़ना इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चों को सार्थक प्रिंट से समृद्ध माहौल कितना मिल रहा है। कक्षा में पढ़ने की सामग्री के साथ सार्थक लेखन के अनगिनत मौके संभव हो सकते हैं। बच्चों का सार्थक प्रिंट समृद्ध माहौल से जुड़ाव जितना गहरा होगा और इसके आधार पर लिखने के मौके जितने अधिक मिलते रहेंगे, उनका लेखन उतना ही परिपक्व होता जाएगा। लिखना सिखाने में अहम भूमिका निभाते हुए शिक्षकों को बच्चों के लेखन में गलतियाँ ढूँढने की बजाय उनके लेखन को इस नज़र से देखना चाहिए कि बच्चे किस पड़ाव पर हैं और उन्हें अपेक्षित स्तर की ओर ले जाने के लिए किस प्रकार की मदद की ज़रूरत है। लेखन के मौके बाल साहित्य, बातचीत या किसी गतिविधि से जुड़े हो सकते हैं। ध्यान रहे कि लेखन का उद्देश्य बच्चों के लिए सार्थक हो। हमारा उद्देश्य पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को सार्थक बनाना और बच्चों की क्षमता को मान्यता देना है, ताकि बच्चे विद्यालय में हो रही विभिन्न गतिविधियों से जुड़ सकें। यह भी निहायत ज़रूरी है कि हम बच्चों को अपने मन की बात लिखकर अभिव्यक्त करने का मौका दें। इसके लिए निम्नलिखित तीन बातों को ध्यान में रखना चाहिए:

i. बच्चों के लिए लेखन का सार्थक उद्देश्य हो।
ii. बच्चे किसके लिए लिख रहे हैं या किसे संबोधित करते हुए लिख रहे हैं, यह स्पष्ट हो।
iii. बच्चों के पास उस विषय में कहने के लिए कुछ अवश्य हो।

बच्चों के लिए उनके दैनिक अनुभव ही जानकारी के स्रोत हैं, जिनका कक्षा में सकारात्मक तरीके से उपयोग किया जा सकता है। लिखना एक सार्थक गतिविधि तभी बन पाएगी जब बच्चों को अपनी भाषा, अपनी कल्पना, अपनी दृष्टि से लिखने की आज़ादी मिले। इसके लिए ज़रूरी है कि बच्चे विभिन्न प्रकार के परिचित संदर्भों के अनुसार भाषा का प्रयोग कर सकें। वे सहज, कल्पनाशील, प्रभावशाली और व्यवस्थित ढंग से विविध उद्देश्यों के लिए लेखन कर सकें। वे लेखन को प्रभावी व अर्थपूर्ण बनाने के लिए सही शब्दों का प्रयोग कर सकें।

विचारों के स्तर पर स्पष्टता और उनका एक निश्चित प्रवाह, लिखने को आसान बनाता है। मन में आ रहे विचारों, अनुभवों, तर्कों आदि को जस का तस लिख देना आसान नहीं होता, क्योंकि विचारों के प्रवाह की गति लिखने की गति से कहीं अधिक तीव्र हो सकती है और ऐसे में तीव्रता से एक के बाद एक आ रहे विचारों को सहेजकर लिख पाना निरंतर अभ्यास की मांग करता है। अतः यह आवश्यक है कि बच्चों के संदर्भों, रुचियों, और अनुभवों आदि को ध्यान में रखते हुए लेखन के विषयों को चुना जाए, चर्चा की जाए और फिर इन विषयों पर लिखने के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ। अगली बात यह कि लिखने को एक सार्थक अवसर के रूप में स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि आरंभिक स्तर पर बच्चों के लेखन में त्रुटियों को ढूँढने और उन्हें दुरुस्त करने के बजाए अधिक ध्यान भावों और विचारों की अभिव्यक्ति पर हो। ऐसे में बच्चे अधिक से अधिक लिखने के लिए प्रेरित होंगे। यह इसलिए भी आवश्यक है कि यदि सारा ध्यान वर्तनी की गलतियों को चिह्नित करने और उन्हें सुधारने में लगाया जाएगा तो बच्चे के लिए भी लेखन में शुद्धता ही सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू के रूप में उभरेगा, न कि उसके व्यक्तिगत भाव और विचार। क्योंकि गलतियाँ खोजना बच्चों को निरुत्साहित कर सकता है, जिसके परिणामस्वरूप वे लेखन से विमुख भी हो सकते हैं। अतः यह ध्यान रखना अहम है कि प्राथमिक कक्षाओं में लेखन की शुद्धता से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है लिखने का आत्मविश्वास।

1.6.3. भाषा कौशल– समन्वित शिक्षण की ज़रूरत

इस भाग में हम प्राथमिक कक्षाओं में मौखिक भाषा विकास के साथ ही साथ पढ़ना-लिखना सीखने से जुड़ी कक्षा प्रक्रियाओं की चर्चा करेंगे।

भाषाई कौशलों का आपसी संबंध और इन्हें एक साथ सिखाए जाने की ज़रूरत

भाषा के चारों कौशल 'सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना' एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। अतः कक्षा में इन पर कार्य समन्वित रूप से ही होना चाहिए, न कि एक-दूसरे से काटकर देखा जाना चाहिए। हम पिछले अध्याय में देख चुके हैं कि मौखिक भाषा किस प्रकार से पढ़ने और लिखने के लिए एक मजबूत आधार तैयार करती है और साथ ही साथ यह भी कि किस प्रकार पढ़ना और लिखना एक दूसरे से संबन्धित कौशलों को मजबूत करते चलते हैं। अतः हमारा प्रयास होना चाहिए कि भाषा की प्रत्येक कक्षा में इन चारों कौशलों पर ध्यान दिया जाए। हाँ, यह ज़रूर संभव है कि एक बार में इनमें से किसी एक ही कौशल को केंद्र में रखा जाए और बाकी के कौशल उसकी परिधि में मौजूद रहते हुए सहायता करें। लेकिन यह कतई संभव नहीं है कि इन कौशलों पर अलग-अलग काम किया जाए, क्योंकि ऐसा करना भाषा की कक्षाओं को एक बार पुनः उबाऊ और निरर्थक प्रक्रियाओं की ओर ले जाना होगा।

> भाषा के चारों कौशल 'सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना' एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। अतः कक्षा में इन पर कार्य समन्वित रूप से ही होना चाहिए, न कि एक-दूसरे से काटकर देखा जाना चाहिए।

Figure 23 बच्चों की रुचियों को ध्यान में रखते हुए भाषा के सभी कौशलों पर एक साथ कार्य

जैसे सुनना और बोलना एक दूसरे पर पूरी तरह से आश्रित और पूरक प्रक्रियाएँ हैं, ठीक वैसे ही लिखना और पढ़ना भी एक दूसरे पर आश्रित हैं और एक-दूसरे को सीखने में मदद करती हैं। सुनने और बोलने की प्रक्रियाओं का विश्लेषण करें तो पाते हैं कि सुनना इनपुट है, बोलना आउटपुट। तात्पर्य यह कि अच्छे आउटपुट के लिए ढेर सारे स्तरीय इनपुट की ज़रूरत होती है, अतः बच्चे कक्षा में लक्ष्य भाषा (यहाँ हिन्दी) को जितना अधिक और जितने विविध रूपों में संदर्भों के साथ सुनेंगे, उनके लिए उसे बोल पाना उतना ही आसान होगा। कुछ ऐसा ही पढ़ने-लिखने के दौरान भी होता है। पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं को देखें तो पाते हैं कि पढ़ना इनपुट है लिखना आउटपुट। यहाँ भी बेहतर आउटपुट के लिए समृद्ध और सार्थक इनपुट सुनिश्चित करना आवश्यक है। अर्थात बच्चे को लिखित टेक्स्ट का कितना अनुभव दिया गया है, यानी कि उसके पास

पढ़ने की कितनी विविध एवं प्रचुर सामग्री और मौके हैं, यह निर्धारित करेगा कि उसके लिखना सीखने की प्रक्रिया और गति कैसी है। यहाँ यह ध्यान में रखना ज़रूरी है कि लिखने और पढ़ने की प्रक्रिया एक के बाद एक न होकर साथ में चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं और इनका बच्चों की दृष्टि से सार्थक होना पहली और सबसे महत्त्वपूर्ण शर्त है। अतः यह समझना ज़रूरी है कि कक्षा में इन सभी कौशलों पर कार्य किया जाए और इन्हें एक-दूसरे से अलग करके देखने और सीखने-सिखाने की कोशिश न की जाए। इससे हम यह सुनिश्चित कर पाएँगे कि भाषा के प्रत्येक कौशल का उपयोग एक-दूसरे को सीखने के लिए किया जाए। नीचे दिए गए रेखाचित्रों की सहायता से इस तथ्य को आसानी से समझा जा सकता है:

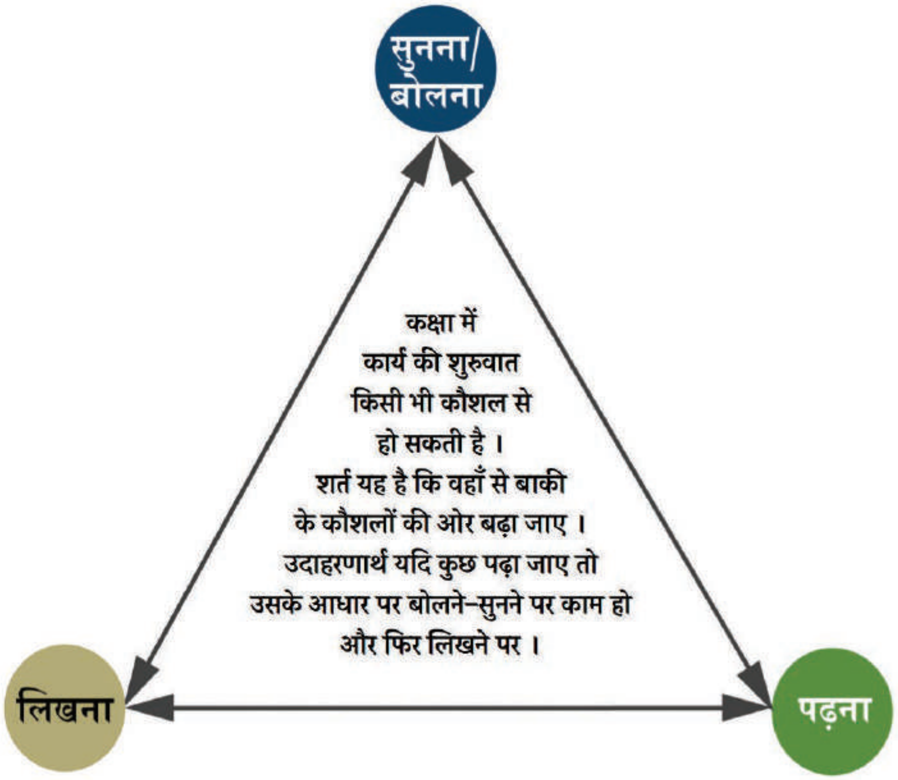

Figure 24 भाषा में सभी कौशलों पर समग्र रूप से कार्य करना

Figure 25 एक भाषायी कौशल, दूसरे भाषायी कौशल के विकास का माध्यम बनता है

अध्याय 2- प्राथमिक भाषा शिक्षण : कक्षागत प्रक्रियाएँ

इस अध्याय के उद्देश्य–

यह अध्याय कक्षा में भाषा शिक्षण से संबन्धित जिन महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को समझने में सहायक है, वे हैं:

- प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण से जुड़ी प्रक्रियाओं से सम्बंधित सैद्धांतिक पक्ष और अपेक्षित सीखने के प्रतिफल
- भाषाई कौशल और इन्हें विकसित करने के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं को समझना और उनमें परस्पर संबंध देख पाना
- वर्तमान में भाषा शिक्षण के लिए अपनाई जा रही प्रक्रियाओं में निहित चुनौतियों को जानना
- बेहतर भाषा शिक्षण प्रक्रिया को पर्याप्त उदाहरणों से समझना। इसके अंतर्गत–
    - सभी भाषाई कौशलों को एक साथ लेकर चलने की आवश्यकता
    - स्तरानुसार उपयुक्त विषयवस्तु (कंटेंट) का चुनाव
    - भाषा शिक्षण में बातचीत का महत्त्व, चित्र, प्रिंट रिच वातावरण की भूमिका और कहानी-कविता तथा अन्य विधाओं द्वारा कार्य की विस्तृत प्रक्रिया
    - पाठ्यपुस्तक की उपयोगिता, उपयोग की प्रक्रिया और पाठ्यपुस्तक-केन्द्रित शिक्षण की सीमाएँ
    - भाषा विश्लेषण (व्याकरण शिक्षण) से जुड़ी सार्थक प्रक्रियाएँ
    - भाषा में आकलन और इससे संबंधित प्रक्रियाएँ
    - पढ़ना-लिखना सीखने में संघर्ष कर रहे बच्चों के साथ किए जा सकने वाले कार्य

2.1 भाषा शिक्षण के आयाम और सीखने के प्रतिफल

अब यदि हम मौखिक (सुनना और बोलना) और लिखित भाषा (पढ़ना और लिखना) से संबन्धित उपरोक्त चर्चा को देखें तो यह स्पष्ट होता है कि समझकर पढ़ने और लिखने की इस पूरी प्रक्रिया में विभिन्न आयाम (aspect) शामिल होते हैं। ये समस्त आयाम ही सम्मिलित रूप से मिलकर 'समझकर पढ़ना-लिखना सीखने' की इस प्रक्रिया को पूर्ण करते हैं। यहाँ हम इन्हें संक्षिप्त रूप में समझने का प्रयास करेंगे और फिर आगे के पृष्ठों में इनसे जुड़ी कक्षा प्रक्रियाओं और इनके आधार पर संचालित होने वाली गतिविधियों को विस्तार में देखेंगे:

i. **अर्थ निर्माण**– अर्थ निर्माण पढ़ना-लिखना सीखने के केंद्र में है, अतः यह आवश्यक हो जाता है कि कक्षा में उपयोग हो रही पढ़ने की प्रक्रिया में इसे हमेशा ध्यान में रखा जाए। बच्चों को पहले ही दिन से यह समझ में आना चाहिए कि पढ़ना तभी पूरा होगा जब वह उसे पढ़कर अपने लिए कुछ अर्थ निकाल

पाएँगे। जब एक बच्चा पढ़े हुए से कुछ समझ पाता है, या उसमें से अपने लिए अर्थ का निर्माण कर पाता है। वह उस पढ़े हुए के बारे में बात कर सकता है, उसकी तुलना कर सकता है, व्याख्या कर सकता है, उसका विस्तार कर सकता है, उसका सामान्यीकरण कर सकता है, उससे जुड़े उदाहरण दे सकता है, उससे संबंधित निष्कर्ष निकाल सकता है, अनुमान लगा सकता है और लिखना आने के बाद उसे अपनी भाषा में लिख सकता है, उसका सारांश लिख सकता है। अतः हमारा पहला प्रयास यह होना चाहिए कि हम बच्चों को यह सिखाएँ कि वे जो भी पढ़ रहे हैं, उसका अर्थ समझ पाएँ और पढ़ने को तब तक पूरा न माना जाए जब तक कि उससे अर्थ का निर्माण न हो रहा हो।

ii. **प्रवाह–** जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि पढ़ने में गति या प्रवाह, समझ के साथ पढ़ने का सबसे महत्त्वपूर्ण बिंदु है। हमारी कक्षाओं के बहुत-से बच्चे अक्षरों को तो पहचान लेते हैं, लेकिन उनके लिए पहचान की यह प्रक्रिया बड़ी ही कठिन और कष्टकारी होती है, क्योंकि वे इन्हें एक-एक कर पहचानते और पढ़ते चलते हैं। पढ़ने की यह धीमी गति बच्चों के लिए समझने को और मुश्किल बना देती है, जबकि यदि धाराप्रवाह के साथ और अनायास ही पढ़ा जाए तो पढ़े हुए को समझना आसान हो जाता है। अतः आरंभिक कक्षाओं में बच्चों के पढ़ने को गतिशील बनाना हमारा एक प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

iii. **शब्द भंडार–** बच्चे समझ के साथ बोल सकें या लिख सकें, इन सब के लिए उनके पास एक विस्तृत शब्द भंडार का होना आवश्यक है। यहाँ विस्तृत शब्द भंडार का यह कतई आशय नहीं है कि बच्चे शब्द और उनके अर्थ को रटते चले जाएँ। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि बच्चों के पास एक विस्तृत शब्द भंडार हो और उसमें निरंतर वृद्धि हो रही हो। यह तभी संभव होगा जब उन्हें शब्दों को उनके पूरे प्रयोग के साथ देखने-समझने का मौका मिले, जिससे कि वे अपनी रोज़मर्रा की बोलचाल में, या फिर आगे चलकर पढ़ने और लिखने के दौरान इन शब्दों का उपयोग कर सकें, या फिर इन शब्दों की सहायता से पाठ में निहित अर्थ तक पहुँच सकें।

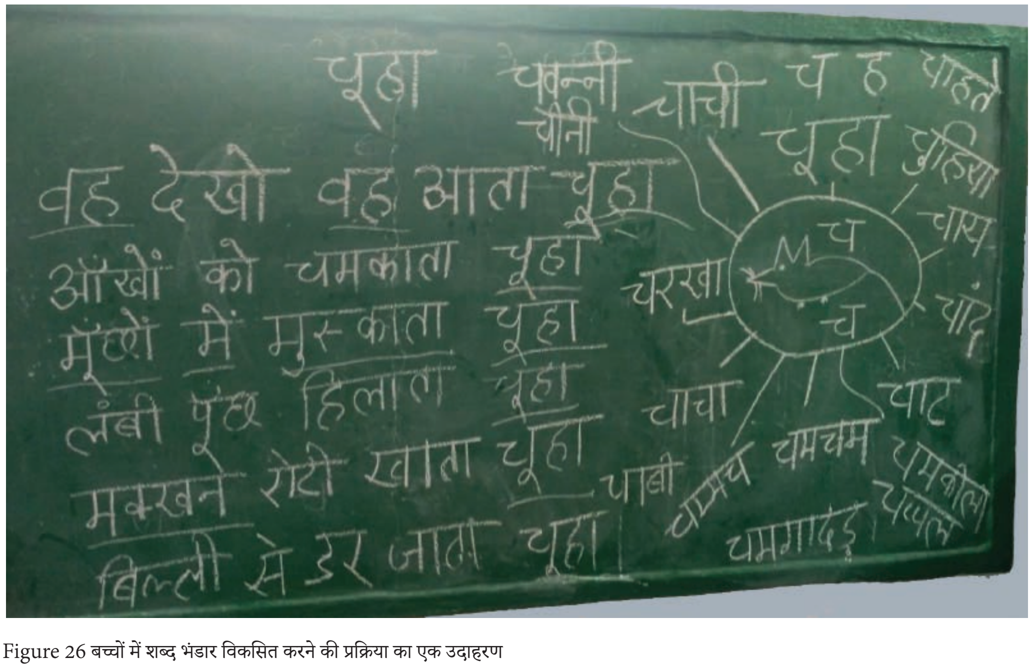

Figure 26 बच्चों में शब्द भंडार विकसित करने की प्रक्रिया का एक उदाहरण

iv. **ध्वनि जागरूकता–** यहाँ ध्वनि जागरूकता से हमारा तात्पर्य बोली जाने वाली भाषा को सुन पाने, समझ पाने, उससे अन्तःक्रिया कर पाने और उसकी ध्वनियों के साथ कार्य कर पाने की क्षमता से है। इसके अंतर्गत किसी कविता या कहानी को सुन पाना, एक वाक्य या पंक्ति में आए विभिन्न शब्दों में अंतर कर पाना, एक शब्द में आए विभिन्न अक्षरों की ध्वनियों को सुन पाना, समझ पाना और उनमें अंतर कर पाने की क्षमता है। यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि बच्चों के लिए ध्वनियों को सुन पाना इतना महत्त्वपूर्ण क्यों है? इसका उत्तर बहुत ही आसान है कि वे समस्त टेक्स्ट जो हम सुनते, पढ़ते या लिखते हैं, ध्वनियों से ही बने होते हैं। यदि एक बच्चे को यह बताया जाए और फिर समझने में उसकी सहायता की जाए कि 'बाल' और 'बकरी' दोनों एक ही ध्वनि 'ब' से आरंभ होते हैं या फिर 'नल' और 'फल' लगभग एक जैसे सुनाई पड़ते हैं; तो उनके लिए ध्वनियों की समानता और उनके अंतर को समझना आसान हो जाता है और फिर संक्षिप्त-से अभ्यास के बाद वे अनायास ही ध्वनियों के इस प्रकार के वर्गीकरण को पहचानने और निर्मित करने या उनसे खेलने लगते हैं। दुनिया में व्याप्त ध्वनियों की समानताओं और असमानताओं को समझ पाना, उन्हें एक साथ जोड़ पाना, उन्हें अलग-अलग करके देख पाना, ये सभी क्रियाएँ बच्चों को बेहतर सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने में मदद करती हैं।

v. **लिपि-ध्वनि संबंध–** लिपि-ध्वनि संबंध (फोनिक्स) से यहाँ आशय लिपि-चिह्न और उनसे संबंधित ध्वनियों के आपसी संबंध की समझ से है। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि बच्चों को लिपि-चिह्न और ध्वनियों से उनके संबंध को एक निश्चित और विस्तृत समय में सिखाए जाने की आवश्यकता है। हम यह समझते हैं कि पढ़ना-लिखना सीखना, बोलना सीखने की तरह नहीं है। इसका कारण यह है कि इसे हम मौखिक भाषा की तरह ही प्राकृतिक रूप से अर्जित नहीं करते, वरन् इसके लिए अतिरिक्त प्रयास की ज़रूरत होती है। इसीलिए बच्चों को अक्षर और ध्वनि के संबंधों को बहुत स्पष्ट तरीके से और एक विस्तृत समय सीमा में सिखाए जाने की आवश्यकता है। बहुत संभव है कि किसी बच्चे को वर्णमाला के सभी अक्षरों को सीखने में बाकी के अन्य बच्चों से कहीं अधिक समय लग रहा हो, अतः इस प्रक्रिया में हमें सभी बच्चों की प्रगति और रुचि को ध्यान में रखते हुए धैर्य के साथ कार्य करने की आवश्यकता होगी।

इसके साथ ही जब हम पढ़ने और लिखने के विस्तार में प्रवेश करते हैं तो कुछ अन्य बिन्दु भी उपरोक्त आयामों में शामिल हो जाते हैं, जो कि निम्न हैं:

vi. **साहित्यिक समझ–** पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया में यह आवश्यक है कि बच्चे अच्छे साहित्य को पहचानना, उसका आनंद लेना और साथ ही साथ उसके बारे में तार्किक प्रतिक्रियाएँ (मौखिक और लिखित) व्यक्त करना सीखें। यहाँ तक कि बहुत छोटे बच्चे भी कहानियों, कविताओं या अन्य लिखित टेक्स्ट में रुचि लेना, उसे समझना और उसके बारे में प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करना सीख लेते हैं, जो कि उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं।

vii. **समालोचनात्मक पठन और लेखन–** पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में सिर्फ़ इतना ही काफी नहीं होता कि बच्चे किसी टेक्स्ट को पढ़ और समझ पा रहे हैं, या किसी दिए हुए विषय पर कुछ पूर्व-निर्धारित वाक्यों या परिच्छेद को लिख पा रहे हैं। अपितु उनसे यह भी अपेक्षा रहती है कि वे पढ़े गए टेक्स्ट की

समालोचना कर सकें, उसका तार्किक विश्लेषण कर सकें और उस पर समझदारी भरी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें। हालांकि इस कौशल के विकसित होने में कई साल लग सकते हैं, लेकिन यह महत्त्वपूर्ण है कि इसका आधार आरंभिक कक्षाओं से ही तैयार किया जाए।

viii. **पढ़ने और लिखने का जीवन में उपयोग–** बच्चों को यह सिखाया जाना बहुत आवश्यक है कि वह अपने रोज़मर्रा के जीवन में पढ़ने और लिखने का उपयोग कैसे करें। उदाहरण के लिए वे सूचियाँ बना सकते हैं, पत्र लिख सकते हैं, इस बात को विस्तार से लिखकर समझा सकते हैं कि कोई भी चीज़ कैसे की जाए और साथ ही साथ अपने जीवन की घटनाओं के बारे में भी पढ़कर और लिखकर समझ सकते हैं और लोगों को समझा सकते हैं।

2.2 प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण के उद्देश्य और इनसे सम्बन्धित सीखने के प्रतिफल

प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण समूची शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण चरण है। यदि इस चरण में बच्चों के साथ भाषा के निर्धारित उद्देश्यों के मुताबिक काम नहीं हुआ तो बच्चे अगली कक्षाओं तक आते-आते भी पढ़ना-लिखना नहीं सीख पाते। फिर इसका प्रभाव उनकी आगे की कक्षाओं में पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं के साथ ही साथ अन्य विषयों की शिक्षा पर भी दिखाई देता है। अतः आरंभिक कक्षाओं में भाषा के प्रत्येक शिक्षक और उन शिक्षकों के साथ कार्य करने वाले हमारे प्रत्येक सदस्य के लिए इस बात की स्पष्टता होना आवश्यक है कि कक्षा 1 से 5 तक आते-आते बच्चों को क्या-क्या आ जाना चाहिए। इसी संबंध में पिछले अध्याय में हमने प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण से संबन्धित उद्देश्यों को समझने का प्रयास किया।

इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए एनसीईआरटी द्वारा कक्षावार सीखने के प्रतिफलों का निर्माण किया गया है। ये निर्धारित प्रतिफल हमें भाषा शिक्षण के उद्देश्यों को और अधिक स्पष्टता से समझने में मदद करते हैं। सीखने के ये प्रतिफल एक ओर जहाँ 'क्या सिखाना है' और 'कैसे सिखाना है' को स्पष्ट करते हैं, वहीं दूसरी ओर इनके आकलन की प्रक्रियाओं को तय करने में भी सहायता करते हैं। नीचे दी गई तालिका में इन्हीं प्रतिफलों और उद्देश्यों को सीखने-समझने में आसानी की दृष्टि से दो भागों (कक्षा 1 और 2, तथा कक्षा 3 से 5) में प्रदर्शित किया गया है:

भाग 1 (आरंभिक भाषा शिक्षण के लक्ष्य, सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए): कक्षा 1 व 2 के सापेक्ष	भाग 2 (पढ़ने-लिखने के विस्तार में भाषा शिक्षण के लक्ष्य, सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए): कक्षा 3, 4 व 5 के सापेक्ष
1. बच्चे सुनकर समझ पाएँ और सोचकर बोल पाएँ i. कविता/कहानी/अनुभव/विवरण हावभाव से सुना पाएँ ii. सुनकर मौखिक प्रश्नों के उत्तर दे पाएँ iii. चित्रों पर विवरण सुना पाएँ एवं कक्षा एक के अंतिम चरण तक आते-आते सुनी हुई बात पर अपना मत व्यक्त कर पाएँ iv. सरल मौखिक निर्देशों का पालन कर पाएँ एवं इनके अनुसार कार्य कर पाएँ v. कक्षा दो में दैनिक जीवन में घटित घटनाओं का 2-4 वाक्यों में विवरण दे पाएँ vi. स्वतंत्र रूप से सवाल पूछ पाएँ (उपरोक्त बिंदु प्रोग्रेशन में हैं और बिंदु v. व vi. कक्षा दो एवं तीन से अपेक्षित हैं)	**1. सुनकर समझना, बोलकर समझाना** i. कविता/कहानी, विवरण हावभाव के साथ सुना पाएँ एवं उस पर आधारित क्या, कब, कहाँ, किससे, कैसे और क्यों वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में दे पाएँ ii. किसी कहानी/नाटक/वृत्तांत को सुनकर उसका मूल तत्व समझ पाएँ (यह कौशल कक्षा पाँच के स्तर पर अपेक्षित है) iii. परिचित परिस्थियों के बारे में व्यवस्थित बात कह पाएँ (कक्षा चार के स्तर से) iv. सुनाई गई या अवलोकित विषयवस्तु पर क्या, कब और क्यों जैसे प्रश्नों को पूछ पाएँ और उनके उत्तर दे पाएँ v. बोलते समय लिंग, वचन का सामंजस्य रख पाएँ
2. पढ़कर समझना और समझकर व्यक्त करना i. परिचित शब्दों को कविता/कहानी/शब्द-कार्ड/श्यामपट्ट आदि में पहचान पाएँ एवं कक्षा दो तक आते-आते इन्हें प्रवाह से पढ़ पाएँ ii. कक्षा एक के अंत तक आते-आते अधिकांश अक्षर एवं मात्राएँ पहचान पाएँ एवं कक्षा दो के समाप्त होते-होते सभी अक्षरों और मात्राओं से शब्द बना पाएँ और पढ़ पाएँ iii. कक्षा दो के समाप्त होते-होते पुस्तकालय की सरल किताबों में से छोटी कहानी/कविता की किताब पढ़ पाएँ iv. कक्षा तीन तक आते हुए नई सरल पुस्तकों को पढ़कर उन पर बात कर पाएँ	**2. पढ़कर समझना और समझकर व्यक्त करना** i. पढ़ी हुई सामग्री के प्रमुख तत्व ग्रहण कर पाएँ ii. विभिन्न रैपर्स, होर्डिंग्स, साइनबोर्ड पर लिखी सरल सूचनाओं को पढ़कर समझ पाएँ iii. पाठ्यपुस्तकों और पुस्तकालय में उपलब्ध बाल साहित्य में संदर्भ में आए शब्द, शब्द-अवधारणाओं को पढ़कर उसके अर्थ समझ पाएँ एवं उसका उपयोग कर पाएँ (कक्षा 4 एवं 5 में अपेक्षित)

भाग 1 (आरंभिक भाषा शिक्षण के लक्ष्य, सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए): कक्षा 1 व 2 के सापेक्ष	भाग 2 (पढ़ने-लिखने के विस्तार में भाषा शिक्षण के लक्ष्य, सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए): कक्षा 3, 4 व 5 के सापेक्ष
v. कक्षा एक-दो के स्तर के अनुसार लक्ष्य भाषा का पर्याप्त शब्द भंडार हो **(यदि सुनने-समझने के लिए उपयोग की गई सन्दर्भ सामग्री का उपयोग पढ़ने और पढ़कर समझने में करते हैं तो बच्चों को दोनों के बीच सम्बन्ध समझने में आसानी होती है)**	
3. लिखने के कौशल का विकास i. अक्षर/शब्द देखकर लिख पाएँ और कक्षा एक के तीसरे चरण में अक्षर/शब्द मन से लिख पाएँ ii. बोले-सुने प्रश्नों का कक्षा एक के अंतिम चरण तक आते-आते एक दो वाक्यों में उत्तर लिख सकें iii. कक्षा दो में स्वयं पढ़कर एक-दो वाक्यों में उत्तर लिख पाएँ iv. चित्र पढ़कर दो-तीन वाक्यों में विवरण लिख सकें v. कक्षा तीन तक आते हुए अपनी बात को छोटे पैरा के रूप में साफ स्पष्ट तरीके से लिख पाएँ (अर्थात् दो शब्दों व दो लाइनों में पर्याप्त दूरी भी हो)	**3. लिखने के कौशल का विकास** i. पढ़कर क्यों, कब, कैसे वाले सवालों के जवाब लिख पाएँ ii. श्रुतलेख लिख पाएँ iii. परिचित विषयवस्तु पर छोटा अनुच्छेद लिख पाएँ iv. कक्षा 5 में छोटी कहानी, कविता, अनुभव लिख पाएँ v. किसी नाटक को कहानी और कहानी को नाटक के रूप में लिख पाएँ
4. अभिव्यक्ति (स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति) i. देखकर, कविता/कहानी सुनकर उसके अनुसार चित्र बना पाएँ ii. कविता/कहानी/परिचित परिस्थितियों का अभिनय कर पाएँ iii. स्वतंत्र चित्र बना पाएँ (कक्षा दो के आरंभ से) iv. मन से छोटी कविता/कहानी बना पाएँ और सुना पाएँ (कक्षा दो एवं तीन तक के स्तर से)	**4. स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति** i. स्वतंत्र चित्र बना पाएँ ii. किसी घटना, वस्तु का वर्णन कर पाएँ iii. मन से कहानी/कविता बना पाएँ, दी गई कहानी/कविता, घटना को और आगे बढ़ा पाएँ

2.2.1 प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण से संबन्धित कक्षा प्रक्रियाएँ

भाषा शिक्षण के उद्देश्यों को ध्यान से देखें तो स्पष्ट होता है कि प्राथमिक कक्षाओं में भाषा का शिक्षण अपने मूलरूप में भाषा से जुड़े कतिपय महत्त्वपूर्ण कौशलों का शिक्षण है, जिनका ज़िक्र हम पहले कर चुके हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि इन भाषाई कौशलों को सीखने-सिखाने से जुड़ी प्रक्रियाएँ, अन्य विषयों (विज्ञान, इतिहास आदि) की शिक्षण प्रक्रियाओं से अलग होंगी और भाषा की कक्षाओं में प्रक्रियाओं की भूमिका विषयवस्तु (कंटेन्ट) से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा के शिक्षकों के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि वे इन प्रक्रियाओं पर अपनी बेहतर समझ बनाएँ और फिर इसी के अनुसार विषयवस्तु का चयन करते हुए कक्षा प्रक्रियाओं को अंजाम दें। प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण के प्रमुख अवयवों को ध्यान में रखें तो इससे संबन्धित प्रमुख कक्षा प्रक्रियाओं को समझना आवश्यक हो जाता है।

प्राथमिक स्तर के लिए हमने कुल छह क्षेत्र चुने हैं, जिनके अंतर्गत ही भाषा की कक्षा में होने वाली सभी प्रक्रियाएँ आती हैं। इन प्रक्रियाओं की भी पहचान की गई है और उन्हें विस्तार से अध्याय 3 में दिया गया है। इस अध्याय में हम इन प्रक्रियाओं के कक्षागत रूप को देखेंगे कि इनके अंतर्गत वर्तमान में क्या काम होते नज़र आते हैं और बेहतरी के लिए क्या किया जाना ज़रूरी है। ये छह कार्यक्षेत्र हैं:

1. कक्षा में बातचीत और उसके द्वारा पढ़ना-लिखना सीखना
2. कविताएँ और पढ़ना-लिखना सीखना
3. कहानियाँ और पढ़ना-लिखना सीखना
4. पाठ्यपुस्तक और पढ़ना-लिखना सीखना
5. भाषा समृद्ध कक्षा
6. शिक्षा के परिप्रेक्ष्य

इन छह कार्यक्षेत्रों पर रचनात्मक रूप से प्राथमिक कक्षाओं में काम करने से निर्धारित सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त किया जा सकता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हम कार्यक्षेत्रों के तहत की जाने वाली प्रक्रियाओं को इनके पूरे विस्तार में देखें और इसके चरणों को समझें, जिससे कि बच्चों के सीखने को बेहतर किया जा सके और साथ ही यह भी सुनिश्चित हो कि वे अपेक्षित सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करें। यह अध्याय वास्तव में इन कार्यक्षेत्रों के तहत होने वाली विविध कक्षा प्रक्रियाओं को प्रस्तुत करता है। समझने में सुविधा की दृष्टि से इन्हें पूरे विस्तार से इनसे जुड़े प्रमुख मुद्दों, कक्षागत चुनौतियों, उदाहरणों और शिक्षक तथा बच्चों के साथ इनपर कार्य के तरीकों के साथ प्रस्तुत किया गया है। कोशिश यह की गई है कि कक्षा से जुड़े विभिन्न उदाहरणों के द्वारा इन्हें प्रस्तुत किया जाए और फिर उदाहरणों में निहित कक्षा प्रक्रियाओं से अपेक्षित प्रतिफलों तक पहुँचने के तरीकों को पहचाना जाए और कक्षा में बच्चों के सीखने को बेहतर किया जाए।

इस अध्याय से न्यूनतम अपेक्षा यह है कि हम यहाँ वर्णित प्रक्रियाओं, सीमित उदाहरणों और गतिविधियों को समझें और इन्हें बच्चों तथा शिक्षकों के साथ के अपने कार्यों में शामिल करें। किन्तु इन्हीं तक सीमित न रहें और आगे चलकर इन्हें आधार मानते हुए शिक्षक एवं बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार अपनी स्वयं की प्रक्रियाएँ, उदाहरण और गतिविधियाँ विकसित करें।

Figure 27 पाठ्यपुस्तक का उपयोग, कहानी पर कार्य, लिपि पर कार्य, बातचीत एवं चर्चा, प्रिंट-रिच कक्षा

2.3 आरंभिक कक्षा में भाषा शिक्षण- चुनौतियाँ एवं प्रक्रियाएँ

आमतौर पर भारतीय कक्षाओं में भाषा शिक्षण की शुरुआत का अर्थ वर्णमाला सिखाने की शुरुआत होता है। इस प्रक्रिया में किसी एक शब्द के पहले अक्षर को उस वर्णमाला के अक्षर से जोड़ दिया जाता है। इसके साथ ही साथ शिक्षक बच्चों से उन अक्षरों को बार-बार लिखने और बोल-बोलकर दोहराने को भी कहते हैं। रटाकर वर्णमाला सिखाने वाले इन अभ्यासों में बच्चे के विद्यालयी जीवन के पहले साल का (कभी-कभी तो पहले दो-तीन सालों का) बहुत सारा समय लगाया जाता है, लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या ये तरीके प्रभावी हैं? क्या ये बच्चे पढ़ना सीख रहे हैं, या फिर जो पढ़ रहे हैं उसे समझ पा रहे हैं? शायद नहीं!

रटाकर वर्णमाला सिखाने वाले इन अभ्यासों में बच्चे के विद्यालयी-जीवन के पहले साल का (कभी-कभी तो पहले दो-तीन सालों का) बहुत सारा समय लगाया जाता है, लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या ये तरीके प्रभावी हैं?

अधिकतर लोगों का मानना है कि भारतीय भाषाओं की लिपियों को सीखना अंग्रेजी की तुलना में आसान है, क्योंकि भारतीय लिपियों, विशेष रूप से हिंदी में हम लिपियों को ठीक उसी तरह से लिखते हैं जिस तरह से कि उनसे संबंधित अक्षरों को बोलते हैं। किन्तु तुलनात्मक रूप से देखें तो अंग्रेजी भाषा में सिर्फ 26 अक्षर होते हैं और यदि हम कैपिटल लेटर और स्माल लेटर को अलग-अलग जोड़ें तो भी यह मात्र 52 अलग-अलग प्रकार के अक्षर नज़र आते हैं। वहीं अगर हिंदी भाषा की बात करें तो वर्णमाला के अक्षरों की संख्या भी लगभग इतनी पहुँच जाती है और फिर इसके बाद मात्राएँ, संयुक्ताक्षर और यदि इसमें हर अक्षर की बारहखड़ी भी जोड़ दें तो कुल मिलाकर यह संख्या इतनी बड़ी हो जाती है कि एक छोटे बच्चे के लिए इन सबको एक साथ सीख पाना बहुत आसान नज़र नहीं आता।

Figure 28 यदि शिक्षण प्रक्रियाएँ सार्थक न हों तो कक्षाएँ नीरस हो जाती हैं

एक दूसरे नज़रिए से देखें तो हम जिस तरह से इन लिपि-चिह्नों को लिखते हैं, वह भी आसान नहीं है। सोचिए कि हम अक्षरों पर मात्राओं को कैसे जोड़ते हैं, कुछ मात्राएँ अक्षरों के दाहिनी तरफ जुड़ती हैं, तो कुछ बाईं तरफ, कुछ ऊपर और कुछ नीचे। एक पढ़ने-लिखने में सक्षम वयस्क के रूप में शायद हम इस बात का एहसास नहीं कर पाते कि इन सभी चीज़ों को एक बच्चे के लिए सीख लेना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है, किंतु इन्हें सीखने के लिए बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के वर्षों के दौरान एक ठीक-ठाक समय और अवसर देने की आवश्यकता है।

अक्सर देखा जाता है कि कक्षा में फोकस या तो लिपि सिखाने पर होता है या फिर अक्षरों की ध्वनियों को सिखाने पर होता है। उदाहरण के लिए जब हम 'क से कबूतर' कहते हैं तो हम उसे 'क' की ध्वनि से परिचित करा रहे होते हैं। लेकिन यहाँ पर 'क' की लिपि केंद्र में नहीं आ पाती है और फिर जब वर्णमाला लिखाने की बात करते हैं तो फिर एक साथ वर्णों के पूरे समूह या फिर कभी-कभी तो पूरी वर्णमाला ही लिखा देते हैं। ऐसा करने के दौरान लिपि-चिह्नों को उनसे संबन्धित ध्वनियों से स्पष्ट और सार्थक तरीके से नहीं जोड़ा जाता। परिणामस्वरूप बच्चों के लिए ध्वनि और उससे संबंधित लिपि-चिह्न के संबंध को समझ पाना मुश्किल होता जाता है। अतः आवश्यकता है कि बच्चे लिपि-चिह्न और उनसे संबंधित ध्वनियों को एक साथ देखें-समझें। इसके लिए हमें कुछ ऐसी गतिविधियों का प्रयोग करना होगा जो ध्वनि और उससे संबंधित लिपियों के बारे में साथ-साथ बात करती चलें।

शिक्षण के दौरान फोकस या तो अक्षर (लिपि-चिह्न 'क') पर होता है या फिर इससे संबन्धित ध्वनि पर (क से कबूतर)। लेकिन आवश्यकता है कि बच्चे इन दोनों (लिपि-चिह्न और उसकी ध्वनि) को एक साथ देख सकें या एक साथ ध्यान केन्द्रित कर सकें।

कक्षाओं में प्रचलित एक और आम प्रक्रिया यह है कि अक्सर पूरी वर्णमाला सिखाने के बाद ही मात्राओं को सिखाने की ओर रुख किया जाता है। इसका अर्थ यह होता है कि बच्चे पहली मात्रा तक पहुँचने में स्कूल के अपने पहले वर्ष का आधे से अधिक समय बिता चुके होते हैं और यह पूरा समय निहायत ही नीरस और मशीनी कवायदों का अनुकरण करते बीतता है। इससे होता यह है कि लगभग चार से छह महीने बिता चुकने के बाद भी बच्चे में पढ़ने को लेकर कोई आत्मविश्वास पैदा नहीं होता और वे इस पूरे समय में वर्णमाला के अक्षरों को जोड़-जोड़कर बिना मात्रा वाले कुछ ऐसे शब्दों को लिख रहे होते हैं जो सिर्फ इसी उद्देश्य के लिए सायास उपयोग में लाए जाते हैं और मशीनी नज़र आते हैं। इनमें से अधिकतर शब्दों का बच्चों की अपनी पसंद-नापसंद, अनुभव, जीवन या परिवेश से कोई ख़ास लेना-देना नहीं होता।

आइए, नीचे प्रस्तुत कक्षा प्रक्रियाओं के इन चार उदाहरणों के द्वारा कक्षाओं की आम स्थिति और इनसे उपस्थित होने वाली चुनौतियों को समझने का प्रयास करते हैं:

उदाहरण 1

पहले दर्जे में अशोक को हिंदी के अध्यापक ने वर्णमाला सिखाई। एक-एक अक्षर की आवाज़ हफ्तों रटाई, अक्षरों की आकृति बनाना सिखाया। जिन बच्चों को दिक्कत आती थी, उनका हाथ पकड़कर सिखाया। स्कूल में एक छोटा सा ब्लैकबोर्ड था- खूब घिसा हुआ, चॉक के बारीक कणों से इस कदर ढँका हुआ कि लिखाई देखने के लिए सिर की नसों का सारा ज़ोर पुतली पर केंद्रित करना होता था। यह ब्लैकबोर्ड अगस्त से अक्टूबर तक वर्णमाला की आकृतियों से ढँका रहा। बच्चे एक-एक अक्षर की आकृति बीसियों बार उतारते। इस तरह अंत में अशोक ने सारी हिंदी वर्णमाला सीख ली।

अब अध्यापिका ने पाठ्यपुस्तक की तरफ ध्यान दिया, जिसमें हर अक्षर के पास एक शब्द लिखा था और एक चित्र बना था। क के पास लिखा था 'कबूतर'। अशोक शुरू से जानता था कि क का मतलब होता था 'कबूतर'। इसलिए जब बहनजी ने अक्षर जोड़कर कबूतर पढ़ना सिखाना चाहा तो अशोक बहुत खुश हुआ। पर उसे यह नहीं समझ में आया कि दरअसल बहनजी के लिए 'क', 'बू', 'त' और 'र' का कुल योग कबूतर है। अशोक के दृष्टिकोण से क 'कबूतर' था। बहनजी के पास इतना समय नहीं था कि अशोक का दृष्टिकोण समझें। 'अशोक का भी कोई दृष्टिकोण है'- यह बात वे जानती थीं या नहीं, मैं कह नहीं सकता। बहरहाल उन्होंने सोचा कि अशोक 'क' के साथ लिखे शब्द को देखकर 'कबूतर' कह रहा है, यानी कि वह पढ़ना सीखने लगा है। इसी तरह अशोक ने बाकी सब अक्षरों के साथ लिखे शब्द पढ़ना सीख लिया। अक्षरों की आकृतियाँ स्लेट और कॉपी पर उतारना तो वह पहले ही सीख चुका था। पहले दर्जे का अंत होते-होते वह अपनी प्रगति से काफी खुश था। जब वह दूसरी में आया और कक्षा में उससे किताब पढ़ने को कहा गया तो वह इस तरह बोला:

'कबूतर का क, मटर का म, लंगूर का ल, क - म - ल। हर बार उसे इस तरह पढ़ते देखकर अध्यापिका कुछ नाराज़ हुईं। अशोक के हर प्रयास के बाद अध्यापिका उससे कहतीं– "दूसरे बच्चों को ध्यान से सुनो, उनकी तरह पढ़ो।" अशोक दूसरे बच्चों को बहुत ध्यान से सुनता, पर यह समझने में असमर्थ रहता कि वह कहाँ गलती कर रहा है। उसे लगता कि दूसरे ठीक उसकी तरह पढ़ रहे हैं। यही शब्द वे पढ़कर सुना रहे हैं। फिर बहनजी उससे क्यों नाराज़ हैं? सौभाग्यवश बहनजी और भी कुछ बच्चों पर खीझती थीं, इसलिए अशोक अपने को एकदम अकेला नहीं पाता था। किसी तरह उसने दूसरी कक्षा के सारे दिन काट लिए। धीरे-धीरे उसकी क से कबूतर कहने की आदत भी कम हो गई। अब वह इस तरह पढ़ता था:

ग पे उ की मात्रा गु
ल पे आ की मात्रा ला
ब
क पे आ की मात्रा का
फ पे बड़े ऊ की मात्रा फू
गु - ला - ब का फू - ल

बहनजी उसे कभी-कभार ही पढ़ने को कहतीं, अक्सर उनके पास की टाटपट्टी पर बैठे बच्चे ही पूरा पाठ पढ़ देते। पर अशोक इस बात से उदास नहीं था। उसने एक पूरी कविता याद कर ली थी। दूसरी कक्षा के अंतिम दिनों में जब किताब दोहराते वक्त इस कविता को पढ़ने का नंबर आया तो अशोक ने बगैर सही पेज खोले पूरी कविता पढ़कर सुना दी। बहनजी उससे गुस्सा थीं कि उसने सही पेज क्यों नहीं खोला। अशोक खुश था कि वह बिना किताब देखे पढ़ने लगा है। उसके और बहनजी के दृष्टिकोणों का विरोध तीखा होता जा रहा था। ...

प्रो॰ कृष्ण कुमार जी द्वारा लिखित 'अशोक की कहानी' के उपरोक्त भाग को पढ़कर हम कक्षा में शिक्षकों और बच्चों, दोनों की समस्याओं और दुविधाओं को समझ सकते हैं। अधिकतर विद्यालयों के बच्चे लगभग इसी प्रकार की कक्षा प्रक्रियाओं से गुज़रते हैं जिनसे अशोक गुज़र चुका है। फिर स्वाभाविक है कि उनकी समस्याएँ भी वही होंगी जो कि अशोक की हैं और इस समस्या की जड़ में है बिना सार्थक संदर्भों या बच्चों के पूर्व-अनुभवों का इस्तेमाल किए हुए उन्हें वर्ण सिखाना और यह मान लेना कि वर्णों की ध्वनियों और उनकी आकृतियों को समझ लेना मात्र ही पढ़ना और लिखना सीखने के लिए पर्याप्त है। यदि इस उदाहरण को देखें तो हम पाते हैं कि पूरे एक वर्ष तक चलने वाली कक्षा प्रक्रियाएँ कहीं से भी सार्थक या रोचक नहीं हैं। बच्चे इन्हें बेमन से सुनते हैं, बोलते हैं, रटते हैं और लिखते हैं, लेकिन कुछ ख़ास समझ नहीं पाते, क्यों? क्योंकि मान्यता यह है कि समझने का काम अगली कक्षाओं में तब 'अच्छे' से शुरू होगा जब बच्चे इन वर्णों और मात्राओं को जोड़-जोड़कर दिए गए शब्दों और वाक्यों को पढ़ने या लिखने का प्रयास करेंगे। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। क्योंकि इतना होते-होते बच्चों के लिए स्कूल और कक्षाएँ एक नीरस, उबाऊ और कुछ हद तक डरावनी जगह बन जाती हैं और वे इनसे बचने हेतु अपनी क्षमता भर पूरा प्रयास करते हैं।

उदाहरण 2

कक्षा 1 में सुजाता हिंदी पढ़ा रही थीं। कक्षा ख़ासी मुखर थी। कक्षा में घुसते ही उन्होंने बच्चों को चुप होकर बैठने का निर्देश दिया। रजिस्टर में उपस्थिति दर्ज करने की औपचारिकता पूरी करने के बाद वह वर्णमाला चार्ट की ओर बढ़ीं और कहना शुरू किया- अ से अनार, आ से आम, क से कबूतर, च से चम्मच। बच्चे यंत्रवत उनके पीछे उनकी बात को दोहराते जा रहे थे। फिर उन्होंने श्यामपट्ट पर क लिखा और बच्चों से पूछा, यह क्या है? बच्चे समवेत स्वर में बोले, क से कबूतर... यही प्रक्रिया सारे वर्णों के साथ दोहराने के बाद बच्चों को अपनी पुस्तिका निकालने के लिए कहा गया। सुजाता ने उसमें क, ख, ग, घ लिख दिया, जिसे बच्चों को पूरे पृष्ठ पर हूबहू उतारने के लिए कहा गया। बच्चे उन्हें उतारने में व्यस्त हो गए और सुजाता घूम-घूमकर यह देखने लगीं कि कौन बच्चा गलती कर रहा है, किसके अक्षर टेढ़े-मेढ़े बन रहे हैं। कक्षा में चुप्पी छाई थी और बच्चे अक्षरों की आकृतियों को बना रहे थे...

क्या हो सकता था– बात ऊपर के उदाहरण में अशोक शिक्षक की करें या इस उदाहरण में सुजाता जी की, एक बात तो स्पष्ट है कि कक्षा में जो होना चाहिए, वह यह तो कतई नहीं। फिर सवाल उठता है कि होना क्या चाहिए? दोनों ही उदाहरणों में देखें तो शिक्षकों की इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं है कि उनकी कक्षा में बच्चों की रुचि है भी या नहीं। कहने का तात्पर्य यह कि पूरा ध्यान अपनी बंधी-बंधाई रूटीन को फॉलो करने पर है, न कि इस तरफ कि बच्चे सीखना चाहते भी हैं या नहीं। तो फिर किया क्या जाए? ज़ाहिर है, सुजाता जी पहले बच्चों से घुलतीं-मिलतीं और उनकी रुचियों को जानने-समझने का प्रयत्न करतीं। इस हेतु वे बच्चों से उनके पसंद के विषयों पर चर्चा कर सकती थीं। उन्हें अपने स्कूल के दिनों के शरारती या चुटीले अनुभव सुना सकती थीं, कोई छोटी कविता या कहानी सुना सकती थीं और उससे जुड़े कुछ ऐसे सवाल पूछ सकतीं थीं जिसका जवाब देने के लिए बच्चों को अपने पूर्व-अनुभवों तक जाना पड़े। फिर इन्हीं गीत-कविता या कहानी से कुछ शब्द लेतीं और फिर उनके साथ खेलते हुए उन शब्दों से पढ़ाए जाने वाले लक्षित वर्णों और उनके चिह्नों (लिपि) तक जातीं। फिर इसके बाद वो यदि यही करतीं जो कि कर रही हैं तो बच्चों को वर्ण अजनबी नहीं लगते और

उन्हें बच्चे सार्थक संदर्भों में देख और समझ सकते। फिर बहुत संभव है कि सीखने-सिखाने की यह प्रक्रिया और अधिक रोचक और आकर्षक होती, अशोक के लिए भी और सुजाता के लिए भी।

उदाहरण 3

कक्षा 1 में वर्णमाला ज्ञान की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी थी। शिक्षिका बच्चों को मात्राएँ सिखा रही थीं। कक्षा में आते ही उन्होंने श्यामपट्ट पर दिनांक और वार लिखा। वार लिखते ही बच्चे एक साथ बोले, "आज बुधवार है", मानो वे पढ़ना जानते हों। शिक्षिका ने उन्हें चुप रहने का संकेत दिया और बोलीं, आज हम 'इ' की मात्रा के शब्दों का अभ्यास करेंगे। उन्होंने क, ख, ग आदि को श्यामपट्ट पर लिखकर उन पर इ की मात्रा लगा दी। बच्चे समवेत स्वर में बोले, "कि, खि, गि...", यह अभ्यास सभी वर्णों के साथ करने के बाद शिक्षिका ने पाठ्यपुस्तक में लिखे गए पाठ को पढ़वाना शुरू किया। बच्चों को वह पृष्ठ खोलकर उंगली रखकर पढ़ने का निर्देश दिया गया।

'किताब' 'गिलास' 'चिड़िया' 'बिटिया' 'बिलाव'

'मदन गिलास रख। गिलास किताब पर रख। चिड़िया आई। बिटिया गिलास ला। बिलाव आया।'

बच्चे यहाँ-वहाँ देखते हुए शिक्षिका द्वारा कही गई बात को दोहराते जा रहे थे। शिक्षिका हर बच्चे के उच्चारण पर ध्यान देतीं और गलती होने पर उसे सुधारती जातीं। फिर पढ़े गए पाठ को लिखने का काम शुरू किया गया, जिसमें बच्चे इ की मात्रा वाले शब्दों को कॉपी में उतारने लगे।

क्या हो सकता था– पहले और दूसरे उदाहरण की तरह यहाँ भी कक्षा की शुरुआत किसी रोचक गतिविधि से की जा सकती है। इसके लिए कविता और कहानी सरल और सहज उपाय हैं, लेकिन ज़रूरी नहीं कि हमेशा इन्हीं का उपयोग किया जाए। यदि इस कक्षा को देखें तो यहाँ यह स्पष्ट है कि शिक्षिका पूर्वनिर्धारित योजना के अनुसार कक्षा में 'इ' की मात्रा पर काम करवाना चाहती थीं और उन्होंने वैसा ही किया भी। लेकिन क्या वे इस प्रक्रिया को और अधिक सार्थक और रोचक बना सकती थीं? जवाब है, हाँ!

इसका मौका उन्हें शुरुआत में बच्चों ने ही दिया, जब वे उनके लिखने के साथ ही साथ समवेत स्वर में बोले कि आज बुधवार है। यह स्वाभाविक मानव प्रवृत्ति है कि वह कुछ नया करने पर या सीखने पर सभी का ध्यान उस ओर दिलाना चाहता है। बच्चे भी कुछ ऐसा ही कर रहे थे। उन्हें अभी पूरे तौर पर पढ़ना भले ही नहीं आता हो, लेकिन वे पैटर्न पहचानते हैं और रोज घटने वाली प्रक्रिया के कारण उन्हें पता है कि वहाँ आज का दिन लिखा जाता है। शिक्षिका बच्चों का उत्साहवर्द्धन करते हुए इसी का छोर पकड़ बात आगे बढ़ा सकती थीं और उन दो दिनों तक ला सकती थीं जिनमें 'इ' की मात्रा मौजूद है (शनिवार और रविवार)। यह बच्चों के लिए एक सार्थक संदर्भ रचता और उन्हें यह आत्मविश्वास भी देता कि उनकी बातों को भी पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जा रहा है। इसके साथ ही साथ दिनों से आगे बढ़ते हुए महीनों के नामों का भी उपयोग किया जा सकता था और फिर इन्हें ध्वनियों में तोड़ते हुए 'इ' की मात्रा की ध्वनि की समझ को और पुख्ता किया जा सकता था। इसके बाद 'इ' और 'ई' की ध्वनियों और इनकी मात्रा की ध्वनियों में मौजूद अंतर को भी इसी स्टेज पर समझना आवश्यक है। इस हेतु भी पाठ, परिवेश या फिर महीनों के नामों (जनवरी, फरवरी, सितंबर, दिसंबर) को चुनकर इनके उच्चारण के अंतर को स्पष्ट किया जा सकता था और इस पूरी प्रक्रिया में श्यामपट्ट, मात्रा कार्ड और शब्द कार्डों का उपयोग किया जा सकता था।

उदाहरण 4

कक्षा 3 में पाठ वाचन किया जा रहा था। शिक्षक ने स्वयं बुलंद आवाज़ में पाठ पढ़ा और फिर बच्चों द्वारा एक-एक करके पाठ पढ़ने की प्रक्रिया शुरू की गई। कुछ बच्चे धाराप्रवाह तो कुछ बच्चे अटक-अटक कर पढ़ रहे थे। सुलभ की बारी आई। उसने पाठ की पंक्तियों को मन में अनुमानित करके डिकोड करना (हिज्जे करके पढ़ना) शुरू किया। क पर इ की मात्रा कि, स पर ई सी - किसी, ग पर आ और चंद्रबिंदु और व यानी गाँव, म पर ए और बिंदी - में। इस प्रक्रिया में वह पहले छपे हुए अक्षरों को मन में हिज्जों में बांधता और फिर उन्हें उच्चरित करता। ऐसा करने के कारण उसके पढ़ने की गति अत्यंत धीमी थी और कई बार तो उसके बोलने के पहले ही बाकी बच्चे उस शब्द को बोल देते थे। शिक्षक खीझकर बोले, कैसे पढ़ रहे हो सुलभ, कक्षा तीन में आ गए और ऐसे पढ़ रहे हो? चलो, मेरे पीछे दोहराओ। सारे बच्चे हँसने लगे, सुलभ शर्म के मारे किताब में नज़रें गड़ाए अपने आँसुओं को रोकने का भरसक प्रयास करते हुए शिक्षक के पीछे-पीछे कहे गए को दोहराने लगा। अगली बारी जोएल की थी। पढ़ते समय वह लगातार शक्कर को सक्कर, भयंकर को बयंकर और तकलीफ को कतलीफ पढ़ रहा था। शिक्षक उसके उच्चारण की गलतियों पर उसे टोकते जा रहे थे और उन शब्दों को बार-बार उसके द्वारा दोहराया जा रहा था, मगर कई बार इन्हें दोहराने के बाद भी पढ़ते समय वैसी ही गलती होती जा रही थी। हारकर शिक्षक ने उसे बैठने के लिए कह दिया और साथ ही निर्देश दिया कि इस पाठ को घर पर पढ़ने का अभ्यास करे।

इसके बाद पढ़ने की बारी श्यामली की थी। उसने किताब उठाई और धड़ाधड़ पढ़ना शुरू कर दिया। शिक्षक के चेहरे पर हँसी खिल गई और वे उत्साह से बोले, शाबाश श्यामली, देखा सबने, ऐसे पढ़ा जाता है पाठ। मगर जब पढ़े गए हिस्से में क्या कहा जा रहा है, यह श्यामली से पूछा गया तो वह यह बताने में असमर्थ थी।

क्या हो सकता था– इस कक्षा में दूसरे और तीसरे उदाहरणों से संबन्धित सुझावों को यथायोग्य शामिल करते हुए पढ़ने-लिखने की शुरुआत बच्चों के मन की बात को कहने और लिखने से की जा सकती थी। इस दौरान यह सुनिश्चित करना कि हर बच्चा अपनी बात कहे और शिक्षक उसे श्यामपट्ट पर लिखती जाएँ, फिर हर बच्चा अपनी लिखी बात को श्यामपट्ट से देखकर पढ़े और चाहे तो लिख भी ले। इससे बच्चे कही गई और लिखी गई बात के संबंध को समझ पाएँगे और अपनी कही गई बात में लिखे शब्दों की आकृति (लिपि-चिह्नों) को पहचान पाएँगे।

अगली कड़ी में शिक्षिका बच्चों द्वारा कही गई बात या उनकी कहानी के हर वाक्य को उनकी कॉपी पर लिखवा सकती है। बच्चे द्वारा लिखे गए वाक्य में गलती निकालने के स्थान पर उनके वाक्य के नीचे वही वाक्य सही हिज्जों और मात्राओं के साथ लिखा जा सकता है और फिर बच्चों को इन वाक्यों को पढ़ने के लिए कहना इसी प्रक्रिया का अगला चरण हो सकता है। इस प्रक्रिया में बच्चे बिना टोके या डाँट खाए भी अपनी लेखनी में होने वाली गलतियों को समझ जाएँगे और उन्हें सुधारने के लिए भी स्वतः ही प्रेरित होंगे।

इसके अलावा जिन शब्दों को पढ़ने में बच्चों को दिक्कत आ रही है उन शब्दों को शिक्षिका दीवार पर लिखकर बच्चों को पढ़वा सकती हैं, उनसे वाक्य बनाए जा सकते हैं या उनसे कोई खेल भी खेलाया जा सकता है। इस

तरह की गतिविधियाँ लगातार करने से बच्चे शब्दों की आकृतियों व उनकी ध्वनियों में संबंध बनाना सीखेंगे और धीरे-धीरे पढ़ने-लिखने का कौशल हासिल कर लेंगे।

उपरोक्त उदाहरणों एवं उनके विश्लेषण को देखें तो सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया के दौरान ध्यान देने वाली कुछ बातें इस प्रकार हैं–

- शिक्षण के दौरान फोकस या तो अक्षर (लिपि-चिह्न 'क') पर होता है या फिर इससे संबन्धित ध्वनि पर (क से कबूतर)। लेकिन आवश्यकता है कि बच्चे इन दोनों (लिपि-चिह्न और उसकी ध्वनि) को एक साथ देख सकें या इनपर एक साथ ध्यान केन्द्रित कर सकें। इसके लिए हमें ऐसी गतिविधियों का उपयोग करना चाहिए जो कि ध्वनि और लिपि-चिह्नों की समझ को एक साथ विकसित कर सकें। हम आगे इससे संबन्धित कुछ उदाहरणों को देखेंगे।
- यह समझना ज़रूरी है कि पूरी वर्णमाला को एक साथ सिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है। और अब तो हिन्दी भाषा की अधिकतर पाठ्यपुस्तकें भी इस बात की तस्दीक करती हैं कि न तो पूरी वर्णमाला को एक साथ सिखाने की ज़रूरत है और न ही किसी निश्चित क्रम में सिखाने की। हम देखते हैं कि किसी पाठ्यपुस्तक में अक्षर सिखाने का आरंभ 'घ' से हुआ है तो किसी में 'म' से। साथ ही यह भी ज़रूरी है कि हम बच्चों की मौखिक भाषा सीखने की प्रक्रिया से जुड़े कुछ सूत्रों का उपयोग उन्हें लिखित भाषा सिखाने में करें। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण यह समझना है कि भाषा अपने परिवेश में संदर्भों के साथ सीखी जाती है। अतः लिखना और पढ़ना सिखाने के दौरान भी इसे ध्यान में रखना होगा।

अब तो हिन्दी भाषा की अधिकतर पाठ्यपुस्तकें भी इस बात की तस्दीक करती हैं कि न तो पूरी वर्णमाला को एक साथ सिखाने की ज़रूरत है और न ही किसी निश्चित क्रम में सिखाने की।

- पूर्व के पृष्ठों में इस बात की विस्तार से चर्चा की गई है कि भाषा सीखने में भाषाई वातावरण की कितनी अहम भूमिका होती है और इस वातावरण का निर्माण और भाषा शिक्षण में इसका उपयोग कैसे किया जाए। पढ़ना-लिखना सिखाने की ओर पहला कदम बढ़ाने से पहले यह सुनिश्चित कर लेना आवश्यक है कि बच्चों के साथ मौखिक भाषाई विकास पर भरपूर कार्य किया गया हो। यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि बच्चों को टेक्स्ट का भरपूर एक्स्पोज़र मिला हो, जिससे कि लिपि-चिह्नों के परिचय (उनके उच्चारण) और अभ्यास (लिखित) के दौरान बच्चों को टेक्स्ट अजनबी न लगें। इन्हीं बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए आइए, हम यह समझते हैं कि कक्षा में यह प्रक्रिया किस प्रकार से चरण-दर-चरण पूरी होगी।
- अक्षरों को सिखाने की शुरुआत करने का सबसे बेहतर तरीका यह हो सकता है कि सिखाने के लिए सबसे पहले ऐसे अक्षरों के समूह का चुनाव किया जाए जिनसे कि बच्चों की आम बोलचाल की भाषा में बार-बार आने वाले कुछ प्रचलित शब्दों की शुरुआत होती हो और जिनसे वे परिचित हों। उदाहरण के लिए, यदि किसी कस्बे में एक स्कूल है और उस कस्बे में एक ऐसा पार्क है जहाँ उस स्कूल में नामांकित अधिकतर बच्चे खेलने के लिए अक्सर जाते हैं तो उनके लिए वर्णमाला सिखाने की शुरुआत के लिए 'पार्क' शब्द और उसका 'प' वर्ण या फिर 'बस' शब्द और उसका 'ब' वर्ण चुना जा सकता है। वहीं ग्रामीण परिवेश से आने वाले बच्चों के लिए वर्णमाला सिखाने की शुरुआत बकरी और 'ब' या गाय और 'ग' से की जा सकती है।

- यह स्पष्ट है कि भाषा में कई कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, और संज्ञानात्मक आदि) निहित होते हैं और इन कौशलों को सीखने के लिए शिक्षक को कक्षा में विविध सार्थक और रोचक प्रक्रियाओं का उपयोग करना होता है। उदाहरण के लिए लिपि सीखना मात्र चिह्नों को रट लेना भर नहीं है, वरन् चिह्नों और ध्वनियों के संबंध को समझते हुए विभिन्न परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार उसका उपयोग करना भी है। अतः इसे सिखाने की प्रक्रिया एकांगी न होकर बहुमुखी होगी और यह बच्चों के साथ कक्षा में हो रहा कार्य और उसके तौर-तरीके, दीवारों का इस्तेमाल, कक्षा में उपलब्ध बाल साहित्य, स्कूल में पढ़ने-लिखने और अभिव्यक्ति के अन्य अवसर, घर पर मिलने वाले अवसर और सहयोग आदि सभी पर निर्भर होगा। अतः यह आवश्यक है कि भाषा शिक्षक इन सभी आयामों को ध्यान में रखते हुए कार्य करे, तभी बच्चों का सीखना बेहतर होगा।

उपरोक्त बिन्दुओं को देखें तो हमें भाषा शिक्षण से जुड़ी विभिन्न पद्धतियों और उनकी खूबियों और खामियों की भी एक झलक मिलती है। आगे बढ़ने से पहले इन बहुप्रचलित पद्धतियों को उनकी खूबियों और खामियों के साथ समझते हैं, जिससे कि हमें कक्षा में अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं को चुनने में मदद मिले।

वर्ण पद्धति	शब्द पद्धति	संदर्भ पद्धति
• भाषा शिक्षण की यह परंपरागत पद्धति हमारी कक्षाओं में सबसे अधिक लोकप्रिय और प्रचलित है। • यह एक बॉटम-अप अप्रोच है जो सूक्ष्म से स्थूल या अज्ञात से ज्ञात की ओर बढ़ती नज़र आती है। • कक्षा प्रक्रियाओं के केंद्र में बच्चे या उनका अनुभव न होकर वर्णमाला और बारहखड़ी होती है और फिर इनसे जुड़ी मौखिक और लिखित कवायद जो कि नीरस और उबाऊ होती है। • यह प्रक्रिया बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री से अर्थपूर्ण रिश्ता बनाने में बाधा उत्पन्न करती है। यह बच्चे की सीखने की प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। और यहीं से बच्चे अपने को हीन महसूस करने लगते हैं। हम देखें तो बिना किसी संदर्भ के 'क' वर्ण बच्चे के लिये मात्र अर्थहीन आकृति है। ऐसी बहुत सी आकृतियों को पहचानने में बच्चों को समस्या आती है। ऐसी आकृतियों को याद रख पाने के अभ्यास बच्चों को नीरस और उबाऊ लगते हैं।	• बात शब्द पद्धति की करें तो यहाँ भाषा शिक्षण की शुरुआत परंपरागत रूप से वर्णों से न होकर शब्दों से होती है। • यहाँ वर्ण पहचान की प्रक्रिया को सीधे वर्ण को केंद्र में रखकर करने के स्थान पर किसी सार्थक शब्द से जोड़कर की जाती है। • इससे शुरुआती स्तर पर भाषा सीख रहे बच्चों को वर्ण पहचान में आसानी होती है और वे अलग-अलग वर्णों को जोड़कर शब्द निर्माण की प्रक्रिया से भी आसानी से जुड़ जाते हैं। • इस विधि में अक्षरवार न सिखाकर बच्चों के परिचित सार्थक अर्थ वाले शब्दों का चयन किया जाता है। • इस प्रक्रिया में बच्चों को शब्दों का परिचय बिना उनको टुकड़ों में तोड़े एक इकाई के रूप में कराया जाता है। • इस विधि से सिखाने में वस्तुओं के नाम के साथ उनके चित्रों से उनका सम्बन्ध जोड़ना होता है। चयनित सार्थक शब्द व चित्र को बार-बार दिखाकर शब्द व चित्र की पहचान कराई जाती है। शब्द पद्धति से सिखाने का उद्देश्य पूरे शब्द की पहचान कराना एवं शब्द भंडार का विकास करना भी होता है।	• संदर्भ पद्धति के मूल में यह अवधारणा है कि सीखने की प्रक्रिया समग्र रूप में होती है। यह पद्धति बच्चों के आस-पास भाषा के एक भरे-पूरे परिवेश की वकालत करती है और फिर उस समृद्ध भाषाई माहौल में बच्चों के अपने प्रयासों और अनुभवों को सीखने के केंद्र में रखती है। • यह पद्धति इस मान्यता पर आधारित है कि भाषा शिक्षण की प्रक्रियाओं की शुरुआत सार्थक संदर्भों से ही होनी चाहिए। • साधारण शब्दों में कहें तो जिस प्रकार से बच्चे एक समृद्ध भाषाई परिवेश में मौखिक भाषा से परिचित और पारंगत हो जाते हैं, उसी प्रकार के प्रयासों से उन्हें लिखित भाषा से भी परिचित कराया जा सकता है। • यह पद्धति समग्रता से आरंभ करके वर्णों को सीखने तक जाने की बात करती है। अर्थात् किसी कविता या कहानी आदि से आरंभ करके, उसमें आए कुछ प्रमुख शब्दों को उनकी पूरी अवधारणाओं के साथ समझना और फिर उनसे ध्वनियों या वर्णों को अलग-अलग करके सीखा जाता है।

वर्ण पद्धति	शब्द पद्धति	संदर्भ पद्धति
• अतः यह प्रक्रिया एक ओर जहाँ पूरी भाषा को समग्रता में नहीं देख पाती है और उसे टुकड़ों में बाँटकर सिखाती है, वहीं यह सीखने के प्राकृतिक सिद्धांतों के विपरीत भी जाती है । • हाँ, शिक्षकों की दृष्टि से देखें तो यह उनके कार्य को आसान बनाती है। एक बार लिखी वर्णमाला हफ्तों, महीनों तक काम आती है और बच्चे उसे लिखते और उच्चरित करते हैं । • इस विधि से पढ़ना सीखने वाले बच्चे हर शब्द को अक्षरों की इकाइयों में तोड़कर बोलते हैं, हिज्जे करके पढ़ते हैं। इस प्रकार बच्चों के लिए उस पढ़ी हुई सामग्री में कोई अर्थ नहीं बन पाता है। • यहाँ बच्चों के पास स्वयं करके सीखने के अवसर बहुत ही कम होते हैं। विषयवस्तु की प्रकृति के अनुसार उन्हें तर्क करके समझने, समालोचनात्मक विश्लेषण करके सीखने, परिवेशीय अनुभवों के साथ जोड़कर सीखने या संदर्भ के साथ सीखने के अवसर नहीं मिलते हैं।	• शब्द पहचान के बाद फिर शब्द को उसकी ध्वनियों में तोड़कर पहचान कराई जाती है। • यदि इस पद्धति की तुलना वर्ण पद्धति से करें तो हम पाते हैं कि इस दौरान अपनाई जाने वाली प्रक्रियाएँ अधिक सार्थक होती हैं। क्योंकि पहले दिन से ही बच्चे सार्थक संदर्भों के संपर्क में भाषा सीखना शुरू करते हैं और प्रक्रियाएँ भी रुचिकर होती हैं । • इस पद्धति की सीमाओं की बात करें तो यहाँ शुरुआत परिचित शब्दों से होती है, अतः पूरा ज़ोर शब्दों पर होता है और इस कारण बच्चों को सीखने के लिए आवश्यक सम्पूर्ण संदर्भ नहीं मिल पाता।	• यह पद्धति जिस प्रकार के भाषा समृद्ध वातावरण की वकालत करती है, उससे सीखने-सिखाने की पूरी प्रक्रिया बच्चों के लिए रोचक और सार्थक बन जाती है। • इस पद्धति की सीमाओं की बात करें तो यह प्रक्रिया वर्ण-चिह्न सम्बन्धों को समझने के लिए आवश्यक प्रक्रिया में कहीं पिछड़ती नज़र आती है। डिकोडिंग पर कम ध्यान देना भी इस अनुसार कार्य कर रहे शिक्षकों की एक सीमा है। • शिक्षकों के बीच इसका लोकप्रिय न होना एक बड़ी समस्या है। इसका कारण संभवतः यह है कि यह पद्धति शिक्षकों को पूरी तरह से अपनी वर्तमान शिक्षण पद्धतियों को छोड़कर एक नई पद्धति अपनाने की वकालत करती है। • वहीं यह भी उतना ही सच है कि एक बड़ा वर्ग इसे पूरी तरह से समझने में नाकाम रहा है।

समन्वित या संतुलित पद्धति

तीनों पद्धतियों को देखें तो यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि हमें एक ऐसी पद्धति का चुनाव करना चाहिए जो एक ही साथ डिकोडिंग की प्रक्रिया और संदर्भों के प्रयोग दोनों को सुनिश्चित करती चले। इसके लिए यदि हम भाषा शिक्षण हेतु निर्धारित सीखने के प्रतिफल देखें तो कक्षा में अपनाई जाने वाली शिक्षण प्रक्रियाओं को लेकर एक तरह की स्पष्टता बनती नज़र आती है। तात्पर्य यह है कि इन सभी प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि बच्चों के साथ प्रतिदिन मौखिक भाषा विकास, शब्द भंडार विकास, ध्वनि जागरूकता, डिकोडिंग, पठन और लेखन पर कार्य किया जाए। इन प्रक्रियाओं को प्रतिदिन सुनिश्चित करने के लिए हमें एक ऐसी पद्धति की आवश्यकता पड़ेगी जो यहाँ निर्दिष्ट सभी कौशलों को साथ लेकर चले और उनमें संतुलन सुनिश्चित करे। इस हेतु भाषा शिक्षण की समेकित पद्धति का उपयोग श्रेयस्कर होगा। इस पद्धति के अनुसार एक कक्षा का कालांश कुछ इस प्रकार नज़र आएगा-

मौखिक भाषा विकास गतिविधियाँ

- बातचीत / कहानी / कविता / खेल / अनुभव आदि के द्वारा सुनने-बोलने पर कार्य।

शब्द पहचान गतिविधियाँ

- ध्वनि जागरूकता / ध्वनि-लिपि चिह्न पहचान (डिकोडिंग) / शब्द आधारित (जोड़ना, तोड़ना, नए बनाना) गतिविधियाँ।

पठन गतिविधियाँ

- पढ़कर सुनाना, समेकित पठन, शिक्षक की सहायता से पढ़ना, स्वतंत्र पठन।

लेखन गतिविधियाँ

- चित्र, शब्द, वर्ण आदि से संबन्धित बुनियादी कौशलों पर कार्य से लेकर स्वतंत्र लेखन तक की गतिविधियाँ।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि कक्षा में इस हेतु समय का बँटवारा भी कक्षा-स्तर के अनुसार होगा। उदाहरण के लिए जहाँ कक्षा 1 और 2 में 60 मिनट का उपरोक्त चारों कार्यों में बँटवारे का अनुपात 15:20:15:10 हो सकता है, वहीं कक्षा 3 और इसके बाद यह अनुपात 10:10:20:20 हो सकता है।

(समय के इस प्रकार के बँटवारे का यह आशय नहीं है कि इन सभी कौशलों पर काम अलग-अलग किया जाए, वरन् यह है कि सभी कौशलों के विकास से संबन्धित चरणों को प्रक्रिया में शामिल किया जाए)

आइए, उपरोक्त पद्धतियों और पूर्व में वर्णित भाषा शिक्षण के सैद्धांतिक और प्रक्रियात्मक बिन्दुओं के आलोक में हम भाषा शिक्षण के कुछ अन्य ऐसे उदाहरणों को देखते और विश्लेषित करते हैं जहाँ कक्षा शिक्षण प्रक्रियाएँ बेहतर नज़र आती हैं। ये चार उदाहरण शिक्षकों के समक्ष उपस्थित चुनौतियों और उनसे निपटने से जुड़ी शिक्षण प्रक्रियाओं को प्रस्तुत करते हैं।

उदाहरण 1

गोलू भोपाल में काम कर रही संस्था मुस्कान से जुड़ा था, जो झुग्गी-बस्तियों में रहने वाले अत्यन्त वंचित तबके के बच्चों के लिए काम करती है। इन बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए विविध प्रयास किए जाते हैं, जिनमें से एक तरीका है, आवासीय शिविर में रहते हुए सीखना। इस तरह के एक शिविर में अन्य बच्चों के साथ गोलू भी शामिल था।

वह शिविर में आ तो गया था, पर कक्षा में कभी-कभार ही बैठता था। कक्षा में एक दिन कविता गाई जा रही थी:

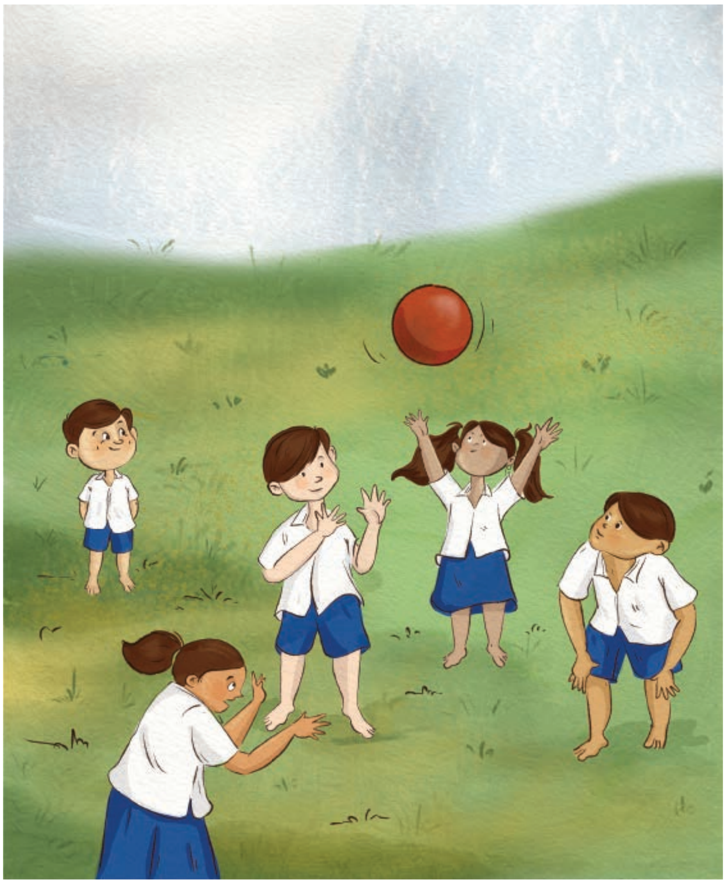

Figure 29 अन्य बच्चों को गतिविधि में संलग्न देखता एक बच्चा

'रज्जू के बेटों ने, मिट्टी के ढेरों में, कद्दू के कई बीज बोए, बोए, बोए!'
गोलू ने इसमें उत्साह से भाग लिया। उसके इस उत्साह का कारण तब पता चला जब उसने मुझे बताया कि रज्जू उसके मामा का नाम है। उसके मामा उससे बहुत प्यार करते हैं।
गोलू ने पूछा, "भैया इसमें रज्जू कहाँ लिखा है?"
दूसरे बच्चे ने उसे बताया। उसने अपनी कॉपी में रज्जू लिखा। उसने बताया कि रज्जू उसके मामा का नाम है, इसलिए ये कविता उसे बहुत अच्छी लगी। गोलू ने जल्दी ही कविता याद कर ली।

कविता से पढ़ना सीखने की प्रक्रिया यह होती है कि कविता का पोस्टर बनाकर कक्षा की दीवार पर लगा

दिया जाता। जब बच्चे कविता याद कर लेते तब कविता पोस्टर में लिखी पंक्तियों की पहचान करवाई जाती। पंक्तियों की पहचान के बाद शब्दों की पहचान करवाई जाती, इसके बाद शब्दों में आए अक्षरों की। इसके लिए कविता पट्टियों को क्रम से जमाना, शब्द कार्ड का मिलान करवाना, कविता में आए संज्ञा शब्दों के चित्र बनवाना आदि काम करवाए जाते। ऊपर लिखी घटना के बाद इन सभी कामों में गोलू पूरे मन से शामिल हुआ।[1]

उदाहरण 2

जब मैं पहली कक्षा के बच्चों से रूबरू हुआ तो कुछ कुछ बच्चे उदासीन-से लगे। कुछ उत्सुकता से मेरी ओर देख रहे थे। कुछ की आँखों में डर भी रहा होगा शायद। मैंने बच्चों से बातचीत शुरू की। अपना परिचय दिया, बच्चों से परिचय लिया। धीरे-धीरे बातचीत को उनकी पसंद-नापसंद की ओर मोड़ दिया। अवसर मिलते ही एक सवाल मैंने हवा में छोड़ दिया, "अच्छा ये तो बताओ, खाने में कौन-सा फल सबसे अच्छा लगता है?" तुरंत जवाबों की रिमझिम होने लगी। "आम, केला, अमरूद, सेब" आदि। कुछ ने हलवा, आइसक्रीम आदि का नाम भी लिया। जो बच्चे चुप थे, उनसे मैंने स्वयं भी पूछ लिया। आखिरकार यह बात उभरकर आई कि 'आम' सबसे अधिक बच्चों को अच्छा लगता है। मैंने सुझाव दिया, "चलो आम का चित्र बनाते हैं।" जब मैंने श्यामपट्ट पर आम बनाने का प्रस्ताव रखा तो कुछ बच्चे तुरंत तैयार हो गए। श्यामपट्ट पर तरह-तरह के आम बन गए। फिर मैंने अगला सुझाव दागा, "जब आप सब आम बना लो तो आम के नीचे उसका नाम भी लिख देना।"

"हमें तो लिखना नहीं आता", एक-दो बच्चों ने बताया। "कोई बात नहीं। मैं बता देता हूँ", यह कहकर मैंने श्यामपट्ट पर बने आमों के नीचे 'आम' लिखा और कहा कि श्यामपट्ट पर से देखकर आम का नाम लिखा जा सकता है। सभी बच्चों के चेहरों का तनाव गायब हो गया।

मेरा उद्देश्य केवल 'आम' शब्द लिखवाना नहीं था। इस कार्य से यह अपेक्षा बिल्कुल नहीं थी कि बच्चे सुडौल अक्षरों में सही-सही 'आम' लिख देंगे। पर इसके पीछे मेरी मंशा यह थी कि बच्चों को इस बात का एहसास हो कि लिखे हुए शब्द का एक अर्थ होता है और बोले जाने वाले तथा लिखे जाने वाले 'चित्र' में कुछ संबंध होता है। अतः यह आवश्यक है कि जो शब्द या चित्र बच्चा पहली बार लिखे या बनाए, वह बच्चों की पसंद का हो, उनके लिए उसका अस्तित्व तथा महत्त्व हो।

जब बच्चे चित्र बनाकर मुझे दिखाने लगे तो मैंने उनके सामने एक 'जटिल' समस्या रख दी।
"मुझे तुम्हारा नाम तो पता ही नहीं है। तुम जब अपना-अपना चित्र मुझे दिखाओगे तो मुझे कैसे पता चलेगा कि यह किसका चित्र है? ऐसा करो, अपने चित्र के ऊपर अपना नाम भी लिख दो।" दो-चार बच्चों को अपना नाम लिखना आता था, वे तुरंत खुश हो गए, उन्हें समस्या का बड़ा आसान हल मिल गया था। पर कुछ बच्चों ने कह दिया " मुझे अपना नाम लिखना नहीं आता।" जो बच्चे चुपचाप बैठे थे, संभवतः उन्हें भी अपना नाम लिखना नहीं आता था। मैंने तुरंत आश्वासन दिया, "कोई बात नहीं, जिन बच्चों को अपना नाम लिखना नहीं आता, उनके चित्र पर उनका नाम मैं लिख दूंगा, पर देखो, अगली बार मैं नहीं लिखूंगा। अपना नाम याद कर लेना।"

1 संदर्भ पत्रिका में प्रकाशित ब्रजेश वर्मा जी के लेख 'गोलू ने पढ़ना सीखा' का अंश

इस तरह मैंने लगभग सभी बच्चों को उनके नाम लिखकर दे दिए। बच्चे खुश थे और एक-दूसरे को अपने-अपने चित्र और नाम दिखा रहे थे। मैंने उनके सामने जो समस्या रखी थी, वह शायद बड़ों के लिए बहुत हल्की या छोटी समस्या हो– "मुझे कैसे पता चलेगा कि यह चित्र किसने बनाया है?" पर बच्चों के लिए यह एक गंभीर और वास्तविक समस्या थी। अतः उसका हल खोजने में उनकी दिलचस्पी भी गंभीर थी।

इस बात के दो प्रमाण मुझे बाद में देखने को मिले। पहला, अगले दिन जब मैंने यही गतिविधि फिर करवाई तो मुझे केवल तीन-चार बच्चों के नाम उनके चित्र पर लिखने पड़े। अधिकतर बच्चों ने अपने-अपने नाम याद कर लिए थे। जिन बच्चों ने याद नहीं किए थे, उन्होंने पिछले चित्र से देखकर अपना नाम लिख लिया था, अर्थात् उन्हें अपने नाम के अस्तित्व तथा उसे उचित रूप से इस्तेमाल करने की समझ थी।

दूसरा प्रमाण मुझे काफी समय बाद तक मिलता रहा। कई बच्चे बाद में अनेक महीनों तक जब भी कुछ लिखते या चित्र बनाते, उस पर अपना नाम लिख देते, ताकि मुझे पता चल जाए कि वह कार्य किसने किया है।

उदाहरण 3

एक दिन मैंने एक मजेदार खेल खेलने का प्रस्ताव रखा। इस खेल का नाम बता दिया। हर बच्चे को एक-एक पर्ची दे दी गई। मैंने बताया, "इस पर्ची पर हर बच्चे को अपना-अपना नाम लिखना है।" नाम लिखने के बाद एक बच्चे ने सबकी पर्चियाँ एक थैली में इकट्ठी कर लीं। इसके बाद सबकी सहमति के बाद कक्षा की सबसे छोटी लड़की से एक पर्ची का चुनाव करवाया गया। मैंने पर्ची पर लिखा नाम पढ़ा और उसे 'आज का राजा' घोषित कर दिया। श्यामपट्ट पर उसका नाम लिख दिया और पढ़ दिया। उस बच्चे को आमंत्रित किया गया और सबके सामने उसे कुर्सी पर बैठने को कहा गया। उसके सिर पर कागज़ का बना मुकुट भी रख दिया गया। मैंने सबको बताया, "सुमित जी आज हमारी कक्षा के राजा हैं। तुम सुमित जी से कोई भी सवाल पूछ सकते हो। शिकायत कर सकते हो। सुमित जी उसका जवाब देंगे।" मैंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यदि किसी सवाल का जवाब न मालूम हो तो राजा कह सकते हैं, "मुझे नहीं पता"।

सब बहुत उत्साहित थे। शुरू में तो राजा जी कुछ शर्माए, पर बाद में बहुत तत्परता से सवालों का जवाब देने लगे। कुछ सवाल और शिकायतें मैंने भी कीं। बीच-बीच में श्यामपट्ट पर लिखे नाम की ओर भी मैं सबका ध्यान आकर्षित करता रहा। सबको बहुत मज़ा आया।

अब तो रोज कोई-न-कोई बच्चा 'आज का राजा' या 'रानी' बनता। मैं श्यामपट्ट पर उनका नाम लिखता। साथ-साथ पिछले राजा या रानियों के नाम भी लिखता। कुछ हफ्तों के बाद मैंने इस गतिविधि को विस्तार देने का प्रयास किया। मैंने कुछ राजा व रानियों के नाम श्यामपट्ट पर लिख दिए, जिनमें 'स' वर्ण स्वाभाविक रूप से आ रहा था। सुरेश, सुमित, संतोष, असलम, मानसी आदि। मैंने उन सब नामों को पढ़ा। जिन बच्चों के नाम श्यामपट्ट पर लिखे थे, उन्हें आमंत्रित किया कि वे सब बच्चों को दिखाएँ कि उनका नाम कहाँ लिखा है। इसके बाद अन्य बच्चों को मौका दिया कि वे बताएँ कि उनके मित्र या सहेली का नाम कहाँ लिखा है।

उद्देश्य यह था कि सब बच्चों को उनके या उनके मित्र के नामों की पहचान हो जाए।

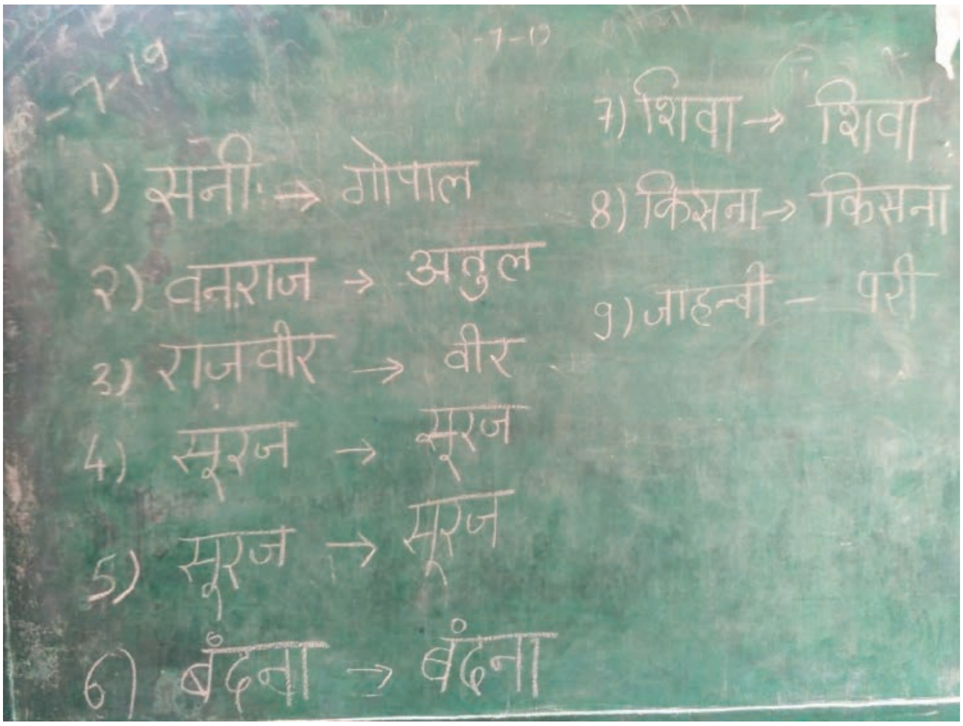

Figure 30 बच्चों के नाम पढ़ना-लिखना सिखाने का एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है

इसके बाद मैंने उस ध्वनि की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित किया जो सभी नामों में मौजूद थी। मैंने शुरुआत इस तरह की थी। “कौन-सी चीज़ इन सब नामों में एक जैसी है?” कई जवाब आए, पर अंत में हम ‘स’ पर पहुँच ही गए। फिर मैंने ‘स’ से शुरू होने वाली व ‘स’ अक्षर वाली अन्य चीज़ों के नामों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करवाया और जैसे-जैसे वे नाम लेते गए, मैं श्यामपट्ट पर लिखता गया– पेंसिल, बस, सड़क, स्कूल, सब्जी और भी न जाने क्या-क्या।

मेरा उद्देश्य था सार्थक संदर्भों द्वारा बच्चों को उनके परिचित व्यक्तियों और वस्तुओं के नामों से परिचित करवाना। कुछ समय इसी प्रकार ध्वनियों की पहचान में भी लगाया। अब यह हमारा नियमित कार्यक्रम हो गया। कुछ ही समय में बच्चों का शब्द भंडार आश्चर्यजनक रूप से बढ़ गया। अनेक अक्षरों की पहचान और उनके सार्थक उपयोग की क्षमता भी लगभग सभी बच्चों में उपस्थित थी।

Figure 31 रोचक गतिविधियाँ बच्चों को आत्मविश्वास से अपनी बात रखने के अवसर उपलब्ध कराती हैं

उदाहरण 4

कविता की दुनिया किसी भी बच्चे के लिए नई नहीं है। बच्चे की भाषिक क्षमता बढ़ाने के लिए कविताओं से उसकी दोस्ती बनी रहे, यह बहुत ज़रूरी है। अतः यह आवश्यक है कि कविता को बच्चों के सामने ऐसे प्रस्तुत किया जाए कि वे उसका मज़ा ले पाएँ।

यहाँ एक शिक्षक का उदाहरण दिया जा रहा है, जिन्होंने मुस्कान संस्था द्वारा संचालित बंजारी बस्ती सेंटर पर बच्चों को भाषा पढ़ना सिखाने के लिए एक कविता का उपयोग किया। इस दौरान छह सप्ताहों में कविता का विभिन्न गतिविधियों के साथ उपयोग किया गया, जिससे कि बच्चे इस कविता के शब्द, शब्दों की ध्वनि और उससे जुड़ी मात्राएँ पढ़ना सीख पाएँ। प्रस्तुत है इस कक्षा प्रक्रिया का संक्षिप्त विवरण-

पहला सप्ताह-

पहले और दूसरे दिन कविता का गायन किया गया।

दूसरे दिन कविता को बोर्ड पर लिखा भी गया। कुछ बच्चों ने इसे पढ़ने का स्वयं से प्रयास किया।

तीसरे दिन कविता के पोस्टर से शुरुआत की गई। कविता कार्डशीट पर भी लिखी हुई पहले से तैयार की गई थी। इसके साथ ही टोकरी, छोकरी, आम, दो रुपए (सिक्के का चित्र) आदि के चित्र भी बनाए गए थे। इस दिन कविता को कुछ अलग तरह से बोला गया। इसके लिए बच्चों के दो समूह बनाए गए और तय हुआ कि दोनों समूह बारी-बारी से एक एक लाइन बोलेंगे। जैसे-

पहला समूह- छह साल की छोकरी।

दूसरा समूह- भरकर लाई टोकरी।

पहला समूह- टोकरी में आम है।

दूसरा समूह- नहीं बताती दाम है।

दूसरा सप्ताह-

पहले कविता को समूह में पिछले दिन की तरह बोला गया। इसके बाद पहले से तैयार कविताओं की पट्टियों के 6 सेट को तीन-तीन बच्चों के 6 उपसमूहों में क्रम से जमाने का कार्य किया गया। इस कार्य को अगले कुछ दिन भी दोहराया गया।

तीसरा सप्ताह-

अब कविता पट्टी के आधार पर शब्द कार्डों का निर्माण किया गया और चार-चार बच्चों के समूह में बाँटकर उन्हें जोड़ने का कार्य किया गया। प्रत्येक पट्टी में चार-चार शब्द थे और इन्हें क्रम से जमाने में बच्चों ने पहले से चिपके कविता के चार्ट की सहायता ली।

इसके अगले दिन कविता के पोस्टर को हटाकर इस गतिविधि को पुनः किया गया। इस बार बच्चों ने अधिक समय लिया, किन्तु आपसी समझ बनाते हुए थोड़ी मुश्किल के बावजूद वे शब्दों को सही क्रम में जमा कर पंक्तियाँ तैयार कर पाए।

चौथा सप्ताह-

अब बारी थी शब्दों में आने वाली ध्वनियों की, क्योंकि शब्दों को बच्चे पहचान चुके थे। उन पर काम शुरु किया। बोर्ड पर कविता की लाइनें चार्ट में दिखाए गए तरीके से लिखी गईं।
इसी तरह जिस लाइन में नई आवाज़ या ध्वनि का शब्द आया, उस लाइन को बोर्ड पर लिखकर उस ध्वनि को दिखाया गया।

अगले दिन बच्चों से चर्चा करते हुए कहा गया कि कविता की पंक्तियों में आए शब्द के प्रत्येक अक्षर से बने कुछ शब्द हमारी बोलचाल में रोज़ आते हैं। उन्हें सोचकर बताओ। फिर थोड़ी देर बच्चे चुप रहे। फिर एक उदाहरण दिया गया, “जैसे ‘छ’ से छाता।” बस, इसके बाद तो बच्चों ने शब्दों की झड़ी लगा दी। यहाँ उनमें से सिर्फ पाँच-पाँच शब्द दिए गए हैं:

* छ- छाछ, छतरी, छायलो, छानु (कण्डे), छाटनू
* ह- हत्ती, हाथ, हलदर (हल्दी), हाँसना, हरयू
* स- साटा, सन्तरू, सासू, समोसू
* ल- लाकड़ू, लुखानु, लात, लड्डू, लानू
* क- कीटान, कोप, काछप, काकड़ी, कांगल
* र- रानी, राजा, रोटो, रब्बड़, रावण
* भ- भालू, भाजी, भौरो, भार जइ री, भगत
* ट- टटेरो, टाल (खोपड़ी), टाटी, टाटिया (पीली ततैया), टमाटर
* म- मटको, माछली, माला, माकड़ी, माल
* आ- अम्बो, अट्टो, अल्लू, आग, ओटलो
* न- नालो, नाय, नाक, नासी, नज़र
* ब- बाली, बोर, बोरी, बोकड़ी, बाज़ार
* त- तरबूज़, तार, तारू, तालू, तलवार
* द- दाल, दादो, दर्द, दीवाल, दिल
* प- पतंग, पीपो, पाछे, परेवो, पपीतो

कविता -
छह साल की छोकरी,
भर कर लाई टोकरी।
टोकरी में आम है,
नहीं बताती दाम है।
दिखा दिखाकर टोकरी,
हमें बुलाती छोकरी।
हमको देती आम है,
नहीं बुलाती नाम है।
नाम नहीं है पूछना,
आम हमें है चूसना।

पाँचवाँ सप्ताह-

इस गतिविधि के बाद ध्वनि पक्की हुई या नहीं, यह जाँचने के लिए एक और गतिविधि शुरु की। शब्द कार्डों के ढेर में से बोले अनुसार बच्चों को अलग-अलग आवाज़ वाले शब्द उठाने थे। जैसे ‘ट’ की आवाज़ वाला शब्द उठाओ या ‘छ’ की आवाज़ वाला शब्द उठाओ।
वीरन ढेर से ‘टोकरी’ शब्द उठाते हुए बोला, “टोकरी...।” ऐसा ही अन्य शब्दों को लेकर किया।
कुछ बच्चे मात्रा की ध्वनि को नहीं पकड़ पा रहे थे, इसलिए अब अक्षर ध्वनि के साथ मात्रा को जोड़कर पकड़ पाएँ, इस पर ध्यान देने की ज़रूरत लगी। इसलिए मात्रा को अलग कर, मात्रा की ध्वनि और फिर अक्षर की ध्वनि को जोड़ते हुए अभ्यास कराया।
मैंने बच्चों से कहा, “आप भी इन्हीं आवाज़ों वाले अन्य शब्द बोलो।” थोड़ी देर के लिए तो कमरे में सन्नाटा

2 संदर्भ पत्रिका में प्रकाशित कमल किशोर मालवीय जी के लेख ‘छह साल की छोकरी’ से

छा गया। फिर राधेपाल बोला, “माल।” मैंने कहा, “हाँ, ठीक है।” बस एक के बाद एक बारिश की बूंदों की तरह आवाज़ें आना शुरु हो गईं।

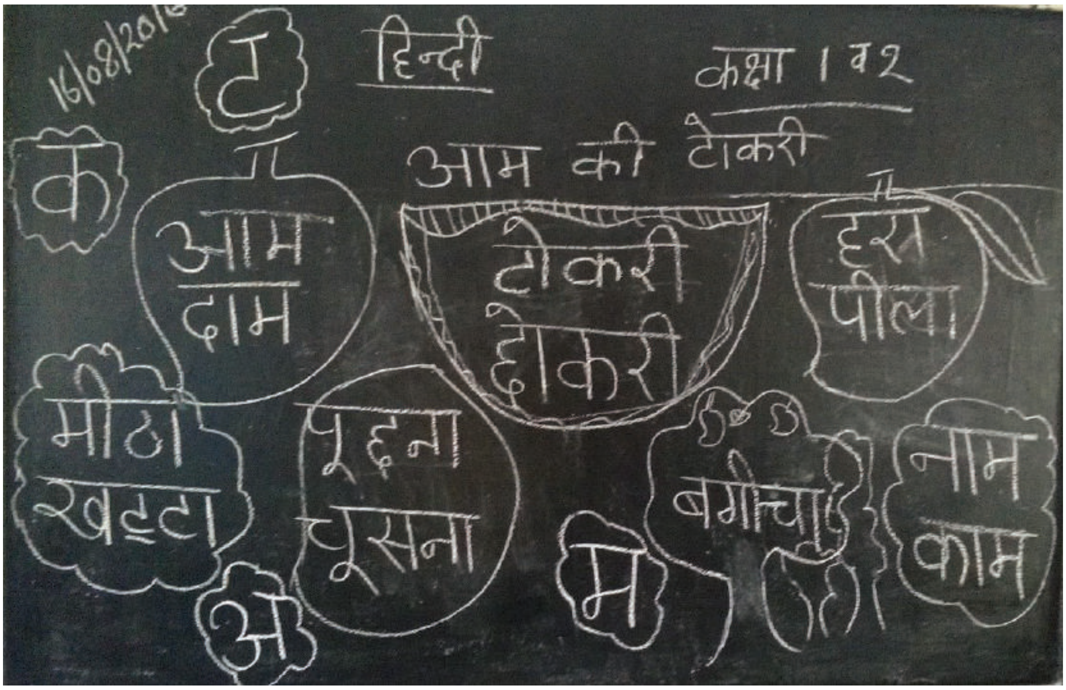

Figure 32 कक्षा में कविता द्वारा पढ़ने-लिखने के कौशल पर काम

कविता में आने वाले शब्दों की मात्राओं को दिखाते हुए बच्चों से नए शब्द निकलवाए:
राधिका बोली- साला।
शिवा- काला।
अन्य बच्चों ने भी इसी तरह के शब्द बोले जैसे-
आ की मात्रा (सा) -- साल
ओ की मात्रा (टो) -- टोकरी
ए की मात्रा (में) -- में
ई की मात्रा (ती) -- देती
इ की मात्रा (दि) -- दिखा
उ की मात्रा (बु) -- बुलाती
ऊ की मात्रा (पू) -- पूछना
ऐ की मात्रा – है

छठा सप्ताह-

अब चार-चार बच्चों का समूह बनाकर, हर समूह को शब्द कार्डों का एक ढेर दिया। बच्चों को मात्रा वाले शब्द छाँटने थे। इस पूरी कविता में कुल 8 मात्राएँ हैं। बच्चों ने इन सभी मात्राओं वाले शब्दों को छाँटकर निकाला और मात्राओं के शब्द गिनती कर बताने लगे। जैसे ‘आ’ की मात्रा वाले 10 शब्द हैं। ‘ई’ की मात्रा वाले 13 शब्द। ‘ए’ की मात्रा वाले 4 शब्द।
‘ओ’ की मात्रा वाले शब्द में बच्चे कुछ उलझ रहे थे कि छोकरी और टोकरी को तो ‘ई’ की मात्रा में शामिल

कर लिया। अब इसे 'ओ' की मात्रा में शामिल करें या नहीं।
मैंने कहा, "जिस शब्द में एक से ज़्यादा मात्रा हैं, वो उन सब मात्रा वाले समूहों में शामिल होगा।" यह कहने पर बच्चों ने 'ओ' की मात्रा वाले शब्द उठाने शुरु किए।
'ओ' की मात्रा वाले 6 शब्द मिले।
इसी क्रम में आगे 'ऐ', 'उ' और 'ऊ' की मात्रा वाले शब्दों को बच्चों ने उठाया।
'ऐ' की मात्रा वाले शब्द उठाते समय एक समूह में बात हो रही थी कि 'ऐ' की मात्रा वाला शब्द तो 'एक' आवाज़ वाला है। शामिल करें या नहीं? समूह में सहमति होने पर 'है' को 'ऐ' की मात्रा वाले शब्दों में शामिल कर लिया गया।

अब वापस सभी शब्दों को ढेर में मिला दिया गया और एक बच्चे समीर को बोला कि उस ढेर में से कोई एक शब्द उठाओ और अपने साथियों को पढ़कर सुनाओ। समीर ने पहला शब्द उठाया 'छोकरी'। इसे बोर्ड पर ऐसे लिखा कि इसके आगे-पीछे के शब्द लिखे जा सकें। इसी क्रम में आने वाले बच्चों ने शब्द उठाए, पढ़कर सुनाए और बोर्ड पर लिखे।
इस गतिविधि को इसी क्रम में आगे बढ़ाते गए और कविता को पूरा किया गया।
इस कविता में 19 ध्वनियाँ हैं। इन ध्वनियों में ज़्यादातर ध्वनियाँ ऐसी हैं कि जब बच्चा भाषा बोलना सीख रहा होता है तो इन्हीं ध्वनियों से शुरुआत करता है। जैसे म, ब, द, न, प, छ, ह, स, ल, क, र, भ, ई, ट, आ, त, ख, च, स।
इस तरह बच्चों को इस कविता के माध्यम से अक्षरों और मात्राओं के उच्चारणों और ध्वनियों को सिखाने की मेरी कोशिश काफी हद तक कामयाब होती दिखी। [2]

उपरोक्त उदाहरणों को देखें तो समझ में आता है कि आरंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण मात्र वर्णों और उनके चिह्नों को सिखा देना भर नहीं है। बल्कि ये कक्षाएँ और इनमें हो रही प्रक्रियाएँ ही यह तय करती हैं कि आगे की कक्षाओं में बच्चे रुचि लेंगे या नहीं, या फिर सीखने और समझने के लिए तत्पर होंगे या नहीं। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि भाषा की कक्षाओं में इन चार बेहतर उदाहरणों जैसा कुछ-न-कुछ हो रहा हो। यदि इन उदाहरणों का विश्लेषण कक्षा प्रक्रियाओं के आधार पर करें तो कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु हमारा ध्यान खींचते हैं और हम उन्हें कक्षा प्रक्रिया में शामिल पाते हैं। भाषा शिक्षण के लिए आवश्यक इन महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को यहाँ पुनः उद्धृत करना अप्रासंगिक नहीं होगा:

आरंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण मात्र वर्णों और उनके चिह्नों को सिखा देना भर नहीं है। बल्कि ये कक्षाएँ और इनमें हो रही प्रक्रियाएँ ही यह तय करती हैं कि आगे की कक्षाओं में बच्चे रुचि लेंगे या नहीं, या फिर सीखने और समझने के लिए तत्पर होंगे या नहीं।

- बच्चे के प्रति शिक्षक का व्यवहार स्नेहिल और आत्मीयता भरा हो। शिक्षक के लिए स्वयं यह जानना ज़रूरी है कि पढ़ना-लिखना दरअसल है क्या और बच्चे पढ़ना-लिखना सीखते कैसे हैं। शिक्षक को यह समझना होगा कि बच्चे पढ़कर ही पढ़ना सीखते हैं, जिसमें गलतियाँ होनी स्वाभाविक है। अतः गलतियों पर उन्हें बार-बार टोकने की बजाय पढ़ने के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। शिक्षक को कक्षा में पढ़ने का माहौल रचना होगा और इसके लिए यह भी ध्यान रखना होगा कि

पाठ्यपुस्तक अकेले ही पढ़ना-लिखना सिखाने का साधन नहीं है। इसके लिए परिवेश में उपस्थित लिखित सामग्री का भी उपयोग किया जा सकता है। साथ ही यह भी देखना होगा कि कक्षा में उपलब्ध लिखित सामग्री बच्चे की रुचि, आयु और परिवेश से मेल खाती हो।

- बच्चे पढ़ने में आनंद ले सकें, इसके लिए ज़रुरी है कि पढ़ने की शुरुआत सार्थक संदर्भों से युक्त प्रक्रियाओं से हो। यह समझना ज़रूरी है कि पढ़ना इसलिए है कि पाठ्य सामग्री में निहित अर्थ व संदेश को पकड़ना है। इसके लिए कई नई युक्तियाँ प्रयोग में लाई जा सकती हैं। एक स्वाभाविक युक्ति यह है कि कक्षा में बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों से इतर भी पठन सामग्री उपलब्ध हो, जिसका समय-समय पर उपयोग किया जा सके। बच्चों को वे कहानियाँ सुनाई जाएँ जिनसे वे पहले से परिचित हैं और जो उन्हें लगभग याद भी हैं। शुरुआत चित्र कहानियों से भी की जा सकती है, जिनमें चित्र देखकर बच्चे लिखे गए वाक्यों का अनुमान लगा सकें।
- इसके अलावा कक्षा में लिखित सामग्री बहुतायत में होनी चाहिए। यह सामग्री चार्ट पर लिखी गई कहानियों व कविताओं, शब्द दीवार, बुलेटिन बोर्ड, मेरा कोना, सुबह का संदेश, फ्लैश कार्ड आदि के रूप में हो सकती है। इसे समय-समय पर बदलते रहना चाहिए। कक्षा में सुनाई गई कहानियों, बच्चों द्वारा कही गई बातों को भी यदि इन चार्ट्स पर स्थान मिले तो बच्चे यह समझ सकेंगे कि कही हुई बात को लिखा भी जा सकता है। साथ ही अपनी बात को स्थान मिलने का संतोष भी उन्हें कक्षा की गतिविधियों में रुचि लेने के लिए प्रेरित करेगा। सबसे अंतिम और महत्त्वपूर्ण बात यह कि शिक्षक को स्वयं भी पढ़ने-लिखने में रुचि निर्मित करनी होगी, ताकि वह बच्चों के लिए उपयुक्त सामग्री का चुनाव कर सके या स्वयं उसे बना सके।

> शिक्षक को यह समझना होगा कि बच्चे पढ़कर ही पढ़ना सीखते हैं, जिसमें गलतियाँ होनी स्वाभाविक है। अतः गलतियों पर उन्हें बार-बार टोकने की बजाए पढ़ने के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

आइए, बच्चों के कुछ लेखन उदाहरणों से कक्षा में लिखना सिखाने की शुरुआती प्रक्रियाओं और बच्चों के लेखन विकासक्रम को समझने का प्रयास करते हैं।

उदाहरण

मैंने[3] सुना था कि इस विद्यालय में बच्चों के साथ शिक्षिका खूब अच्छा काम कर रही हैं। तो एक दिन मैं उनसे मिलने स्कूल पहुँच गया। मैं जानना चाहता था कि वे बच्चों के साथ कैसे शिक्षण कार्य कर रही हैं और बच्चे क्या कुछ सीख रहे हैं। लेकिन जब मैं स्कूल पहुँचा तो पता चला कि शिक्षिका छुट्टी पर थीं। प्रधानाध्यापिका ने मुझे उनकी कक्षा के बच्चों से बात करने की इजाज़त दे दी। मैंने कुछ समय उन बच्चों के साथ बिताया। उस थोड़े समय में ही मुझे बच्चों के लेखन के बारे में काफी कुछ पता चला, जिसे मैं यहाँ साझा कर रहा हूँ।

शुरुआती परिचय के बाद, उस दिन कक्षा 1-2 के साथ एक घंटा समय बिताने का अवसर मिला तो मैंने उन्हें कुछ चित्र बनाने के लिए कहा। ये कुछ चित्र उन्हीं बच्चों के बनाए हैं। मुझे ख़ुशी थी कि 17 में से केवल 2 बच्चों ने ही किताब के चित्र की नक़ल की थी, बाकी ने स्वतंत्र रूप से अपनी कल्पना को चित्र का आकार दिया।

Figure 33 बच्चों के बनाए चित्र

लेखन की शुरुआत– गोदागादी, चित्र बनाने से

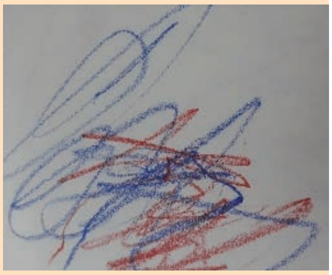

क्या चित्र बनाने को लेखन माना जाए या नहीं? क्या लेखन तभी कहा जाएगा जब मानक लिपि का उपयोग दिखता है? फिर चाहे लिखने वाले को पता ही न हो कि आखिर क्या लिखा गया है। चित्रों में बच्चे किसी कल्पना या विचार को व्यक्त कर रहे होते हैं, फिर चाहे बच्चे द्वारा खींची गई रेखाएँ बड़ों को स्पष्ट चित्र जैसी न भी लगें। कल्पना या विचार को चित्रों से अभिव्यक्त करना भी लेखन है और छोटे बच्चों के लिए तो लेखन की शुरुआत इसी प्रकार के लेखन से होती है, फिर चाहे स्कूल इसे प्रोत्साहित करता हो अथवा नहीं। कुछ जागरूक माता-पिता अवश्य ऐसा करते हैं और उनके अनुभव बताते हैं कि वे बच्चे बहुत जल्द ही लिपि आधारित लेखन भी करने लगते हैं। लेकिन शुरुआत में स्कूल आने से पहले भी यदि घर पर कुछ पढ़ने-लिखने से सम्बंधित कार्य होते दिखते हों तो बच्चे पेंसिल या पेन से कुछ ऐसी आकृतियाँ बनाते ही हैं जिसे महज गोदागादी (doodling) कहकर अनदेखा कर दिया जाता है। क्योंकि उनमें हमें कोई मतलब समझ नहीं आता। बच्चे के लिए वे पूरी तरह से अर्थपूर्ण हो सकते हैं, जिसके लिए उनसे बात करने और उनके अर्थ को समझने और हो सके तो उसको बच्चे के सामने ही लिख देने की ज़रूरत होती है, जिससे उनके सामने उनके अर्थ को शब्द देने की मॉडलिंग हो सके। ऊपर दिए दोनों चित्र हमें शायद अर्थहीन लगें, लेकिन जिस बच्चे ने ये बनाए हैं, उससे पूछेंगे तो वह ज़रूर इनके अर्थ आपको बताएगा। दाईं तरफ के चित्र के बारे में तो हमें पता है, क्योंकि यह हमारी सहकर्मी के बच्चे ने बनाया है। उसके अनुसार उसने एक नदी बनाई है, जिसमें लम्बी आकृति एक शार्क है जो तीन मछलियों को काट रही है। बाएँ चित्र का भी ऐसा ही कुछ अर्थ होगा। मुझे ऐसे शिक्षक भी मिले हैं जिन्होंने बच्चों के ऐसे लेखन की पुस्तकें बना रखी थीं और एक-दो वर्ष में इन्हीं बच्चों ने उन पुस्तकों को बड़े चाव से पढ़ा, जिसमें वे स्वयं अपनी गोदागादी का अर्थ अब उनकी शिक्षिका के लेखन से ही लगा पा रहे थे। शुरू में बच्चे पेंसिल, पेन या क्रेयॉन को सिर्फ कागज़ पर घुमाना ही कर रहे होते हैं, लेकिन जल्द ही कुछ बड़ों के मार्गदर्शन से और कुछ स्वयं के प्रयास से थोड़ा नियंत्रित होकर रेखाएँ बनाने लगते हैं और जल्द ही उनमें हमें कुछ परिचित-सी आकृतियाँ नज़र आने लगती हैं। धीरे-धीरे बच्चे चेहरा और

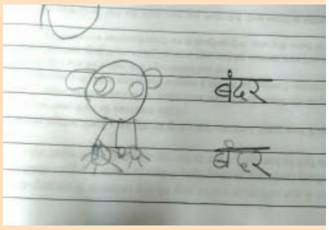

3 जितेंद्र शर्मा जी द्वारा लिखित अनुभव जो भोपाल में एक सामाजिक संस्थान द्वारा चलाए जा रहे विद्यालय के कक्षा 1 के बच्चों के साथ 2010 में किए गए संवाद पर आधारित है। यहाँ दिए गए चित्र और लेखन के सैंपल उसी कक्षा के बच्चों के हैं।

हाथ-पैर भी बनाने लगते हैं, फिर उन्हें वे चाहे मनुष्य बताएँ या बन्दर। हमें उनसे पूछकर उस शब्द को बड़े आकार में चित्र के पास लिख भर देना चाहिए। यह बच्चे को लेखन सिखाने में बड़ी मदद करती है। कुछ समय बाद वह दोबारा बन्दर बनाएगा तो स्वयं बन्दर शब्द की नक़ल भी कर लेगा। और इस तरह बन्दर के चित्र से अक्षरों से बने बन्दर शब्द तक पहुँच जाएगा। (यहाँ दिए गए चित्र पारुल दुग्गल जी द्वारा उपलब्ध कराए गए हैं।)

उन बच्चों से चित्र निर्माण गतिविधि के बाद कहा गया कि आपने अपने चित्रों में जो दिखाने की कोशिश की है, उसे लिखें। जैसा भी लिख सकते हैं, बिना किसी की मदद के। ऐसा करने के पीछे मेरा आशय उनके लेखन के स्तर को जानने का था। जब वे सब लिख चुके तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि 17 बच्चों में मैंने 7 प्रकार का लेखन देखा। एक बहुत दिलचस्प बात यह थी कि लड़कियों का लेखन स्तर लड़कों की तुलना में काफी बेहतर था- कुल 9 लड़कियों में से 3 वाक्य लिखने के स्तर पर थीं और बाकी 6 अनुच्छेद लेखन की ओर बढ़ चुकी थीं; जबकि 8 लड़कों में से 4 शब्द लेखन में भी संघर्ष कर रहे थे। इस समूह में अच्छी बात यह देखी कि 17 में से 9 बच्चे वाक्य स्तर से आगे बढ़कर सरल अनुच्छेद लेखन की ओर बढ़ गए थे, 3 वाक्य स्तर पर थे और 5 अन्य केवल नक़ल करने से लेकर शब्द और वाक्य निर्माण के अलग-अलग स्तरों पर थे।

आइए, पहले इन 7 अलग-अलग प्रकारों को समझते हैं:

1. **नक़ल करना:**

   कक्षा में एक स्तर केवल देखकर नक़ल करने का था। बच्चे ने दीवार पर लगी एक पसंदीदा कविता की कुछ पंक्तियाँ कॉपी पर उतार ली थीं। हालाँकि इसमें भी अभी उसे ठीक से अक्षर बनाने और पूरी तरह से ठीक-ठीक नक़ल करने में और अभ्यास की ज़रूरत लग रही थी। इससे यह तो पता चलता है, लेखन का एक स्तर यह होता है कि जब बच्चे केवल नक़ल करना सीखते हैं।

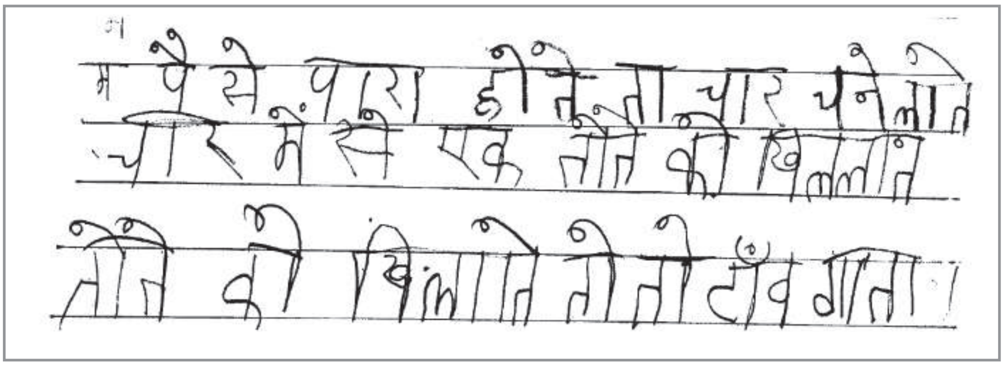

2. **चुनिन्दा अक्षरों से शब्द या वाक्य निर्माण का प्रयास करना:**

   इस बच्चे को जो कुछ अक्षर और कुछ मात्राएँ लिखनी आ रही हैं, उन्हीं की मदद से उसने कुछ शब्द और वाक्य जैसी रचनाएँ बनाने की कोशिश की है। 'म' वर्ण बहुतायत से प्रयोग किया है, यहाँ तक कि बस 'म' और 'आ' की मात्रा के प्रयोग से उसने शब्द रचना की कोशिश की है। शुरू में लिखे 'सूर' और 'चद' जैसे शब्द 'सूरज' और 'चाँद' लिखने का प्रयास लग रहा है। इस बच्चे से बात हो पाती तो निश्चित ही यह

पता चल पाता कि क्या वह कुछ लिखने का प्रयास कर रहा था। पर एक बात तो निश्चित है कि ऐसा नहीं है कि जब बच्चे मात्र कुछ अक्षर और एक-दो मात्रा ही लिखना जानते हैं तो वे शब्द या वाक्य निर्माण के प्रयास नहीं करते। क्या शिक्षक को इस तरह के प्रयास प्रोत्साहित करने चाहिए या इस पर बच्चे को डाँट पड़नी चाहिए?

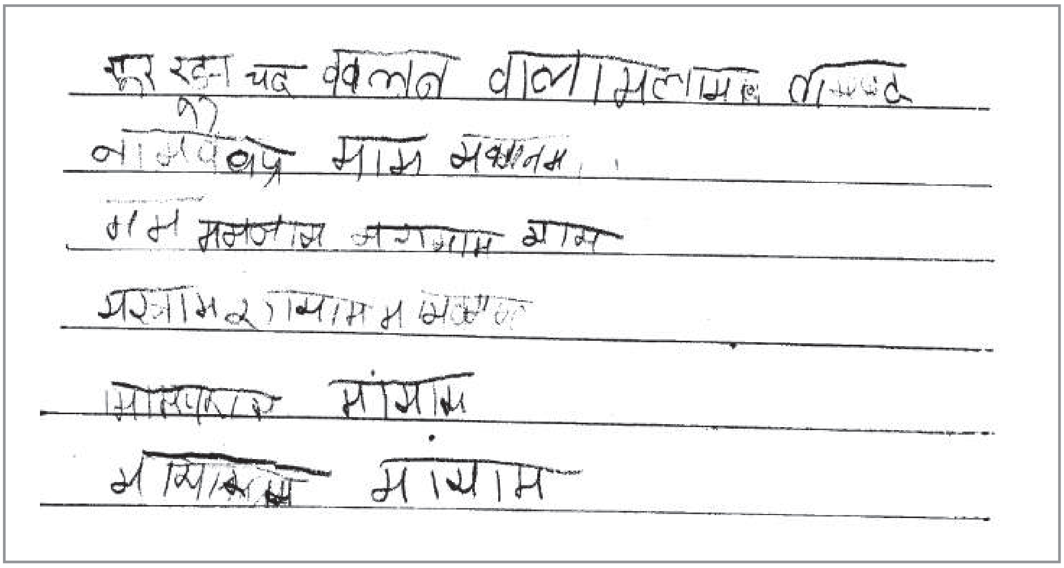

3. शुरुआती वाक्य लेखन का एक रूप

इसे देखना दिलचस्प है– बच्चे के लेखन को पहली नज़र में देखने पर केवल यही कह सकते थे कि कुछ अक्षरों को एक क्रम में लिख भर दिया गया है, जिसका कोई अर्थ नहीं निकल रहा है। क्योंकि इस बच्चे से उसके चित्र के आधार पर बात हो पाई थी तो उससे बात करने के बाद ही पता चला कि 'गपलठबररह' का मतलब है 'गैस पर लड्डू बन रहे हैं।' और 'बासककलजरह' का अर्थ था 'बस स्कूल जा रही है।' बच्चे ने चित्र में भी यही बताने की कोशिश की थी। अब देखिए, इस बच्चे को वास्तव में ठीक से सार्थक शब्द लेखन भी अभी नहीं आता है, मात्राओं का ज्ञान नहीं है, फिर भी वह वाक्य में अपनी बात कहने का प्रयास कर रहा है।

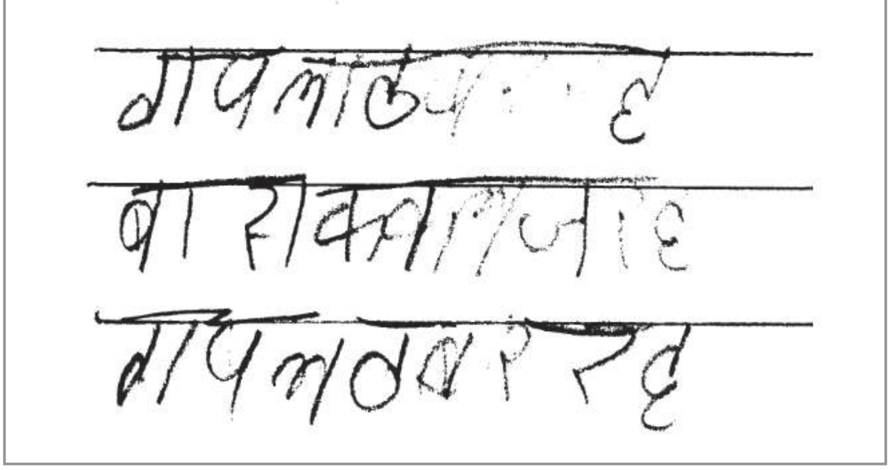

4. **शब्द लेखन**

इस बच्चे के लेखन को देखिए। पहली नज़र में लगता है कि कुछ बिना मात्रा के दो अक्षर वाले शब्दों को लिखने का प्रयास है। उससे बात की गई तो पता चला कि 'तात' वास्तव में 'पापा' लिखने का प्रयास है, 'अन' वास्तव में 'अनार' है, 'लक' 'लड़का' और 'चाच'? आप समझ गए न, 'चाचा' है। अब यदि आप इस बच्चे के शिक्षक होते तो इसके इस प्रयास पर क्या करते। क्या 'तात', 'अन', 'लक' लिखने पर उसे डाँटते, सही शब्द बताकर उसे 10-10 बार लिखने को कहते, या अभी सही वर्तनी की चिंता न करके उसे वाक्य लिखने के लिए प्रेरित करते। पिछले उदाहरण में हम देख चुके हैं कि हर शब्द के लिए पहले अक्षर को लिखकर भी वाक्य लिखने का प्रयास तो हो ही सकता है।

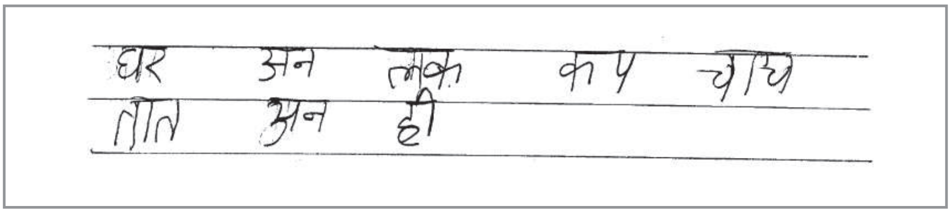

5. **वाक्य लेखन**

यहाँ हम बच्चों के लेखन के दो सैंपल देखते हैं। पहले में, जो कि देखने में कम स्पष्ट है, पर ध्यान से देखने पर वाक्य जैसा नज़र आने लगता है, क्योंकि शुरू में 'एक दिन मैं' और अंत में 'रहा' 'रही' जैसे शब्द दिख रहे हैं। जिस लड़की ने ये लिखा था, उससे पूछा तो उसने कहा कि पहला वाक्य है– 'एक दिन मैं गार्डन जा रही थी।' और दूसरा वाक्य है 'और मेरे साथ आफरीन भी जा रही थी।' दूसरा उदाहरण बिल्कुल स्पष्ट है। वर्तनी की गलतियों को यदि छोड़ दें तो एक पूरा वाक्य हमें यहाँ मिलता है।

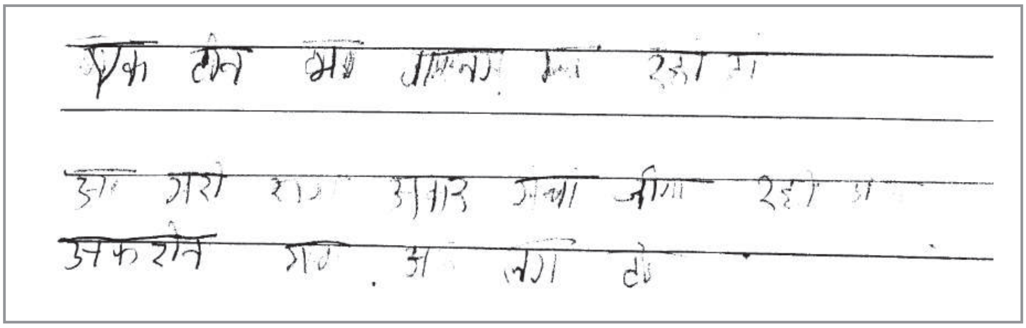

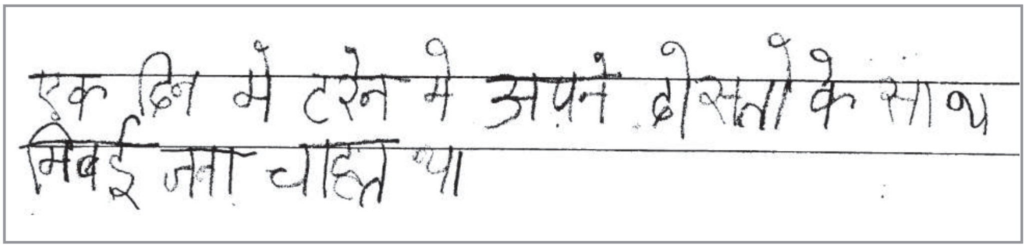

6. **अनुच्छेद लेखन**

ऐसे तीन बच्चे थे जो अब वाक्यों को जोड़कर और किसी एक विचार शृंखला को आगे बढ़ाते हुए अनुच्छेद लेखन की ओर बढ़ गए थे। इन उदाहरणों में भी आप फ़र्क देख सकते हैं। पहले उदाहरण में

वैसे तो अनुच्छेद जैसा लगता है, पर दूसरा वाक्य पहले से सम्बद्ध नहीं लग रहा है, बस पात्र पहले वाले वाक्य के ही हैं। दूसरे अनुच्छेद में पहले और दूसरे वाक्य में एक तार्किक सम्बन्ध दिख रहा है, इसलिए यह सही मायनों में अनुच्छेद कहा जा सकता है, हालाँकि विचारों/वाक्यों के क्रम में अभी कुछ और सुधार किया जा सकता है।

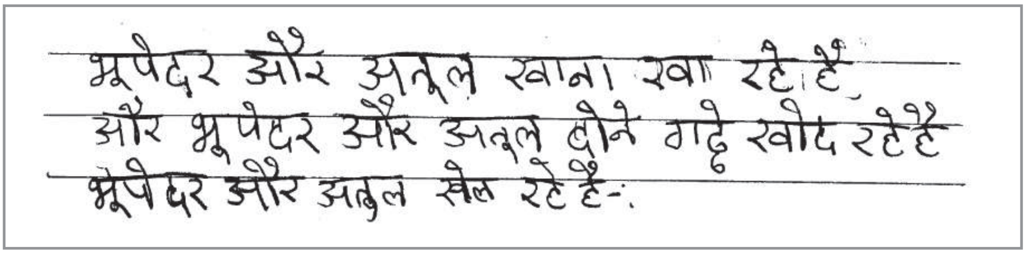
भूपेंदर और अतूल खाना खा रहे है
और भूपेंदर और अतूल दोने गढ्ढे खोद रहे है
भूपेदर और अतूल खेल रहे है-.

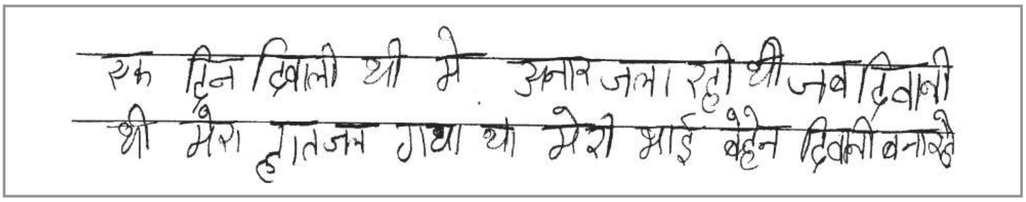
एक दिन दिवाली थी मै अनार जला रही थी जब दिवाली
थी मेरा हात जल गया था मेरी भाई बेहेन दिवाली बना रहे

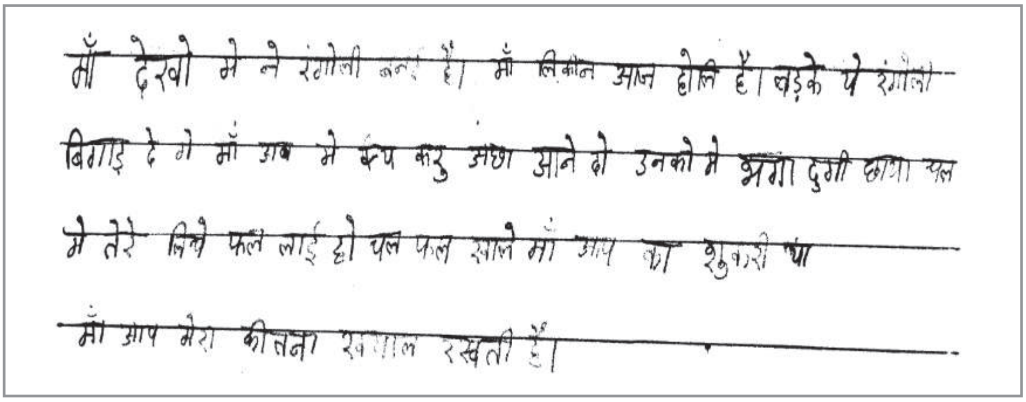
माँ देखो मै ने रंगोली बनाई है। माँ लेकीन आज होलि है। लड़के ये रंगोली
बिगाड़ देगे माँ अब मै क्या करु अच्छा आने दो उनको मै भगा दुगी अच्छा चल
मै तेरे लिये फल लाई हो चल फल खाले माँ आप का शुकरीया
माँ आप मेरा कीतना खयाल रखती है।

शायद यहाँ दिया चौथा वाक्य दूसरा हो सकता है। तीसरे उदाहरण को देखें तो उसमें दिखता है कि विद्यार्थी एक विचार के साथ थोड़ी देर रहती है, फिर नए विचार को ले लेती है और जल्द ही 'शुक्रिया' कहकर अनुच्छेद पूरा कर देती है। अभी एक अनुच्छेद एक ही मूल विचार पर केन्द्रित नहीं है, लेकिन कक्षा 2 के विद्यार्थी की दृष्टि से बहुत अच्छी स्थिति कही जा सकती है। इन उदाहरणों को देखकर यह भी प्रश्न उठता है कि 'हाथ' को 'हात', 'बहन' को 'बेहेन' और 'मना' को 'बना' यदि लिखा गया है तो इन वर्तनी की गलतियों के पीछे क्या कारण हो सकते हैं और इन्हें दूर करने के लिए क्या किया जा सकता है। ऐसे ही, पूर्ण विराम का उपयोग न के बराबर दिख रहा है। क्या वाक्य लेखन के समय पूर्ण विराम की बात शिक्षक की तरफ से नहीं सिखाई गई? यदि अभी बच्चे का ध्यान उस तरफ नहीं गया है तो कक्षा 2 के स्तर पर परेशान होने की ज़रूरत है, या वाक्य और अनुच्छेद लेखन तक बच्चे की प्रगति को देखकर खुश होना चाहिए।

एक और गौर करने वाली बात है– ये सभी कक्षा 1-2 के बच्चे थे। यदि चंद अक्षर जानने वाले बच्चे भी शब्द और वाक्य लेखन में अपने हाथ आज़मा रहे थे तो इसका मतलब इनकी शिक्षिका ने इन्हें इस तरह का प्रोत्साहन और स्वतंत्रता दी है जिसमें बच्चों द्वारा चित्रांकन को लेखन का ही रूप माना जाता है और इसी के बल पर लिपि ज्ञान की तरफ बढ़ा जाता है। वे यह नहीं मानती कि जब तक पूरी वर्णमाला नहीं सीखी, तब तक शब्द लेखन या वाक्य लेखन की ओर नहीं बढ़ना चाहिए। वर्णों का सीखना और शब्दों, वाक्यों के ऊपर भी काम साथ-साथ ही चल सकता है। हाँ, शिक्षिका ने एक और बढ़िया काम यह किया कि ध्यान विचारों की अभिव्यक्ति पर रखा, न कि वर्तनी की शुद्धता पर। केवल एक बच्चे ने स्वतंत्र रूप से कुछ भी नहीं लिखा और केवल नक़ल करके ही कुछ लिखने का प्रयास किया था।

ऊपर कक्षा 1-2 के समूह में लेखन को लेकर जो विविधता दिखी है, उसमें हम पूरे लेखन की प्रक्रिया और पड़ाव देख सकते हैं। चित्रों से शुरू करके अनुच्छेद लेखन तक। यहाँ लेखन एक सरल-रेखीय गति से, सरल से कठिन वाक्यों की ओर नहीं बढ़ा, बल्कि हमने वाक्यों के ऐसे उदाहरण भी देखे जिन्हें बच्चे से बात करके ही डिकोड कर पाए।

हमारी एक सहकर्मी ने कुछ इसी तरह के प्रयास अपने बेटे के साथ घर पर किए और फिर स्कूलों में भी इस दिशा में प्रयास किए। मिसाल के तौर पर, एक-एक नए शब्द की मदद से नए-नए वाक्य बनाने का यह अभ्यास देखिए:
आज मैंने रास्ते में पेड़ देखा।
आज मैंने रास्ते में पहाड़ देखा।
आज मैंने रास्ते में नाला देखा।

बच्चों को ऐसे वाक्यों के साथ काम करने का अभ्यास दिया गया जिसमें वाक्य संरचना समान थी, बस एक शब्द बदलकर नए वाक्य बन रहे थे। ये वे शब्द हो सकते हैं जिन्हें बच्चे पूर्व से ही जानते हैं। ऐसे में उन्हें उपलब्धि का भी एहसास होता है कि वे नए वाक्य बना पा रहे हैं। वाक्य से पहले वाक्यांश के साथ भी ऐसा किया जा सकता है। जैसे- किसी शीर्षक में मामूली बदलाव करके लिखने को कहना:

धानी के तीन दोस्त-
सलमान के तीन दोस्त-
आयशा के तीन दोस्त-

इस प्रकार लेखन शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिए एक बहुत ख़ुशी देने वाला रचनात्मक कार्य हो जाता है।

2.3.1 प्रचलित प्रणाली से प्रस्तावित प्रणाली की ओर

इस बिन्दु पर विचार करते समय इस तथ्य की स्पष्टता भी होनी चाहिए कि आमतौर पर कक्षाओं में हो रही लिखना सिखाने की एकांगी प्रक्रियाएँ बच्चों में लेखन और पठन के लिए उत्साह क्यों नहीं जागा पातीं। साथ ही इन प्रक्रियाओं में वे कौन से छोटे किन्तु महत्त्वपूर्ण बदलाव हैं जिनके होने से लेखन बहुआयामी, रोचक और सार्थक प्रक्रिया बन जाएगी। आइए इसे नीचे दी गए टेबल से समझते हैं-

प्रचलित : अलग-थलग और सीढ़ीदार लेखन प्रक्रिया	प्रस्तावित बहुआयामी लेखन प्रक्रिया
यहाँ लेखन को मौखिक अभिव्यक्ति के कार्य और पढ़ने की गतिविधियों से अलग-थलग एक सीढ़ी-दर-सीढ़ी आगे बढ़ने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। इसमें बच्चे निरर्थक ध्वनि चिह्नों (वर्णों) से काफी समय (छह माह से लेकर 1 या 2 वर्ष और कभी-कभी तो इससे भी ज़्यादा) जूझने के बाद धीरे-धीरे बहुत कुछ नक़ल करके लिखना और कुछ श्रुतलेख और कुछ पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-उत्तर करने लगते हैं, साथ ही याद की गई कहानी या कविता आदि भी लिख लेते हैं। प्रार्थना पत्र, छोटे निबंध आदि भी कक्षा 5 तक याद के सहारे लिख लेते हैं तो बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। सामान्यतः स्वतंत्र और अर्थपूर्ण लेखन के प्रयास उनके साथ नहीं हुए होते। सीखने का क्रम कुछ इस प्रकार रहता है: • वर्ण लेखन (वर्णमाला ज्ञान) • मात्रा ज्ञान • बिना मात्रा वाले और केवल दो अक्षरों के शब्द • तीन-चार अक्षरों के शब्द और फिर एक-एक मात्रा को लेकर उनके अभ्यास • बारहखड़ी ज्ञान • बोर्ड या किताब अथवा कुंजी से नक़ल कर पाठ्यपुस्तक में दिए गए अभ्यास करना • प्रार्थना पत्र, निबंध आदि लिखना	यहाँ लेखन को अभिव्यक्ति के एक सशक्त माध्यम और एक सार्थक बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। कविता-कहानी, दैनिक बातचीत और पठन आदि पर ज़ोर रखते हुए उसी के आधार पर लेखन की शुरुआत की जाती है। बच्चों के आस-पास, उनकी मदद से चित्र और लिपि के मिलेजुले वातावरण की रचना की जाती है। बच्चे एक ही समय में वर्ण, शब्द, वाक्य, कविता, कहानी यानी विभिन्न लिखित रूपों से परिचित भी होते हैं और उस दिशा में प्रयास भी करते हैं। लेखन सीखने का क्रम कुछ इस प्रकार होता है– पहले कुछ माह मौखिक गतिविधियों पर काम– इसके लिए बच्चे के अपने अनुभव, कविता-कहानी, रोज़ की बात, खेल, नाटक आदि करना और उसी को संक्षेप में, बड़ी आकृति के चित्रों और कुछ लिपिबद्ध बातों के साथ कक्षा में प्रदर्शित करते जाना। यानी– लिखित दुनिया से परिचय, कैसे हमारे अनुभव लिपिबद्ध होते हैं इस प्रक्रिया की मॉडलिंग और इसी दौरान बच्चों से चित्र बनवाना, रंग भरवाना, उनके बनाए चित्रों पर उनसे पूछकर स्वयं लिखना। इसी दौरान उनके अपने नाम, उनके पसंदीदा फल, भोजन, दोस्तों, त्योहारों, खेलों, स्थानों आदि के नामों के कार्ड बनाना और उनकी पहचान का काम भी होता है। वर्ण, शब्द और वाक्य की पहचान एक साथ चलती है; लेखन के नाम पर अभी चित्रकारी ही ज़्यादा होती है, लेकिन जो शब्द बच्चे पहचानने लगे हैं, उन्हें लिखने के लिए भी कहा जाने लगता है। बच्चे अक्षरों के पहले पूरे शब्द लिखते हैं– जैसे उनका अपना नाम, अपने दोस्तों और घर वालों के नाम और जो भी उनका दिल करे या जिस भी चीज़ का वे चित्र बनाएँ। ये सब उन्हें कक्षा की दीवारों पर ही मिल जाता है।

प्रचलित : अलग-थलग और सीढ़ीदार लेखन प्रक्रिया	प्रस्तावित बहु-आयामी लेखन प्रक्रिया
	अब थोड़ा समय, अक्षरों की पहचान और एक-दो मात्राओं पर भी होने लगता है। अक्षर वही लिए जाते हैं जो उन शब्दों में होते हैं जिन्हें बच्चे पहचानते हैं और लिख भी लेते हैं। हर सप्ताह नए अक्षरों पर ध्यान दिया जाता है, उसका लेखन और विभिन्न शब्दों में उनके प्रयोग को देखा जाता है। विषयवस्तु के चुनाव में यह ध्यान रखा जाता है कि ऐसी प्रक्रिया से छह-आठ माह में पूरी वर्णमाला पर काम कर लिया जाता है। कभी बच्चे दीवार पर लगी सामग्री या किसी पुस्तक से कुछ नक़ल करना चाहते हैं तो उन्हें रोका नहीं जाता, बस अपनी ओर से नक़ल करने का काम पर नहीं झोंका जाता। एक पेज नक़ल का लिखने की जगह अपनी पसंद का एक शब्द लिखने को ज़्यादा प्रोत्साहित किया जाता है। कक्षा में अक्षरों और मात्राओं पर काम के साथ ख़ूब सारी लिखित सामग्री भी बनती जाती है, कार्ड होते हैं, कहानी-कविता होते हैं, जिनकी मदद से रोज़ अक्षर, मात्रा पहचान और शब्दों, कहानी-कविता को पढ़ना चलता रहता है। पाठ्यपुस्तक से कुछ अभ्यास, जहाँ एक शब्द भर लिखना हो, थोड़ा खोजकर कॉपी करना हो, करवाए जाते हैं।

प्रचलित प्रणाली से प्रस्तावित प्रणाली की ओर कैसे जाएँ

यह एक बड़ा सवाल है, क्योंकि यही नहीं हो पाया है। हम यह तो जानते हैं कि सार्थक तरीकों से पठन और लेखन सिखाने के लिए क्या-क्या करना ज़रूरी है और यह विभिन्न प्रशिक्षणों के ज़रिए शिक्षकों तक पहुँचाने के प्रयास भी हुए हैं, लेकिन बहुसंख्यक शिक्षक इस दिशा में अभी बढ़े नहीं हैं। हमने देखा है कि पुस्तकें उपरोक्त नए अप्रोच पर आधारित बनाई गईं, लेकिन शिक्षकों के तरीके में बदलाव कम ही आया। छोटी कक्षाओं में तो उन्हें पुस्तकों की ज़रूरत ही नहीं लगती। 'जब तक बच्चे को पढ़ना-लिखना नहीं आता तब तक पुस्तक का उसके लिए क्या काम' वाली धारणा गई नहीं। इसमें एक मुद्दा तो शिक्षक की प्रेरणा से जुड़ा है कि क्या वह नई विधियों को अपनाने के लिए और वो जिस मेहनत की मांग करती हैं, वह करने के लिए तैयार है। दूसरा उन छोटे-छोटे बदलावों को खोज निकालने का है जो प्रचलित 'वर्ण पद्धति' से संतुलित/सार्थक अप्रोच की ओर भाषा शिक्षण को ले जाने में सहायक हों। इस दिशा में कुछ स्पष्ट कदम जो समझ में आते हैं, वे इस प्रकार हैं:

- शिक्षक जिस प्रचलित तरीके से शिक्षण कर रहे हैं, उन्हें इस अप्रोच की सीमाएँ समझ में आएँ, इसके लिए हम क्या कर सकते हैं।
- शिक्षक से एक साथ बड़े परिवर्तन की अपेक्षा न करके कुछ मामूली, आसानी से किए जा सकने वाले

परिवर्तन सुझाए जाएँ; जैसे वर्णों पर जो काम वे कर रहे हैं, उन्हें कार्ड के माध्यम से किसी खेल का रूप देकर करना; जिन शब्दों की वे नक़ल करवाकर लिखना सिखा रहे हैं, उन शब्दों को बच्चों की रुचि के आधार पर चुनना, यानी जिन शब्दों को बच्चे स्वयं लिखना चाहें।

- जो शिक्षक यह बदलाव कुछ या काफी हद तक कर चुके हैं, उनके अनुभव बाकी शिक्षकों को सुनवाना, उनकी कक्षा में होने वाले काम और उसमें बच्चों की रुचि और प्रदर्शन को दिखाना।
- शिक्षक यदि बदलाव न करना चाहे तो भी जिस पद्धति से वह काम कर रहा है, उसे नियमित रूप से करे तो बच्चे देर-सबेर सीख जाते हैं। बस, ऐसे शिक्षक काम में नियमितता लाएँ और मारपीट, डराने-धमकाने-लज्जित करने जैसे काम रोक दें तो भी कुछ आशा बंधती है।

यदि उपरोक्त उदाहरणों को ध्यान से देखें तो हम इनके आधार पर भाषा शिक्षण की संतुलित और समेकित पद्धति से जुड़ी कक्षा प्रक्रियाओं को समझ सकते हैं और यह भी समझ सकते हैं कि इनसे संबन्धित विभिन्न गतिविधियों का कक्षा में कैसे उपयोग किया जा रहा होगा।

आशा है कि इन उदाहरणों और उनसे जुड़े विश्लेषण से यह स्पष्ट हो गया होगा कि बच्चों के साथ भाषा शिक्षक की कक्षा को रुचिकर बनाने, उनके परिवेश और पूर्व-अनुभवों को कक्षा की प्रक्रिया में स्थान देने, मौखिक भाषा विकास, ध्वनि जागरूकता, ध्वनि-लिपि चिह्न संबंध, डिकोडिंग और इसके साथ ही साथ पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया को सार्थक और रुचिकर बनाने के लिए किस प्रकार के प्रयासों की आवश्यकता होगी। फिर भी यदि इस प्रक्रिया को चरणवार ढंग से देखने और समझने की आवश्यकता महसूस हो तो निम्नलिखित भाग में इस प्रक्रिया को चरणवार ढंग से समझा जा सकता है।

आरंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण से संबन्धित प्रक्रिया:

- बॉक्स में दिए वर्ष के उपरोक्त कार्यक्रम के अनुसार हम यह निश्चित करें कि बच्चों को किन वर्णों का ज्ञान कराया जाना है। इस आधार पर 4-4 या 5-5 के समूहों में वर्णों का चयन किया जाए। (पाठ्यपुस्तक वाले खंड में इस बात की चर्चा की गई है कि सिखाने के लिए किन वर्णों से शुरुआत की जा सकती है। हम पाठ्यपुस्तक के आधार पर या फिर बच्चों की रुचि और उनके परिचित संदर्भों को ध्यान में रखते हुए वर्णों के समूह को निर्धारित कर सकते हैं। यहाँ यह भी ध्यान रखें कि स्वरों या मात्राओं तक आने के लिए सभी व्यंजनों को सिखा लेने तक रुकने की बजाय, हम दूसरे या तीसरे वर्ण समूह से ही स्वरों और उनसे संबन्धित मात्राओं पर कार्य आरंभ करें।)
- यह निश्चित होने के बाद उस वर्ण से जुड़े विभिन्न शब्दों और संदर्भों को एक साथ लाया जाए, जिससे कि कक्षा-प्रक्रिया में इसे शामिल किया जा सके।
- इस वर्ण पर चर्चा से पहले उस शब्द विशेष से जुड़े संदर्भ को तैयार किया जाए। इसे बच्चों के समक्ष प्रदर्शित किया जाए और चर्चा की जाए। फिर इससे उस शब्द पर ध्यान केन्द्रित किया जाए जिस शब्द के पहले अक्षर से बच्चों को परिचित कराया जाना है। यहाँ यह आवश्यक है कि यह शब्द बच्चों के परिवेश का हो और बच्चे इस शब्द की अवधारणा से परिचित हों। यह शब्द किसी कहानी को सुनाते हुए उससे लिया जा सकता है, किसी बालगीत की किसी पंक्ति से लिया जा सकता है, किसी चित्र पर चर्चा करते हुए वहाँ से लिया जा सकता है, या फिर बच्चों के अपने अनुभवों या किसी अन्य विषय की चर्चा से लिया जा

सकता है। यह शब्द ऐसा भी हो जिसे कि चित्र के रूप में प्रस्तुत किया जा सके। इस शब्द और संबन्धित चित्र पर रोचक और विस्तृत चर्चा की प्रक्रिया में यह ध्यान रखा जाए कि बच्चे इस शब्द को लिखा हुआ देख पाएँ, इस लिखे हुए शब्द को इसके संबन्धित चित्र से जोड़ते हुए इसे पढ़ा जाए और इस संबंध को समझाया जाए।

- इस शब्द पर चर्चा के बाद हमारा प्रयास यह हो कि बच्चे इस शब्द की ध्वनियों को अलग-अलग कर उच्चारण कर पाएँ। (भाषा सीखने के आरंभिक दिनों से ही बच्चे भाषा को टुकड़ों में नहीं, वरन् पूरे-पूरे शब्दों और वाक्यों में सुनते आए हैं। वे इन्हें इसीलिए पहचान पाते हैं या स्वीकार कर पाते हैं क्योंकि एक ओर वे जहाँ इस ध्वनि से वाकिफ़ होते हैं, वहीं दूसरी ओर वे इसके अर्थ को भी समझते हैं। लेकिन जब बात लिखने-पढ़ने की आती है तो परिदृश्य थोड़ा बदल जाता है। यहाँ हम पाते हैं कि शब्द अलग-अलग ध्वनियों से मिलकर बना होता है और इन अलग-अलग ध्वनियों को प्रकट करने के लिए अलग-अलग चिह्न निर्धारित हैं। अतः इस प्रक्रिया और इसमें निहित ध्वनियों को समझने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चे शब्द में निहित अलग-अलग ध्वनियों को समझें और उन ध्वनियों से उनके लिपि-चिह्नों के संबंध को स्थापित कर पाएँ।)

भाषा सीखने की शुरुआत से ही बच्चे भाषा को टुकड़ों में नहीं, वरन् पूरे-पूरे शब्दों और वाक्यों में सुनते आए हैं। वे इन्हें इसीलिए पहचानते या स्वीकार कर पाते हैं क्योंकि एक ओर वे जहाँ इन ध्वनियों से वाकिफ़ होते हैं, वहीं दूसरी ओर वे इसके अर्थ को भी समझते हैं। लेकिन जब बात लिखने-पढ़ने की आती है तो परिदृश्य थोड़ा बदल जाता है।

1. यह कार्य कक्षा में कुछ खेल गतिविधियों के द्वारा किया जा सकता है, जैसे कि किसी एक शब्द को लेकर उसमें शामिल अलग-अलग ध्वनियों को समझने के लिए उन्हें कम गति से अलग-अलग करके बोलते हुए उतनी बार ताली बजाना या कूदना या उतने कदम चलना (जैसे- 'बादल' शब्द इस तरह से बोलना **'बा – द – ल'** और हर ध्वनि को बोलते समय ताली बजाना)। कुछ बच्चों को यह कार्य एक-दो बार में ही समझ में आ जाएगा, वहीं कुछ के साथ थोड़ा अधिक समय लगेगा। बच्चे इस प्रक्रिया में आसानी से जुड़ पाएँ, इस हेतु उनके नामों का उपयोग इस गतिविधि में किया जा सकता है। इस गतिविधि में भी एक से अधिक चरण हो सकते हैं:

   - शब्दों की ध्वनियों को अलग-अलग करके पढ़ना व बोलना और फिर इन्हीं ध्वनियों को शब्द के आगे अलग-अलग लिखना और उन्हें बीच में अंतराल के साथ पढ़ना।
   - इसके बाद इन्हीं ध्वनियों को पुनः जोड़ते हुए शब्द को पूरा पढ़ना (शिक्षक इस प्रक्रिया में उन ध्वनियों पर उंगली रखते चलें जिनको पढ़ा जा रहा हो)।
   - फिर इन्हीं ध्वनियों को साथ में लाकर सम्पूर्ण शब्द को लिखना और इसे पढ़ना।
   - बच्चों को अपने नाम या उनके अन्य पसंदीदा शब्दों को अलग-अलग करके बोलने को कहना।

- इन शब्दों में आई अलग-अलग ध्वनियों को गिनना और पूछना कि अमुक शब्द में कितनी ध्वनियाँ हैं।
- इसके बाद उनसे संख्याएँ बताकर उतनी ध्वनियों वाले शब्दों को बोलने के लिए कहना। जैसे- दो, तीन या चार ध्वनियों वाले शब्द बोलने को कहना।

2. इसके बाद उस शब्द विशेष पर वापस आना जिसके पहले ध्वनि की पहचान की जानी है। उस शब्द में आई पहली ध्वनि के बारे में पूछना और उसे बोर्ड पर बड़ा-बड़ा लिखना। जैसे, 'लकड़ी' में कितनी ध्वनियाँ हैं? उत्तर आता है '3'। फिर पूछना कि इसमें पहली ध्वनि कौन-सी है? तो उत्तर आता है 'ल'। फिर बोर्ड पर लिखे हुए शब्द (लकड़ी) को दिखाकर पूछना, इसमें 'ल' कहाँ है? तो बच्चे पहले अक्षर की ओर इशारा करते हैं। फिर इस अक्षर को बोर्ड पर अलग से लिखा जाता है, इसे पुनः पढ़ा जाता है और फिर इस पहचान को सुदृढ़ करने के लिए इस पर और कार्य किया जाता है।

3. अक्षर का परिचय करा देने के बाद अब बारी होती है इस अक्षर की पहचान (लिखित और उच्चरित) को पुख्ता करने की। अब बच्चों के साथ इस अक्षर 'ल' पर बोलने, पढ़ने और लिखने के काम किए जाएँ। कक्षा में इसके निम्न चरण हो सकते हैं–

   - 'ल' की ध्वनि को पुख्ता करना– बच्चों के सामने विभिन्न शब्दों को उच्चरित करना और उनसे यह पहचानने के लिए कहना कि इनमें से कौन-से शब्द 'ल' वर्ण से शुरू हो रहे हैं और कौन-से नहीं। इसे खेल के रूप में भी किया जा सकता है। इसके बाद–
   - बच्चों से 'ल' वर्ण से आरंभ होने वाले शब्द बोलने को कहा जा सकता है। इस प्रक्रिया को बोर्ड पर लिखकर 'ल' से संबन्धित शब्द जाल बनाकर भी किया जा सकता है। इस दौरान बच्चे शब्द बोलेंगे और फिर उन्हें बोर्ड पर लिखा जाएगा।
   - अक्सर इस प्रक्रिया के दौरान ऐसा होता है कि वर्ण पहचान करवाते समय हम उन्हीं शब्दों को संदर्भ रूप में चुनते हैं जिनकी शुरुआत इस वर्ण विशेष से होती है। किन्तु आवश्यक है कि 'ल' की पहचान को पुख्ता करने के लिए हम बच्चों के साथ कुछ ऐसे शब्दों पर काम करें जिनमें 'ल' शुरुआत में न आकर कहीं बीच में या अंत में भी आ रहा हो, इससे बच्चे ध्वनि और संकेत के संबंध को सभी स्तरों पर बेहतर ढंग से समझ पाएँगे। जैसे, 'लकड़ी' के साथ ही साथ 'पालकी' और 'कमल' शब्द पर चर्चा और कार्य से हम यह समझा पाएँगे कि 'ल' किस शब्द में कहाँ आया है, कहाँ पहले, कहाँ बीच में और कहाँ अंत में। इसे बच्चों से भी पूछा जा सकता है, 'पालकी' में 'ल' ध्वनि किस नंबर पर है और 'कमल' में 'ल' ध्वनि किस नंबर पर है? इसी सवाल को बोर्ड पर लिखकर भी पूछा जाना चाहिए, जिससे कि बच्चे 'ल' को लिखा हुआ तीन अलग-अलग शब्दों में अलग-अलग स्थान पर देख पाएँ और फिर पढ़ पाएँ।

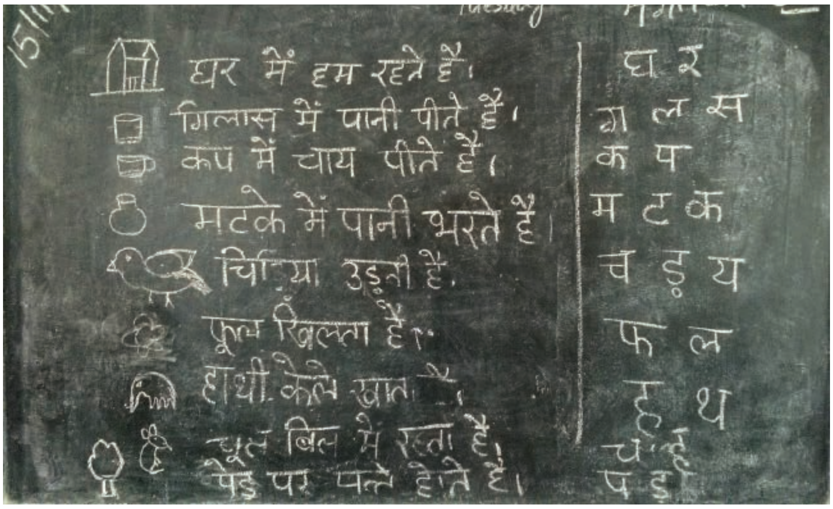

Figure 34 शिक्षण में चित्रों और सार्थक संदर्भों का उपयोग लिपि-ज्ञान तथा ध्वनि-लिपि सम्बन्ध सीखने की प्रक्रिया को आसान और रोचक बनाता है

4. यही काम मौखिक के बाद लिखित शब्दों की सहायता से भी किया जा सकता है। एक तो उन शब्दों को लिखकर प्रस्तुत करना जो 'ल' से शुरू हो रहे हों। इसके बाद बच्चों को अखबारों या अन्य किताबों में से उन शब्दों पर घेरा लगाने को कहा जा सकता है। अगले चरण में उनसे सीधे 'ल' पर घेरा लगाने को कहा जा सकता है, चाहे वो शब्द के आरंभ में आ रहे हों या किसी अन्य स्थान पर।

5. अब जब कि बच्चों का लक्षित वर्ण के लिखित रूप से परिचय हो गया है और अब वे उसे पहचानने और उच्चरित करने लगे हैं, तो अब इस प्रक्रिया के बाद बच्चों के साथ वर्ण को लिखने की प्रक्रिया पर कार्य करना समीचीन रहेगा। इस कार्य को बच्चों से स्लेट या कॉपी में करवाने से पहले इसे रेत, मिट्टी, हथेली या साथियों की पीठ पर, हवा में, पैर से, कमर से आदि गतिविधियों की सहायता से करना चाहिए। इन गतिविधियों के बाद फिर बच्चों के साथ औपचारिक रूप से वर्णों को लिखने पर काम किया जा सकता है। यह काम भी बोर्ड पर, फर्श पर, स्लेट पर या पेज पर किया जा सकता है, और यह ध्यान रखना होगा कि इसे लिखने के साथ ही साथ बार-बार उच्चरित भी किया जा रहा हो।

6. पहले चरण के लिए निर्धारित चार या छह वर्णों पर इसी प्रक्रिया के आधार पर कार्य करते हुए अब इस समूह के सभी वर्णों को सार्थक संदर्भों से जोड़ते हुए पढ़ने के लिए कुछ अन्य ऐसे शब्दों का चुनाव किया जा सकता है जिनमें ये वर्ण आते हैं। उदाहरण के लिए यदि पहले चरण में हम जो चार वर्ण चुनते हैं, वे हैं- 'घ, र, च, ल', तो फिर इन पर कार्य को आगे बढ़ाते हुए ऐसे शब्दों (घर, रस्सी, चम्मच, लड़का, रबर, रई, रस, चप्पल, चश्मा, चाँद, लड्डू, लकड़ी, लड़की, लहसुन आदि) का चुनाव किया जाए जिनमें ये वर्ण मौजूद हों। फिर इन्हीं शब्दों को बोर्ड पर लिखकर पढ़ा जाए और इनकी ध्वनियों को अलग-अलग करते हुए लक्षित वर्णों को पुनः दोहराया जाए। यह प्रक्रिया बच्चों में पढ़ना सीखने के प्रति भी आत्मविश्वास जगाएगी और वे कुछ सीमित वर्णों के ज्ञान के साथ भी समझ के साथ पढ़ने की ओर अग्रसर हो पाएँगे।

7. इस प्रकार दूसरे से तीसरे वर्ण समूह तक आते-आते हमारे पास बच्चों के परिचित संदर्भों पर आधारित वाक्यों या पंक्तियों के निर्माण हेतु प्रचुर शब्द और वर्ण हो जाएँगे। फिर इन्हीं का उपयोग उनको आगे पढ़ना और लिखना सिखाने में किया जाना अपेक्षित होगा।

8. इसी कार्य को आगे बढ़ाते हुए और क्या-क्या प्रक्रियाएँ अपनाई जा सकती हैं, इसे इसी अध्याय के पिछले पृष्ठों में बहुत विस्तार से बताया गया है। जैसे- चित्रों, कहानियों, कविताओं, या फिर पाठ्यपुस्तकों के पाठों की सहायता से आरंभिक कक्षाओं में पढ़ना-लिखना सिखाने पर कार्य।

9. उपरोक्त प्रक्रिया किस प्रकार, कितने चरणों में या कितने दिनों में पूरी की जानी है, इसका निश्चय बच्चों की समझ, उनकी अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार किया जा सकता है। आरंभ में कुछ अधिक समय लगने की संभावना है, किन्तु कुछ वर्ण समूहों पर काम हो जाने के बाद जब बच्चे उनसे बनने वाले शब्दों और वाक्यों को पढ़ते हैं तो बिना पूरी वर्णमाला सीखे भी उनमें पढ़ और समझ लेने का आत्मविश्वास आ जाता है और फिर आगे बाकी के वर्णों को सीखने-सिखाने का कार्य आसान हो जाता है और इसमें समय भी अपेक्षाकृत कम लगता है।

यहाँ यह समझना भी आवश्यक है कि यह पूरी प्रक्रिया आइसोलेशन में या अलग से नहीं हो रही होगी, वरन् इसके साथ ही साथ भाषा की कक्षा में पूर्व में वर्णित समस्त गतिविधियाँ, यथा खेल, बातचीत, कविताओं, कहानियों, चित्रों, और बाल साहित्य आदि का प्रयोग होना भी आवश्यक है। जिससे कि यह प्रक्रिया सिर्फ़ वर्ण सीखने तक ही सीमित होकर न रह जाए और बच्चे इसके संदर्भों को कक्षा की बाकी गतिविधियों में देख, समझ और उपयोग कर सकें। आरंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण से संबन्धित इस भाग को यदि समेकित किया जाए तो इसे निम्न आरेख के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। एक अच्छे भाषा शिक्षण के लिए चारों स्तरों पर प्रयास किए जाने चाहिए। जितना बाहरी घेरों वाली परिस्थितियाँ कमज़ोर या अनुपस्थित होती हैं, कक्षा कार्य पर निर्भरता बढ़ जाती है।

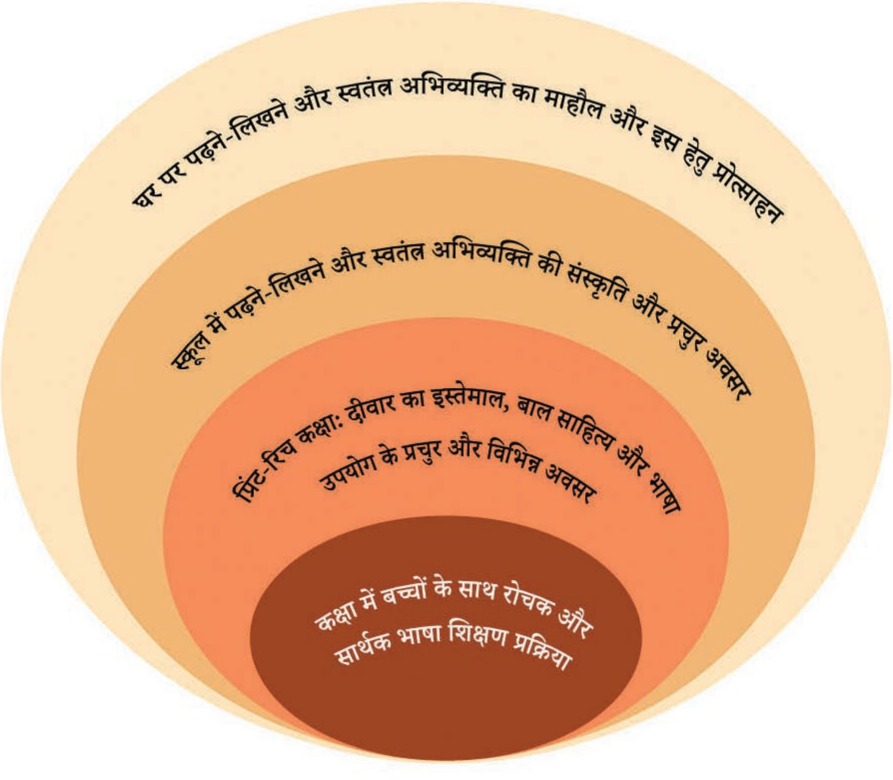

Figure 35 कक्षा, स्कूल और परिवार- भाषा सीखने के लिए ज़रूरी वातावरण

आपने देखा होगा कि इस दस्तावेज़ में पहले भी यह कहा जा चुका है कि भाषाई कौशलों को अर्जित करने में कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाएँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट हो चुका है कि इन प्रक्रियाओं का आधार वह विषयवस्तु होती है जिनका उपयोग हम कक्षाओं में भाषा शिक्षण के लिए करते हैं। आमतौर पर यह विषयवस्तु चित्र, खेल या अन्य गतिविधि, बालगीत या कविता, और कहानी आदि के रूप में होती है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हम शिक्षण प्रक्रियाओं को इन विषयवस्तुओं के आलोक में समझने और बरतने की ओर बढ़ें।

इसी बिन्दु को ध्यान में रखते हुए आगे के पृष्ठों में एक-एक कर संभावित विषयवस्तुओं के आधार पर कक्षा प्रक्रियाओं के निर्धारण की आवश्यकता, इन प्रक्रियाओं से संबन्धित उदाहरण और इन प्रक्रियाओं के आधार पर भाषा शिक्षण को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है।

2.4 कक्षा में बातचीत और आरंभिक गतिविधियों द्वारा पढ़ना-लिखना सीखना

आरंभिक गतिविधियाँ और बातचीत के विभिन्न मौके, कक्षा में रोचक और सीखने के लिए उपयुक्त माहौल को सुनिश्चित करने और इसे सीखने की सक्रिय और अर्थपूर्ण प्रक्रिया में तब्दील करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये प्रक्रियाएँ बच्चों को स्कूल के भीतर शुरुआत में महसूस होने वाले अजनबीपन को दूर करती हैं, उन्हें स्कूल और वहाँ के वातावरण को आत्मसात करने में सहज करती हैं, उन्हें कक्षा, सहपाठियों, और शिक्षकों से परिचित कराती हैं, और इन सबके साथ उनके लिए आवश्यक विभिन्न भाषाई और संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास के मार्ग भी प्रशस्त करती हैं। इस भाग में हम भाषा शिक्षण हेतु सहज और भयरहित माहौल के निर्माण और मौखिक भाषा से लिखित भाषा की ओर बढ़ने में आरंभिक गतिविधियों एवं बातचीत की भूमिका और इससे संबन्धित कक्षा प्रक्रियाओं को समझने के प्रयास करेंगे।

“ **कृष्ण कुमार जी के शब्दों में**

हमारे स्कूलों में 'बात करना' प्रायः गलत समझा जाता है। यह माना जाता है कि यदि कोई बात कर रहा है तो ठीक से पढ़ाई नहीं कर रहा होगा। इसलिए जैसे ही अध्यापक बच्चों को बात करता हुआ देखता है, वह तुरंत उन्हें रोकता है। बात करने की छूट बच्चों को सिर्फ़ आधी छुट्टी में रहती है, जब अध्यापक कोई महत्त्वपूर्ण काम नहीं कर रहा होता है।

बातचीत के प्रति उपेक्षा की वजह से हम शिक्षा में बातचीत के उपयोगों की अवहेलना करते आ रहे हैं। यह स्थिति सभी स्तरों पर है, पर प्रारम्भिक स्तर पर यह सबसे स्पष्ट है। प्रारम्भिक कक्षाओं के बच्चों के लिए बातचीत करना, सीखने और सीखी हुई चीज़ को सुदृढ़ बनाने का एक बुनियादी माध्यम है। सच तो यह है कि ऐसे अध्यापक जो बच्चों को बात नहीं करने देते, किताबों व अन्य सामग्री के लिए पैसे की कमी की शिकायत करने के हकदार नहीं हैं। वे पहले ही एक ऐसा मूल्यवान साधन बेकार जाने दे रहे हैं जिसके लिए कोई पैसा नहीं खर्च करना पड़ता। इसलिए ऐसा स्कूल जहाँ छोटे बच्चे बात करने को स्वतंत्र नहीं, बड़ा फ़िज़ूलखर्च स्कूल कहलाएगा। ”

उदाहरण

भाषा की एक कक्षा में दो बच्चे अध्यापिका की मेज़ के पास इंतज़ार में खड़े फुसफुसा रहे हैं और अध्यापिका रजिस्टर भरने में लगी हैं।

पहला बच्चा– देखा, आज बहनजी अंगूठी पहनी हैं!

दूसरा बच्चा– तुमने पहले नहीं देखी?

पहला बच्चा– नहीं ... हाँ, हाँ, मैंने पहले देखी है।

दूसरा बच्चा– अरे, लेकिन यह अंगूठी दूसरी है।

पहला बच्चा– बहनजी ने नई अंगूठी खरीदी है। यह पहली वाली से छोटी है।

दूसरा बच्चा– नहीं, पतली है।[4]

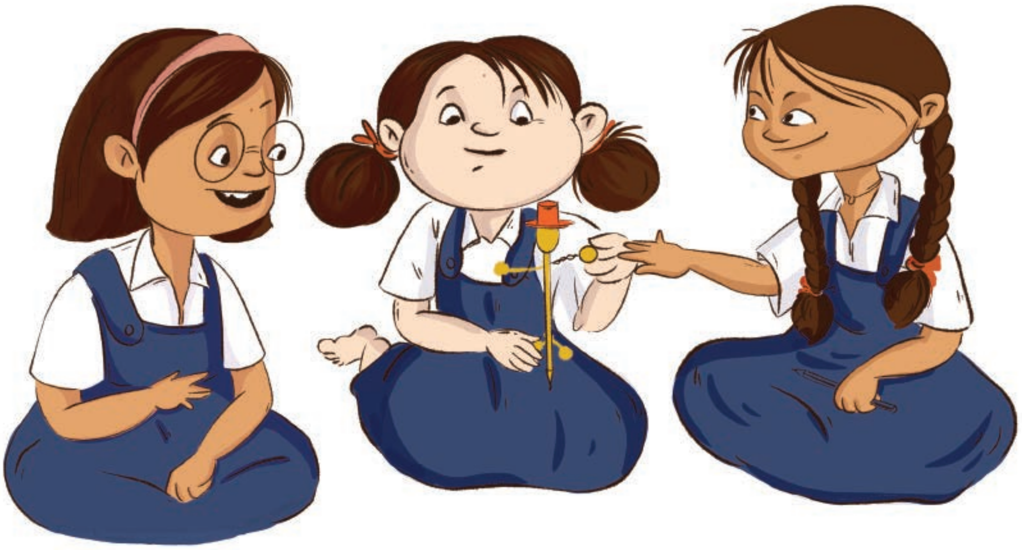

Figure 36 अपने पसंद के किसी विषय पर चर्चा करते बच्चे

यदि हम इस छोटे से संवाद का विश्लेषण करें तो सीखने की उन सम्भावनाओं को पहचान सकेंगे जो बातचीत के ज़रिए ही इन दो बच्चों को उपलब्ध हुईं। यदि पहले बच्चे ने अध्यापिका की अंगूठी देखकर बात न छेड़ी होती तो उसे यह याद करने का मौका न मिलता कि बहनजी पहले भी अंगूठी पहनती थीं। यदि यह बातचीत न हुई होती तो दूसरे बच्चे को पुरानी और नई अंगूठी में फ़र्क देखने का अवसर न मिलता, न ही यह समझने का अवसर मिलता कि 'छोटी' और 'पतली' में क्या भिन्नता है।

बातचीत के इन उपयोगों के प्रति सचेत होने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों की बात सुनने की आदत डालें। यह कहना आसान है, पर इसे करना मुश्किल है, क्योंकि बड़े यह मानकर चलते हैं कि उनका काम बच्चों को निर्देश देना है और बच्चों का काम सुनना है। अच्छे श्रोता से यहाँ आशय एक ऐसे व्यक्ति से है जो बात के सूक्ष्म उद्देश्य और बातचीत के कारण पैदा हुई सीखने की सम्भावनाओं को धैर्यपूर्वक पहचान सके।

उदाहरण

आइए, एक और उदाहरण देखते हैं,

उत्तर प्रदेश के एक राजकीय विद्यालय की कक्षा 2 में गुरुजी ने बात-बात में बच्चों को 'चिड़िया उड़' खेल के बारे में बताया। खेल के बारे में बताते हुए समझाया कि कोई चीज़ उड़ने वाली होगी तो उसे दोनों हाथ उठाकर उड़ाना है और जो जीव-जंतु ज़मीन पर रहते हैं, उनके लिए अपने हाथ नीचे ही रखना है। जिन्होंने ज़मीन पर रहने वाले जानवरों को उड़ा दिया, उन्हें गाना सुनाना पड़ेगा। उन्होंने पाँच मिनट तक कक्षा में बैठे-बैठे ही यह खेल खिलवाया। बच्चों ने इस खेल का भरपूर आनन्द लिया। इस खेल के उपरांत गुरुजी ने पालतू जानवरों पर बातचीत शुरू की, कौन-कौन से जानवर पाले जाते हैं? बच्चों ने गाय, भैंस, बकरी, भेड़ आदि के बारे में बताया। फिर उन्होंने पूछा, "भैंस किस रंग की होती है? उससे हमें क्या-क्या मिलता है? गाय किस रंग की होती है? उससे हमें क्या-क्या मिलता है? उसका दूध किस-किस काम में आता है?"

4 कृष्ण कुमार जी द्वारा लिखित पुस्तक 'बच्चे की भाषा और अध्यापक' से

बच्चों ने बताया, "गाय के दूध से माठा बनता है, घी बनता है, दही बनता है, रसगुल्ला बनता है आदि।" इस तरह बच्चों के विचार आते रहे और गुरुजी बात को आगे बढ़ाते रहे।[5]

इस उदाहरण में देखें तो हम पाते हैं कि शिक्षक बातों ही बातों में एक आसान-से खेल का कक्षा में परिचय कराते हैं और फिर बच्चों के आसपास के परिवेश और बच्चों के पूर्व-ज्ञान का उपयोग कक्षा को रोचक बनाने के साथ ही साथ आगे की सार्थक और सीखने-सिखाने वाली चर्चा के लिए भी करते हैं।

Figure 37 कक्षा में एक रोचक गतिविधि

हम पाते हैं कि भाषा सीखने में परिवेश की महत्त्वपूर्ण भूमिका संदेह के परे है और ठीक उतना ही स्पष्ट है, इस परिवेश का अनुकूल, भयरहित और सहज होना। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि विद्यालय आना आरंभ किए बच्चों के लिए कक्षा का माहौल ऐसा बनाया जाए जो एक नए परिवेश में महसूस होने वाली अजनबियत को दूर करे, बच्चों को इससे परिचित और सहज होने में मदद करे, और बच्चे स्कूल को एक ऐसे स्थान के रूप में देख सकें जो उनके लिए एक अच्छी और आनंददायक जगह हो तथा वे जहाँ आना और समय व्यतीत करना चाहें। इस प्रकार के वातावरण निर्माण में बातचीत, चर्चा और गतिविधियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। ये ऐसी प्रक्रियाएँ हैं जो न सिर्फ़ स्कूल की बंधी-बंधाई उदासीन छवि को तोड़ती हैं, बल्कि इसे जीवंत और

यह आवश्यक हो जाता है कि विद्यालय आना आरंभ किए बच्चों के लिए कक्षा का माहौल ऐसा बनाया जाए जो एक नए परिवेश में महसूस होने वाली अजनबियत को दूर करे, बच्चों को इससे परिचित और सहज होने में मदद करे, और बच्चे स्कूल को एक ऐसे स्थान के रूप में देख सकें जो उनके लिए एक अच्छी और आनंददायक जगह हो तथा वे जहाँ आना और समय व्यतीत करना चाहें।

5 कमलेश चंद्र जोशी जी के 'कक्षा में बच्चों से बातचीत' शीर्षक लेख का अंश

आकर्षक भी बनाती हैं। स्कूल आने से पहले तक अधिकतर बच्चों का एक बड़ा समय खेलकूद या घर के बाहर की गतिविधियों में जाता है, अतः यह आवश्यक हो जाता है कि उनके विद्यालयी जीवन की शुरुआत में ही एकदम से नए माहौल में एक चारदीवारी के भीतर कठिन अनुशासन में न डाल दिया जाए। बल्कि एक ऐसे माहौल का निर्माण किया जाए जिसे वे अपना समझें और जिसमें वे बिना किसी संकोच या हिचकिचाहट के अपनी बात कह सकें और अपनी आशंकाएँ, प्रश्न या जिज्ञासाएँ रख सकें।

भाषा की कक्षा में बातचीत और चर्चा से संबन्धित संभावित अवलोकनीय कक्षा प्रक्रियाएँ (ऑब्ज़र्वेबल क्लासरूम प्रैक्टिसेज़) और उनके संकेतक–

कक्षा में बातचीत और उसके द्वारा पढ़ना-लिखना सीखना	
कक्षा एक व दो के लिए	**कक्षा तीन से पाँच के लिए**
बच्चों के साथ आम दिनचर्या पर बातचीत करते हैं।	कक्षा में बातचीत के पर्याप्त अवसर उपलब्ध रहते हैं।
बातचीत के मुद्दे आमतौर पर सरल और रोज़मर्रा के कामकाज और गतिविधियों से जुड़े होते हैं।	कक्षा में हो रही बातचीत को बच्चों के संदर्भ से जोड़ने के प्रयास किए जाते हैं।
बातचीत में बच्चों के अनुभवों और उनकी आपसी बातचीत को भी मुद्दा बनाते हैं।	बातचीत में पाठ्यपुस्तक के बाहर से भी कविता-कहानियों के संदर्भ लाने का भी प्रयास किया जाता है।
कहानी-कविता सुनाने के बाद भी बच्चों के साथ बातचीत होती है।	बातचीत में बच्चों के व्यक्तिगत अनुभवों को उपयुक्त स्थान दिया जाता दिखाई देता है।
कक्षा की बातचीत को लिखने-पढ़ने के अवसर के रूप में उपयोग कर पाते हैं।	किताब में दिए गए अर्थ के साथ-साथ नए शब्दों के प्रयोग और उनके अर्थ खोजने के प्रयास भी कक्षा में होते दिखाई देते हैं।
बच्चों के साथ बातचीत में बच्चों की भाषा को महत्त्व देते हैं।	कक्षा की बातचीत का प्रिन्ट, पठन-लेखन, लिखित सामग्री से जुड़ाव दिखाई देता है।
कक्षा में हावभाव के साथ कहानियाँ और कविताएँ सुनाते हैं।	कक्षा में बातचीत के अवसर हैं और पाठ के अतिरिक्त भी संदर्भ पर बात होती है।
कहानी-कविता को पढ़ने-लिखने से जोड़ने की गतिविधियाँ करते हैं।	शब्दकोश का उपयोग होता दिखाई देता है।

कक्षा में बातचीत और उसके द्वारा पढ़ना-लिखना सीखना	
कक्षा एक व दो के लिए	**कक्षा तीन से पाँच के लिए**
बच्चों के स्तरानुसार कहानियों, कविताओं को सुनाने के साथ वर्ण, शब्द एवं ध्वनियों पर चर्चा करते हैं।	बातचीत में सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। हर बच्चे को बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
बच्चों को भी कहानियाँ और कविताएँ सुनाने के लिए प्रेरित करते हैं।	बातचीत को बच्चों के संदर्भ से जोड़ने के प्रयास किए जाते हैं।
सुनी या पढ़ी गई बातों को बच्चों की भाषा में लिखने एवं कहने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं।	बातचीत को लेखन के अनुभवों में बदलने के प्रयास भी होते दिखाई देते हैं।
पढ़ने के विभिन्न तरीकों, जैसे- मौन वाचन, मुखर वाचन या समूह के साथ पढ़ने-लिखने आदि के मौके उपलब्ध करवाते हैं।	बच्चों को बातचीत के सायास अवसर देते हुए उनकी अभिव्यक्ति की प्रगति को दस्तावेज़ीकृत करते हैं।
बच्चों को कक्षा में कहानियों के आधार पर बातचीत को आगे बढ़ाने के अवसर देते हैं।	जिन बच्चों को अधिक सहायता की आवश्यकता होती है, उनकी आवश्यकता का आकलन करके उपयुक्त मदद दी जाती है।
कहानियों, कविताओं के क्रम, चित्रों के क्रम एवं वर्ग पहेलियों आदि को शिक्षण में टूल की तरह उपयोग कर उस आधार पर भी बातचीत करते हैं।	
नए सीखे जा रहे शब्दों को दीवार पर लगाया जाता है और इन्हें बातचीत में प्रयोग करने के अवसर दिए जाते हैं।	
कक्षा की बातचीत का कक्षा में लगे प्रिन्ट, पठन-लेखन, लिखित सामग्री से जुड़ाव दिखाई देता है।	
सामान्य वार्तालाप में, अपनी बात रखने में बच्चों की प्रगति को दस्तावेज़ीकृत करते हैं और उसके आधार पर अधिक आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान करके उन्हें अधिक मौके देने का प्रयास करते हैं।	

जिस प्रकार से उपरोक्त उदाहरण हमें यह समझने में मदद करते हैं कि इनके आधार पर हम अपनाई जा रही शिक्षण प्रक्रियाओं में उन बिन्दुओं या अंतराल (गैप्स) को समझ पाएँ जो कि सीखने-सिखाने में बाधक बन रही हैं और साथ ही साथ उन्हें भी समझ पाएँ जिनका जुड़ना इस प्रक्रिया को और अधिक उपयोगी एवं सार्थक बना देगा। यहाँ ऐसी ही संभावित अवलोकनीय कक्षा प्रक्रियाओं और उनसे जुड़े आसानी से समझ में आने वाले संकेतक दिए हुए हैं। इनका उपयोग हमें प्रक्रियाओं से जुड़ी चुनौतियों और उन्हें दूर करने के उपायों को समझने और फिर उनके अनुसार आगे बढ़ने में मदद करेगा। इनके आधार पर यह सुनिश्चित करना भी आसान हो जाएगा कि कक्षा में किन प्रक्रियाओं को अपनाए जाने की आवश्यकता है और क्यों। फिर इन्हीं अवलोकनों और सटीक अनुमानों के आधार पर शिक्षक के साथ कार्य की रूपरेखा भी तय की जा सकेगी।

कक्षा प्रक्रियाओं से संबन्धित उपरोक्त संकेतक हमें बातचीत और चर्चा को केंद्र में रखकर कक्षा में हो रहे कार्य को प्रगति के क्रम में देखने का मौका देते हैं। वहीं इनके विश्लेषण से हम यह भी समझ सकते हैं कि यदि कक्षाओं में इन प्रक्रियाओं की अनुपस्थिति में बच्चे या शिक्षक किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हैं। बातचीत को लेकर मान्यताएँ और इनसे संबन्धित चुनौतियाँ कुछ इस प्रकार की होती हैं–

2.4.1 चुनौतियाँ / मान्यताएँ

- हाल फिलहाल तक यह एक आम धारणा रही है कि विद्यालय खेलने-कूदने की जगह नहीं, बल्कि पढ़-लिखकर कुछ बन जाने की जगह है। अतः खेल और गतिविधियाँ समय की बरबादी मात्र हैं। गतिविधियों से इत्तेफ़ाक न रखने की एक वजह यह भी होती है कि कुछ शिक्षक बच्चों के साथ इस तरह की चर्चाओं और उछल-कूद को लेकर संकोच करते हैं। वहीं कुछ शिक्षक चाह कर भी ऐसा नहीं कर पाते, क्योंकि उन्हें इसके लिए संस्था प्रधान और अन्य साथी शिक्षकों का सहयोग नहीं मिलता। यहाँ यह मान्यता होती है कि इस प्रक्रिया से अन्य कक्षाएँ डिस्टर्ब होती हैं और स्कूल का अनुशासन भंग होता है। कुछ शिक्षक इस मान्यता के साथ भी आते हैं कि बच्चों से एक उचित दूरी बनाकर रखनी ज़रूरी है, नहीं तो वे सिर पर चढ़ जाएँगे और फिर कोई काम नहीं करेंगे।

- देखा जाए तो लगभग सभी राज्यों की कक्षा एक की भाषा की किताबों के आरंभिक पृष्ठ इस प्रकार की गतिविधियों / खेलों और रोचक सामग्री को स्वयं में समेटे हुए होते हैं, किन्तु इनका भी ठीक-ठीक उपयोग अधिकतर कक्षाओं में नहीं हो पाता। उनके मुताबिक कक्षा में बच्चों को बातचीत करने की छूट देने का अर्थ कक्षा का अनुशासन भंग करना होता है। मान्यता यह भी है कि यदि बातचीत ही करते रहेंगे तो कक्षा में काम कब कराया जाएगा।

- कुछ शिक्षक यह तो समझते हैं कि कक्षा में बातचीत होनी चाहिए, मगर उन्हें यह स्पष्ट नहीं होता कि यह बातचीत किस तरह की हो और इसकी प्रक्रिया क्या हो। कुछ शिक्षकों के लिए कक्षा में बच्चों से उनके न

> कुछ शिक्षकों के लिए कक्षा में बच्चों से उनके न आने का कारण पूछ लेना, बच्चों के माता-पिता का नाम पूछ लेना, और सामान्य निर्देश देना या इस जैसे ही अन्य एकतरफा संवाद ही बातचीत करना है ।

आने का कारण पूछ लेना, बच्चों के माता-पिता का नाम पूछ लेना, और सामान्य निर्देश देना या इस जैसे ही अन्य एकतरफा संवाद ही बातचीत करना है। साथ ही बातचीत को मात्र सामान्य सूचनाओं के आदान-प्रदान तक ही सीमित माना जाता है और पढ़ना-लिखना सीखने में इसके इस्तेमाल की समझ का अभाव होता है।

- अधिकतर कक्षाओं के बच्चे भी कक्षा में पूरी तरह से चुप्पी के या एकतरफा संवाद के ही आदी होते हैं, अतः वे शुरुआती दौर में कक्षा में बात करने में असहज रहते हैं, कक्षा में क्या कहना है, उन्हें इसका भी अंदाज़ा नहीं रहता और इसका हासिल यह होता है कि उनमें अपनी बात को कहने लायक आत्मविश्वास नहीं आ पाता। इससे कक्षा में बच्चों के अनुभव और उनकी बातों को वो स्थान नहीं मिलता जिसका मिलना उनके भाषाई कौशलों के विकास के लिए आवश्यक है।

- बच्चों की मातृभाषा का अपेक्षित उपयोग भाषा शिक्षण की प्रक्रियाओं में न होने के कारण घर की भाषा से पाठ्यपुस्तक की भाषा में स्मूद-ट्रांजैक्शन नहीं हो पाता। इसके कारण बच्चे इस नई भाषा के उपयोग में आत्मविश्वास हासिल नहीं कर पाते।

भाषा सीखने की शुरुआत से ही बच्चे भाषा को टुकड़ों में नहीं, वरन् पूरे-पूरे शब्दों और वाक्यों में सुनते आए हैं। वे इन्हें इसीलिए पहचानते या स्वीकार कर पाते हैं क्योंकि एक ओर वे जहाँ इन ध्वनियों से वाकिफ़ होते हैं, वहीं दूसरी ओर वे इसके अर्थ को भी समझते हैं। लेकिन जब बात लिखने-पढ़ने की आती है तो परिदृश्य थोड़ा बदल जाता है।

2.4.2 कक्षा में बातचीत– मुद्दे और प्रक्रियाएँ

आसान शब्दों में कहें तो बच्चों को कक्षा में स्वतन्त्रतापूर्वक स्वयं को अभिव्यक्त करने के अवसर देना ही बातचीत है। बातचीत जहाँ एक ओर भाषा की कक्षा को बच्चों के लिए अधिक सहज बनाती है, वहीं दूसरी ओर विचारों को संगठित करने और अभिव्यक्ति को आत्मविश्वासपूर्ण और प्रवाहपूर्ण बनाने में मदद करती है। बच्चे मौखिक भाषा की संरचनाओं और पैटर्न का उपयोग लिखित भाषा एवं वाक्य संरचनाओं के निर्माण में करते हैं। शिक्षकों द्वारा की गई बातचीत बच्चों को किसी संदर्भ विशेष से जुड़े विषय पर सुनने के सार्थक अवसर उपलब्ध कराते हैं और चर्चा के मौके भी देते हैं।

बच्चे मौखिक भाषा की संरचनाओं और पैटर्न का उपयोग लिखित भाषा एवं वाक्य संरचनाओं के निर्माण में करते हैं।

अक्सर हम पाते हैं कि अनौपचारिक बातचीत में संलग्न बच्चे भी जाने-अनजाने ये दस क्रियाएँ करते नज़र आते हैं–

- जिस चीज़ पर अभी तक ध्यान नहीं गया है, उस पर ध्यान देना
- उसे मोटे तौर पर या बारीकी से देखना
- अपने-अपने निरीक्षणों का आदान-प्रदान करना
- निरीक्षण को तरतीब से लगाना
- दूसरे के निरीक्षण को चुनौती देना
- निरीक्षण के आधार पर तर्क करना
- अनुमान लगाना, भविष्यवाणी करना
- पिछले किसी अनुभव को याद करना
- दूसरे की भावनाओं या उसके अनुभवों की कल्पना करना
- किसी काल्पनिक स्थिति में स्वयं की भावनाओं की कल्पना करना

यदि हम बच्चों की बातचीत को ध्यानपूर्वक सुनें तो हम उनमें उपरोक्त संभावनाओं को ढूँढ पाने और समझ पाने में सक्षम होंगे। हम यह भी समझ पाएँगे कि ये संभावनाएँ किस तरह विश्लेषण और तर्क करने की क्षमताओं के विकास से जुड़ी हैं। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि बच्चों को भाषा के साथ-साथ ही संज्ञानात्मक क्षमताओं से संबन्धित कौशलों के विकास के लिए भी कक्षा में बातचीत के पर्याप्त अवसर दिए जाएँ। यहाँ अवसर देने से तात्पर्य है कि बच्चों से बातचीत की जाए और उन्हें आपस में बातचीत करने के लिए प्रेरित किया जाए और इन सबके लिए उपयुक्त माहौल और वजहें गढ़ी जाएँ।

बातचीत के आरंभ से पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि कक्षा का माहौल बच्चों के अनुकूल है। बच्चों को यह महसूस होना आवश्यक है कि वे बात करने के लिए स्वतंत्र हैं, खुलकर बात कर सकते हैं और उनकी बात रुचिपूर्वक सुनी जाएगी। जब बच्चों को यह महसूस होता है कि शिक्षक उनकी बात ध्यान से और रुचिपूर्वक सुन रहे हैं तो उनका शिक्षक में विश्वास बढ़ता है और प्रतिक्रिया में हम यह भी पाते हैं कि बच्चे भी शिक्षक की बातों को अधिक ध्यान से सुनते हैं। उन्हें यह विश्वास हो जाता है कि जब वे कुछ कहेंगे तो सुना जाएगा और इस विश्वास से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। साथ ही इससे बच्चों को उनकी चुनौतियों, उनकी रुचियों-अरुचियों आदि को समझने का भी मौका मिलता है।[6]

हमारी अधिकतर कक्षाओं के बच्चे हिन्दी भाषा के बहुत ही सीमित अनुभव के साथ स्कूल आते हैं, अतः यह शिक्षक का दायित्व बन जाता है कि आरंभ के एक-दो वर्षों तक वे बच्चों को इस भाषा का अधिक से अधिक अनुभव प्रदान करें। अर्थात् संवाद के प्रचुर मौके निर्मित करें और वो भी ऐसे मौके जहाँ बच्चे बिना हिचक के मातृभाषा से हिन्दी भाषा तक के सफ़र को आसानी और रोचकता से तय करें। इस हेतु शिक्षक के लिए आवश्यक हो जाता है कि उन्हें बच्चों की मातृभाषा का ठीक-ठाक ज्ञान हो।

कक्षा में बातचीत के मुद्दे बच्चों के परिवेश, उनकी रुचि, उनके अनुभव और शिक्षक की अपनी सुविधा के अनुसार चुने जा सकते हैं। इसमें ध्यान रखना होगा कि बातचीत कुछ इस अंदाज़ में हो कि बच्चे स्वयं ज़्यादा बोलें और शिक्षक कम, तात्पर्य यह है कि शिक्षक पूरी प्रक्रिया में सूत्रधार की भूमिका निभाएँ और बातचीत को दिशा दें। इसके साथ ही उन बच्चों को अपने अनुभव या विचार रखने के लिए प्रेरित करें जो चर्चा में सक्रिय नज़र न आ रहे हों। दूसरी बात ये ध्यान रखी जाए कि बच्चों की बातचीत में उनके अनुभव ज़्यादा और सूचनाएँ कम से कम हों।

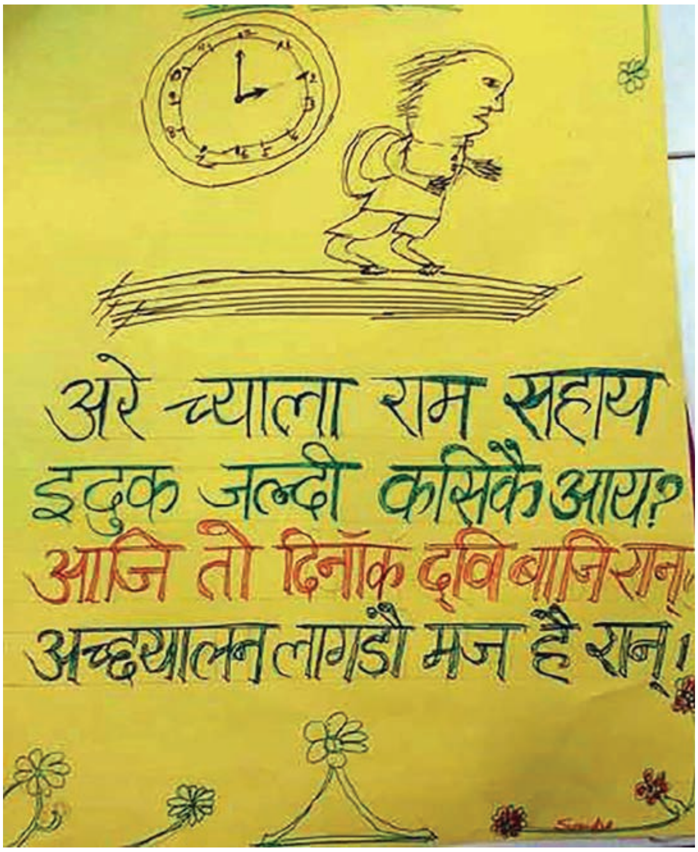

Figure 38 मातृभाषा का उपयोग सीखने को रोचक बनाता है

आरंभिक कक्षाओं में बातचीत का एक उद्देश्य जहाँ बच्चे को कक्षा की प्रक्रियाओं से सामंजस्य बैठाने का अवसर देना है, वहीं दूसरी ओर उसे शनैः-शनैः मातृभाषा से हिन्दी भाषा को समझने की ओर लाना है। इस दृष्टि से देखें तो बातचीत भाषा की कक्षा का एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है और कक्षा में सार्थक बातचीत (औपचारिक और अनौपचारिक) के लिए निर्बाध और स्वतंत्र माहौल के द्वारा एक ओर जहाँ बच्चों को अपने विचारों को संगठित करने का अवसर मिलता है, वहीं दूसरी ओर उन्हें इन विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति के अवसर भी मिलते हैं। इस प्रकार की बातचीत बच्चों के शब्द भंडार में वृद्धि का एक महत्त्वपूर्ण ज़रिया है और फिर यही मौखिक भाषा पढ़ने और लिखने का एक मज़बूत आधार बनती है।

उदाहरण

अध्यापिका रेखा चमोली जी की कक्षा में बातचीत का एक दृश्य, उन्हीं के शब्दों में–

कक्षा में एक कविता पर कार्य के दौरान 'बादल' शब्द आया और फिर चर्चा उस ओर मोड़ दी गई। बादल पर बात करते हुए मैंने पूछा, "बादल कैसे बनते होंगे?"

शुभम ने कहा,"बादल धुएँ से बनते हैं।" ज़्यादातर बच्चों का यही मानना था कि बादल धुएँ से बनते हैं।

मैंने पूछा, "उनमें पानी कहाँ से आता है? धुएँ में तो पानी नहीं होता।"

प्रियंका– "वे खूब पानी पीते हैं।"
"कहाँ से?"
"जहाँ ज़्यादा पानी होता है, जैसे नदी से।"
दीक्षा– "इन्द्रधनुष बादलों पर पानी डालता है, वो अपने धनुष से पानी खींचकर बादलों को भरता है।"
"इतना सारा धुआँ कहाँ से आता होगा?"
"जब जंगल में आग लगती है तो बहुत सारा धुआँ निकलता है। उससे बादल बनता है।"
शुभम– "चूल्हा जलाने से भी बहुत सारा धुआँ आता है।"
मनीषा– "खेतों में कबाड़ जलाने से भी बहुत धुआँ आता है।"
इतने में भवानी बोली, "बादल बर्फ से बनते हैं।"
"बर्फ कहाँ से आती होगी?"
आइशा– "बर्फ आसमान से आती है, जो बादलों में जमा हो जाती है।"
भवानी– (आइशा की ओर देखकर)"बादल ही बर्फ होते हैं।"
बच्चे अपनी कल्पना से बादल का बनना, उसमें पानी आना व पानी का बरसना आदि बता रहे थे। इतने में मुझे सूझा, क्यों न इन्हें रसोई घर में ले जाकर भाप का बनना, ठंडा होकर पानी का बूंदों में बदल जाना, बूंदों का भारी होकर टपक जाना दिखाऊँ और इसी बहाने बादलों पर बात करूँ। इसके बाद हम सब रसोई घर में गए...

इस कक्षा में चर्चा के लिए एक ऐसे विषय को चुना गया है जो बच्चों के परिवेश में है, आकर्षक है और जिसके बारे में बताने के लिए लगभग सभी बच्चों के पास कुछ-न-कुछ है। इस उदाहरण में हम यह भी देखते हैं कि शिक्षिका कहीं भी बातचीत को रोकती या किसी को भी टोकती नज़र नहीं आती, वरन् इसके विपरीत वे हमेशा नए-नए प्रश्नों से चर्चा को गति और दिशा दोनों प्रदान करती हैं। इस चर्चा की परिणति होने तक बच्चे यह

Figure 39 बच्ची और इंद्रधनुष

जानने के लिए पूरी तरह से तत्पर और उत्सुक होते हैं कि क्या बादल सच में वैसे ही बनते हैं जैसे उन्हें लगता है!

बातचीत के कुछ अन्य मुद्दे इस प्रकार हो सकते हैं–

- **अपने बारे में बात करने के अवसर देना**

  सभी बच्चे अपनी ज़िंदगी के बारे में और उससे जुड़ी घटनाओं के बारे में बात करने के लिए उत्सुक रहते हैं, बशर्ते कि उन्हें इसके लिए प्रोत्साहन और मौका दिया जाए। इस हेतु आवश्यक है कि बच्चों की व्यक्तिगत ज़िंदगी और स्कूल में उनकी पढ़ाई के बीच के संबंध को समझा जाए और यह भी समझा जाए कि कक्षा में भाषा पढ़ाते वक्त पाठ्यपुस्तकों से आगे भी बहुत कुछ हो सकता है और उन बहुत कुछ में से एक है, बच्चों के साथ बातचीत करना।

  इस तरह की बातचीत यह सुनिश्चित करती है कि सभी बच्चे कक्षा में हिस्सेदारी निभा पाएँ। अतः बातचीत के लिए हमें ऐसे मुद्दों को चुनना होगा जो बच्चों के व्यक्तिगत अनुभव, उनके व्यक्तिगत जीवन से जुड़ी हुई हो, ना कि वे जो हमें पसंद है। बच्चों के साथ अपने बारे में बात, घर-परिवार से जुड़े अनुभवों पर बात, दोस्तों से जुड़े अनुभवों पर बात, गाँव की कोई घटना, किसी त्योहार को मनाने के अनुभव आदि के बारे में बात की जा सकती है।

उदाहरण

Figure 40 राजा साहब आज जमीन पर बैठेंगे

बच्चों से बातचीत का ये अनुभव मुस्कान संस्था से जुड़े अनिल सिंह जी का है– एक सात साल की बच्ची मुझसे बात करते हुए कुर्सी से उतरकर नीचे बैठते हुए कहती है, “राजा साहब आज ज़मीन पर बैठेंगे।” मुझे यह वाक्य जँचा। बात आगे बढ़ाने की सूझी। मैंने कहा, “राजा साहब आज ज़मीन पर बैठे हैं, इस बात के क्या-क्या मतलब हो सकते हैं?” बच्ची ने मुश्किल से दो पल लिए होंगे और बोली, “आज राजा साहब का मन ज़मीन पर बैठने को हुआ, इसलिए वो ज़मीन पर बैठे हैं।” मैंने उसकी बात पर पूरा गौर किया और कहा, “बिलकुल ठीक”। फिर बात को आगे बढ़ाया, “और क्या हो सकता है”? उसने बड़े ही आत्मविश्वास से जवाब दिया, “राजा साहब की कुर्सी धुलाई के लिए गई हुई है, इसलिए राजा साहब ज़मीन पर बैठे हुए हैं।” मैं उसकी तरफ देखता रह गया। यह बात उसकी नहीं

थी। यह एक रचनात्मक बात थी। इस बात में वो खुद नहीं थी, कोई राजा था। वह किसी राजा के बारे में सोचकर ऐसा कह रही थी। मेरे मन में (या यूँ कहें कि हम बड़ों के मन में) तो ये बात कभी आ ही नहीं सकती थी कि 'राजा साहब की कुर्सी धुलने के लिए गई है और इसलिए राजा साहब ज़मीन पर बैठे हुए हैं'। कितना साफ-सुथरा और जीवन के करीब का तर्क है! राजा साहब का ऐसा सामान्यीकरण करने की ज़ुर्रत हम तो नहीं कर सकते थे।

मेरी रुचि बढ़ती गई। मैंने कहा, "और क्या हो सकता है?" बच्ची बोली, "राजा साहब लोगों के बीच ज़मीन पर आकर बैठे हैं, क्योंकि वो लोगों के प्रति अफ़सोस ज़ाहिर करना चाहते हैं।" मैं चौंका। "किस बात का अफ़सोस?" उसने फिर कहा, "राजा भी तो आम लोगों की तरह एक इंसान है न, बस उसकी पोस्ट राजा की है। यह बताने के लिए वे लोगों के बीच ज़मीन पर बैठे हुए हैं।" मुझे लगा, वह शायद सहानुभूति शब्द का इस्तेमाल करना चाह रही थी, पर उस वक़्त उसके पास वह शब्द नहीं था। मैंने फिर कहा, "पर इसमें अफ़सोस जाहिर करने की क्या बात है?" उसने बड़ा ही साधा हुआ उत्तर दिया, "जनता के पास कुर्सी और सोफ़े नहीं हैं, इस बात का अफ़सोस ज़ाहिर करने के लिए राजा साहब उनके बीच ज़मीन पर बैठे हैं, बराबरी से।" मैं दंग रह गया कि यह कितना उन्मुक्त दृष्टिकोण था। अब वह एक सामाजिक-राजनीतिक चेतना के साथ यह बात कह रही थी। और मैं अपनी संकुचित समझ के साथ उसे अपनी तरह से समझने की कोशिश कर रहा था।

यदि इस उदाहरण को देखें तो चर्चा में जो पहली बात समझ में आती है, वह है शिक्षक और बच्ची का सहज संबंध। दूसरी बात जो कि पूरी चर्चा के दौरान बार-बार उभरकर आती है, वह है बच्ची के सोचने, समझने और अभिव्यक्त करने का तरीका। इससे हम यह अनुमान आसानी से लगा सकते हैं कि उसकी भाषा की कक्षा कैसी होती होगी और उस कक्षा में किस प्रकार की प्रक्रियाओं को उपयोग में लाया जाता होगा। चर्चा यह भी स्पष्ट करती है कि बच्चे कितने सहज और तार्किक ढंग से सोचते हैं, बशर्ते उन्हें सोचने-समझने के इस तरह के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।

- **स्कूली अनुभवों पर बात करने के अवसर देना**

  स्कूल का परिवेश बच्चों के लिए एक नया और आकर्षक परिवेश हो सकता है। स्कूल के आसपास ऐसी कई चीज़ें होती हैं जो बच्चों को आकर्षित करती हैं और बच्चे इन्हें अच्छे से देखना और इनके बारे में विस्तार से जानना, समझना या बताना चाहते हैं। घर से स्कूल तक का रास्ता, वहाँ आसपास स्थित दुकानें, पेड़, मकान, सड़क, बाड़, खेत, मिट्टी, फाटक, घोंसले, फूल, तितलियाँ, जानवर, गाड़ियाँ और इसी तरह के तमाम अन्य चीज़ें स्कूल के आस-पास मौजूद होती हैं और बच्चों की उत्सुकता बढ़ाती रहती हैं।

स्कूल के आसपास ऐसी कई चीज़ें होती हैं जो बच्चों को आकर्षित करती हैं और बच्चे इन्हें अच्छे से देखना और इनके बारे में विस्तार से जानना, समझना या बताना चाहते हैं।

अतः बच्चों को इस प्रकार के भ्रमण पर ले जाया जा सकता है और वहाँ से लौटने के बाद उनसे उनके अनुभवों, उनके द्वारा देखी गई या महसूस की गई चीज़ों, स्थितियों आदि के बारे में बातचीत की जा सकती है। अवसर मिलने पर बच्चे अपने अनुभवों, सूक्ष्म अवलोकनों, उसके सकारात्मक और नकारात्मक तथ्यों, और खोज की प्रक्रियाओं आदि के बारे में बात रख सकते हैं। इसके साथ ही उनके दिमाग में चल रहे सवालों को सुना जा सकता है और उनके उत्तर तलाशे जा सकते हैं।

- **चित्रों पर बातचीत**

  अखबार की कतरनें, फ्लिपचार्ट, विज्ञापन के पोस्टर, होर्डिंग, पंच-लाइनें, बच्चों द्वारा स्वयं बनाए गए चित्र आदि। चित्र, चित्र-कहानियाँ, बालगीत और कविताएँ आदि भी बातचीत का हिस्सा हो सकती हैं। किसी पाठ को शुरू करते समय की जाने वाली आरंभिक बातचीत को भी इसी तरह से नियोजित किया जा सकता है।

उदाहरण

प्रस्तुत है, संदर्भ पत्रिका में प्रकाशित पारुल बत्रा का यह अनुभव जो यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार चित्रों का सामंजस्य न सिर्फ़ टेक्स्ट के प्रति आकर्षण को बढ़ा देता है, बल्कि उसमें व्यक्त भावों और संवेदनाओं को सशक्तता से उभारने और महसूस कराने में भी सहायक होता है–

यह घटना चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'बुढ़िया की रोटी' किताब सुनाने के समय की है। यूँ तो मौखिक रूप से जसकरन ने यह कहानी ढेरों बार मुझसे रात को सोने के समय सुनी। लेकिन जब एक दिन मैंने उसे किताब से कहानी पढ़कर सुनाई तब पहली बार उसे किताब के चित्र देखने का मौका भी मिला। अन्तिम चित्र में एक ओर बुढ़िया अपनी रोटी लेकर खुशी-खुशी वापिस जा रही है और दूसरी तरफ अकेला कौवा है जिसे रोटी वापिस करनी पड़ी। दोनों पन्नों पर सिर्फ़ बुढ़िया और कौवे के चित्र हैं और कौवा मुड़कर 'रोटी लेकर जाती हुई बुढ़िया' को देख रहा है। पूरी कहानी सुनने के बाद जसकरन ने पूछा, "अब वो कैसे करेगा? क्या खाएगा? अकेला कैसे रहेगा?" और यह कहते-कहते जसकरन रुआँसा होकर खुद भी रोने लगा।

मुझे एहसास हुआ कि चित्र कितना सशक्त माध्यम है, अपनी बात को कहने का। मौखिक रूप से कहानी सुनाने में कौवे का 'अकेले और भूखे' रह जाने का बिम्ब उस तरह नहीं उभर पाया था जिस तरह चित्रों के साथ सुनाने से उभरा होगा। अपने लिए तो छोटा बच्चा इन दोनों परिस्थितियों को झट-से समझ लेता है। वह भूखे होने पर भी रोता है और

Figure 41 'बुढ़िया की रोटी' कहानी का आवरण पृष्ठ

अकेले होने पर भी। लेकिन किसी किताब के एक पात्र के लिए यह भाव समझ पाना ख़ासी संवेदनशीलता की माँग करता है।

बेशक हमारे लिए किसी इन्सान की भूख एक जानवर पात्र की भूख से ज़्यादा मायने रखती है। लेकिन बच्चे के लिए इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है। वह दोनों को एक-सा ही देख पा रहा है। उसके लिए दोनों की 'भूख और अकेलापन' बराबर हैं। अभी भी जसकरन यह कहानी बार-बार सुनता है और हर बार अन्त में पूछता है, "अब कौवा क्या खाएगा?"

Figure 42 कहानी सुनाती माँ

- **घर-परिवार से जुड़ी बातचीत**
  बातचीत बच्चों के घर, जैसे– घर में कौन-कौन है, पालतू जानवर कौन-कौन-से हैं, छुट्टी में क्या-क्या किया, आने वाली लंबी छुट्टियों में क्या करने का प्लान है, कौन अच्छा या बुरा लगता है, किस बात पे गुस्सा आता है, किससे डर लगता है आदि विषयों पर भी की जा सकती है।

- **स्कूल से जुड़े अनुभवों पर बात**
  स्कूल और उसके आसपास का क्षेत्र बच्चों के अनुभवों और कौतूहल, दोनों का हिस्सा होता है। यहाँ ऐसा बहुत कुछ घटता रहता है जिसके बारे में बच्चों को बात करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। दुकान, रास्ता, सड़क, पेड़, जानवर, मिट्टी-पत्थर, बाड़, घोंसले, चिड़िया, फूल, काँटे, नालियाँ, पानी और इन जैसे ही तमाम अन्य मुद्दे हो सकते हैं।

- **पसंद-नापसंद पर बात**
  बच्चों को खाने में क्या सबसे अधिक पसंद है, ये कैसे बनती हैं, किन-किन वस्तुओं से बनती हैं, आदि पर बात की जा सकती है। इसके लिए विद्यालय में लगा हुआ मध्याह्न भोजन का चार्ट भी एक संसाधन हो सकता है। इसी प्रकार बच्चों से जुड़ी अन्य चीज़ों के बारे में भी उनकी पसंद-नापसंद को जाना जा सकता है, और अपनी पसंद-नापसंद को उनसे साझा किया जा सकता है।

Figure 43 स्कूल में औपचारिक और अनौपचारिक बातचीत के विविध रूप

- **खेलों पर बात**
  बच्चे अपने परिवेश में कई खेल खेलते हैं। उन खेलों को खेलते हुए बच्चे जिन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, उन्हें चर्चा का माध्यम बनाकर आगे पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं से भी जोड़ा जा सकता है।

- **साहित्यिक (पढ़े गए बाल साहित्य पर आधारित) चर्चाएँ आयोजित करना**
  शिक्षक पढ़कर सुनाई जा रही किताबों के बारे में बात करने के लिए सम्पूर्ण कक्षा में चर्चा आयोजित कर सकते हैं। सम्पूर्ण कक्षा को शामिल करती चर्चाएँ, पढ़े गए टेक्स्ट पर प्रतिक्रियाओं को आमंत्रित करने का प्रभावी प्रारूप हैं। ऐसी चर्चाएँ बच्चों को कक्षा और विद्यालय से इतर के पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं में संबंध स्थापित करने के लिए प्रेरित करती हैं। ऐसा तब संभव होता है जब बच्चे कक्षा में पढ़े हुए को अपने बाहर के अनुभवों से जोड़ पाते हैं। कक्षागत चर्चाओं के दौरान बच्चों को यह एहसास दिलाना ज़रूरी है कि उनके विचार महत्त्वपूर्ण और स्वागत योग्य हैं। ऐसी साहित्यिक चर्चाएँ तब पढ़ने-लिखने को बढ़ावा देती नज़र आती हैं जब बच्चों को अपने पूर्वज्ञान के उपयोग का अवसर टेक्स्ट से स्वयं, टेक्स्ट से विश्व और टेक्स्ट से टेक्स्ट के बीच के संबंध को स्थापित करने में दिया जाता है। हालाँकि शिक्षकों के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि चर्चा को बार-बार टेक्स्ट तक वापस लाएँ और बच्चों को टेक्स्ट में मौजूद बिन्दुओं पर अपनी राय बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। उदाहरण के लिए यदि किसी बच्ची को यह लगता है कि एक चरित्र-विशेष धूर्त है तो उसे यह बताने में सक्षम होना चाहिए कि टेक्स्ट में ऐसा क्या है जिसके आधार पर उसने यह कहा (या यह राय बनाई)।

निष्कर्षतः इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि स्कूल आने के पूर्व किसी भी बच्चे के सीखने का महत्त्वपूर्ण ज़रिया 'बातचीत' होती है। अतः यह प्रयास प्रमुखता से किया जाना चाहिए कि इस आधार को इस्तेमाल करते हुए कक्षा शिक्षण में आगे के सफ़र को गढ़ा जाए। बातचीत के दौरान बच्चों को अपने अनुभवों को प्रस्तुत करने

के मौके मिल रहे हों। यदि बच्चों के अनुभवों का इस्तेमाल उनके सीखने में हो, यानी उनकी सोच का विस्तार करने में हो तो ज़्यादा कारगर व स्वाभाविक सीखने-सिखाने की सम्भावना रहती है।

उपरोक्त मुद्दों के अतिरिक्त बच्चों के साथ कक्षा में चर्चा के अन्य विषयों को भी ढूँढा और उनका उपयोग किया जा सकता है। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान ध्यान रखने योग्य कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु नीचे दिए गए हैं:

- बातचीत के दौरान बच्चों से पूछे जाने वाले प्रश्न अत्यंत महत्त्वपूर्ण होते हैं, प्रत्येक प्रश्न बच्चों की सोच को दिशा देता है, उनकी प्रतिक्रियाओं को प्रभावी और उनके अनुभवों को सूक्ष्म बनाता है और इन सबके दौरान भाषाई विकास के प्रचुर मौके उपलब्ध कराता है। हमारे प्रश्न क्या, क्यों, कैसे, तुम होते तो क्या/कैसे/कब करते, आगे क्या होगा आदि से संबन्धित हो सकते हैं। हम पाएँगे कि ये प्रश्न अवलोकन करने, ढूँढने, विश्लेषण करने, तर्क करने, आरोपण करने, कल्पना करने, भविष्यवाणी करने, संबंध बैठाने जैसी भाषाई क्षमताओं पर कार्य के अवसर प्रदान करते हैं और ये कौशल पर्यावरण अध्ययन के भी कौशल होते हैं, जिनका विकास बच्चों में इस गतिविधि से होता जाएगा।
- बातचीत में जब बच्चों के विभिन्न मतों और अनुभवों को जगह दी जाती है तो धीरे-धीरे बच्चे यह समझने लगते हैं कि किसी एक बात को लेकर अलग-अलग अनुभव, अलग-अलग विचार हो सकते हैं। ऐसे में बच्चे अपने मत से इतर मत को सुनना और स्वीकार करना सीखते हैं। यही प्रक्रिया आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देती है।

एक अच्छी बातचीत या चर्चा आयोजित करने से संबन्धित कुछ आवश्यक पहलू इस प्रकार हैं:

- आवश्यक मदद प्रदान करें– कुछ बच्चों के लिए पूरी कक्षा के समक्ष चर्चा में भाग लेना आसान नहीं होता। ये ऐसे छोटे समूहों या जोड़ों में खुलते हैं जहाँ वे शायद अपने दोस्तों के साथ काम करें।

- ओपेन-एंडेड सवाल पूछें– इसका उद्देश्य साझा अर्थों तक पहुँचना होता है। क्लोज़-एंडेड प्रश्न जो कि एक सही उत्तर तक ही सीमित होते हैं, केवल टेक्स्ट में उपलब्ध जानकारी तक ही केन्द्रित होकर रह जाते हैं ।

- बच्चों को चर्चा का नेतृत्व करने दें– प्रक्रिया में ऐसे अवसरों को सृजित करें जहाँ बच्चों के बीच से ही कोई एक चर्चा को मॉडरेट करने के लिए आगे आए।

- एक लोकतान्त्रिक कक्षा में साहित्य से जुड़ी चर्चा को शिक्षकों के इस आम प्रारूप से परे जाने की ज़रूरत है जहाँ शिक्षक सवाल पूछते हैं और बच्चे उनके वही उत्तर देते हैं जो शिक्षकों को पहले से ही पता होते हैं।

Figure 44 अपनी पढ़ी हुई रचनाएँ प्रदर्शित करते बच्चे

- बातचीत की इस प्रक्रिया में यह ध्यान रखना होगा कि बच्चों को अपनी बात कहने के अवसर मिलें और दूसरों की बात को ध्यान से सुनने की आदत भी विकसित हो। बातचीत के लिए विषयों का चुनाव इस तरह से किया जाना चाहिए कि मुद्दे बच्चों के परिवेश से जुड़े हों और बच्चे नए शब्दों से परिचित हो सकें।
- संभव है कि जिस कक्षा के साथ काम किया जा रहा है, उससे संबन्धित बच्चे स्थानीय भाषा बोलते हों और माध्यम भाषा 'हिन्दी' से अधिक परिचित न हों। ऐसे में बच्चों को अपनी भाषा में अपनी बात कहने के अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है। इसके लिए यदि शिक्षक को उनकी भाषा सीखनी पड़े तो उसे सीखना चाहिए। बातचीत की प्रक्रिया को मौखिक भाषा के विकास के साथ ही साथ उसे अगले चरण में पढ़ने और लिखने से जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए उनकी भाषा में कहे गए शब्दों/कहानियों/बातों को बोर्ड पर लिखकर उन्हें पढ़ा जा सकता है और उनका इस्तेमाल पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में किया जा सकता है। इसके अगले चरण में शिक्षक स्थानीय भाषा के शब्दों के आगे उनके लिए इस्तेमाल में लाए जाने वाले हिन्दी के शब्द भी लिख सकते हैं और उन्हें पढ़ा जा सकता है।

बच्चों को अपनी भाषा में अपनी बात कहने के अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है। इसके लिए यदि शिक्षक को उनकी भाषा सीखनी पड़े तो उसे सीखना चाहिए।

- इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक की सक्रिय उपस्थिति और प्रतिक्रिया अत्यंत आवश्यक है। यह ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चे यह महसूस करें कि उन्हें ध्यान और रुचिपूर्वक सुना जा रहा है। प्रतिक्रियाएँ संक्षिप्त न होकर पूरे-पूरे वाक्यों में हों और सारगर्भित हों। इससे बच्चों को लक्ष्य भाषा को अधिक से अधिक सुनने का मौका मिलेगा और ऐसा मौका जो रुचिकर होगा, क्योंकि इसमें उनसे जुड़ी बातें हो रही होंगी। फिर वे भाषा के उपयोग, उतार-चढ़ाव व प्रयुक्त शब्दों को उनके संदर्भों के साथ समझ पाएँगे।

2.4.3 सहायक गतिविधियाँ

कक्षा में आयोजित विभिन्न रोचक गतिविधियाँ और खेल जहाँ बच्चों के लिए कक्षा और उसकी प्रक्रियाओं के प्रति आकर्षण उत्पन्न करते हैं, वहीं ये बच्चों को बेझिझक अपनी बात रखने के लिए प्रेरित भी करते हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि इन्हें सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं का हिस्सा बनाया जाए और फिर मौखिक और लिखित भाषा विकास से जोड़ा जाए। इस हेतु हमें ऐसी गतिविधियों को चुनना होगा जो न सिर्फ़ बच्चों को आनंदित करें, बल्कि उन्हें सोचने, तर्क करने, विश्लेषण करने, निष्कर्ष तक पहुँचने, प्रश्न करने, दूसरों (सहपाठियों और शिक्षक) की बात सुनने-समझने, और पढ़ने-लिखने की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करें। प्रस्तुत हैं ऐसी ही कुछ गतिविधियाँ–

- **पता लगाओ कि कौन छिपा है**

  समूह के बच्चों को स्पष्ट बता दें कि हममें से एक बच्चा यहाँ से बाहर जाएगा और उसके बाहर जाने पर किसी एक बच्चे को कपड़े से ढँक दिया जाएगा। बाहर वाला बच्चा आकर बताएगा कि हममें से कौन गायब है। यदि वो तीन प्रयासों के बाद भी नहीं बता पाता है तो उसे गाना गाने, नाचने या उसकी इच्छा के मुताबिक कोई कहानी, कविता आदि सुनाने को कहा जाए और फिर छिपाए गए बच्चे का नाम उसे बताया जाए। यह खेल तब तक खेला जाए जब तक कि सारे बच्चों की बारी न आ जाए। इस प्रक्रिया के द्वारा बच्चों को आपस में और फिर शिक्षक के साथ भी भयरहित माहौल में अनौपचारिक समय व्यतीत करने का अवसर मिलेगा। बच्चे बेधड़क होकर स्वयं को अभिव्यक्त कर पाएँगे और अपनी प्रस्तुतियों के द्वारा आत्मविश्वास भी अर्जित करेंगे। आगे के चरण में इस गतिविधि को पढ़ने-लिखने से भी जोड़ा जा सकता है, जहाँ बच्चे नामों को लिखकर बताएँ या लिखे गए नामों में से उस बच्चे का नाम ढूँढकर (अन्य नामों को उपस्थित बच्चों के संदर्भ के साथ पढ़ते हुए) बताएँ जिसका नहीं लिखा गया हो।

Figure 45 खेल खेलते बच्चे

Figure 46   किसी रोचक विषय पर शिक्षक को ध्यान से सुनते व प्रतिक्रिया व्यक्त करते बच्चे

- **पहेली बूझें**

  सबसे पहले शिक्षक समूह में एक पहेली बताएँ और बच्चे उसे बूझें। बच्चों के न बूझ पाने पर शिक्षक उनकी सहायता करें और उत्तर तक पहुँचने के दौरान की प्रक्रिया की सिलसिलेवार चर्चा करें। जैसे–

शिक्षक पूछे -

आसमान में उड़ती जाऊं,
डोर खींचो नीचे आऊं।

और बच्चे अंदाजा लगाकर इसका उत्तर बतायें -

पतंग

इसी तरह आसपास की वस्तुओं को लेकर पहेलियाँ बनाई जाएँ और बच्चों को उन्हें बूझने को कहा जाए। इसके बाद बच्चे भी पहेलियाँ बताएँ और बाकी की कक्षा मिलकर उत्तर तक पहुँचने का प्रयास करे।

इस प्रक्रिया के द्वारा आत्मविश्वास से पूर्ण अभिव्यक्ति के अवसर के साथ ही साथ बच्चे समझने, विश्लेषण करने और तर्क करने जैसी क्षमताओं को भी विकसित कर पाएँगे। प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए इसे भी पिछली गतिविधि की तरह ही पढ़ने-लिखने से जोड़ना चाहिए, जहाँ पूछी गई पहेली का उत्तर लिखकर बताया जाए या फिर बच्चों को उत्तर लिखने के लिए प्रेरित किया जाए। एक तरीका पहेलियों को लिखकर

(बोर्ड पर या चार्ट पर) पूछने का भी हो सकता है, जिससे बच्चों को इन्हें पढ़ने का अवसर मिलेगा। ऐसा अवसर बच्चों को आनंदित करने वाला भी होगा।

- **शब्द अन्ताक्षरी**

  इसमें शिक्षक एक शब्द बोलें और फिर बच्चे क्रमवार उस शब्द के अंतिम अक्षर से शुरू होने वाला नया शब्द बताएँ। इसी तरह से क्रम बढ़ता जाए। जैसे- कबड्डी– डलिया– याद– दम आलू ...। इसी प्रक्रिया को पहला शब्द बोलने की बजाय लिखकर भी किया जा सकता है और फिर उसके बाद बच्चों द्वारा बोले जाने वाले सभी शब्दों को लिखा जाए। इसी को थोड़ा जटिल बनाते हुए अब शब्द के बीच के अक्षर से आने वाले नए शब्द को लेकर अन्ताक्षरी खेली जा सकती है।

  जैसे- बोतल– तराजू– राहुल– हथौड़ा ...।

  इस प्रकार की गतिविधियाँ बच्चों में ध्वन्यात्मक जागरूकता के साथ ही साथ उनके शब्द भंडार में वृद्धि में भी सहायक होती हैं। इस गतिविधि का उपयोग पढ़ने-लिखने के प्रति आकर्षण पैदा करने में किया जाना चाहिए। इस प्रक्रिया से आए सभी शब्दों को चार्ट पर भी लिखा जा सकता है, जिससे बच्चों में उनके अपने शब्द-भंडार को लेकर आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और वे इन्हें पढ़ने और फिर नए शब्दों को जानने और दर्ज करने (लिखने) के प्रति अग्रसर होंगे।

- **नकल उतारना**

  इस गतिविधि में शिक्षक बच्चों के साथ गोल घेरे में बैठकर उनसे यह जाने का प्रयास करें कि उन्हें किन-किन पक्षियों और जानवरों के बारे में पता है। बच्चों के नाम बताने के बाद उनसे अगला सवाल करें कि ये जानवर या पक्षी कैसी आवाज़ करते हैं। संभव है कि कुछ बच्चे कुछ आवाज़ें निकाल पाएँ।

  जो बच्चे इस गतिविधि में अधिक सक्रियता से प्रतिभाग कर रहे हों, उन्हें आगे लाया जाए। बाकी के बच्चे जानवरों के नाम बताएँ और वे उनकी आवाज़ें निकालें। इस प्रक्रिया को तुकबंदियों और कविता के द्वारा भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए इन पंक्तियों- "मैं तो सो रही थी मुझे मुर्गे ने उठाया, बोला कुकड़ू कूँ; मैं तो सो रहा था मुझे बकरी ने जगाया, बोली में में में..." के अंत में अलग-अलग जानवरों और चिड़ियों के नाम जोड़ते हुए इसे और दिलचस्प बनाया जा सकता है। इन पंक्तियों को सभी मिलकर दोहरा सकते हैं और आगे बढ़ा सकते हैं।

  इसी तरह की नकल करने से जुड़ी गतिविधियाँ, क्रियाओं के साथ भी की जा सकती हैं। जैसे बरतन माँजना, सब्जी बेचना, बुवाई करना, पेड़ पर चढ़ना, झाड़ू लगाना आदि। बच्चों को इस प्रकार की क्रियाएँ सोचने और उन्हें करने की एक्टिंग करने में मज़ा आएगा।

  इस गतिविधि को पढ़ने-लिखने से भी जोड़ा जा सकता है। इसके लिए जानवरों, पक्षियों, या क्रियाओं आदि को बोर्ड या चार्ट पर लिखकर बच्चों को उनके अनुसार बोलने या अभिनय करने को कहा जा सकता है।

- **निर्देशों को सुनकर, समझकर या पढ़कर उनका अनुसरण करना**

  इस गतिविधि में शिक्षक बच्चों के साथ बैठें और उन्हें स्पष्ट निर्देश दें कि सभी बच्चों को बारी-बारी से एक-एक काम बताएँगे और उन्हें वो काम पूरी कक्षा के सामने करके दिखाना है। इस गतिविधि के लिए

यह आवश्यक है कि हमारे पास रोचक गतिविधियों की विस्तृत सूची मौजूद हो। उदाहरण के लिए– यह आवश्यक है कि ये निर्देश धीमी गति और स्पष्ट उच्चारण के साथ दिए जाएँ। निर्देश देते वक़्त प्रत्येक निर्देश से पहले किसी विद्यार्थी का नाम जोड़ें, और इस प्रकार इस गतिविधि को आगे बढ़ाएँ। बच्चों को पूरी तरह समझ में आ जाने पर निर्देश देने का काम भी बच्चों पर छोड़ा जा सकता है। निर्देशों के द्वारा की जाने वाली क्रियाओं को बच्चों की क्षमता और रुचि के अनुसार बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

- अपने स्थान पर तीन बार कूदो
- खिड़की खोलकर आओ
- पेड़ छू कर आओ
- बाहर फैले कागज़ के पांच टुकड़े उठा कर लाओ
- स्कूल का एक चक्कर लगा के आओ

- हंस कर दिखाओ
- मुस्कुराओ
- मेंढ़क की तरह कूदो
- हाथी की तरह चलो
- ताली बजाओ

बात पढ़ने-लिखने की करें तो यह गतिविधि हमें पढ़ने-लिखने से जुड़ने के आकर्षक मौके प्रदान करती है। इन निर्देशों को बोर्ड पर लिखकर भी करवाया जा सकता है। इस प्रकार बच्चे निर्देशों को पढ़ने में एक दूसरे की मदद कर सकते हैं और बारी-बारी से निर्देशों के अनुसार काम को पूरा कर सकते हैं। प्रक्रिया को और रोचक बनाने और इसकी कठिनाई का स्तर बढ़ाने के लिए हम इन गतिविधियों को कार्ड-शीट पर लिखकर तैयार कर सकते हैं और बच्चों के बीच में इन्हें रखा जा सकता है। बच्चों से अपेक्षा होगी कि वे बारी-बारी से आएँ और कोई एक कार्ड उठाकर उसमें वर्णित क्रिया को पूरा करें। इस गतिविधि की कठिनाई का स्तर बढ़ाने के लिए हम लिखित निर्देशों को एक शब्द से बढ़ाकर दो शब्दों का और फिर ऊपर की कक्षाओं के लिए तीन या चार शब्दों का कर सकते हैं।

उदाहरण

'कूदो, हँसो, नाचो' आदि से आगे बढ़ते हुए 'गुलाटी खाओ, पानी पियो, पैर फैलाओ, हाथ उठाओ, हँसो-कूदो' आदि तक जाना और फिर इससे भी आगे बढ़ते हुए क्रियाओं के साथ विशेषण को जोड़ा जा सकता है, जैसे-'ज़ोर से हंसो, धीरे से कूदो, तेजी से दौड़ो' आदि। यदि बच्चे इन्हें पढ़कर इनके अनुरूप क्रियाओं को संपादित कर रहे हैं तो इसका सामान्य सा अर्थ है कि वे पढ़कर समझने की प्रक्रिया में आगे बढ़ रहे हैं और वो भी खेल-खेल में। यहाँ हर बच्चा अपनी बारी आने पर निर्देश कार्ड को पढ़ने की पूरी कोशिश करेगा, या फिर साथियों या शिक्षक की मदद लेगा और सीखने में सक्रिय रूप से शामिल होगा।

- **कार्ड खेल-**

  बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर उनसे ऐसी चीज़ों के नाम पूछें जिन्हें बच्चे पहले से जानते हैं और जिनके बारे में बता सकते हैं। जैसे– व्यक्तियों के नाम, वस्तुओं के नाम, जगहों के नाम आदि।

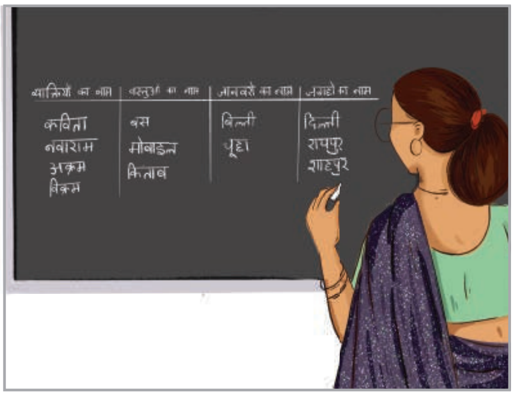

बच्चे जब इन नामों को बारी-बारी से बता रहे हों तभी इन्हें स्पष्ट रूप से बोर्ड पर लिखा जाए और लिखते समय पढ़ा भी जाए, जिससे कि बच्चे ये समझ पाएँ कि उनके द्वारा बताया गया नाम लिख लिया गया है।

जब एक बार सभी बच्चों के द्वारा बताए गए नामों को बोर्ड पर लिख लिया जाए तो उसके बाद बारी-बारी से एक-एक बच्चे से यह पूछा जा सकता है कि उनके द्वारा बताया गया शब्द कहाँ लिखा है। बहुत संभव है कि अधिकतर बच्चे अपने द्वारा बताए गए शब्दों को पहचान लें और यदि नहीं पहचान पा रहे हैं तो शिक्षक इस कार्य में उनकी मदद करें।

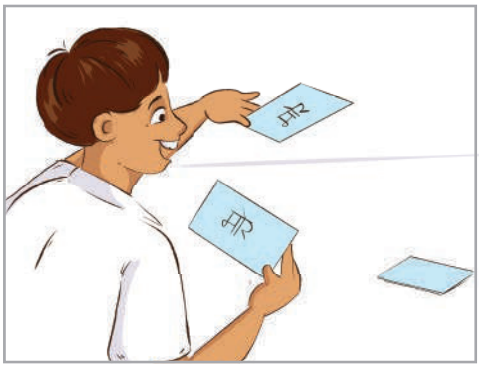

इस चरण के बाद इन शब्दों की सूची बनाई जाए और फिर इन सभी शब्दों के कार्डों के दो सेट बनाए जाएँ। शिक्षक बच्चों के बीच में उनके परिचित शब्दों के कार्डों का एक सेट बाँट दें और दूसरे सेट को गोल घेरे में रख दें। इसके बाद किसी एक बच्चे से उसके पास वाले कार्ड पर लिखे शब्द जैसा कार्ड गोल घेरे में रखे शब्दों के कार्ड में से छाँटने को कहा जाए। इसके बाद बच्चा उस शब्द कार्ड को ढूँढे और उसे सभी बच्चों को दिखाए। इसके बाद उसे शिक्षक की सहायता से पढ़ा जाए और यदि बच्चे स्वयं पढ़ने में सक्षम हों तो उसे वे स्वयं पढ़ें और इसके बाद उन्हें हर बच्चा अपनी कॉपी में लिखे। बच्चों की आयु, रुचि और स्तर के अनुसार यह गतिविधि सिर्फ़ चित्रों या शब्दों और चित्रों के द्वारा भी की जा सकती है।

Figure 47 कार्ड द्वारा हो रही गतिविधि में संलग्न बच्चे

2.4.4 आरंभिक गतिविधियाँ, बातचीत और पढ़ना-लिखना

कक्षा में आयोजित होने वाली विभिन्न गतिविधियाँ और खेल तथा इसके आधार पर संपादित होने वाली चर्चा या बातचीत, सीखी जाने वाली भाषा (हिन्दी) को सुनने, समझने और फिर उसे बोलने में कुशलता प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण चरण है। कक्षा में आयोजित गतिविधियाँ या बातचीत बच्चों को जानने-समझने, उनसे सहज रिश्ते निर्मित करने, और उन्हें विद्यालय के माहौल और प्रक्रियाओं से जोड़ने के साथ ही साथ मातृभाषा से लक्ष्य भाषा तक के रास्ते को तय करने में पुल का काम करती हैं। इसके साथ ही साथ इसका उपयोग पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रिया के एक महत्त्वपूर्ण चरण के रूप में भी किया जाता है। और इस विश्वास के पीछे यह सर्वमान्य अनुभव है कि भाषा प्राकृतिक रूप से बातचीत से ही सीखी जाती है।

यह समझना आवश्यक है कि बातचीत का अर्थ एकतरफा संवाद या सामान्य निर्देशों से हरगिज़ नहीं है। यहाँ बातचीत का तात्पर्य सार्थक और सघन चर्चा से है, जिसके द्वारा बच्चों को अपनी बात कहने, दूसरों की बात सुनने, भाषा में आए नए शब्दों को सुनने और उनके अर्थ समझने के अवसर मिल सकें। बातचीत के ज़रिए बच्चों को अभिव्यक्ति के मौके मिलते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है, साथ ही अपनी बात को व्यवस्थित रूप से कह पाने का कौशल भी विकसित होता है।

बातचीत की प्रक्रिया का पढ़ना-लिखना सिखाने में उपयोग

जैसा कि हमने ऊपर विभिन्न गतिविधियों से संबन्धित उदाहरणों में देखा कि इन्हें किस प्रकार से आरंभिक पढ़ना-लिखना सिखाने या फिर कक्षा में नियमित रूप से जारी पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रिया के पूरक के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार हम बातचीत के सभी विषयों, उपविषयों और मुद्दों को भी चर्चा से आगे बढ़ाते हुए लिखित भाषा तक ला सकते हैं। यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि यह बच्चों तक पहुँचे, इसके लिए एक शिक्षक के रूप में हमें शुरुआत करनी होगी। सबसे पहले बच्चों को यह समझाना आवश्यक है कि जो बोला जाता है, उसे लिखा भी जा सकता है और जो हम बोलकर बता रहे हैं, उसे लिखकर भी बता सकते हैं। इस हेतु हमें कक्षा की प्रत्येक औपचारिक और अनौपचारिक गतिविधि के दौरान ऐसे मौके तलाशने होंगे जहाँ हम मौखिक भाषा और लिखित भाषा के संबंध को बच्चों के सामने स्पष्ट और आकर्षक तरीके से प्रस्तुत कर सकें।

हमें कक्षा की प्रत्येक औपचारिक और अनौपचारिक गतिविधि के दौरान ऐसे मौके तलाशने होंगे जहाँ हम मौखिक भाषा और लिखित भाषा के संबंध को बच्चों के सामने स्पष्ट और आकर्षक तरीके से प्रस्तुत कर सकें।

बच्चों को प्रेरित किया जा सकता है कि वे जिन-जिन खेलों को खेलना चाहते हैं या जिस-जिस विषय पर बात करना चाहते हैं, उन्हें एक पर्ची पर लिखकर और मोड़कर एक जगह रख दें और फिर उनमें से एक पर्ची को उठाकर उसमें लिखित गतिविधि को उस दिन की कक्षा का हिस्सा बनाया जा सकता है। बच्चों को रोज़ उनकी पसंद का एक वाक्य कॉपी में लिखकर दिया जा सकता है। बच्चों से दिन की किसी एक घटना को बताने को कहा जा सकता है और फिर उसे बच्चे के बताए जाने के दौरान ही बोर्ड पर लिखा जा सकता है। इस प्रकार लिखा हुआ टेक्स्ट बच्चे का अपना टेक्स्ट होगा जो उसके अनुभवों या जीवन में घटी किसी घटना से संबन्धित

होगा। बोर्ड पर अपने ही द्वारा बोले गए वाक्य या शब्द को बच्चे बिना कहे ही अपने पास दर्ज करना चाहेंगे। उदाहरण के लिए यदि रचना ने बताया कि उसकी बकरी के पाँव में चोट लग गई है तो इस वाक्य को बोर्ड पर लिखा जाए "रचना की बकरी के पाँव में चोट लग गई है" और उसे सब मिलकर पढ़ें। इसके बाद उस वाक्य में से रचना, बकरी, चोट आदि शब्दों की पहचान पर काम किया जा सकता है। इसके अगले चरण में उस वाक्य को बच्चे अपनी कॉपी में लिख सकते हैं। इस तरह से हर दिन दो या तीन बच्चों की बात को बोर्ड पर लिखा जा सकता है और उसकी सहायता से पढ़ने-लिखने की तरफ बढ़ा जा सकता है।[7]

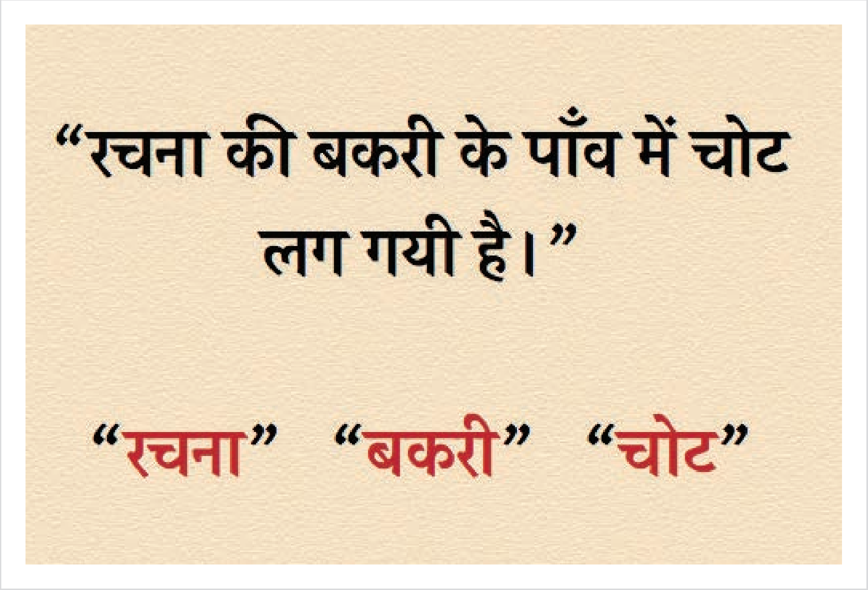

आरंभिक स्तर पर भाषा शिक्षण से संबन्धित कुछ अन्य गतिविधियाँ

उपरोक्त प्रक्रिया के साथ ही साथ कक्षा में वर्ण पहचान व लिपि-ध्वनि सम्बन्धों से संबन्धित सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को और अधिक सार्थक और सारगर्भित बनाने के लिए, विशेष रूप से कक्षा 1 व 2 में, निम्न गतिविधियों का भी उपयोग किया जा सकता है–

गतिविधि 1

शब्द-जाल

इसमें शिक्षकों से यह कहा जा सकता है कि भले ही वे वर्णमाला पढ़ाएँ, मगर ऐसा करते हुए वे हर ध्वनि (वर्ण) को बोर्ड पर लिखकर उससे शुरु होने वाले शब्दों को बच्चों से पूछकर बोर्ड पर अवश्य लिखें। उदाहरण के लिए, यदि वे स वर्ण सिखा रहे हैं तो केवल पुस्तक में दिए गए शब्द न लिखकर स से बच्चों को कितने शब्द पता हैं, उन्हें बोर्ड पर लिखा जाए और उनका शब्द-जाल बनाया जाए। इससे एक ही वर्ण से विविध शब्द हो सकते हैं, इसके बारे में बच्चे सचेत हो सकेंगे, साथ ही उनके अनुभव से जुड़े शब्द जिन्हें वे बोलना जानते हैं, उन्हें लिखा कैसे जाएगा, इसके बारे में जागरूकता आएगी।

जैसे यदि प वर्ण पर काम हो रहा है तो प से केवल पतंग सिखाने की बजाय बच्चों से पूछा जाए कि उन्हें प से कितने शब्द मालूम हैं। उनकी तरफ से कई शब्द आ सकते हैं, जैसे पकौड़ा, पतीला, प्लेट, पागल, पौधा,

पलंग आदि। उन सब शब्दों को पढ़ा जाना चाहिए और उनके द्वारा प की पहचान कराई जानी चाहिए। फिर बच्चों को इन शब्दों को लिखने के लिए भी प्रेरित किया जाना चाहिए।

नोट: यदि शिक्षक कक्षा में पहले वर्ण विशेष पर काम करवाना चाहें तो उन्हें गतिविधि 1 को पहले करवाना होगा और उसके बाद बाकी गतिविधियाँ (गतिविधि 2 से 5 तक) करवाई जाएँ, तो ऐसे में जिन वर्णों पर पहले काम हो चुका है, उन्हीं से जुड़े शब्दों के साथ ज़्यादा काम किया जाए। उदाहरण के लिए, यदि किसी कक्षा में स, क, म और द वर्णों पर काम हुआ है तो बच्चों के नाम पूछे जाने के बाद या कक्षा की वस्तुओं के नामों के साथ इन्हीं वर्णों से शुरू होने वाले नामों में से वर्णों की पहचान कराई जाए।

गतिविधि 2

बच्चों के नामों से शुरू करना

(यह गतिविधि 3 से 4 दिन की होगी। जिसे शुरुआती दिनों में यानी पहले महीने में किया जा सकता है)

आमतौर पर हम सभी को अपना नाम सबसे प्यारा होता है। ऐसे में कक्षा की शुरुआत बच्चों के नामों से की जा सकती है, जिसमें पहले चरण में हर बच्चे से उसका नाम पूछा जाए, उन सभी नामों को बोर्ड पर लिखा जाए, उन नामों को कई बार पढ़ा जाए और फिर हर बच्चे को अपने नाम को पहचानने को कहा जाए।

इसके बाद उन नामों में जिन वर्णों के शब्द अधिक हों, उनकी पहचान करके उन वर्णों पर काम करने की योजना बनाई जाए। उदाहरण के लिए यदि कक्षा में क, म और स नाम के बच्चे अधिक हों तो उन्हीं वर्णों को काम करने के लिए चुना जा सकता है।

इसके लिए अगले दिन केवल उन्हीं नामों को बोर्ड पर लिखा जाए और उनमें समान वर्ण को रेखांकित किया जाए। उदाहरण के लिए, यदि कक्षा में सुमन, सबा, सुरेश, सरोज, सीमा, सईद, सुभाष आदि नाम के बच्चे हैं तो दूसरे दिन इन नामों को बोर्ड पर लिख लिया जाए और इनमें से सारे स को रेखांकित कर दिया जाए। अब इस स को गोले में लिखकर बच्चों से पूछा जाए कि इस ध्वनि से आपको और कितने शब्द आते हैं। बच्चों के बताए गए शब्दों को भी बोर्ड पर लिख दिया जाए और फिर सारे शब्दों को पढ़ा जाए।

पहले दो दिनों में जिन वर्णों पर काम हुआ है, उन्हें तीसरे दिन फिर से दोहराया जाए, सभी शब्दों को पढ़ा जाए और कुछ ऐसे भी शब्द लाए जाएँ जिनमें स बीच में आता हो, जैसे- तसला, मसाला, बहस, हुलस आदि, और उनमें भी स की पहचान कराई जाए।

अब इन सब नामों में से बच्चों को उनकी पसंद के पाँच या छह नाम अपनी कॉपी में उतारने और उन्हें पढ़कर सुनाने तथा चार्ट या बोर्ड से पहचानने को कहा जाए।

इस सारी बातचीत में जितने भी शब्द निकलकर आए हों, उन सभी को चार्ट पर लिखा जाए और हर दिन उन शब्दों को दोहराया जाए, ताकि उन शब्दों के चित्र बच्चों के दिमाग में पक्के हो जाएँ।

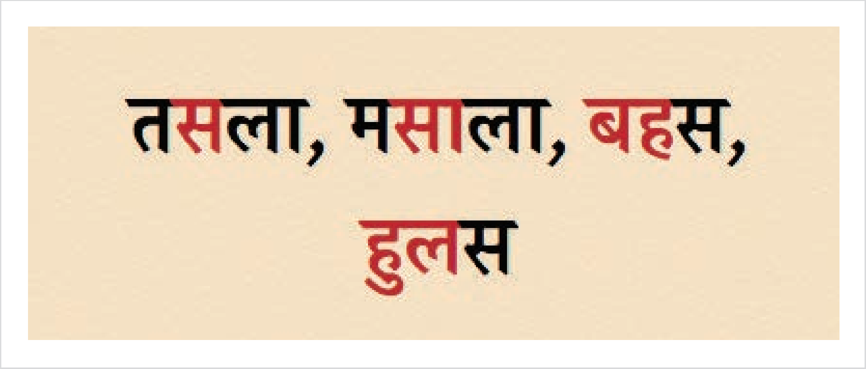

गतिविधि 3

कक्षा में क्या-क्या है

बच्चों को कक्षा में जितनी भी वस्तुएँ हैं, उनके नाम बताने को कहा जाए। बच्चे जो भी नाम बोलें, उन नामों को बोर्ड पर लिख लिया जाए और उन्हें कई बार पढ़ा जाए। अब उनमें से किसी एक वर्ण, जैसे- बोर्ड का ब, चाक का च लेकर उससे शुरू होने वाले शब्द बच्चों से पूछकर बोर्ड पर लिखे जाएँ, उन्हें मिलकर पढ़ा जाए और फिर उन वर्णों को वर्णमाला के चार्ट और बारहखड़ी के चार्ट में देखकर पहचाना जाए और पढ़ा जाए। इसके बाद बच्चे उन शब्दों में से कुछ शब्दों/सभी शब्दों को कॉपी में लिखें और उन्हें पढ़ें। यही गतिविधि बस्ते की वस्तुओं, घर के सामान, रसोई की वस्तुओं आदि के साथ कराई जा सकती है।

गतिविधि 4

बाहर जाकर देखो, क्या देखा

इस गतिविधि में बच्चों को छोटे समूहों में कक्षा के बाहर भेजा जाए और उनसे कहा जाए कि बाहर जो भी देखें, उनके नाम याद रखें। अब कक्षा में वापस आकर उन्हें देखी हुई वस्तुओं के नाम बताने को कहा जाए। ये सभी नाम पहले बोर्ड पर और फिर चार्ट पर लिखे जाएँगे। अब इन्हें सभी बच्चों के साथ मिलकर पढ़ा जाएगा। फिर हर बच्चे से या हर समूह से उनके द्वारा बोले गए शब्द को पहचानकर पढ़ने को कहा जाए। इसी की अगली कड़ी में हर समूह अपने शब्द के साथ पास वाले समूह के शब्दों को भी पढ़ें। ऐसे सभी बच्चे लगभग सभी शब्दों को पढ़ लेंगे। अब उन्हें इन शब्दों को लिखने को कहा जाए। जब बच्चे कुछ शब्द लिख लें तो उनके द्वारा लिखे शब्दों को पढ़कर सुनाने को कहा जाए।

इन शब्दों में से कुछ वर्णों को रेखांकित किया जाए और बोर्ड पर लिखा जाए।
अब वर्णमाला या बारहखड़ी के चार्ट में उन वर्णों को मिलाने और उन्हें पहचानने को कहा जाए।

गतिविधि 5

खाने की वस्तुओं के नाम

बच्चों से उनके पसंद की खाने-पीने की वस्तुओं, मिठाई, फल, रंग आदि के बारे में पूछा जाए। उन सभी नामों को बोर्ड पर, चार्ट पर लिखा जाए और उनमें वर्णों की पहचान कराई जाए। अब उन वर्णों से बनने वाले नए शब्द बच्चों से पूछकर लिखे जाएँ, उन्हें समूह में पढ़ा जाए और उनकी पहचान कराई जाए। स्कूल में लगे मिड डे मील के चार्ट के साथ भी इस तरह से काम किया जा सकता है।

मात्राओं पर काम करना

(यह गतिविधि वर्णों के साथ-साथ की जा सकती है। यदि शिक्षक इस बात पर अड़े हुए हों कि पहले सारे वर्ण ही पढ़ाएँगे, उसके बाद मात्रा पर जाएँगे तो क्रम में इस गतिविधि का क्रम 6 होगा।)

इसके लिए हमें कितनी मात्राओं के साथ काम करना है, इसे तय करना होगा। मात्राओं पर काम करने के लिए एक बारहखड़ी के चार्ट और शब्द-जाल का उपयोग किया जा सकता है, जिसमें कई मात्राओं वाले शब्द आए हों। समझ लीजिए कि हमें ए और ओ की मात्रा पर काम करना है और यह काम हम म की ध्वनि वाले शब्द-जाल के द्वारा करना चाहते हैं। ऐसे में हम बारहखड़ी चार्ट से 'मे' और 'मो' को दिखाएँगे। अब बोर्ड पर या चार्ट पर बने शब्द-जाल में से बच्चों को उन सभी शब्दों को लिखने को कहा जाएगा जो 'मो' या 'मे' से शुरू हो रहे हों। उदाहरण के लिए, म ध्वनि के शब्दजाल में से मोती, मोगरी, मेला, मेहनत, ये शब्द बच्चे अलग से लिखेंगे और अब उनमें से हरेक शब्द को पढ़ा जाएगा।

इस तरह चार-पाँच ध्वनियों के साथ इस तरह का अभ्यास किया जाना होगा। धीरे-धीरे बच्चे स्वतः ही इन दोनों मात्राओं के शब्दों की पहचान करने लगेंगे।

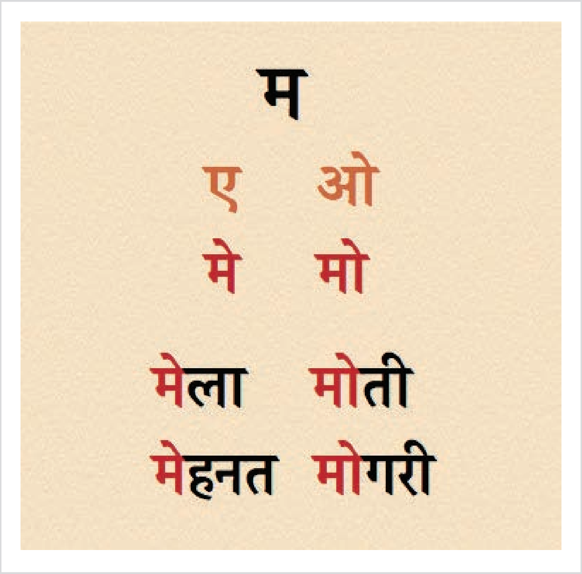

शब्दों से वाक्यों की तरफ बढ़ना

यह गतिविधि मात्राओं की पहचान के बाद ही कराई जाएगी, अर्थात् इसका क्रम अंतिम तीन महीनों में आएगा, जब बच्चे अधिकांश वर्णों और उनसे जुड़े शब्दों से परिचित हो जाएँ।

ऊपर दी गई गतिविधियों के माध्यम से इस तरह कई शब्दों पर काम किया जा सकता है। अब शब्दों से वाक्य की तरफ बढ़ा जाए। उदाहरण के लिए यदि मनपसंद मिठाई की बात हो रही है और रेखा ने मनपसंद मिठाई रसमलाई बताई तो इसे– 'रेखा को रसमलाई पसंद है', इस तरह से लिखा जाए। हरेक बच्चे की मिठाई को बोर्ड पर लिखा जाए और पढ़ते समय उसे पूरे वाक्य में पढ़ने को कहा जाए। इस प्रक्रिया को हरेक बच्चे के साथ दोहराने के बाद हर बच्चे को अपना-अपना वाक्य अपनी कॉपी में लिखने को कहा जाए। इसमें थोड़ा

बदलाव करते हुए कक्षा की दीवारों पर सादा कागज़ लगाकर उस पर बच्चों को अपनी पसंद-नापसंद बताने वाले वाक्य लिखने को कहा जा सकता है।

‘रेखा को रसमलाई पसंद है।’

वाक्यों को एक संरचना में बांधना

इस तरह की गतिविधियाँ कक्षा में अक्सर होते रहने और इन शब्दों को शब्द दीवार पर लिखे जाने के बाद कक्षा में शब्दों का अच्छा-ख़ासा संग्रह हो जाएगा। उन्हीं में से कुछ शब्द चुनकर बोर्ड पर लिख लिए जाएँ (शुरुआत में ऐसे शब्द चुने जाएँ जिन्हें आसानी से कहानी में बांधा जा सके) और उनसे कहानी बनाने की प्रक्रिया में जाया जाए। इसके लिए हर बच्चा कहानी में से एक शब्द लेकर वाक्य बनाए और दूसरा बच्चा उसी वाक्य को इस तरह से आगे बढ़ाए कि इससे कहानी का क्रम भी बढ़ता जाए, साथ ही दिए गए शब्द भी कहानी में आते जाएँ।

उदाहरण के लिए यदि बोर्ड पर लड़का, बाल्टी, कपड़े, हवा, पानी, बन्दर, कपड़े आदि शब्द लिखे हुए हैं तो पहले शिक्षिका इन शब्दों के बारे में चर्चा कर सकती हैं और फिर पहली पंक्ति शिक्षिका शुरू कर सकती हैं–

‘एक लड़का था।’
आगे की पंक्ति बच्चे बोलते जाएँ, जैसे–
‘उसने सारे गंदे कपड़े इकट्ठे कर लिए थे।’ ‘फिर उसने सारे कपड़े बाल्टी में डाले।’ ‘उसमें पानी भर लिया।’
‘एक बंदर यह सब देख रहा था।’ ...

‘एक लड़का था।’

‘उसने सारे गंदे कपड़े इकट्ठे कर लिए थे।’

‘फिर उसने सारे गंदे कपड़े बाल्टी में डाले।’

‘उसमें पानी भर लिया।’

बच्चों को शब्द निर्माण और शब्दों के साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित करना–

लिपि सीखने के क्रम में बच्चों को अलग-अलग तरह के दिलचस्प विभिन्न अभ्यासों की आवश्यकता होती है। जब हम प्रैक्टिस की बात कर रहे हैं तो हमारा यह कतई मतलब नहीं है कि बच्चे बार-बार किसी एक लिपि-चिह्न को लिखते जाएँ। क्योंकि ऐसा करके वह सिर्फ़ जिन शब्दों को बार-बार लिख रहे हैं, मात्र उन्हीं को समझ कर रह जाएँगे और उनसे आगे अपरिचित शब्दों या नए शब्दों को लिखने में उन्हें हमेशा परेशानी होती रहेगी।

हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हम बच्चों को यह सिखाएँ कि शब्दों को कैसे बनाया जाता है या उन्हें ध्वनियों में कैसे विभाजित किया जाता है। शब्दों को समझाने और उनके निर्माण की इस प्रक्रिया से बच्चे जो कर रहे हैं, उसके बारे में समालोचनात्मक तरीके से सोच पाते हैं। वे समझ पाते हैं कि शब्दों का निर्माण कैसे होता है, कैसे कुछ शब्द कुछ दूसरे शब्दों से संबंधित होते हैं आदि।

आगे चलकर इस अनुभव को बढ़ाया जा सकता है और इसमें उन शब्दों को शामिल किया जा सकता है जिसको उन्होंने पहले कभी पढ़ा या लिखा नहीं होगा। ज़ाहिर है कि इस प्रक्रिया में बच्चे बहुत सारी गलतियाँ करेंगे, लेकिन ये गलतियाँ अनायास ही नहीं होंगी, बल्कि ऐसी गलतियाँ होंगी जो हमें यह समझा रही होंगी कि बच्चे किस तरह से लिपियों को सीखने की ओर आगे बढ़ रहे हैं। शब्दों के निर्माण और उनको समझाने से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार हैं–

शब्द निर्माण–

इस गतिविधि में बच्चों को नए शब्द बनाने या फिर उन्हें वर्णों में तोड़ने के लिए कहा जा सकता है। इस हेतु बच्चों के समक्ष 3-4 वर्ण और 1-2 मात्राओं का ऐसा समूह प्रस्तुत करें जिससे कि वे परिचित हो चुके हैं। फिर उन्हें इन वर्णों और मात्राओं का उपयोग करते हुए नए शब्दों का निर्माण करने के लिए कहें। उदाहरण के लिए निम्न वर्ण और मात्रा समूह को लें और बच्चों के साथ मिलकर इनको जोड़ते हुए अलग-अलग शब्दों का निर्माण करें–

क	म	आ	ल	ा (आ की मात्रा)

संभव है, शुरुआत में बच्चों को कुछ उदाहरण देने पड़ें, जैसे– 'आम', 'कम', 'माला' आदि, जिससे कि बच्चे गतिविधि और उनसे की जा रही अपेक्षा को समझ जाएँ। इसके बाद वे स्वयं इसे आगे बढ़ाते जाएँगे और इस प्रक्रिया में नए-नए शब्दों का निर्माण करते जाएँगे। यह कार्य बच्चों को विभिन्न अक्षरों और मात्राओं से संबन्धित कार्ड देकर और भी रोचक तरीके से किया जा सकता है। फिर बच्चों को इन शब्दों को अपनी कॉपी में लिखने और फिर आगे जाकर इन्हें वाक्यों में पिरोकर बोलने या लिखने को कहा जा सकता है। शुरुआत इससे भी की जा सकती है कि बच्चे वाक्यों को बोलें और शिक्षक उन्हें बोर्ड पर लिखे। यह गतिविधि मौखिक भाषा को लिखित भाषा से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि इस प्रक्रिया में बच्चे उन्हीं शब्दों का निर्माण करते हैं जिनसे वे मौखिक रूप से परिचित होते हैं।

शब्द खेल- शब्द, चित्र और वर्ग पहेलियाँ

इस प्रकार की पहेलियाँ बच्चों को आकर्षक लगती हैं, क्योंकि यहाँ वे कुछ संकेतों के माध्यम से शब्दों को सुलझा रहे होते हैं। इन गतिविधियों के द्वारा वे अनायास ही ध्वनि और चिह्नों के संबंध के बारे में सोच रहे होते हैं, उन्हें ढूँढ रहे होते हैं और सही शब्द तक पहुँच रहे होते हैं।

कक्षा तीन और उससे आगे की कक्षाओं में बच्चों को स्वयं से भी इन पहेलियों के निर्माण के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

Figure 48 शब्दों से जुड़े विभिन्न खेल पढ़ने-लिखने की ओर सहज ही आकर्षित करते हैं

2.5 चित्रों का महत्त्व और इनके द्वारा पढ़ना-लिखना सीखना

भाषा सीखने और फिर आगे जाकर पढ़ने के दौरान भी चित्रों की आवश्यकता, उपयोग और आकर्षण को लेकर कोई संशय नहीं है। चित्रों के प्रति आकर्षण को इसी से समझा जा सकता है कि समर्थ पाठक हो जाने के बाद भी हममें से बहुत-से लोग विकल्प के रूप में ऐसी पुस्तकों का चुनाव करते हैं जिनमें चित्र हों। बात पढ़ना-लिखना सीखने के आरंभिक दौर की करें तो यहाँ चित्रों की भूमिका और महत्त्वपूर्ण तथा स्पष्ट नज़र आती है। विशेष रूप से भाषा के लिखित रूप से परिचय की समस्त गतिविधियों को चित्रों की उपस्थिति रोचक और आकर्षक बनाती है। ऐसा इसलिए कि यदि हम आरंभिक कक्षाओं में पढ़ने का अभिप्राय केवल अक्षर ज्ञान से लेंगे तो हम एकांगी होकर रह जाएँगे और पढ़ने के लिए ज़रूरी अन्य कौशलों के विकास की ओर ध्यान नहीं दे पाएँगे। अतः हमें अक्षरों तक जाने से पहले कुछ समय चित्रों के साथ गुज़ारना चाहिए, और फिर इन चित्रों को साथ लेते हुए शब्दों और अक्षरों तक की यात्रा करनी चाहिए। पिछले अध्याय में हम देख चुके हैं कि सीखने-सिखाने की औपचारिक शुरुआत से पहले बच्चों के साथ बातचीत आवश्यक है, और इस बातचीत का एक सहज और रोचक ज़रिया चित्र भी है।

अध्याय के इस भाग में हम यही समझने का प्रयास करेंगे कि चित्र कैसे और किन प्रक्रियाओं के द्वारा मौखिक और लिखित भाषा सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय योगदान देने के साथ उपरोक्त कौशलों के अर्जन में भी मदद करते हैं।

चित्रों के प्रयोग से भाषा शिक्षण में हमें कुछ इस प्रकार की मदद मिलती है:

- चित्रों से बातचीत की शुरुआत आसानी से होती है। नई परिस्थितियों और वातावरण में बोलने से जुड़ा संकोच और डर दूर होता है। फिर बातचीत सिर्फ़ सवाल-जवाब तक ही सीमित नहीं रहती और बच्चे भी उसमें बराबर की भागीदारी निभाते हैं।
- कल्पना करने के मौके मिलते हैं। इसके साथ ही साथ अवलोकन और विश्लेषण जैसी क्षमताओं का भी विकास होता है। चिंतन और प्रश्न करने की क्षमता बढ़ती है। 'क्या हुआ होगा' जैसे प्रश्न रुचि बनाए रखने और ध्यान केन्द्रित करने में मदद करते हैं।
- लिखित या मुद्रित सामग्री के प्रति अनाकर्षण को कम कर पुस्तक को छूने, खोलने और पढ़ने के प्रति रुझान पैदा होता है। इसके साथ ही पढ़ना-लिखना सीखने-सिखाने के बिल्कुल शुरुआती दौर में चित्र एक तरफ जहाँ हमें लेखन के लिए आवश्यक हस्त-संतुलन और हाथ-आँख-मस्तिष्क के बीच के सम्बन्धों को सुदृढ़ करने में सहायता प्रदान करते हैं, वहीं दूसरी ओर चित्र पठन हमें अनुमान लगाकर पढ़ने की ओर भी सहजता से ले जाते हैं।

2.5.1 भाषा की कक्षा में चित्रों से संबन्धित विभिन्न प्रक्रियाएँ और गतिविधियाँ

चित्र और अभिव्यक्ति

बच्चों को चित्र बनाने के भरपूर मौके देने चाहिए। चित्र बनाना बच्चों के लिए लिखना सीखने और अर्थ-निर्धारण का एक शुरुआती दौर है। चित्र बनाने से उनके लेखन और चित्रकारी में सुघड़ता आती है और

रचनात्मकता तथा सौंदर्यबोध का विकास होता है। बच्चे के बनाए चित्रों को रूढ़ शैली में थोपने की कोशिश कतई न करें। उन्हें अभिव्यक्ति की आजादी दें। बच्चा हरे रंग का आसमान बनाता है तो बनाने दीजिए। उसकी कल्पना का संसार अनूठा है। चित्र बच्चे के लिए अभिव्यक्ति का एक और माध्यम मुहैया कराते हैं। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम बच्चों को इसके भरपूर अवसर दें और फिर इन अवसरों को औपचारिक लिखने और पढ़ने की ओर ले जाएँ।

Figure 49 चित्र अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है

चित्र और बातचीत

बच्चों को रंग-बिरंगे आकर्षक चित्र बहुत पसंद होते हैं। ख़ासकर ऐसे जिन्हें बच्चे अपनी दुनिया से जोड़ सकें। इनमें पशु-पक्षी, नाव, नदी-नाले, बाग-बगीचे, सड़क, दुकान, हाट, घर-परिवार, खाना-पीना आदि विषयों से संबन्धित चित्र हो सकते हैं। अगर चित्र में बच्चे कुछ करते हुए दिखें तो ये बच्चों को और भी लुभाते हैं। ये चित्र अखबार, पत्रिका, कैलेंडर, किताब कहीं से भी लिए जा सकते हैं, अथवा हम या अध्यापक स्वयं भी सुन्दर व दिलचस्प रेखाचित्र बना सकते हैं। क्योंकि चित्र स्वयं ही बच्चे को अपनी ओर आकर्षित करता है, अतः इनके द्वारा बातचीत शुरू करने के लिए अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। बच्चों को चित्र देखने के लिए दिया जा सकता है और उनसे चित्र से संबन्धित सरल प्रश्न पूछे जा सकते हैं, जैसे– "यह आदमी क्या बेच रहा है?", "क्या उसका सारा सामान बिक जाएगा?"

चित्रों के ज़रिए मौखिक भाषा के विकास और बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए कुछ इस तरह के सवाल पूछे जा सकते हैं:

1. बच्चों को चित्र में से चीज़ें ढूँढने के लिए कहना
2. तार्किक प्रश्न करना या कारण बताने को कहना
3. बच्चों को कल्पना करने के लिए कहने से जुड़े प्रश्न (जैसे– यह चूहा क्या सोच रहा होगा?, यहाँ तुम होते तो क्या करते? आदि)
4. अनुमान लगाने से जुड़े प्रश्न (क्या चूहा भाग पाएगा?, क्या लड़की के सारे आम बिक जाएँगे?)
5. चित्र में दर्शाई गई स्थिति को पूर्वानुभवों से जोड़ने वाले प्रश्न (क्या तुम भी रेलगाड़ी में बैठे हो?, क्या तुमने भी हाथी देखा है?)

Figure 50 चित्रों पर चर्चा करते बच्चे

चित्र पठन (विभिन्न संज्ञानात्मक कौशलों का विकास)

चित्रों पर बातचीत की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए ही हम चित्र पठन तक पहुँचते हैं। दरअसल ऊपर पूछे गए सभी प्रश्न बच्चों को चित्रों को ध्यान से देखने, उन्हें समझने और इसी समझने के आधार पर अपने पूर्वानुभवों से जोड़ते हुए अनुमान लगाने या कल्पना करने को प्रेरित कर रहे हैं। यदि हम याद करें तो पढ़ना भी ठीक इसी तरह की प्रक्रिया है, अंतर बस इतना है कि यहाँ चित्र हैं और वहाँ लिपि-चिह्न होते हैं। तात्पर्य यह कि चित्र देखना भी एक तरह से चित्र को पढ़ना ही हुआ। चित्रों पर इस तरह से कार्य बच्चों को पढ़ने के लिए तैयार होने में मदद करते हैं। यहाँ मूल बात यह है कि बच्चों में यह समझ बन जाती है कि चित्र या प्रिंट एक अर्थपूर्ण सामग्री है, क्योंकि अधिकतर वह चित्र या प्रिंट उस चीज़ का नाम होता है या उस चीज़ के बारे में होता है जिस चीज़ पर वह प्रिंट मौजूद होता है।

जब हम चित्रों को देखते हैं तो उन्हें सिर्फ़ देखते भर नहीं हैं, बल्कि उन्हें समझने का भी प्रयास करते हैं और उससे अर्थ ग्रहण करते हैं। इस प्रक्रिया को देखें तो यह भी एक प्रकार का पढ़ना ही हुआ। अतः यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि पढ़ने की औपचारिक शुरुआत से पहले बच्चों के साथ चित्रों पर काम किया जाए, और उन्हें इन चित्रों को समझने, उनके पात्रों के बारे में बात करने, दर्शाए गए दृश्यों या क्रियाकलापों की ओर ध्यान आकर्षित किया जाए, और इन समस्त गतिविधियों के द्वारा उन्हें पढ़ने की ओर ले जाया जाए।

कविताओं और कहानियों के साथ बने चित्र न सिर्फ़ उनके प्रति उत्कंठा जगाते हैं, बल्कि वे बच्चों को अपने साथ कल्पनालोक में ले जाते हैं। यह चित्र बच्चों को हँसाते हैं तो कभी गुदगुदाते हैं। बात चित्र कहानियों की करें तो प्रत्येक बच्चा इनसे गुजरते हुए अपनी रुचि, अपने अनुभव एवं अपनी कल्पना से कहानी में पात्रों के नाम दे सकता है, कहानी का आरंभ कर सकता है, पात्रों के संवादों की रचना कर सकता है। घटनाओं को चरम बिन्दु पर ले जाकर कहानी का अंत सोच सकता है। इस तरह चित्र-कहानी पठन आगे चलकर शब्दों तथा वाक्यों में कहानी पढ़ने के लिए बच्चों के संकोच और डर को तो दूर करेगा ही, उनमें आत्मविश्वास भी लाएगा कि मैं पढ़ सकता हूँ, पढ़ने की कोशिश कर सकता हूँ।

उदाहरण

आइए, संदर्भ पत्रिका से लिए गए अनिल सिंह जी के इस अनुभव को देखते हैं–

कहानी सुनाने के दौरान स्थिति कुछ यूँ बनी कि कहानी का पात्र, पाँच साल का चिंटू, जो कि जंगल घूमने का बहुत शौकीन है, हर रोज़ स्कूल से लौटकर आने के बाद, बस्ता फेंककर, अपना जंगल वाला थैला लेकर जंगल भाग जाता है और इधर-उधर भटकता फिरता है। वह एक पेड़ पर चढ़ा बैठा है, क्योंकि नीचे शेर नज़रें गड़ाए बैठा है। रात गुज़र गई और अब सवेरा होने को है, पर शेर टस से मस नहीं हुआ। चिंटू ने सोचा था कि शेर पानी पीने तो जाएगा ही, तब मौका पाकर वो खिसक लेगा। पर शेर ने भी जैसे जिद ठान रखी थी कि आज तो वह चिंटू को चट करके ही दम लेगा। मैंने ब्लैकबोर्ड पर सारा दृश्य बयाँ कर दिया। पेड़, पेड़ की शाख पर चिंटू, नीचे शेर और घास-फूस। छह साल के हर्ष ने कहा, “शेर का चेहरा ऊपर की तरफ देखता हुआ बनाओ, क्योंकि शेर तो ऊपर की तरफ ही देख रहा होगा।” मैंने कोशिश करके बना दिया। अब सबकी जान साँसत में थी कि क्या होगा। मैंने भी मौके को भाँपा और कहानी को आगे बढ़ाने की बजाय यहीं अटका दिया। मैंने कहा, “अब क्या होगा? कोई उपाय सोचो जिससे चिंटू बच पाए।”

Figure 51 पेड़ पर चिंटू

आठ बच्चों के समूह ने, जिसमें ढाई साल के अबीर के साथ 6 साल की जन्नत शामिल थी, कमाल के सुझाव दिए। उनमें से तीन की चर्चा कर शायद हम ‘बच्चों की-सी बातों’ को समझ सकें। पाँच साल के अंश ने बिना देर लगाए कहा, “आप शेर का चित्र मिटा दो, चिंटू चुपचाप उतरकर घर चला जाएगा।” मैं उसकी तरफ देखता रह गया। दो-एक बच्चों ने भी इस उपाय से अपनी सहमति जताई। बात भी सही थी। मैंने ही तो यह विकट स्थिति खड़ी की थी, पेड़ के नीचे शेर बनाकर और मैं ही इस स्थिति से छुटकारा दिला सकता था, शेर को

ब्लैकबोर्ड से मिटाकर। बराबर का तर्क था। मैंने कहा, “हाँ ये तो बढ़िया आइडिया है, चलो कुछ और सोचते हैं।” यह कहकर मैंने कुछ और उपाय कुरेदने चाहे। इस पर तीन साल के अर्णव ने कहा, “आप बन्दूक लिए एक शिकारी इस तरफ बना दीजिए, शेर उसे देखते ही जंगल के अन्दर भाग जाएगा और चिंटू उतरकर घर भाग आएगा।” ढाई साल के अबीर और साढ़े तीन साल के शिवा ने भी इसे जायज़ ठहराया। यह भी कुछ कम आइडिया न था। भई जब सब कुछ ब्लैकबोर्ड में ही हो रहा है तो यह क्यों नहीं हो सकता। मैंने ऐसा ही किया। बन्दूक लिया एक शिकारी बना दिया। पर शेर गया नहीं। अब छह साल की जन्नत की बारी थी, उसने कहा, “आप एक शेरनी बना दीजिए। शेर, शेरनी के साथ गुफा में जाएगा और कुछ वक़्त बिताएगा। इतने में मौका पाकर चिंटू पेड़ से उतरकर भाग जाएगा।”

‘वक्त बिताएगा’ का प्रयोग उसने दुनिया में आमतौर पर होने वाले प्रयोग की तरह ही किया, लेकिन उसकी प्लेसिंग और भाव को उसने अपनी सहज समझ और निर्विवाद तर्क-बुद्धि के साथ किया। कहानी का आनन्द, संकट और चिन्ता का मौलिक भाव और उपाय की रचनात्मकता व तार्किकता, सबकुछ अपने उच्चतम स्तर पर। ये ‘बच्चों-सी बातें’ तो कतई न थीं। बच्चे बता रहे थे, क्योंकि कोई उन्हें सुन रहा है, कोई उनसे पूछ रहा है। उनके बताए उपाय पर सारी स्थिति टिकी हुई है। उन पर बड़ी ज़िम्मेदारी है कि इस वक़्त वे एक ऐसी बात बोल सकते हैं जो पूरा नज़ारा ही बदल दे। बच्चों के इन तर्कों को विवेचना की किसी भी कसौटी पर खरा ही पाया जाएगा।

इस उदाहरण को देखें तो चित्रों ने किस प्रकार हो रही चर्चा को न सिर्फ़ दिशा दी, बल्कि कहानी सुनने वालों और कहने वाले दोनों को ही नयी दृष्टि दी, और कल्पना, अनुमान, तर्क करने के साथ ही साथ पूरी संजीदगी से अभिव्यक्ति के मौके भी दिए। साथ ही हम यह भी देख सकते हैं कि चित्र किस प्रकार हमें बच्चों की सोच और समझ की गहराई से अवगत कराते हुए चमत्कृत कर देते हैं।

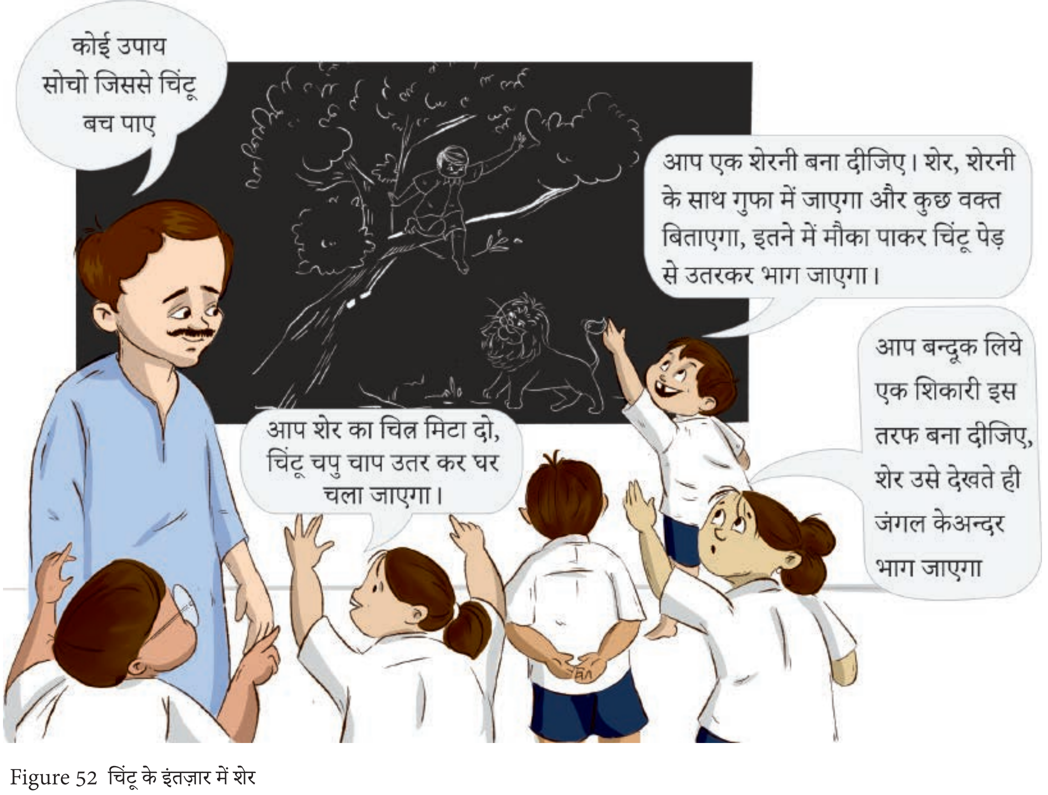

Figure 52 चिंटू के इंतज़ार में शेर

शब्द-चित्र पठन और अनुमान लगाकर पढ़ने के कौशल पर कार्य

यदि हम पढ़ना सीखने की स्वाभाविक शुरुआत की बात करें तो हम पाते हैं कि बच्चे यह शुरुआत स्मृति-चिह्न बनाकर करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप एक बच्चे को चूहे का चित्र दिखाएँ और चित्र के नीचे लिखा हुआ शब्द दिखाएँ तो बच्चा यह अनुमान लगा लेगा कि लिखा हुआ शब्द चूहा हो सकता है।

दो-चार बार देखने के बाद बच्चा कागज़ पर अलग से बिना किसी चित्र के भी लिखा गया 'चूहा' शब्द पहचान लेगा। भले ही वह च और ह जैसे अक्षर तथा इनमें लगी मात्राएँ न पहचानता हो।

इसी पैटर्न के अनुसार बच्चों के साथ शब्द-चित्र कार्डों के द्वारा कार्य किया जा सकता है, जहाँ वे चित्र को देखकर, उनके नाम का अनुमान लगाते हुए उस शब्द को पढ़ने का सार्थक प्रयास करते नज़र आएँगे। यह बच्चे की स्वाभाविक क्षमता है, जिसकी बुनियाद पर उसके लिए पढ़ना सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को रोचक, सार्थक और सरल बनाया जा सकता है।

अतः बच्चों को विविध प्रकार के चित्रों से जुड़ने, उन्हें देखने और छूने का मौका मिलना चाहिए। इन चित्रों से बच्चे यह महसूस कर पाएँगे कि उनके आसपास की दुनिया में क्या हो रहा है, क्या बातचीत हो रही है, क्या शोरगुल मच रहा है, क्या कहानियाँ बन रही हैं।

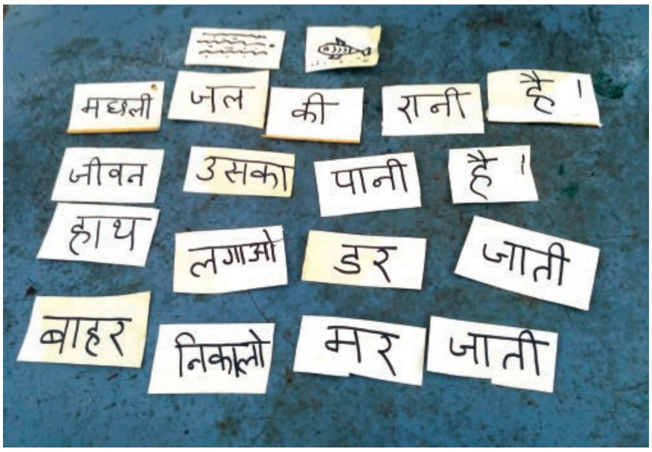

Figure 53 प्रचलित कविता द्वारा शब्द पठन का अभ्यास

लेखन और चित्र

स्कूल आने के उन शुरुआती महीनों में जब बच्चों का पेंसिल और कागज़ के साथ रिश्ता नया-नया ही होता है तब अवसर दिए जाने पर बच्चे आड़ी-तिरछी लकीरों द्वारा ही अपने मन के विचारों और कल्पनाओं को कागज़ पर उतारते हैं। इन बिन्दुओं, गोल आकृतियों एवं लकीरों में बच्चे सूरज से लेकर घास तक एवं अपने नाम से लेकर कहानी तक, सभी कुछ लिख देते हैं।

> बच्चे द्वारा पहला शब्द बोलने पर घर भर में खुशी की लहर दौड़ जाती है लेकिन हम उसी बच्चे को तब क्यों नहीं उम्मीद भरी नज़रों और उत्साह से देखते हैं जब वह पहली बार पेंसिल पकड़कर एक लकीर खींचता है।

बच्चे द्वारा पहला शब्द बोलने पर घर भर में खुशी की लहर दौड़ जाती है, लेकिन हम उसी बच्चे को तब क्यों नहीं उम्मीद भरी नज़रों और उत्साह से देखते हैं जब वह पहली बार पेंसिल पकड़कर एक लकीर खींचता है। हमें यह समझना चाहिए कि एक बच्चे के लिए किसी लिखित प्रतीक का अर्थ बनाना, या ज़मीन, दीवार अथवा कागज़ पर पहली रेखा खींचना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है, और एक सशक्त कदम है लिखने की ओर।

बच्चों की आड़ी-तिरछी लकीरें पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया का एक ज़रूरी हिस्सा हैं। अगर हम इन आड़ी-तिरछी लकीरों को नहीं सराहेंगे तो बच्चे पढ़ने-लिखने की यांत्रिकता में ही उलझकर रह जाएँगे। अतः इन्हें स्वीकार करना और इन पर बातचीत करना महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि ये लकीरें बच्चों के लिए सार्थक हैं, साथ ही वह यह समझ रहा है कि मन की बात को लिखा जा सकता है और लिखी गई बात को पढ़ा जा सकता है। बच्चों के इन्हीं प्रयासों को आगे ले जाकर पढ़ने और लिखने के सार्थक मौकों से जोड़ा जा सकता है।

भाषा की पाठ्यपुस्तक और चित्र

यदि हम अधिकतर राज्यों या फिर एनसीईआरटी की भाषा की कक्षा-1 की पाठ्यपुस्तक को देखें तो इनके आरंभिक पृष्ठों पर हमें विभिन्न चित्र नज़र आएँगे। ये चित्र यहाँ अनायास ही तो नहीं दे दिए गए हैं। ये चित्र हमें बच्चों से बातचीत के ढेरों अवसर प्रदान करने के लिए हैं। ये अवसर बच्चों से बात करने, उनके मन में सवाल उठाने, बच्चों के अपने साथियों के साथ खुलने, और संवाद की एक स्वस्थ परंपरा की शुरुआत के लिए हैं।

पिक्चर-बुक

बिना शब्दों के पिक्चर-बुक, बिना किसी टेक्स्ट के कलात्मक चित्रों या तस्वीरों द्वारा किसी कहानी या सूचना को प्रस्तुत करते हैं।

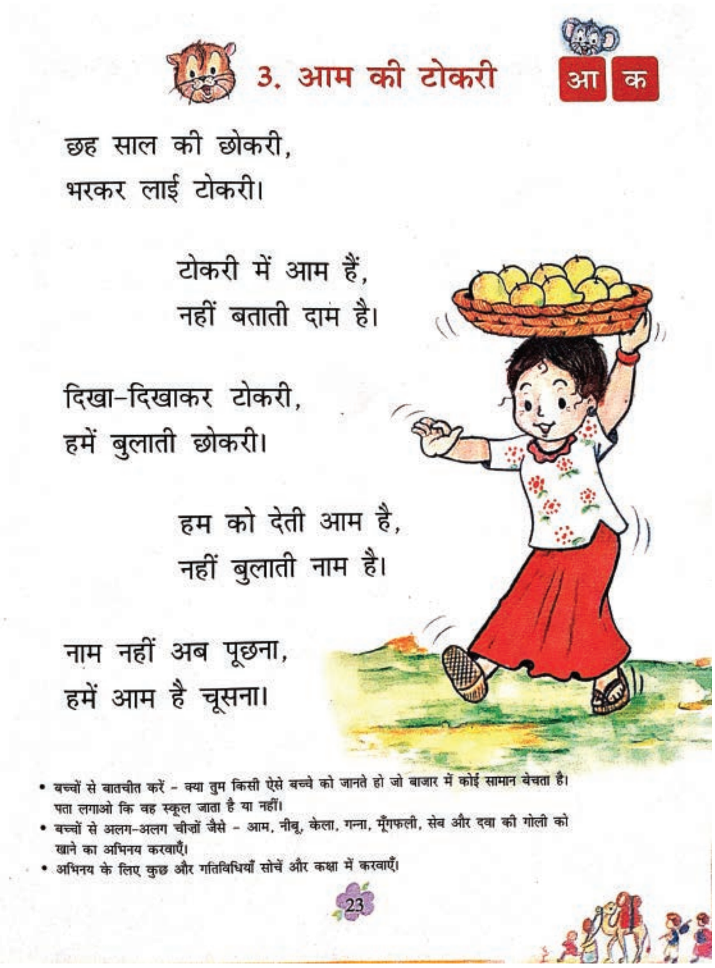
3. आम की टोकरी

आ क

छह साल की छोकरी,
भरकर लाई टोकरी।

टोकरी में आम हैं,
नहीं बताती दाम है।

दिखा-दिखाकर टोकरी,
हमें बुलाती छोकरी।

हम को देती आम है,
नहीं बुलाती नाम है।

नाम नहीं अब पूछना,
हमें आम है चूसना।

- बच्चों से बातचीत करें - क्या तुम किसी ऐसे बच्चे को जानते हो जो बाजार में कोई सामान बेचता है। पता लगाओ कि वह स्कूल जाता है या नहीं।
- बच्चों से अलग-अलग चीजों जैसे - आम, नीबू, केला, गन्ना, मूँगफली, सेब और दवा की गोली को खाने का अभिनय करवाएँ।
- अभिनय के लिए कुछ और गतिविधियाँ सोचें और कक्षा में करवाएँ।

23

Figure 54 पाठ्यपुस्तक के चित्र और बच्चों से बातचीत

इनका उपयोग मौखिक भाषा और व्यक्तिगत प्रतिक्रिया के विकास में किया गया है। शिक्षक चित्रों में विवरण/विस्तार की तलाश, चित्रों के आधार पर कहानी का निर्माण या फिर कहानी का विस्तार भी कर सकते हैं। चूँकि यहाँ लिखित टेक्स्ट का कोई भय नहीं होता इसलिए शब्द-रहित पिक्चर-बुक्स बच्चों को आरंभिक साक्षरता के चरणों में ही पाठक बनने का आत्मविश्वास दिलाती हैं। हम मातृभाषा और हिन्दी के बीच संबंध निर्माण हेतु भी इनका उपयोग कर सकते हैं।

प्रेडिक्टेबल किताबें कम टेक्स्ट वाली ऐसी पिक्चर-बुक होती हैं जिनमें किसी वाक्यांश या लयात्मक तुकबंदी का दोहरान हो रहा होता है। इससे अनुमान लगाने के अवसर पैदा होते हैं और इनके द्वारा छोटे बच्चे खुद को पाठकों के रूप में देख पाते हैं। वे टेक्स्ट से परिचित हो जाते हैं और शिक्षकों के साथ ऊँचे स्वर में पढ़ने में शामिल होते हैं। अक्सर बच्चे टेक्स्ट को याद कर लेते हैं और पन्ने पलटते हुए पढ़ने का दिखावा करते हैं। एक नए बनते हुए पाठक (उभरते हुए पाठक) के साक्षर होने की यात्रा में ये अनुभव बहुमूल्य होते हैं। इससे बच्चे अनुमान लगाने और समस्या समाधान के कौशलों का विकास कर पाते हैं, जो कि पढ़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।[1]

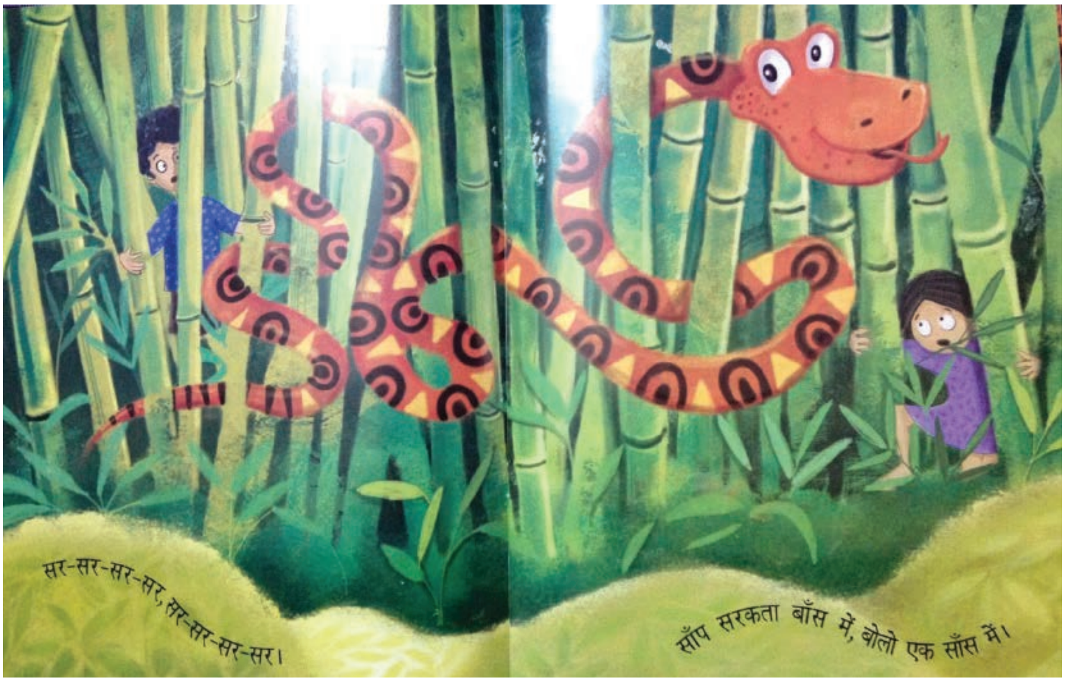

Figure 55 पुस्तक 'बोलो एक साँस में' में सुशील शुक्ल जी ध्वनियों और टेक्स्ट के दोहरान का प्रयोग करते हैं

चित्र और पढ़ने-लिखने का विस्तार

पढ़ने-लिखने की आरंभिक समझ हासिल कर चुके बच्चों के लिए भी चित्र उतने ही महत्त्वपूर्ण होते हैं जितना कि इससे पहले कक्षा एक और दो के बच्चों के लिए। लिखना सिर्फ नकल नहीं, वरन् सृजन है, विचारों की प्रस्तुति है। अतः इस प्रक्रिया में यह आवश्यक है कि बच्चे लिखने से पहले अपने विचारों को संगठित करें, उन्हें क्रम में लाएँ, और फिर लिखने की प्रक्रिया की ओर बढ़ें। चित्र इस कार्य में बच्चों की मदद करते हैं।

1. सेज में प्रकाशित प्राची कालरा जी के आलेख 'Books that worm into you' का एक अंश

इसे हम ऐसे समझ सकते हैं कि बच्चों के दो अलग-अलग समूहों को मेले का वर्णन करने को कहा जाए और इस हेतु सिर्फ़ दूसरे समूह को मेले से जुड़ा एक बड़ा रंगीन और आकर्षक चित्र भी दिया जाए। क्या दोनों समूहों के बच्चों के लेखन में कुछ अंतर संभव है? बहुत संभव है कि दूसरे समूह के बच्चों का लेखन अधिक विस्तार लिए हुए हो और मेले के बारे में कुछ अत्यंत छोटे किन्तु महत्त्वपूर्ण अवलोकन भी हमें लेखन में नज़र आएँ। कहने का तात्पर्य यह कि चित्र एक ओर जहाँ समझ और अनुमान के साथ पढ़ने में हमारी मदद करते हैं, वहीं दूसरी ओर वे हमारे लेखन को भी विचारों और प्रवाह के स्तर पर बेहतर कर रहे होते हैं।

2.5.2 चित्रों पर कार्य की प्रक्रिया चित्रों का चुनाव

प्रारम्भिक कक्षाओं में उपयोग में लाए जाने वाले चित्र विविधता से भरे हों। चित्रों में दर्शाए जा रहे दृश्य या वस्तुएँ बच्चों ने पहले देखी हो और चित्र बच्चों को बातचीत करने के भरपूर अवसर देते हों। चित्र इस तरह के हों कि बच्चों को अनुमान लगाने में मदद करें। चित्रों में बने पात्रों के चेहरे के हावभाव जितने स्पष्ट होंगे, बच्चों को परिस्थितियों और मनोभावों का अनुमान लगाने और उस पर बात करने में उतनी ही आसानी होगी। किसी कहानी को भी चित्र-कथा के रूप में दर्शाते हुए उस पर बात की जा सकती है। पाठ्यपुस्तक में भी शुरुआत में ऐसे चित्र और चित्र-कथाएँ दी हुई हैं। इनसे भी शुरुआत की जा सकती है।

चित्रों में बने पात्रों के चेहरे के हावभाव जितने स्पष्ट होंगे, बच्चों को परिस्थितियों और मनोभावों का अनुमान लगाने और उस पर बात करने में उतनी ही आसानी होगी।

उदाहरण के लिए नीचे दिए गए चित्र को देखें। हम इस चित्र के द्वारा कक्षा में बातचीत और पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को देखेंगे:

Figure 56 ऐसे चित्र चुनें जो रोचक हों और बात करने के अधिक अवसर खोलते हों

Figure 57: चित्रों के द्वारा भाषा शिक्षण

(यहाँ इस बात का ध्यान रखा जाए कि यह चित्र और उस पर बातचीत की प्रक्रिया उदाहरण मात्र के लिए दी जा रही है। आप अपनी कक्षा और अपने सन्दर्भ के मुताबिक चित्रों का चयन कर सकते हैं और उन पर बातचीत की योजना बना सकते हैं।)

चित्र पर कार्य

1. चित्र को चार्ट पर चिपकाया जाए और बच्चों को गोल घेरे में बिठाकर उन्हें यह चित्र दिखाया जाए। बच्चे इस तरह बैठें कि सभी चित्र को सीधा और ध्यान से देख पाएँ। यदि आवश्यकता हो तो समूह में दो-तीन चार्ट भी दिए जा सकते हैं।
2. चित्र पर बातचीत शुरू की जाए– चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है? यह कहाँ का चित्र होगा? चित्र में कितने बड़े लोग हैं और कितने बच्चे हैं? इनके आपस में क्या रिश्ते हो सकते हैं? बच्चे क्या कर रहे हैं? दुकान में क्या-क्या सामान रखा हुआ है? आदि।
3. सामान्य बातचीत के बाद बच्चों से पूछा जा सकता है कि इस चित्र में दोनों बच्चे क्या बात कर रहे होंगे? चित्र में जो महिला फोन पर बात कर रही है, वह किससे और क्या बात कर रही होगी? महिला-पुरुष आपस में क्या बात कर रहे होंगे? दुकानदार क्या सोच रहा होगा? आदि।
4. अगले चरण में बच्चों द्वारा बताए गए सभी वाक्यों और शब्दों को बोर्ड पर लिखा जाए और प्रत्येक को पढ़ा जाए।
5. इन शब्दों में से किसी एक ध्वनि को चुनकर उससे शुरू होने वाले शब्दों का शब्दजाल बच्चों से पूछकर बोर्ड पर बनाया जाए, हर शब्द को पढ़ा जाए और बच्चों को अपनी पसंद के शब्दों को कॉपी में लिखकर पढ़ने को कहा जाए। उदाहरण के लिए, इस चित्र में दुकान का 'द', बच्चे का 'ब' और टेलीफोन के 'ट' वर्णों की ध्वनि और उसकी पहचान पर काम किया जा सकता है।

भाषा की कक्षा में चित्रों के उपयोग के कुछ और उदाहरण

चित्रों पर कार्य के दौरान अलग-अलग तरीकों के चित्र लिए जा सकते हैं। उपरोक्त उदाहरण में हमने एक चित्र को ही चर्चा का आधार बनाते हुए पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रियाओं पर बात की। इसी तरह से कुछ ऐसे चित्र भी लिए जा सकते हैं जिनमें कोई एक घटना सिलसिलेवार ढंग से एक से अधिक चित्रों में व्यक्त की जा रही हो। ऐसे चित्र बच्चों को सोचने, समझने, कल्पना, और तर्क करने जैसी क्षमताओं को सुदृढ़ करने के मौके देते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि यहाँ बच्चों को अपने पूर्व-अनुभवों का उपयोग करते हुए चित्र में घट रही घटनाओं को विज़ुअलाइज़ करने के साथ ही साथ उसे तार्किक क्रम भी देना होता है। यह प्रक्रिया इतनी रोचक होती है कि बच्चे इसे स्वयं से करने के लिए प्रेरित होते हैं और फिर उसी उत्साह से उसके बारे में बताते भी हैं। फिर इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए चित्र की घटनाओं, उसके क्रम, उस क्रम विशेष के कारणों, उसमें उपस्थित व्यक्तियों / जीवों / वस्तुओं आदि के बारे में चर्चा की जा सकती है। फिर इसी चर्चा को ऊपर के उदाहरण के समान ही पढ़ने-लिखने से जोड़ा जा सकता है।

नीचे ऐसी ही एक घटना को तीन अलग-अलग चित्रों के द्वारा उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है:

Figure 58

उदाहरण

आइए देखते हैं कि जब एक ही कहानी के उपरोक्त तीनों चित्रों को बच्चों को सही क्रम में जोड़कर कहानी सुनाने और फिर उसे लिखने को कहा गया तो कक्षा 4 के एक बच्चे ने क्या लिखा–

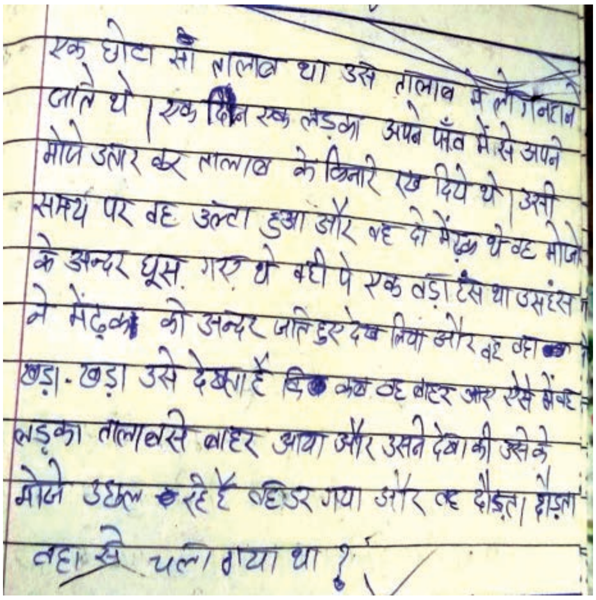

एक छोटा सा तालाब था उस तालाब मे लोग नहाने
जाते थे। एक दिन एक लड़का अपने पाँव में से अपने
मोजे उतार कर तालाब के किनारे रख दिये थे। उसी
समय पर वह उल्टा हुआ और वह दो मेंढक थे वह मोजे
के अन्दर घुस गए थे वही पे एक बड़ा हंस था उस हंस
ने मेंढक को अन्दर जाते हुए देख लिया और वह वहा
खड़ा-खड़ा उसे देखता है कि कब वह बाहर आए ऐसे मैं वह
लड़का तालाब से बाहर आया और उसने देखा की उसके
मोजे उछल रहे हैं वह डर गया और वह दौड़ता दौड़ता
वहा से चला गया था।

Figure 59 चित्र के आधार पर बनी कहानी

एक छोटा-सा तालाब था। उस तालाब में लोग नहाने जाते थे। एक दिन एक लड़का अपने पाँव में से अपने मोजे उतारकर तालाब के किनारे रख दिए थे। उसी समय पर वह उल्टा हुआ और वहाँ दो मेंढक थे। वे मोजे के अंदर घुस गए थे। वहीं पे एक बड़ा हंस था, उस हंस ने मेंढक को अंदर जाते हुए देख लिया और वह वहाँ खड़ा-खड़ा उसे देखता है कि कब वह बाहर आए। ऐसे में वह लड़का तालाब से बाहर आया और उसने देखा कि उसके मोजे उछल रहे हैं। वह डर गया और दौड़ता-दौड़ता वहाँ से चला गया था। उपरोक्त लेखन में हम बच्चे की कल्पना और तार्किकता को कागज़ पर उतरते देख सकते हैं।

एक और उदाहरण देखिए– दो गधों की कहानी

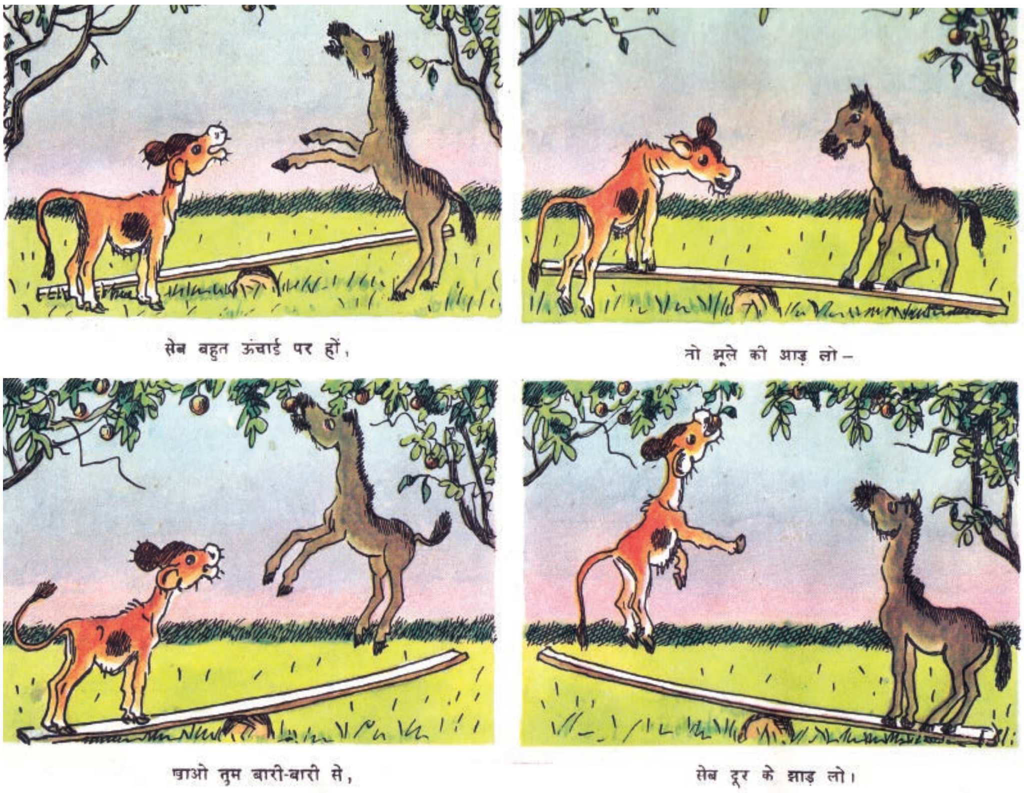

Figure 60 टीचर्स ऑफ़ इंडिया पोर्टल से

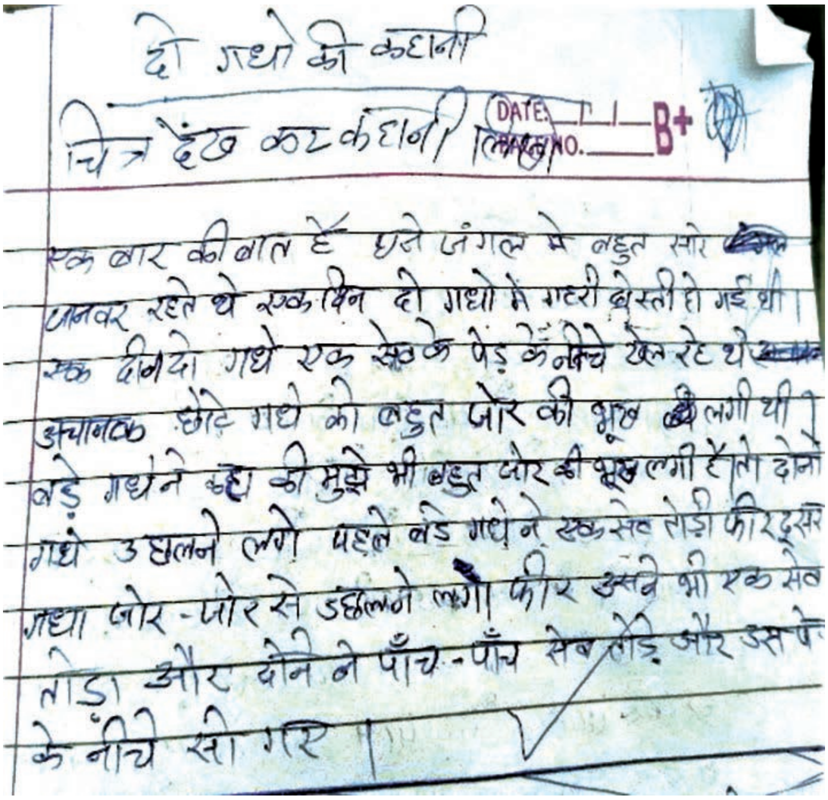

दो गधो की कहानी

चित्र देख कर कहानी लिखो

DATE: / / B+
PAGE NO.

एक बार की बात है घने जंगल मे बहुत सारे
जानवर रहते थे एक दिन दो गधो मे गहरी दोस्ती हो गई थी।
एक दीन दो गधे एक सेब के पेड़ के नीचे खेल रहे थे
अचानक छोटे गधे को बहुत जोर की भूख लगी थी।
बड़े गधे ने कहा की मुझे भी बहुत जोर की भूख लगी है तो दोनो
गधे उछलने लगे पहले बडे गधे ने एक सेब तोड़ा फीर दूसरे
गधा जोर-जोर से उछलने लगा फीर उसने भी एक सेब
तोड़ा और दोनो ने पाँच-पाँच सेब तोड़े और उस पेड़
के नीचे सो गए।

Figure 61 दो गधों की कहानी

चित्र देखकर कहानी लिखो

एक बार की बात है। जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। एक दिन दो गधों में गहरी दोस्ती हो गई। एक दिन दोनों गधे एक सेब के पेड़ के नीचे खेल रहे थे। अचानक छोटे गधे को बहुत ज़ोर की भूख लगी थी। बड़े गधे ने कहा कि मुझे भी बहुत ज़ोर की भूख लगी है। तो दोनों गधे उछलने लगे। पहले बड़े गधे ने एक सेब तोड़ी, फिर दूसरा गधा ज़ोर-ज़ोर से उछलने लगा। फिर उसने भी एक सेब तोड़ा और दोनों ने पाँच-पाँच सेब तोड़े और उस पेड़ के नीचे सो गए।

इस प्रकार हम पाते हैं कि चित्र एक ओर जहाँ भाषाई कक्षा में चर्चा और बातचीत को जीवंत कर सकते हैं, वहीं इससे आगे बढ़ते हुए अगले चरण में इनका उपयोग पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को रोचक और आकर्षक बनाने के लिए किया जा सकता है।

उदाहरण

चित्र पर बातचीत: कक्षा प्रक्रिया का एक उदाहरण

Figure 62 बातचीत के लिए एक चित्र

बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर चित्र दिखाते हुए चित्र पर बातचीत की शुरुआत हुई, जैसे- किसका चित्र है? चित्र में क्या-क्या है? क्या हो रहा है? कौन क्या कर रहा है? आदि। बच्चों ने भी अपने अवलोकन के आधार पर अपनी बात कही, जैसे–

गाँव का चित्र है, इस गाँव में एक मंदिर है, कुछ घर हैं, गाँव के आसपास पहाड़ है, और पेड़ लगे हैं, कुआँ है आदि। मेरी कोशिश थी कि बच्चे चित्र का अच्छे से अवलोकन करें। वे जो भी देख व समझ पा रहे हैं, साझा करें। इसी बीच बच्चों से बातचीत भी जारी थी। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए मैंने प्रश्न किया: तुम्हारे गाँव में क्या-क्या है?

बच्चे (एक-एक कर अपनी बात कहने लगे)– जैसे घर, स्कूल, पेड़, दुकान आदि।
अच्छा, नदी है क्या?
बच्चा– नहीं ।
फिर तुम पानी कहाँ से लाते हो? एक बच्चा– है न मैडम। पर हमार और ऊका लड़ाई है।
दूसरा बच्चा– नल भी आवथ। पानी लाय बर जात है। तालाब में तो नहाए बर जाबो और कपड़ा धोबे।
इस तरह यह बातचीत आगे चलती गई।
बच्चों ने गाँव से जुड़े अपने-अपने अनुभव साझा किए। किसी ने अपने घर के काम के बारे में कहा, तो किसी ने धान उगाने पर बात की। इस तरह बातचीत आगे बढ़ती जा रही थी। इस बातचीत को यदि देखें तो हम पाएँगे कि बच्चे शुरुआत में चित्र आधारित जानकारी साझा कर रहे थे, लेकिन शिक्षिका द्वारा नए सवाल पूछे जाने पर वे अपने अनुभव भी उससे जोड़ने लगे।
एक बच्ची– तालाब से
एक बच्चा– कुआँ भी है।
इतने में दूसरा बच्चा टोकते हुए (छत्तीसगढ़ी में कहता है)– कुआ ला बंद कर दीस।
क्यों उसमें पानी नहीं है क्या?
बच्चे– रहथे।
फिर क्यों?
बच्चे– उसमें एक लड़का कूद गए रहीस। खतम हो गए इसलिए गाँव मन ला बंद कर दिस।
तो पास के गाँव में तो होगा।[2] ”

और कहाँ से लें चित्र

शिक्षकों से चर्चा के दौरान हमें अक्सर ऐसे उदाहरणों से दो-चार होना पड़ता है जहाँ सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में शिथिलता या अपेक्षित गतिविधियों की कमी का ठीकरा संसाधनों के सिर फोड़ दिया जाता है। लेकिन अधिकतर समय ऐसी बाधाएँ शिक्षण प्रक्रियाओं को प्रभावित नहीं कर पातीं। बात चित्रों की करें तो यह कतई ज़रूरी नहीं है कि चित्र हमेशा बड़ी साइज के, अच्छी किताबों से, बड़े पोस्टरों से, या बाज़ार से खरीदे हुए ही हों। इसके अतिरिक्त विद्यालय या बच्चों के पास मौजूद चित्रों का उपयोग भी इस प्रक्रिया में आसानी से किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, पुराने समाचार पत्रों के चित्रों को काटकर या फिर बच्चों की पुस्तिकाओं के आवरण पृष्ठों पर बने आकर्षक चित्रों का उपयोग चर्चा और फिर पढ़ने-लिखने के लिए किया जा सकता है।

आइए, इसके भी एक-एक उदाहरण देखते हैं:

नीचे दिए गए उदाहरण में बच्चे को उसकी कॉपी के कवर पर बने चित्र पर लिखने को कहा गया। (चित्र में एक मुर्गी और एक बिल्ली का कार्टून-चित्र था जो किसी घर के बैकग्राउंड में खेल-कूद रहे थे।)

2.श्वेता विश्वकर्मा जी द्वारा लिखित कक्षा अनुभव

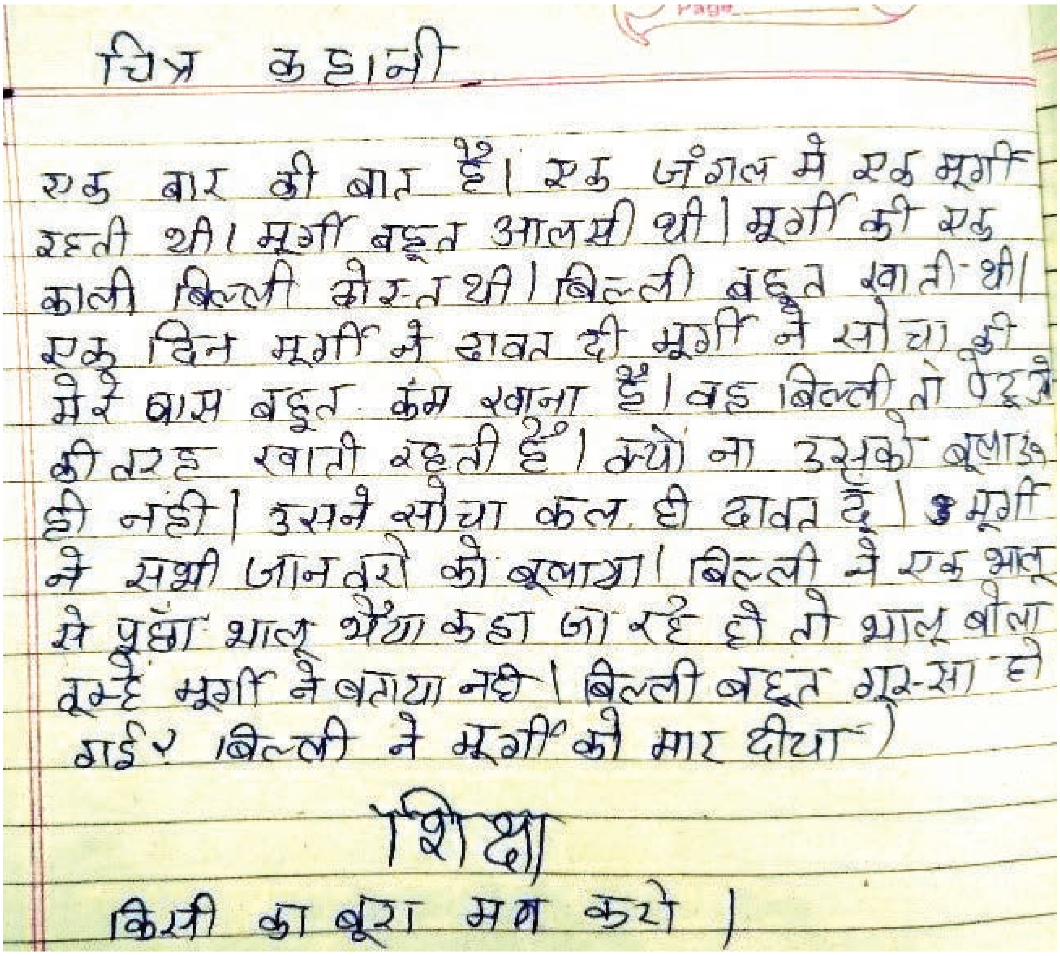

चित्र कहानी

एक बार की बात है। एक जंगल मे एक मूर्गी रहती थी। मूर्गी बहूत आलसी थी। मूर्गी की एक काली बिल्ली दोस्त थी। बिल्ली बहुत खाती थी। एक दिन मूर्गी ने दावत दी मूर्गी ने सोचा की मेरे पास बहुत कम खाना है। वह बिल्ली तो पेटू की तरह खाती रहती है। क्यों ना उसको बुलाऊ ही नही। उसने सोचा कल ही दावत दे। मूर्गी ने सभी जानवरो को बुलाया। बिल्ली ने एक भालू से पुछा भालू भैया कहा जा रहे हो तो भालू बोला तुम्हे मूर्गी ने बताया नही। बिल्ली बहुत गुस्सा हो गई। बिल्ली ने मूर्गी को मार दीया।

शिक्षा

किसी का बूरा मत करो।

Figure 63 एक और उदहारण

एक बार की बात है। एक जंगल में एक मुर्गी रहती थी। मुर्गी बहुत आलसी थी। मुर्गी की एक काली बिल्ली दोस्त थी। बिल्ली बहुत खाती थी। एक दिन मुर्गी ने दावत दी। मुर्गी ने सोचा कि मेरे पास बहुत कम खाना है। वह बिल्ली तो पेटू की तरह खाती रहती है। क्यों न उसको बुलाऊँ ही नहीं। उसने सोचा कल ही दावत है। मुर्गी ने सभी जानवरों को बुलाया। बिल्ली ने एक भालू से पूछा, “भालू भैया कहाँ जा रहे हो?”, तो भालू बोला “तुम्हें मुर्गी ने बताया नहीं?”। बिल्ली बहुत गुस्सा हो गई। बिल्ली ने मुर्गी को मार दिया।

हम देखें तो बच्चों के लेखन के उपरोक्त सभी उदाहरणों को देखकर उनकी कक्षाओं में दिन-प्रतिदिन अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं का अंदाज़ा लगा सकते हैं। पूरे विश्वास से कहा जा सकता है कि इन कक्षाओं में पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य संदर्भ सामग्रियों, जैसे- बातचीत, चित्र, कहानी, कविता आदि का भरपूर उपयोग किया जाता होगा और बच्चों को मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति के मौके मिलते होंगे।

चित्रों की उपयोगिता और इनकी सहायता से प्राथमिक कक्षाओं में भाषा सीखने की प्रक्रियाओं से संबन्धित इस भाग से बनी समझ को निम्नलिखित तालिका के द्वारा समेकित किया जा सकता है:

क्या करते हैं चित्र	क्या करें चित्रों से
• चित्र किताबों को अधिक रोचक और आकर्षक बनाते हैं और इनके कारण व्यक्ति किताबों तक खिंचे चले आते हैं। • किताब हाथ में आते ही हममें से अधिकतर पहले चित्र ही देखते हैं। और ये चित्र किसी किताब की प्रकृति के बारे में पाठक को अपनी राय बनाने में मदद करते हैं। • पहली नज़र आवरण पृष्ठ पर पड़ती है। इसी से आकर्षित होकर पाठक उसे उठाकर उलटने-पलटने और उसके बारे में जानने को प्रेरित होता है। • चित्र किसी रचना के विषय को विस्तार देने का भी कार्य करते हैं। साथ ही चित्र कभी-कभी उन विचारों, भावनाओं और जानकारियों को भी संप्रेषित करते हैं जिन्हें कई बार शब्दों द्वारा प्रकट करना असंभव हो जाता है। • यदि किसी रचना के चित्र प्रभावशाली हैं तो पाठक प्रत्येक बार उस चित्र के नए आयाम ढूँढ पाता है और हर बार उसे नएपन का अनुभव होता है। इससे अवलोकन कौशल का विकास होता है। • चित्र पढ़ना-लिखना सीखने में अनोखे ढंग से मदद करते हैं। भाषा की आरंभिक कक्षाओं के पाठ्यपुस्तक के शुरुआती पृष्ठ इस बात की तस्दीक करते हैं। • ये चित्र बड़ों और बच्चों को बातचीत के अवसर उपलब्ध कराते हैं। बातचीत के दौरान चित्रों का सूक्ष्म अवलोकन और विश्लेषण होता चलता है। इस दौरान बच्चों में विश्लेषण क्षमता के साथ ही साथ नए शब्दों से जुड़ने और उन्हें समझने के भरपूर मौके मिलते हैं। इससे शब्द भंडार में वृद्धि होती है और आत्मविश्वास बढ़ता है। • चित्रों पर होने वाली चर्चाएँ इस बात को मजबूती से समझाती हैं कि एक ही विषय को लेकर अलग-अलग लोगों के अलग-अलग नज़रिए हो सकते हैं। फिर वे दूसरों के नज़रिए को सुनने और समझने के लिए प्रस्तुत होते हैं। • ये चर्चाएँ बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमताओं यथा चिंतन, तर्क, कल्पना, अनुमान आदि के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं।	• चित्रों के आधार पर बच्चों को कोई विशेष वस्तु या पात्र ढूँढने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। • चित्रों के आधार पर बच्चों से प्रश्न पूछे जा सकते हैं। और फिर उनके उत्तर के आधार और कारण पूछकर उनके साथ तर्क किया जा सकता है। • स्वयं को चित्र में रखकर सोचने को कहा जा सकता है। • भविष्यवाणी की जा सकती है या आगे होने वाली घटनाओं का अनुमान लगाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। • अपने जीवन से जुड़े अनुभवों से चित्रों को जोड़ते हुए संस्मरण जैसा सुनाने को कहा जा सकता है। • अपने निरीक्षणों को रख सकते हैं, दूसरों के निरीक्षणों को सुन और समझ सकते हैं। उसे जाँच-परख सकते हैं और उस पर प्रश्न और तर्क कर सकते हैं। उससे सहमति या असहमति जता सकते हैं। • चित्र में बनी वस्तुओं को अलग-अलग बनाकर उनका नाम लिखने को कहा जा सकता है। • विभिन्न वस्तुओं के नाम देकर या उन्हें बोर्ड पर लिखकर चित्र बनाने को कहा जा सकता है। • चित्र के आधार पर कहानी या कविता लिखी जा सकती है। • चित्र में दिखाई दे रही वस्तुओं की सूची बनाई जा सकती है। • चित्र को देखकर उसका शीर्षक दिया जा सकता है। • चित्र में उपस्थित पात्रों का नामकरण किया जा सकता है, उनकी भंगिमाओं और घटने वाली घटनाओं के आधार पर इनसे संबन्धित पात्रों के संवाद लिखे जा सकते हैं। • चित्र में घटने वाली घटनाओं के कारण बताए जा सकते हैं और उनको लिखा भी जा सकता है। • चित्र में घटित घटनाओं से पहले या बाद में होने वाली घटनाओं का अनुमान लगाया जा सकता है, इसे लिखा जा सकता है।

क्या करते हैं चित्र	क्या करें चित्रों से
• चित्रों और अपने अनुभवों के आधार पर बच्चे अनुमान लगाकर पढ़ने का 'अभिनय' प्रारम्भ कर देते हैं और यह आगे चलकर समझकर पढ़ने का आधार बनता है। • किसी कविता या कहानी के साथ दिए चित्र उसकी पंक्तियों के बारे में अनुमान लगाने में सहायता करते हैं। बच्चे उनके बारे में स्वयं के अर्थ की रचना करते हैं। • चित्रों पर आधारित यह कार्य मात्र पहली या दूसरी कक्षा तक ही सीमित नहीं रहते, वरन् इससे आगे भी पढ़ने और लिखने की प्रक्रियाओं को समृद्ध बनाते हैं।	• चित्रों का संकलन किया जा सकता है। इस हेतु इन माध्यमों का उपयोग किया जा सकता है– समाचार पत्र, पुरानी पत्रिकाएँ और पुस्तकें, कैलेंडर, इन्टरनेट, पोस्टर, विज्ञापन, पुराने फोटोग्राफ, सूचनापत्र, पैम्फलेट, विभिन्न सामानों के कवर या रैपर आदि। और इनके साथ ही साथ स्वयं बच्चों और अध्यापकों द्वारा बनाए गए चित्र।

Figure 64 एकलव्य प्रकाशन की 'भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं?' किताब का एक आकर्षक डबल-स्प्रेड चित्र

2.6 लिखित भाषा समृद्ध (प्रिंट रिच) वातावरण, बाल साहित्य और रीडिंग कॉर्नर का महत्त्व

स्कूल में भाषा समृद्ध वातावरण के मायने

भाषा सीखने का सबसे सहज तरीका है कि बच्चों को उस भाषा के एक समृद्ध वातावरण में रहने और सीखने का मौका मिले। इस समृद्ध वातावरण से तात्पर्य है कि बच्चों को भाषा के विभिन्न रूपों को देखने, सुनने, समझने और उनसे जुड़ने या अंतःक्रिया करने के भरपूर अवसर मिलें। यहाँ भाषा के विभिन्न रूपों से तात्पर्य भाषा के लिखित और मौखिक, दोनों रूपों से है और कक्षा में शिक्षक की देखरेख में हो रही गतिविधियों से लेकर बच्चों द्वारा स्वयं अपनी प्रेरणा से भाषा के उपयोग या उससे खेलने, उसके नए प्रयोग करने से भी है। इसका एक और अर्थ बड़ों को भाषा का उपयोग अलग-अलग तरीकों से करते देखना है। नीचे के रेखाचित्र से इस वातावरण के स्कूली आयाम स्पष्ट होते हैं। स्कूली आयाम से मतलब है कि घर का भी एक आयाम है जिसमें यदि स्कूली भाषा के अभ्यास का मौका मिलता है तो बच्चों के लिए नई भाषा नए खेल सीखने जैसा मज़ेदार अनुभव बन सकता है।

इस भाग में हम प्रिंट रिच वातावरण, बाल साहित्य और रीडिंग कॉर्नर पर बात करेंगे।

भाषा समृद्ध कक्षा, रीडिंग कॉर्नर और बाल साहित्य से संबन्धित संभावित अवलोकनीय कक्षा प्रक्रियाएँ (ऑब्ज़र्वेबल क्लासरूम प्रैक्टिसेज़) और उनके संकेतक–

भाषा समृद्ध कक्षा	
कक्षा एक व दो के लिए	**कक्षा तीन से पाँच के लिए**
1. कक्षा में कविता-कहानियों के चार्ट और अन्य सामग्री प्रदर्शित की गई हैं, जो बच्चों की रुचि और कक्षा में हो रहे कार्य के अनुरूप हैं। 2. बच्चे कक्षा में प्रदर्शित की गई सामग्री को देख सकें, पढ़ सकें, इस दृष्टि से उसे अपेक्षित ऊँचाई पर लगाया जाता है। 3. कक्षा में बाल साहित्य, अन्य पाठ्यपुस्तकों और पठन सामग्री को उपलब्ध कराया जाता है। 4. कक्षा में उपलब्ध सामग्री पर बात करने या उसका संबंध पढ़ने-लिखने से जोड़ने के अवसर निर्मित किए जाते हैं। 5. बच्चे जिन शब्दों से पूर्व से ही परिचित हैं और जिन चीज़ों पर बात करना पसंद करते हैं, उन्हें दीवारों पर प्राथमिकता में लगाया जाता है। 6. बच्चों द्वारा किए गए काम को सप्ताह/महीनेवार कक्षा में डिस्प्ले किया गया है। 7. शब्द सूची बनी हुई है और उसमें लगातार नए शब्द जोड़े जाते हैं। 8. कक्षा में पुस्तकों का कोना बनाया हुआ है। पुस्तकों के चयन एवं रखरखाव पर पूरा ध्यान है। 9. बच्चों को स्वतंत्र एवं नियमित रूप से पढ़ने के लिए अलग से समय दिया जाता है। 10. बालसभा आदि में पुस्तकों पर बातचीत की जाती है। शिक्षक स्वयं भी अपनी पढ़ी कहानियाँ सुनाते हैं।	1. कक्षा में कुछ कविताओं, कहानियों के चार्ट लगे हुए हैं, जो बच्चों की पहुँच में हैं। शिक्षक उस सामग्री को एक योजना के अनुसार उपयोग में लाते हैं। 2. कक्षा में पाठ्यपुस्तक के अलावा भी किताबें व सामग्री मौजूद है और उसका उपयोग भी किया जाता है। 3. बच्चों को पढ़ने का चाव हो, इस पर शिक्षक सचेत हैं और इसके लिए नियमित पढ़ने के मौके दिए जाते हैं। 4. बच्चे अपने मन से किताबें पढ़ते भी हैं और शिक्षक उनको सीखने के मौके में बदलने का प्रयास करते दिखाई देते हैं। 5. अधिकतर बच्चों को ठीक से पढ़ना आता है, लेकिन कुछ बच्चों को दिक्कत है। शिक्षक उन बच्चों की तरफ आवश्यक ध्यान देते हैं। 6. कक्षा में जो पढ़ने के मौके उपलब्ध कराए जाते हैं, उनका लिखने-पढ़ने में उपयोग किया जाता है। 7. कक्षा में पुस्तकों के चयन एवं रखरखाव में बच्चों को भी ज़िम्मेदारी दी जाती है। 8. बालसभा में बच्चों को भी पुस्तकों पर विचार प्रस्तुत करने के मौके उपलब्ध कराए जाते हैं। 9. बाल साहित्य अध्ययन, उस आधार पर पढ़ने-लिखने के अभ्यास और बालसभा आदि में बच्चों के प्रदर्शन का भी आकलन कर दस्तावेज़ीकृत किया जाता है।

प्रिंट रिच (लिखित भाषा समृद्ध) कक्षा से संबन्धित मान्यताएँ:

"बगैर दीवार के चलने वाले स्कूलों की बात छोड़ दी जाए तो यह कहे जाने में शायद ही किसी को कोई आपत्ति हो कि एक औसत स्कूल दीवार का इस्तेमाल बाहरी दुनिया से रक्षा और इस दुनिया से भिन्न एक विशेष किस्म का वातावरण बनाने के लिए करता है। बाहरी दुनिया से रक्षा में धूप, बारिश और ठण्ड से रक्षा शामिल है, और इस अर्थ में बच्चों की रक्षा किए जाने में कोई शंका नहीं हो सकती है। शंका तब होती है जब हम पाते हैं कि दीवारों के सहारे स्कूल बाहर की दुनिया के सामाजिक यथार्थ से बच्चों को अलग रख रहा है। यह एक पुरानी मान्यता है कि बच्चों का व्यक्तित्व यथार्थ की आँच नहीं सह सकता। इस मान्यता की आड़ में यह मान लिया जाता है कि स्कूल को सामाजिक यथार्थ से बच्चों की रक्षा करने का हक है। इसी हक में यह कर्तव्य भी शामिल माना जाता है कि स्कूल अपनी दीवारों के भीतर एक विशेष किस्म का वातावरण पैदा करे।

कुछ दिन पहले यात्रा करते हुए मेरा ध्यान एक स्कूल में दीवारों पर लिखे उपदेशों की ओर गया। इस स्कूल में समय का प्रयोग बहुत अनाप-शनाप ढंग से होता है, दीवार पर लिखा था– "समय ही अनुशासन है"। संस्था में आपसी कलह और व्यवस्था संबंधी दिक़्क़तों के कारण हर किसी का पारा लगभग हर वक़्त चढ़ा रहता है, पर प्राचार्य के कमरे के बाहर लिखा था– "क्रोध को जीतो"। इसी तरह अन्य कई उपदेश वाक्य थे जो स्कूल के यथार्थ के ठीक विपरीत थे। इन वाक्यों से बच्चों के गिर्द एक विशेष किस्म का नैतिक वातावरण बुनने की कोशिश की गई थी। जैसी नैतिकता यह वातावरण सिखा रहा था, उसका कोई आधार स्कूल के भीतर या बाहर न था। इस कारण दीवारों पर अंकित वाक्यों की व्यंजना अत्यंत कमज़ोर जान पड़ रही थी। उन्हें रोज़ देखते-देखते बच्चों में शायद यह मानने की आदत पड़ रही थी कि भाषा का इस्तेमाल बगैर किसी अर्थ के हो सकता है। इस दृष्टि से सोचें तो हम यह कह सकते हैं कि स्कूल में भाषा के पाठ्यक्रम में दीवारें बहुत ऋणात्मक भूमिका निभा रही थीं। भाषा के सरकारी पाठ्यक्रम की चिंता यह थी कि बच्चे सार्थक भाषा का प्रयोग सीखें। दीवारें यह दिखा रही थीं कि स्कूल स्वयं भाषा का कितना निरर्थक प्रयोग करता है।"

(कृष्ण कुमार जी के लेख 'दीवार का इस्तेमाल' से)

- अक्सर स्कूलों की दीवारों जैसा ही हाल लहर / एबीएल कक्ष का भी होता है, जहाँ पर दीवारों को स्थायी रूप से वर्णमाला, गिनती आदि से रंग दिया गया है, वर्णमाला और गिनती आदि के पोस्टर लगा दिए गए हैं, कुछ चार्ट्स और टीएलएम-किट आदि उपलब्ध करा दी गई हैं। लेकिन उनके द्वारा भाषा में पढ़ना-लिखना किस तरह से होगा, इसकी स्पष्टता का अभाव है। जैसे- किट में शब्द कार्ड मौजूद हैं, कविता चार्ट और कविता पट्टियाँ उपलब्ध कराई गई हैं, लेकिन इनके द्वारा बच्चों को शब्दों की पहचान किस तरह से कराई जाए और इस पूरी प्रक्रिया के चरण क्या-क्या हों, इसे लेकर स्पष्टता नहीं होती।
- जिन कक्षाओं में सार्थक सामग्री मौजूद होती है, उनमें से भी कुछ कक्षाएँ ऐसी मिल जाती हैं जहाँ ये सभी सामग्रियाँ बस कक्षा को सजाने के काम ही आती हैं, क्योंकि न तो इन्हें कक्षा की प्रक्रियाओं से जोड़ा जाता है और न ही भाषा शिक्षण में इनका कोई उपयोग किया जाता है, और यह मान लिया जाता है कि शिक्षक का काम कक्षा को प्रिंट से रिच भर कर देने का था और अब इससे आगे की ज़िम्मेदारी बच्चों की है।

2.6.1 भाषाई समृद्ध कक्षा की आवश्यकता

बच्चे बेहतर तरीके से पढ़ना-लिखना तब सीखते हैं जब सीखने की प्रक्रिया को अर्थपूर्ण बनाया जाए और साथ ही साथ सीखने को उनके जीवन से जुड़े अनुभवों और शब्दों के साथ भी जोड़ा जाए। वहीं यह भी निर्विवाद रूप से स्थापित है कि बच्चे अपने परिवेश से प्राप्त पूर्वज्ञान का उपयोग करके लिखित सामग्री से अर्थ ग्रहण करने की कोशिश करते हैं। इस प्रक्रिया में बच्चे की पृष्ठभूमि, उसका संदर्भ और अनुभव, उसके ज्ञान और समझ निर्माण का आधार बन जाते हैं। आज भी शासकीय विद्यालयों में बहुत से ऐसे बच्चे आते हैं जिनका लिखित भाषा से पहला औपचारिक संपर्क कक्षा में प्रवेश के बाद ही होता है, अतः उनके लिए इस प्रक्रिया का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इसी सोच को मूर्तरूप देते हुए यदि कक्षा के भीतर लेखन का एक सक्रिय और समृद्ध परिवेश विकसित किया जाए तो कक्षा की लिखित दुनिया में प्रवेश करने वाले बच्चे हिन्दी भाषा के लिखित शब्दों से (लिपि से) सार्थक रिश्ता बना पाएँगे।[3]

छपी सामग्री चाहे वे शब्द हों, चित्र या कार्टून हों, बच्चे को कुछ देखने को, कुछ पढ़ने को उत्साहित तो करते ही हैं। कार्टून देखकर बच्चा हँसता तो है, साथ ही उस कार्टून के साथ छापे गए शब्दों को भी पढ़ने का प्रयास करता है। समझ न आने पर बड़ों से पूछता है। यही प्रयास करना, पूछना और पढ़ने तथा अर्थ जानने का आनंद ही बच्चे का पढ़ने की दुनिया में प्रवेश है। एक बार पढ़ने का समृद्ध वातावरण मिलने पर बच्चा इस दुनिया में चला गया तो कभी निकलना नहीं चाहेगा। क्योंकि यहीं तो उसे मिल रहा है पढ़ने का आनंद और साथ में हो रहा है अनेक जिज्ञासाओं का समाधान तथा जानने को मिल रही हैं नई-नई बातें।

मौखिक भाषा के विकास, फिर इससे लिखित भाषा की ओर बढ़ने और लिखित टेक्स्ट से परिचय को प्रगाढ़ करने में प्रिंट रिच वातावरण एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भाषा की कक्षा में छपी हुई सामग्री का विविध आकर्षक और परिवेश के परिचित रूपों में होना भाषा सीखने में मदद करता है। साथ ही साथ यह सभी बच्चों में बोलने, पढ़ने और लिखने से संबन्धित भाषाई कौशलों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

3. इस मुद्दे और संबन्धित प्रक्रियाओं को और बेहतर तरीके से समझने में प्रारम्भिक साक्षरता योजना से संबन्धित आलेख 'सार्थक और सक्रिय लिखित माहौल विकसित करने के प्रयास' का उपयोग किया जा सकता है

क्या करें

कक्षा में विभिन्न प्रकार के प्रिंट को प्रदर्शित करें, और इसमें बच्चों द्वारा तैयार सामग्रियों को भी शामिल करें। इनके उपयोग के विभिन्न तरीकों से बच्चों को परिचित कराएँ और फिर उन्हें भी इनके उपयोग के लिए प्रोत्साहित करें। कक्षा में प्रदर्शित सामग्रियों के उद्देश्य को निरूपित करती आकर्षक दैनिक गतिविधियों का उपयोग करें। जिन कक्षाओं में बच्चों की मातृभाषा हिन्दी नहीं है, वहाँ हमें शुरुआत में इन प्रिंट्स के लिए दोनों भाषाओं का उपयोग करना चाहिए।

Figure 65 कक्षा की दीवार भी शिक्षण में मदद करती है

उदाहरण

आइए देखते हैं, कक्षा 1 का एक उदाहरण–

(अक्षय बच्चों से कल आई आँधी के बारे में बात कर रहे हैं। बच्चे अपने-अपने अनुभव बताने को उत्सुक हैं। थोड़ी-बहुत बातचीत के बाद उन्हें इस विषय पर चित्र बनाने के लिए कहते हैं। बच्चे जब चित्र बना रहे हैं तो अक्षय घूम-घूमकर उनके चित्रों को देख रहे हैं और उनसे बातें कर रहे हैं।)

(अब अक्षय ने आँधी के बारे में बातचीत शुरू की)

सुरेन्द्र– बहुत तेज चल रही थी।

सोनी– सारी अमिया टूट गईं।

सोनिया– अम्मा हाली हाली किवाड़ और खिड़की बंद करें लगीं।

(अक्षय ने उनकी बातों को शब्दशः बोर्ड पर लिखा। उनकी बोली में कही गई बात को अक्षय ने बदलकर मानक भाषा में नहीं लिखा। लिख लेने के बाद अक्षय ने उनकी बातों को पढ़कर सुनाया। पढ़ते समय वे प्रत्येक शब्द के नीचे उंगली रखते गए। दूसरी बार बच्चों ने अक्षय के साथ उन बातों को पढ़ा।

फिर बच्चों की बताई बातों को अक्षय ने एक बड़े कागज़ पर लिखकर दीवार पर ऐसी जगह पर लगा दिया जहाँ बच्चे उसे आसानी से जब मन चाहे पढ़ सकें।)

इस कक्षा में होने वाली प्रक्रिया को देखें तो हम पाते हैं कि यहाँ शिक्षक कक्षा की शुरुआत बच्चों से बातचीत के द्वारा करते हैं और बातचीत के लिए एक ऐसे विषय का चुनाव करते हैं जो बच्चों के अनुभवों से जुड़ा हुआ है और एकदम ताज़ा है। फिर वे इसी विषय पर बच्चों से चित्र बनाने को कहते हैं और इस दौरान भी वे उनसे बातें करते जाते हैं। इसके बाद वे उन्हीं बातों में से तीन बच्चों द्वारा कहे वाक्यों को जस का तस बोर्ड पर लिखते हैं और उसे बच्चों के साथ पढ़ते हैं। अंत में इस घटना और इससे जुड़ी इस चर्चा को कक्षा में चिपका भी देते हैं। क्या बच्चे इस लिखे हुए को पढ़ना चाहेंगे? निश्चित ही, क्योंकि यह कुछ ऐसा जो उनका अपना है, कुछ ऐसा जो उन्होंने स्वयं अनुभव किया है। न कि किसी किताब या शिक्षक द्वारा बोला हुआ। दीवार पर चिपके इस कागज़ से अक्षय बच्चों को यह समझाने में सफल होंगे कि जो भी बोला जाता है, उसे लिखा भी जा सकता है। बच्चे अपने बोले हुए को लिखने और औरों को पढ़ाने में निश्चित ही रुचि लेंगे।

जिस प्रकार बच्चा भाषाई वातावरण में रहकर बोलना सीखता है, ठीक उसी तरह, सही अर्थों में साक्षर होने के लिए भी बच्चे का लिखित भाषा के सार्थक और उपयोगी अवसरों के संपर्क में आना आवश्यक होता है।

कक्षाओं में उपयोग की दृष्टि से प्रिंट सामग्री के विभिन्न प्रकार

वस्तुओं या स्थानों को अंकित

(लेबल) करना, स्कूल में मौजूद वस्तुओं को इस दृष्टि से लेबल करना कि वे क्या हैं या उनका स्थान कहाँ है। उदाहरण के लिए:

- वस्तुओं को उनके नाम से लेबल करना (जैसे- बोर्ड, सीसा, डस्टर, चॉक आदि)
- आलमारियों के रैक या डिब्बों को उन वस्तुओं के नामों से लेबल करना जिन्हें वहाँ रखा जाता कि बच्चे आसानी से नामों को उनके अर्थ और उपयोगों से जोड़ने की शुरुआत कर सकें।
- कक्षा के अलग-अलग स्थानों को लेबल करें (जैसे- "पढ़ने का कोना", "लिखने का कोना", "मेरे चित्र" आदि)
    - लेबल का निर्माण बच्चों की उपस्थिति में करें और बच्चों को उनके स्वयं के लेबल (नाम और चित्र) बनाने के लिए आमंत्रित और प्रेरित करें। कोशिश करें कि आप ऐसे ही नामों या संकेतों का उपयोग करें जो बच्चे अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में देखते और अनुभव करते हैं।

बच्चों से जुड़े निर्देशों से संबन्धित प्रिंट

कक्षा में चारों ओर ऐसे प्रिंट को प्रदर्शित करें जो बच्चों को यह बताएँ कि अमुक वस्तु या स्थान का उपयोग किस प्रकार से करना है। उदाहरण के लिए:

- बच्चों के साथ चर्चा के बाद बने साधारण नियम या निर्देश (जैसे– "शोर ना मचाएँ! आप रीडिंग कॉर्नर में हैं।", "अपने बैग और पानी की बोतल यहाँ रखें", "पढ़ने के बाद बंद करके किताबें यहाँ रखें" आदि) अंकित करें। इनके उपयोग की तरफ बच्चों का ध्यान आकृष्ट करें, यह समझते हुए भी कि अभी उन्हें अच्छी तरह से पढ़ना नहीं आता है।

उदाहरण के लिए जब वे पढ़ चुके हों तो संबन्धित लेबल की तरफ उनका ध्यान आकृष्ट करते हुए उन्हें किताबों को अच्छी तरह से रीडिंग कॉर्नर में रखने के लिए कहें।

जानकारी देने वाले प्रिंट

ऐसे प्रिंट का निर्माण और उपयोग जो बच्चों को जानकारी मुहैया कराए। उदाहरण के लिए:

- बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों पर उनके नाम (स्वयं बच्चों द्वारा लिखा गया या फिर लिखवाया गया)
- बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों के साथ उनका संक्षिप्त विवरण। ये विवरण बच्चे की व्याख्या के अनुसार शिक्षक, किसी अन्य वयस्क, या फिर अपेक्षाकृत बड़ी कक्षाओं के बच्चों द्वारा लिखे जा सकते हैं।
- बच्चों के नामों से संबन्धित चार्ट। इसका उपयोग विभिन्न गतिविधियों के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, बच्चों से दौड़ के जाने और किसी नाम विशेष पर उंगली रखने को कहना। या फिर अक्षर या ध्वनि विशेष से आरंभ या समाप्त हो रहे नाम पर उंगली रखना।
- बच्चों द्वारा आमतौर पर उपयोग में लाए जाने वाले शब्दों को प्रदर्शित करती 'शब्द दीवार' (जैसे- मम्मी, पापा, दादा, चाचा, घर, ढाणी, पानी, खाना, हाथी, आम, नीम आदि)। बच्चे स्वयं शब्दों को लिखकर इसके लिए दीवार पर निर्दिष्ट स्थान पर चिपका सकते हैं और समय-समय पर इनके साथ पढ़ने, लिखने या मौखिक गतिविधियाँ की जा सकती हैं। इन्हें निश्चित समयान्तरालों पर बदलते रहना ज़रूरी होगा, जिससे कि नए शब्दों को जगह मिले, और फिर पुराने लेबल वहाँ से हटाकर अलग स्थान पर दूसरे उपयोगों के लिए एकत्रित किए जा सकते हैं।
- पिक्चर-डिक्शनरी चार्ट का निर्माण, जहाँ चित्रों के साथ उनके नाम लिखकर प्रदर्शित किए जा सकेंगे।
- किसी चीज़ (खाद्य पदार्थ की रेसिपी, या अँगूठों की छाप से बनने वाले चित्र) के निर्माण से संबन्धित चरणों को प्रदर्शित करते चार्ट। इसमें शब्द और चित्रों दोनों का उपयोग किया जा सकता है।

अपेक्षित प्रतिक्रिया की मांग करते प्रिंट

ऐसे प्रिंट जो बच्चों को प्रतिक्रिया व्यक्त करने या योगदान के लिए प्रेरित करें।

उदाहरण के लिए:

- उपस्थिति चार्ट (बच्चों के नामों की सूची से जुड़ा चार्ट, जिनके आगे उनके द्वारा प्रतिदिन हस्ताक्षर के लिए स्थान निर्धारित हो)
- कक्षा की दैनिक या साप्ताहिक सारणी, जो प्रतिदिन बच्चों को उस दिन की योजना से अवगत कराए, और यदि संभव हो तो उनके लिए कार्य या ज़िम्मेदारियाँ भी तय करे।
- कार्यों को सूचीबद्ध करने से जुड़ी शीट (जहाँ बच्चे उनके द्वारा पढ़ी गई कहानियों या किताबों आदि को तिथिवार दर्ज करें)

- भाषाई अनुभव से जुड़े चार्ट (जहाँ आप बच्चों द्वारा साझा किए गए किसी यात्रा या अवलोकन भ्रमण के अनुभव, कहानी आदि को दर्ज करेंगे), या फिर बच्चों द्वारा किए गए लेखन कार्यों का सामूहिक प्रदर्शन।
- उन कविताओं और कहानियों के चार्ट या पोस्टर जो बच्चों ने अभी हाल ही में सुनी या पढ़ी है। इस प्रिंट का उपयोग सामूहिक पठन के सत्रों में कीजिए। बच्चे स्कूल या बाहर कहीं सुनी हुई कविताओं या गानों को गुनगुनाना पसंद करते हैं, हम इनका उपयोग पोस्टर निर्माण के लिए कर सकते हैं। पोस्टर निर्माण के दौरान पढ़-लिख सकने वाले बच्चे आपके द्वारा लिखकर दी गई कविता या गीत को चार्ट पर लिख रहे होंगे और वे बच्चे जो अभी आरंभिक स्तर पर हैं, इन चार्ट पर चित्रों का निर्माण कर रहे होंगे।

घर और बाहर अनायास ही बच्चे अपने आप को मुद्रित सामग्रियों से घिरा पाते हैं। कुछ परिवारों में यह बहुतायत में होता है और कुछ में कम। अतः भाषा की कक्षाओं में वे अपने आप को इससे जितना घिरा हुआ पाते हैं, छपी सामग्री की समझ उतनी ही जल्दी और स्पष्टता से बनती है।

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है, कक्षा में प्रिंट को प्रदर्शित कर देना भर ही कहीं से भी पर्याप्त नहीं है, आवश्यकता यह है कि प्रत्येक दिन की समस्त कक्षा प्रक्रियाओं के दौरान सीखने-सिखाने में इनका उपयोग किया जाए। इसका सरलतम निहितार्थ यह है कि बच्चों के सीखने और उनमें हो रही प्रगति के आधार पर नियमित रूप से कक्षा में प्रदर्शित प्रिंट सामग्रियों में परिवर्तन अनिवार्य है। इस बात को भी ध्यान में रखना आवश्यक है कि इन प्रिंट्स का प्रदर्शन बच्चों की ऊँचाई और उनकी आँखों के स्तर के अनुरूप हो और उनमें प्रयुक्त फॉण्ट की साइज़ ऐसी हो कि उसे कक्षा में कहीं से भी साफ-साफ देखा जा सके।

जब हम प्रिंट समृद्ध वातावरण की बात करते हैं तब दरअसल हम पढ़ने या लिखने के ऐसे ढेरों मौके उपलब्ध कराने की बात करते हैं जहाँ बच्चों को पठन सामग्री को इस्तेमाल करने का, समझने का, उस पर सोच विचार और परखने का मौका मिले। मान लीजिए, अध्यापिका कक्षा में बच्चों को 'बुढ़िया की रोटी' कहानी पढ़कर सुना रही हैं, तो ऐसे में कक्षा में पढ़ने-लिखने के कई अवसर सामने आएँगे। इसके दौरान कई अर्थपूर्ण और उपयोगी सामग्री निकलकर सामने आएगी। ये सामग्री ही कक्षा को समृद्ध बनाएगी। इनको कक्षा में प्रदर्शित करके हम बच्चों को बार-बार देखने और पढ़ने का मौका दे रहे हैं। हम यह नहीं कह रहे हैं कि कक्षा ऐसी हो जहाँ खूब सारे पोस्टर लगे हों, टीएलएम का भंडार हो, या फिर थर्मोकोल की विभिन्न आकृतियाँ मौजूद हों। हम एक ऐसी कक्षा की बात कर रहे हैं जिसके संदर्भ में ये प्रश्न विचारणीय हैं:

- क्या इन सामग्रियों का पढ़ने-लिखने के लिए कक्षा में उपयोग किया जा रहा है?
- क्या ये पढ़ने के प्रति बच्चों का उत्साह बना पाएंगी?
- क्या बच्चों को यह पता है कि उनमें क्या लिखा है और क्या उनकी इन लिखित बातों में रुचि है?
- क्या वे उस सामग्री के पास जाकर उसे पढ़ने, समझने या उस पर बातचीत करने का प्रयास कर रहे हैं?

प्रिंट और पढ़ने-लिखने के आपसी संबंध को प्रगाढ़ करना

पढ़ने-लिखने के विस्तार में इस बात का ध्यान रखना होगा कि ऊपर लिखी गई पाठ्य वस्तुओं का संग्रह कर प्रदर्शन कर देना महत्वपूर्ण तो है, पर इतने भर से बात नहीं बनेगी। जब तक बच्चों का ध्यान इनकी ओर आकर्षित करने के सायास प्रयास नहीं किए जाएँगे तब तक भाषा सीखने में इनका उपयोग सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि इस प्रक्रिया में सामग्री जुटाने से लेकर दीवारों या फिर निर्धारित स्थान पर चिपकाने या जमाने तक की पूरी प्रक्रिया में भी बच्चों को शामिल किया जाए। बच्चों से इन्हें लेकर लगातार बातचीत को भी कक्षा प्रक्रिया में शामिल करना होगा, उदाहरण के लिए– कविता या कहानी के चार्ट को हर सुबह कक्षा शुरू होने से पहले पढ़ा जाना, वाक्य दीवार में जुड़ते जा रहे नए-नए वाक्यों को रोज़ पढ़ा जाना, या उन वाक्यों से कहानी या कविता बनाने जैसी गतिविधियों को कक्षा प्रक्रिया में शामिल करना, प्रदर्शित की गई सामग्री को कक्षा प्रक्रियाओं के दौरान रिफरेन्स में लेना, भाषा की कक्षा का आवश्यक हिस्सा होना चाहिए। साथ ही बच्चे एक-दूसरे के काम को भी पढ़ें, ऐसे अवसर बनाए जाने चाहिए। इससे बच्चे पढ़ने-लिखने के विस्तार के साथ निम्न कौशलों और अवधारणाओं को समझ पाएँगे:

- अनेक तरह के टेक्स्ट पढ़ने और अनेक तरह से लिखित अभिव्यक्ति कौशल में निखार हो सकेगा।
- भाषा को साधन और साध्य के रूप में इस्तेमाल करने का हुनर जानेंगे।
- भाषा को उसके पूरे संदर्भों में देख और समझ पाएँगे।
- शब्द भंडार बढ़ेगा और शब्दकोश को देखने की समझ विकसित होगी।
- भाषा की सृजनात्मकता और सौंदर्यबोध को समझेंगे।
- अनुमान लगाने और कल्पना करने की क्षमताओं में वृद्धि होगी।

Figure 66 दीवार पत्रिका के द्वारा दैनिक जीवन को भाषा सीखने के केंद्र में लाया जा सकता है

2.6.2 बाल साहित्य और अन्य पठनीय सामग्रियों का पढ़ने-लिखने की संस्कृति विकसित करने में योगदान

बाल साहित्य

बच्चों के बारे में लिखी गई सभी किताबें बाल साहित्य नहीं होतीं। संभव है कि बच्चे की मुख्य भूमिका वाली किताबों की विषयवस्तु या उनमें उठाए गए मुद्दे बच्चों के लिए उपयुक्त न हों। अच्छा बाल साहित्य सरल होता है, लेकिन उसे लिखना सरल नहीं होता। हम देखें तो बहुत सारा लोकप्रिय बाल साहित्य पर्याप्त जटिल है, लेकिन वो बच्चों की संज्ञानात्मक और भावनात्मक संवेदनशीलता को उद्दीप्त करता है। एक अच्छी किताब बच्चों में सशक्त भावनाओं का संचार करती है। ये बच्चों को एक ऐसा झरोखा प्रदान करती हैं जिससे कि बच्चे अपने स्वयं के जीवन और इससे जुड़ी चिंताओं का विश्लेषण कर सकें। अच्छी किताबें बच्चों को दूसरों के जीने के तरीकों को देखने-समझने और साथ ही साथ यह एहसास करने में सक्षम बनाती हैं कि दूसरों की चिंताएँ/परेशानियाँ शायद उनकी अपनी चिंताओं से बहुत अलग नहीं हैं। अच्छी किताबें कल्पना को सिर्फ पंख ही नहीं देतीं, वरन् आकार भी देती हैं।

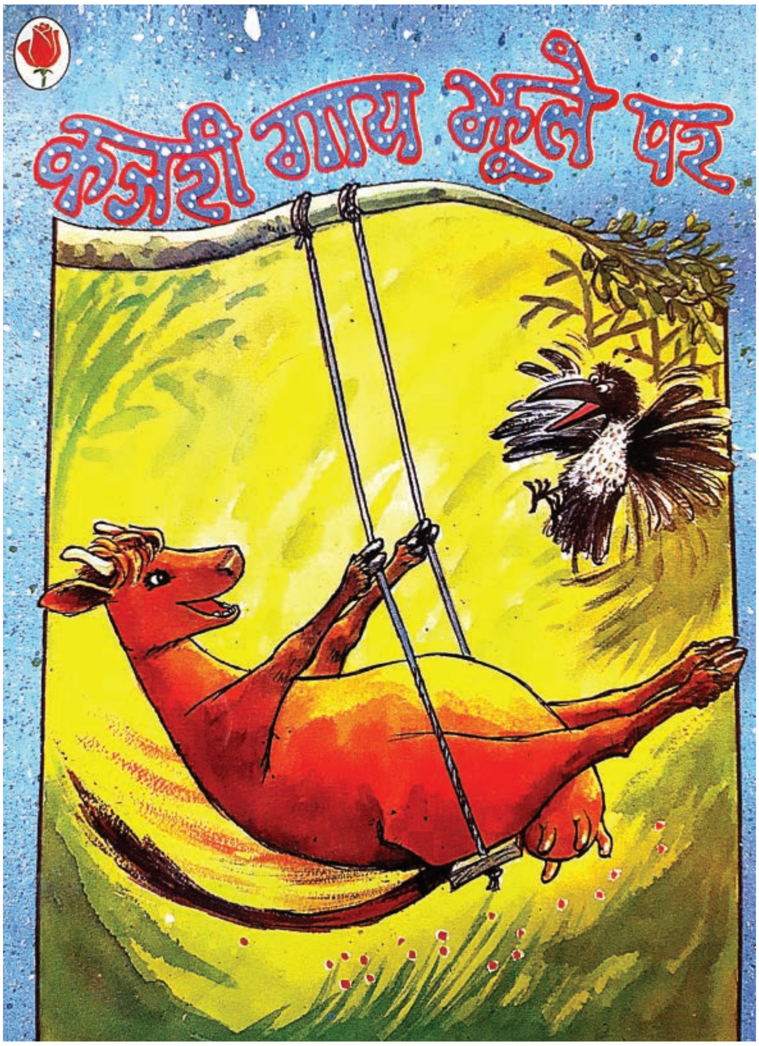

Figure 67 कजरी गाय झूले पर–एक रोचक पुस्तक

बाल साहित्य की एक वृहद/विस्तृत परिभाषा में विशेष रूप से बच्चों को ध्यान में रखकर लिखी गई पाठ्यसामग्री होगी, जिसमें कि बच्चे मुख्य भूमिकाओं में हों। इस परिधि में वर्णमाला और नंबर-बुक से लेकर किशोरों और छोटे बच्चों के लिए प्रकाशित उपन्यास और इनसाइक्लोपीडिया भी आ जाएँगे।

हालाँकि ये भी उतना ही बड़ा सच है कि बाल साहित्य बहुत सारे वयस्कों के लिए भी छिपे आनंद का कारण बनता है।

यहीं यह समझना भी महत्त्वपूर्ण होगा कि बच्चे स्वयं बाल साहित्य नहीं लिखते और वे क्या पढ़ें, इसका निर्णय भी अक्सर उनके आसपास मौजूद वयस्क, जैसे अभिभावक, शिक्षक और लाइब्रेरियन करते हैं। अतः यह समझना ज़रूरी हो जाता है कि जो किताबें बच्चे पढ़ रहे हैं या जो उन्हें पढ़कर सुनाई जा रही हैं, उसमें बच्चों की ओर से क्या है? बच्चों के लिए लिखने वालों ने हाल ही में एक और उद्देश्य को ध्यान में रखकर लिखना शुरू किया है, और वो है आनंद प्रदान करना। कई लेखक अब इस उद्देश्य के साथ लिखते हैं कि बच्चों को आनंद के लिए पढ़ने का रोमांच प्रदान कर पाएँ। आखिर सिर्फ़ वयस्क ही क्यों आनंद के लिए पढ़ें और बच्चे मात्र सीखने और अच्छा बनने के लिए?

कक्षा में बाल साहित्य

पुस्तकालय

सप्ताह में एक घंटा पुस्तकालय को दिया जा सकता है। इस समय के दौरान बच्चे पुस्तकालय में बैठें और शांति से पढ़ें। वे पिछले सप्ताह ली हुई किताबें लौटा दें और नई किताबें ले जाएँ। यदि पुस्तकालय कक्ष नहीं है तो शिक्षक बच्चों की अवस्था के अनुसार किताबें ला सकते हैं और उन पुस्तक-समुच्चय में से बच्चों को पुस्तकों का चुनाव करने के लिए कह सकते हैं। यह आवश्यक है कि बच्चे स्वयं पुस्तकें चुनें, न कि शिक्षक पुस्तक बाँटें। भाषा की कक्षा में किताबें लाई जा सकती हैं और परियोजना कार्य के लिए बच्चों को पुस्तकालय से अन्य सामग्री पढ़ने के लिए कहा जा सकता है। बच्चों को कहा जा सकता है कि भाषा की कक्षा के दौरान पिछले सप्ताह पढ़ी गई किताबों के बारे में लिखें। बच्चों को पढ़ी हुई कहानी अन्य बच्चों को सुनाने के लिए कहा जा सकता है। छुट्टियों के दौरान स्कूली पुस्तकालय खुले रखे जाएँ।

(एन॰सी॰एफ़॰ 2005 से)

बच्चों में पढ़ने की ललक नैसर्गिक रूप से होती है। रंग-बिरंगी किताब सामने देखते ही बच्चा उसे उठाता है, उसे उलटता-पलटता है, चित्रों से बातें करता है। यहीं से शुरुआत होती है, उसके बाल साहित्य के संसार में कदम रखने की। लेकिन यही बच्चा जब स्कूली दुनिया में कदम रखता है तो पढ़ने की चाहत धीरे-धीरे कम होने लगती है। इसके कई कारण हैं, जिनमें से एक बड़ा कारण यह भी है कि विद्यालय में उसे पढ़ने के लिए पाठ्यपुस्तक के अलावा और कुछ भी नहीं मिलता।

पाठ्यपुस्तक में कोई कहानी या कविता कभी मुश्किल से ही पढ़ने वाले के बारे में होती है। हम पाते हैं कि टेक्स्ट अपने आप में पूरा है, इसीलिए सारा ध्यान टेक्स्ट पर ही होता है। शिक्षक के रूप में हम कहानी या कविता की 'व्याख्या' यह सोचकर करते हैं कि छात्र 'सही' अर्थ समझ जाएँ। फिर हम इस तरह के सवाल पूछते हैं कि "तीसरे पैराग्राफ या दूसरी पंक्ति में लेखक क्या कहने का प्रयास कर रहा है?"

यहाँ हम यह भूल जाते हैं कि अधिकतर मामलों में लेखक के आशय को जान पाना असंभव है। अधिक से अधिक हम उतना ही जान सकते हैं जितना कि हमने एक पाठक के रूप में उस टेक्स्ट को समझा हो। पाठ्यपुस्तकों पर भाषा शिक्षण का पूरा दारोमदार मान लिए जाने के कारण बाल साहित्य के स्कूल में इस्तेमाल करने पर कम ध्यान दिया गया है। यही पढ़ने में आनंद के नदारद होने का भी एक कारण

Figure 68 कक्षा में पुस्तकालय का कोना

Figure 69 एक बच्चे द्वारा सत्र-पर्यंत पढ़े गए बाल साहित्य का विवरण

रहा है। इसलिए हमारे विद्यालयों में बच्चों के लिए रोचक सामग्री मुहैया कराना ज़रूरी हो जाता है। पढ़ना सिखाने के लिए यह ज़रूरी है कि बच्चों को पढ़ने के अधिक से अधिक अवसर दिए जाएँ। इसके लिए विविध प्रकार की पठन सामग्री चाहिए। बच्चे के चारों ओर बिखरा भाषाई संसार ही उन्हें भाषा सिखाने में बड़ी भूमिका अदा करता है। दरअसल पाठ्यपुस्तक के पन्नों पर छपी सामग्री को पढ़ना ही पढ़ना नहीं है। **चारों ओर बिखरी लिखित और छपी हुई सामग्री को पढ़ पाना और उसमें से अर्थ निकालना और अपने लिए उसका उपयोग कर पाना ही सही मायनों में पढ़ना है।** हमारे अधिकांश प्राथमिक स्कूलों में पुस्तकालय नहीं हैं, जबकि उन्हें अनिवार्य रूप से होना चाहिए था और साथ ही साथ बाल साहित्य से समृद्ध भी होना चाहिए था। कहीं हैं भी तो उस तक बच्चों की पहुँच या बच्चों द्वारा उनका उपयोग बेहद सीमित है।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि बच्चों के स्तर और रुचि को ध्यान में रखते हुए पुस्तकों का चयन किया जाए। हमें परिचित विद्यालयों और शिक्षकों को ऐसी सामग्रियों और पुस्तकों से परिचित कराना चाहिए जो कि बच्चों की आवश्यकताओं और रुचियों के अनुकूल हों और उन्हें और अधिक पढ़ने-लिखने के लिए प्रेरित करें।

बाल साहित्य क्यों

उदाहरण

आइए, जय शंकर चौबे जी द्वारा लिखित एक उदाहरण देखते हैं, जहाँ शिक्षिका ऐसी ही एक चित्रात्मक कहानी की किताब का उपयोग भाषा की कक्षा में करती नज़र आती हैं–

(कक्षा एक व दो में कुल 21 बच्चे हैं। शिक्षिका ने 'लालू और पीलू' कहानी सुनाकर उस पर बातचीत की। 'लालू और पीलू' एक मुर्गी व उसके दो चूज़ों की कहानी है, जिसमें एक चूज़ा जिसका नाम लालू है, उसे लाल चीज़ें बहुत पसन्द हैं। एक दिन वह मिर्च के पौधे पर लगी लाल मिर्च खा लेता है। मिर्च खाने के बाद जैसा कि आमतौर पर सबके साथ होता है, लालू की भी जीभ जलने लगी। लालू रोने लगा। लालू की मुर्गी माँ दौड़ी आई। उसका भाई पीलू भी घर की ओर भागा और घर में से वह पीले-पीले गुड़ का टुकड़ा ले आया। लालू ने झट-से गुड़ खाया और उसकी जलन ठीक हो गई। अन्त में मुर्गी माँ ने लालू और पीलू को बहुत प्यार दिया।)

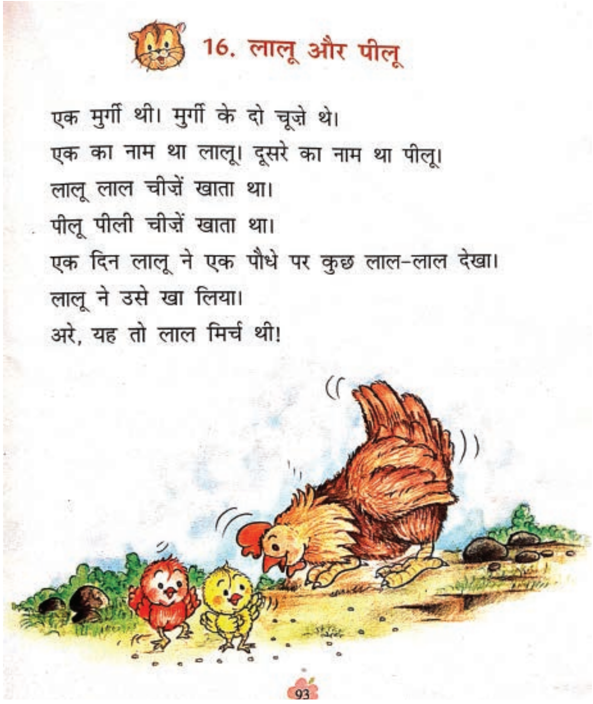
16. लालू और पीलू

एक मुर्गी थी। मुर्गी के दो चूज़े थे।
एक का नाम था लालू। दूसरे का नाम था पीलू।
लालू लाल चीज़ें खाता था।
पीलू पीली चीज़ें खाता था।
एक दिन लालू ने एक पौधे पर कुछ लाल-लाल देखा।
लालू ने उसे खा लिया।
अरे, यह तो लाल मिर्च थी!

93

Figure 70 NCERT, रिमझिम-1, लालू और पीलू

इस कहानी पर बातचीत के कुछ अंश इस प्रकार हैं...
शिक्षिका– कहानी कैसी लगी?
बच्चे– अच्छीईईई...
शिक्षिका– कहानी में कौन-कौन था?
बच्चे– लालू-पीलू और मुर्गी।
शिक्षिका– मुर्गी कितने लोगों ने देखी है?
8 बच्चों ने हाथ खड़े किए।

एक बच्चा– मेरे घर पर आठ मुर्गे हैं। जब कोई लेने आता है तो पापा उसे बेच देते हैं। एक लाल मुर्गा भी है। पापा को उसे बेचने को मना किया है। जब उसे पकड़ने जाता हूँ तो वह कूँ-कूँ करके दौड़ता है। उसके साथ दौड़ने में मज़ा आता है।
शिक्षिका– लालू को खाने में क्या पसन्द था?
बच्चे– लाल चीज़ें।

शिक्षिका– लाल रंग की खाने की और क्या चीज़ें हो सकती हैं?

बच्चे– सेब, टमाटर, गाजर, अनार, तरबूज़, मिर्च, लीची, बालूशाही, मोतीचूर के लड्डू, कुल्फी, आइसक्रीम, जामुन, गुलाब जामुन, प्याज, बेर, स्ट्रॉबेरी, जलेबी, इमरती, मक्का, इमली...।

शिक्षिका– पीले रंग की खाने की चीज़ों का नाम बताइए, जो आपको पसन्द हैं।

बच्चे– सन्तरा, आम, केला, लड्डू, टॉफी, नमकीन, बिस्कुट, अंगूर, पपीता, पराठा।

शिक्षिका– क्या कभी आपको भी मिर्च खाने के बाद जलन हुई है? यदि हाँ, तो आपने क्या किया था?

कई बच्चों ने हाथ उठाए और अपने-अपने अनुभव सुनाने लगे। कई बच्चे बोले कि "मैम, पानी पी लिया, चीनी खाई, मम्मी ने दो कौर और खाना खिला दिया और ठीक हो गया" इत्यादि। शिक्षिका बच्चों द्वारा बताए खाने की चीज़ों के उदाहरणों को सलीके से बोर्ड पर लिखती गईं। शिक्षिका ने इन खाने वाली चीज़ों पर बाद में बात की। फिर कहानी से जुड़ा अपनी पसन्द का चित्र बनाने को कहा।

उपरोक्त उदाहरण स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार बाल साहित्य का उपयोग भाषा की कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को रोचक बनाने में किया जा सकता है।

भाषा के शिक्षक अक्सर यह अनुभव करते हैं कि बच्चे उनके विषय को उतनी गंभीरता से नहीं लेते जितनी कि गणित या विज्ञान को। इस परिस्थिति हेतु ज़िम्मेदार कई अन्य कारकों के अतिरिक्त एक महत्त्वपूर्ण कारक यह भी है कि साहित्य को हमेशा गंभीरता से नहीं लिया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि साहित्य का कोई 'व्यावहारिक' परिणाम नज़र नहीं आता है।

यह तर्क इस पक्ष की पूरी तरह से अवहेलना करता है कि मानव के रूप में हम कहानी सुनाने वाले जीव (स्टोरी टेलिंग एनिमल) हैं। कहानियाँ हमें अपने चारों ओर के विश्व को समझने में सक्षम बनाती हैं। एक ओर जब भाषा के अधिकतर उपयोग हमें अपने चारों ओर घट रही घटनाओं में भागीदारी के लिए सक्षम बनाते हैं, वहीं दूसरी ओर भाषा के कुछ विशेष उपयोग हमें अपने स्वयं के जीवन को निरपेक्ष रूप से देखने में सक्षम बनाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो कहानियाँ हमें दूसरों की नज़र से घटनाओं को देखने में सक्षम बनाती हैं। असल में कहानी बच्चों को अपनी पूरी ताकत से आकर्षित करती है, क्योंकि वे इसे एक दर्शक की दूरी के साथ अपना सकते हैं। वे इससे एक गैर सहभागी गतिविधि के रूप में आनंद लेने के लिए स्वतंत्र हैं, भले ही यह एक दुःखांत कहानी ही क्यों न हो। अतः बाल साहित्य बच्चों को चिंतनशील सहभागी और चिंतनशील दर्शक के रूप में विकसित करता है।

बच्चों के लिए किताबें केवल शब्दों या वाक्यों का भंडार नहीं हैं। किताबों में उनकी परियाँ हैं, उनके हाथी, घोड़े, शेर, खरगोश हैं। किताबों में वे तितली और गिलहरी के पीछे दौड़ते हैं, किताबों में उन्हें कोयल की कुहू सुनाई देती है। किताबों में वे हवा का संगीत सुनते हैं, फूलों की सुगंध महसूस करते हैं, और खट्टे-मीठे फल खाते हैं। कभी वे किताबों की नदी में तैरते हैं तो कभी किताबों के पहाड़ पर चढ़ते हैं। कभी किताबों का समुद्र उन्हें बुलाता है तो कभी वे किताबों के आसमान में तारे गिनने लगते हैं। सूरज और चाँद का उजाला और गर्मी अपनी किताबों के अंदर देखते और महसूस करते हैं। लेकिन इतना सब उनको उनकी पाठ्यपुस्तकें नहीं देतीं। अतः ज़रूरी हो जाता है कि बच्चों के आसपास बाल साहित्य हो, पुस्तकालय हो, रीडिंग कॉर्नर हो।

2.6.3 पढ़ने का कोना (रीडिंग कॉर्नर)

Figure 71 स्कूल में पढ़ने का कोना

कक्षा के अंदर एक निर्धारित स्थान पर बच्चों के खुद से उलट-पलट के देखने और पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य की उपलब्धता एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इस कोने के निर्माण के दौरान हमें इस बात से बिलकुल भी निराशा नहीं होना चाहिए कि इस हेतु पुस्तकों की संख्या कम है। क्योंकि यहाँ महत्त्वपूर्ण है, कक्षा के भीतर ऐसे स्थान का होना जो पूरी तरह से पढ़ने के लिए ही निर्धारित है और जहाँ इससे संबन्धित थोड़ी बहुत (किन्तु प्रासंगिक) सामग्री मौजूद है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पढ़ने का कोना कक्षा के एक संक्षिप्त कोने में आकार लेता हुआ भी अपने में एक पूरा संसार समाहित किए हुए होता है। आवश्यकता यह है कि बच्चे इस संसार से परिचित हों, जिससे कि उनके लिए पढ़ना और लिखना एक रोचक और आनंददायक खेल बन जाए।

कक्षा में रीडिंग कॉर्नर वर्तमान में अधिकतर कक्षाओं में व्याप्त एकरसता और बोरियत को दूर करने का एक महत्त्वपूर्ण तरीका है। यह प्रक्रिया इस स्थापना को भी बल प्रदान करती है कि पढ़ना पढ़ने से ही आता है और लिखना लिखने से ही आता है।

प्रक्रिया

- कक्षा के एक निर्धारित कोने में पढ़ने से जुड़ी विभिन्न सामग्रियों को प्रदर्शित किया जाए। इन्हें प्रदर्शित करने के लिए बच्चों की लंबाई और पहुँच को ध्यान में रखते हुए छोटे आकार की खुली अलमारियाँ, रैक या फिर मेज का इस्तेमाल किया जा सकता है। किताबों को तारों या रस्सियों की सहायता से लटकाकर भी प्रदर्शित किया जा सकता है, और इसके साथ ही अन्य सामग्रियों, जैसे- शब्द, चित्र, वर्ण कार्ड आदि को ट्रे में रखा जा सकता है।

- बैठकर पढ़ने के लिए स्थान निर्धारित किया जाए, दरी या टाट पट्टियाँ बिछाई जा सकती हैं।
- बाल साहित्य के अतिरिक्त कुछ पत्रिकाएँ, पहेलियों के संग्रह, बच्चों द्वारा निर्मित चित्र-पुस्तकें, शब्द-चित्र डिक्शनरी, कहानियों का संग्रह आदि भी मौजूद हों।
- हिन्दी भाषा की पुस्तकों के साथ ही साथ बच्चों की अपनी भाषा की पुस्तकें भी मौजूद हों। यदि ऐसी किताबें मार्केट में उपलब्ध न हों तो इन्हें बच्चों की सहायता से बनाया जाए।
- मौजूद समस्त पठनीय सामग्रियों को यथासंभव विभिन्न कैटेगरियों में बाँटा जाए, उन्हें तदनुसार लेबल किया जाए और बच्चों को इस वर्गीकरण के बारे में बताया जाए।

Figure 72 मुखौटों द्वारा कहानी की प्रस्तुति

- रोज़मर्रा के कार्यों में उपयोग की जाने वाली स्टेशनरी भी यहाँ मौजूद हो, जैसे- प्लेन पेपर, क्राफ्ट पेपर, पेंसिल, और कुछ रंग आदि।
- रीडिंग कॉर्नर में मौजूद कुछ ऐसी कहानियों से संबन्धित मुखौटे या पपेट, जिन्हें कक्षा में पढ़कर सुनाए जाने की योजना हो।

रीडिंग कॉर्नर से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ

- **बोलकर या पढ़कर कहानी सुनाना**

  बोलकर कहानी सुनाने के दौरान हम कहानी का वर्णन करते चलते हैं और बीच-बीच में बच्चों से बात करते या उनकी राय जानते चलते हैं, जबकि पढ़कर कहानी सुनाने के दौरान हम सुनाने के लिए किताब का उपयोग करते हैं और उसे जस का तस पढ़कर सुना रहे होते हैं।

  कहानियों के अतिरिक्त हम अन्य किताबें (जैसे पेड़-पौधों या जानवरों की जानकारियों से जुड़ी किताबें) भी पढ़कर बच्चों को सुना सकते हैं या पढ़ने के लिए दे सकते हैं।

  अनुभव यह बताते हैं कि बच्चे द्वारा पढ़ने के लिए उन पुस्तकों को चुनने की संभावना सबसे अधिक रहती है जो उन्हें शिक्षकों द्वारा पढ़कर सुनाई गई हों। वे इन पुस्तकों से परिचित हो चुके होते हैं, फलस्वरूप इनसे उन्हें भय नहीं होता। बच्चे उस पुस्तक के लिए लंबी कतारों में खड़े हो जाते हैं जिसे उनके लिए हाल ही में पढ़ा गया हो और जिसका स्वाद उनके मन-मस्तिष्क में ताज़ा हो।

  यह प्रक्रिया शिक्षक को अवसर प्रदान करती है कि वे बच्चों को अच्छी पुस्तकों से परिचित करा पाएँ, जिससे उनके (बच्चों के) लिए स्वतंत्र पाठक बनने का मार्ग प्रशस्त होता है। अर्थ निर्माताओं के रूप में बच्चे से संबन्धित अपने लंबे शोध में वेल्स (1986) यह पाते हैं कि बच्चों के सफल पाठक बनने में यह तथ्य सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि उन्हें ऊँचे स्वर में पढ़कर सुनाने का कितना अनुभव प्रदान किया गया है।

- **प्रतिदिन पढ़कर सुनाना**

  बच्चे प्रिंट सामग्री से बेहतर तरीके से तब सीखते हैं जब इसके लिए उन्हें सही माहौल प्रदान किया जाता है। चुनी गई किताबों को प्रतिदिन उन्हें पढ़कर सुनाना, इसका एक बेहतरीन तरीका है।

  बच्चों को पढ़ने और पुस्तकों की ओर आकर्षित करने के लिए ऊँचे स्वर में पढ़कर सुनाना संभवतः सबसे आसान और सस्ता संसाधन है। इसके बावजूद भी इसे अधिकतर कक्षाओं में सबसे कम उपयोग किया जाता है। अतः हमारे लिए यह आवश्यक हो जाता है कि कक्षा में प्रभावी ढंग से पढ़कर सुनाने की महत्ता को समझें। ट्रीलीज़ (Trelease) (1989) के शब्दों में समझें तो, "ऊँचे स्वर में पढ़कर सुनाना, पढ़ने के आनंद का सबसे प्रभावी विज्ञापन है"।

यहाँ पढ़कर सुनाने से संबन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को प्रस्तुत किया गया है, जिन्हें इस प्रक्रिया के दौरान ध्यान में रखा जा सकता है–

- यदि संभव हो तो पढ़कर सुनाने का कार्य छोटे समूहों में किया जाए। इसमें भले ही कुछ अधिक समय लग सकता है, लेकिन आप आधी कक्षा के लिए ऊँचे स्वर में पढ़ रहे हों तो उसी समय में दूसरे समूह को स्वतंत्र रूप से पढ़ने में प्रशिक्षित कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में आगे बढ़ते हुए आप इन समूहों में बारी-बारी से काम कर सकते हैं।
- पुस्तक को इस तरह से पकड़ें ताकि सभी इसको देख सकें।
- इसकी शुरुआत ऊँचे स्वर में शीर्षक को पढ़ने और आवरण पृष्ठ को दिखाने से करें। बच्चों को किताब की विषयवस्तु का अनुमान लगाने का अवसर प्रदान करें और उन्हें अपने अनुमानों के आधार रूप में तर्कों को प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- लेखक और चित्रकार के नामों को ऊँचे स्वर में पढ़ें। इससे बच्चों के बीच में यह संदेश जाता है कि लेखक और कलाकार भी वास्तविक लोग हैं।
- आप पढ़कर सुनाने के लिए तैयारी के साथ जाएँ। यह आपको कहानी या कविता को अपना बनाने (आत्मसात करने) का अवसर प्रदान करता है। इसकी कल्पना करते हुए आप इसे उचित विराम और भाव के साथ पढ़ सकेंगे।
- छोटे बच्चों के साथ इस कार्य के दौरान उन्हें किताब में दोहराव या संगीत के अवसरों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करें। इसके साथ ही उन्हें चित्रों पर चर्चा में भी शामिल करें। उनसे ओपेन-एंडेड प्रश्न पूछें, जिससे कि वे चित्रों में मौजूद दृष्टांतों और विवरणों पर ध्यान दे पाएँ।
- यदि बच्चे एक ही पुस्तक को बार-बार पढ़कर सुनाने के लिए कहें तो निराश न हों। इससे यह मालूम होता है कि आप अच्छे से काम कर रहे हैं।
- इस प्रक्रिया को एक सवाल के साथ समाप्त करना अच्छा होता है, क्योंकि इससे चर्चा का अवसर मिलता है। उदाहरण के लिए, सोचने के लिए एक महत्त्वपूर्ण सवाल यह हो सकता है कि, "यह चित्र हमें ऐसा क्या बताता है जो टेक्स्ट नहीं बता रहा है?"

इससे भी बच्चे आरंभिक भाषाई दक्षताओं के सभी पहलुओं से परिचित होते हैं और मुख्य रूप से मौखिक और लिखित भाषा के आपसी संबंध और पढ़ने-लिखने को कक्षा और स्कूल की औपचारिकता से आगे अपने व्यक्तिगत परिवेश और परिप्रेक्ष्य में समझ पाते हैं।

- **साझा पठन (शेयर्ड रीडिंग)**
  यह प्रक्रिया इस मायने में महत्त्वपूर्ण है कि इसके द्वारा हम यह प्रदर्शित कर सकते हैं कि बोली जाने वाली भाषा और लिखित शब्द किस प्रकार एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और बच्चों को आसानी से यह समझा सकते हैं कि प्रवाह और भाव के साथ कैसे पढ़ा जा सकता है। इस प्रक्रिया में बड़े फॉण्ट साइज़ और चित्रों वाली बिगबुक की सहायता से शब्द-दर-शब्द को पढ़ते चलना होता है। इस दौरान बच्चों को उंगली रखते हुए आगे बढ़ने को कहा जा सकता है। कुछ दिनों तक इस प्रक्रिया को अपनाने के बाद बच्चों को भी उनकी सहजता के अनुसार पढ़ने की इस प्रक्रिया में शामिल होने और साथ-साथ पढ़ने के लिए कहा जा सकता है। दोहराए गए शब्दों या पंक्तियों से युक्त किताबें या कहानियाँ बच्चों को आसानी से इस प्रक्रिया में शामिल होने में सहायक होती हैं। इन सत्रों के दौरान मौका मिलते ही विभिन्न विराम चिह्नों के प्रयोगों की ओर ध्यान आकृष्ट किया जा सकता है और इनके द्वारा अर्थ कैसे निर्मित, प्रभावित या परिवर्तित होता है, की भी चर्चा की जा सकती है। बिगबुक उपलब्ध न होने पर इसी प्रक्रिया को चार्ट पर कहानी या कविताओं को बड़े फॉण्ट में लिखकर अपनाया जा सकता है।

Figure 73 पढ़ने की संस्कृति विकसित करने में साझा पठन का योगदान महत्त्वपूर्ण है

- **बच्चों द्वारा कहानियों को दोबारा सुनाया जाना**
  बच्चों द्वारा सामूहिक रूप से पढ़ी गई कहानियों को सुनाने में उनकी मदद करें। उन्हें कहानियों को सुनाने के दौरान रोलप्ले, मुखौटे या पपेट का प्रयोग करने के यथावश्यक प्रासंगिक सुझाव भी

दें। यदि बच्चों को आकर्षक कहानियाँ या कविताएँ सुनने, पढ़ने को मिलती हैं तो वे अक्सर इन्हें अपने खाली समय में गुनगुनाते या दोहराते देखे जा सकते हैं। वे कहानियों के डायलॉग को पात्रों के अनुसार नकल उतारते सुने और देखे जा सकते हैं। अतः उनकी इस रुचि का उपयोग उन्हें विस्तार से इन प्रक्रियाओं को सिखाने और प्रस्तुत करने के लिए, रीडिंग कॉर्नर के निर्धारित समय में किया जा सकता है।

- **निर्देशात्मक पठन**
  इस गतिविधि के द्वारा बच्चों को पढ़ने में प्रवाह और पढ़ने के लिए प्रक्रियाएँ तय करने में सहायता मिलती है। कक्षा को 3-4 उपसमूहों में उनके पठन कौशल के आधार पर विभाजित करें। प्रत्येक समूह को उनके पठन स्तर से अनुरूप एक-एक कहानी पढ़ने के लिए दें। सभी समूहों में बच्चों को पाठ की विषयवस्तु के बारे में बताएँ, और साथ ही साथ पाठ में आए तीन-चार अपरिचित शब्दों से भी उन्हें परिचित कराएँ। इसके बाद उन्हें स्वयं से पाठ को पढ़ने के अवसर दें। इस दौरान प्रत्येक समूह का अवलोकन करते रहें और जिन्हें पढ़ने में समस्या आ रही हो, उन्हें पढ़कर दिखाएँ। यदि कोई ऐसा शब्द है जिसके बारे में सभी समूहों से बात आवश्यक लगे तो सबको सम्मिलित करते हुए चर्चा करें। इसके बाद बच्चों से उनके पढ़े हुए से जुड़े अनुभवों पर चर्चा करें। यह जानने का प्रयास करें कि उन्हें क्या समझ में आया, कितना समझ में आया। इस प्रक्रिया के द्वारा हम पढ़ने के पहले, दौरान और बाद के कई ऐसे अवसरों से गुज़रते हैं जो बच्चों को यह समझाती हैं कि किसी परिच्छेद या किताब के पढ़ने के संदर्भ में शब्द और उनके अर्थ किस प्रकार काम करते हैं और कैसे संदर्भ अर्थ को प्रभावित करता है।

- **स्वतंत्र पठन**
  बच्चों को स्वतंत्र रूप से किताबों को देखने, समझने और पढ़ने के नियमित मौके प्रदान किए जाएँ। यह कक्षा के निर्धारित समय में भी किया जा सकता है (उदाहरण के लिए जब कक्षा का एक समूह शिक्षक के साथ निर्देशात्मक पठन की प्रक्रिया में व्यस्त है तो दूसरे समूह को रीडिंग कॉर्नर में किताबों के साथ समय व्यतीत करने का मौका दिया जा सकता है)। यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि बच्चे इस समय और इस दौरान के पठन को स्कूल द्वारा निर्धारित अभ्यास न मानकर अपने आनंद के लिए स्वयं द्वारा चुनी गई किताबों के बीच समय बिताना मानें। इससे उनकी पढ़ने में रुचि बढ़ेगी और उन्हें यह भी समझ में आएगा कि पढ़ना खाली समय में की जा सकने वाली गतिविधि भी है।

- **किताबों पर आधारित गतिविधियाँ**
  किताबों के साथ बच्चों के संबंध को प्रगाढ़ करने और उन्हें इनके साथ अधिक समय बिताने के अवसर देने के लिए पढ़ी गई किताबों के आधार पर लिखने, चित्र बनाने या फिर आर्ट-क्राफ्ट के कार्यों के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। बच्चों को पढ़ी गई किताब के बारे में साधारण शब्दों में अपने विचार लिखने को कहा जा सकता है। वे बता सकते हैं कि उन्हें किताब क्यों अच्छी लगी या अच्छी नहीं लगी। वे बाल पत्रिकाओं में निहित चित्र, शब्द पहेलियों आदि को भी इस दौरान सुलझा सकते हैं।

संक्षेप में रीडिंग कॉर्नर का उद्देश्य बच्चों को किताबों और पढ़ने के प्रति आकर्षित करने के साथ ही किताबों के साथ उन्हें अधिक समय व्यतीत करने के मौके उपलब्ध कराना है। अतः यह आवश्यक है कि रीडिंग कॉर्नर आकर्षक हो, वहाँ किताबें दिलचस्प तरीके से प्रदर्शित की गई हों (उदाहरण के लिए विभिन्न थीम्स जैसे बरसात, चिड़िया, जानवर, दोस्ती आदि के अनुसार), और वहाँ किताबों से जुड़ी रोमांचक गतिविधियाँ नियमित होती हों।

लिखने का कोना (राइटिंग कॉर्नर)

रीडिंग कॉर्नर के ठीक बगल में ही या फिर सुविधानुसार राइटिंग कॉर्नर को भी स्थापित किया जा सकता है। यह एक ऐसा स्थान होगा जहाँ बच्चे अपनी पसंद के अनुसार आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींच सकेंगे, चित्र बना सकेंगे, लिख सकेंगे, कट पेस्ट कर सकेंगे, और इसके अतिरिक्त प्रिंट से विभिन्न माध्यमों या सामग्रियों की सहायता से जुड़ रहे होंगे।

इस कोने में लिखने या लिखने को प्रेरित करने वाली समस्त सामग्री मौजूद होगी (उदाहरण के लिए- पेंसिल, स्केच पेन, क्रेयॉन, इरेज़र, शार्पनर, पेपर, कार्डशीट, चार्ट पेपर, नोट पैड, चॉक, ग्लू, स्लेट या बच्चों के लिए कक्षा की सभी दीवारों पर एक निश्चित स्थान तक काले रंग से रंगा उनका लिखने का स्थान, पपेट, मुखौटे, चित्र, अक्षर, शब्द कार्ड और बच्चों के लेखन को प्रदर्शित करने के लिए निर्धारित स्थान)।

राइटिंग कॉर्नर से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ

- **साझा लेखन**

  हम बच्चों के समक्ष किसी पढ़ी गई कहानी या घटना के आधार पर साझा विचारों के साथ लिखने की प्रक्रिया को प्रदर्शित कर सकते हैं। इसके लिए बच्चों को बारी-बारी से बोर्ड या चार्ट पेपर पर एक शब्द या वाक्य लिखने के लिए आमंत्रित कीजिए, इस तरह से कि प्रत्येक बच्चे द्वारा लिखा गया शब्द या वाक्य पिछले वाक्य से जुड़ते हुए लिखे हुए को आगे बढ़ा रहा हो। इसके द्वारा बच्चे कहानी को भी एक-एक वाक्य के रूप में आगे बढ़ा सकते हैं। अभी पढ़ना-लिखना सीख रहे बच्चे चित्रों के माध्यम से यह प्रयास कर सकते हैं।

- **विविध प्रकार के लेखन का अनुभव प्रदान करना**

  बच्चों को पढ़ने के लिए विभिन्न प्रकार की किताबें देकर उन्हें लेखन के विभिन्न प्रकारों से अवगत कराया जाना चाहिए। फिर उनके इस अनुभव का उपयोग करते हुए लिखने के विविध विषयों और विधाओं में लिखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक दिन वे विस्तार से देखे हुए मेले का विवरण लिख सकते हैं, तो दूसरे दिन उन्हें मित्र या परिचित को पत्र लिखने का अनुभव दिया जा सकता है, तीसरे दिन उन्हें कक्षा या स्कूल के लिए नियमों की सूची तैयार करने को कहा जा सकता है, और फिर इसके बाद उन्हें उनकी पहली कविता लिखने में मदद की जा सकती है। हमें इस पूरी प्रक्रिया में यह ध्यान रखना होगा कि लिखने के कौशल का विकास भी लिखने के साथ ही साथ होता है, अतः उन्हें लिखने के जितने अधिक और विविध मौके मिलेंगे, उनका लेखन उतना ही बेहतर होगा।

- **निर्देशित व स्वतंत्र लेखन**

  यह आवश्यक है कि हम आरंभिक कक्षाओं के बच्चों को, उनके लिखने या अभ्यासी लेखन के प्रयासों को प्रोत्साहित करें और उनकी सहायता करें। उदाहरण के लिए कहानियाँ, कविताएँ, पोस्टर, लेबल या सूची, पत्र या बर्थडे कार्ड आदि के रूप में लिखने को प्रोत्साहित करना। निर्देशित लेखन के लिए हमें बच्चों को स्पष्ट उद्देश्य, विषय या शीर्षक सुझाने होंगे और फिर उसे पूरा करने के लिए बच्चों के साथ एक जानकारीपरक चर्चा करनी होगी, जिससे कि बच्चे उस विषय पर आधारित अपने विचारों को एकत्रित कर सकें, उन्हें सुगठित कर सकें और उन्हें एक क्रम में रखकर लिख सकें। उदाहरण के लिए, बच्चों को अपने प्रिय जानवर पर लिखने को कहा जाए। इस प्रक्रिया पर आगे बढ़ने से पहले बच्चों से उनके पसंदीदा जानवरों के नाम पूछे जाएँ। उन्हें उनके नाम के साथ साथ लिखा जाए। इसके बाद हम बच्चों के समक्ष अपनी पसंद के जानवर का नाम बताएँ, और फिर उनके सामने ही उनके बारे में अपने विचार लिखें, उन्हें पढ़ने दें या पढ़कर सुनाएँ, तथा यह भी उद्धृत करें कि इस विषय पर लिखते हुए किन-किन उपविषयों पर लिखा गया है। जैसे– कौन-सा जानवर है और वह कैसा दिखता है, वही पसंद क्यों है या उसकी खूबियाँ क्या हैं, वह कहाँ रहता है, और उसकी पसंद-नापसंद आदि। इसके बाद बच्चे अपने स्तर पर इसे लिखने की शुरुआत करें और फिर हम या शिक्षक बारी-बारी से लिख रहे बच्चों के पास जाएँ, उनके लिखने पर बात करते हुए आवश्यकता होने पर उन्हें सहायता या दिशा प्रदान करें।

  इस स्तर पर हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि केंद्र में अर्थ को रखा जाए कि बच्चे जो कहना चाह रहे हैं, वो उनके लिखने में आ रहा है कि नहीं और मात्राओं या विराम चिह्नों से संबन्धित गलतियों को नज़रअंदाज़ किया जा सकता है। शुरुआती स्तर पर बच्चों को अपनी बात कहने के लिए शब्दों के साथ ही साथ चित्रों को उकेरने का भी मौका दें, जब तक कि वो लिखकर अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास हासिल नहीं कर लेते हैं।

- **चित्रों के द्वारा लिखने के लिए प्रोत्साहित करना**

  आप कोई कहानी मौखिक रूप से सुनाते वक़्त या पढ़कर सुनाते वक़्त बोर्ड या चार्ट पेपर पर उससे संबन्धित चित्र भी बनाते चल सकते हैं। इससे बच्चों को कहानियों को समझने में मदद मिलती है और संभव है कि बच्चे भी सुनी हुई कहानियों को दुबारा सुनाते वक़्त इस तरह का प्रयास करना आरंभ करें।

- **बच्चों को उनकी अपनी कहानी की किताब बनाने में मदद करें**

  बच्चों की अपनी कहानियों को हम उनके लिए पेजों पर लिखकर दे सकते हैं, जिसके आधार पर वे उनके इर्द-गिर्द चित्र निर्मित कर सकें। लिख सकने में सक्षम कक्षा दो या उससे आगे की कक्षाओं के बच्चे अपनी कहानियों को स्वयं लिख सकते हैं। बच्चों को एक-दूसरे की कहानी सुनने और उस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए प्रेरित करें। इन पुस्तिकाओं को रीडिंग कॉर्नर में प्रदर्शित करें और बच्चों को इन्हें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

- **पत्र लेखन**

बच्चों के साथ कक्षा में बातचीत के अनुभव यह बताते हैं कि बच्चों के पास ऐसे ढेरों अनुभव और बातें होती हैं जिन्हें वे एक-दूसरे से साझा कर सकते हैं, सुना सकते हैं और लिख सकते हैं। ये अनुभव बच्चों के आसपास के होते हैं। ये किसी दोस्त या किसी रिश्तेदार से जुड़े हो सकते हैं। ये अनुभव ऐसे हो सकते हैं जब बच्चों को बहुत अच्छा लगा हो, या ऐसे भी हो सकते हैं जब उन्हें खराब लगा हो। इन अनुभवों को अभिव्यक्त करने के अवसर देना पढ़ने-लिखने के विस्तार के साथ ही एक-दूसरे से आत्मीय संबध बनाने में मददगार होते हैं। पत्र लेखन ऐसे स्पेस बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है जहाँ वे अपनी असहमतियाँ या नाराज़गी खुलकर कह सकें और सुन भी सकें।

पत्र लेखन एक कला है, कोई मशीनी कौशल भर नहीं। इसी समझ के साथ इसकी रचनात्मकता और सृजनशीलता को अक्षुण्ण रखा जा सकता है। कुशलक्षेम से आगे बढ़कर पत्र को भावनाओं व विचारों को अभिव्यक्त करने का साधन बनाना पड़ेगा।

लेकिन हम अक्सर देखते हैं कि बच्चों में पत्र लेखन की क्षमता विकसित करने के लिए पत्र के प्रारूप एवं खास तरह की कृत्रिम अभिव्यक्ति पर जमकर अभ्यास कराया जाता है। कक्षा में मुख्य बल पत्रों के प्रारूप पर होता है। पता कहाँ लिखा जाए? संबोधन किस प्रकार का हो? पत्र की शुरुआत कैसे की जाए? अंत कैसा हो? आदि। इसके परिणाम में अभिव्यक्ति का पक्ष कहीं-न-कहीं गौण हो जाता है। लेकिन पत्र का मुख्य मंतव्य अपनी भावनाओं और विचारों को किसी अन्य तक पहुँचाना होता है। जब पत्र अपने मुख्य उद्देश्य से ही भटक जाए तो रचनात्मक लेखन के नाम पर यह बस मशीनी और कोरा अभ्यास ही ठहरता है।

दूसरी बात, पत्र के विषय भी सदियों से एक जैसे होते हैं। जैसे- प्रधानाध्यापक से अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र, दादाजी या पिताजी से कहीं बाहर घूमने जाने के लिए आज्ञा पत्र, दोस्त से उसकी तबीयत पूछने के लिए पत्र आदि। कक्षाओं में प्रचलित पत्र लेखन के अधिकतर विषय ऐसे होते हैं जिनका बच्चों की निजी ज़िंदगी से कोई लेना-देना नहीं होता है। इनको लिखने से संबन्धित जो प्रारूप दिया जाता है, उसकी भाषा भी बोझिल, उबाऊ और कृत्रिम होती है।

इसमें परिवर्तन की ज़रा भी गुंजाइश नहीं होती और कई बार यह इतना संक्षिप्त और अस्पष्ट होता है कि सिर्फ़ नाम, दिनांक और ज़्यादा से ज़्यादा विषय भर बदलकर बच्चों से पत्र लेखन की इतिश्री करा ली जाती है। और बच्चे ये ठीक-ठीक समझ ही नहीं पाते कि उन्हें करना क्या है।

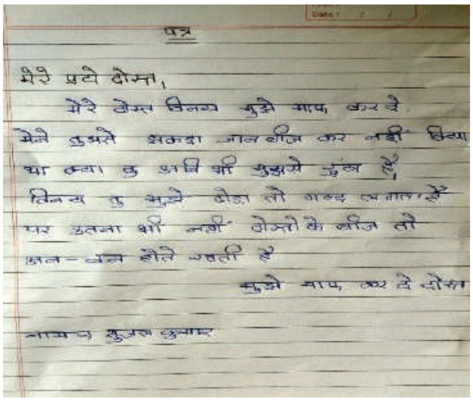

Figure 74 अभिव्यक्ति का एक माध्यम होती है पत्र लेखन

अतः इन कक्षाओं में लेखन कार्य एक प्रक्रिया के बतौर

होना चाहिए, न कि उत्पाद के रूप में। ये दोनों चीज़ें अलग हैं, इनकी कक्षा प्रक्रियाएँ एक-दूसरे से भिन्न हैं। शिक्षक जब लेखन को उत्पाद के रूप में देखते हैं तो उद्देश्य और थीम पहले से ही तय होती है और शिक्षक बस सही-गलत तय करता है। इसके ठीक उलट हम लेखन को उत्पाद के स्थान पर प्रक्रिया का हिस्सा मानें तो कक्षा की प्रक्रिया बदल जाएगी। यहाँ शिक्षक मददगार की भूमिका में होंगे, वे बच्चों के साथ संवाद करेंगे, ताकि बच्चे उस मुद्दे को व्यापक सन्दर्भ में अनुभवों से जोड़ पाएँ। फिर शिक्षक मददगार की भूमिका में बच्चों के लेखन पर फीडबैक देंगे, जिससे कि बच्चे अपने लेखन को निरंतर बेहतर करते रहें। इसकी शुरुआत बातचीत से करना बेहतर होगा। इस बातचीत की शुरुआत सीधे ऐसी बातों से की जा सकती है जो बच्चों को बहुत अच्छे या बहुत ख़राब लगते हों। कुछ ऐसे दोस्त या रिश्तेदार जिन्हें वे बहुत याद करते हों या उनसे कुछ कहना चाहते हों। शुरुआत ऐसे भी हो सकती है कि आजकल आपके यहाँ क्या-क्या कामकाज हो रहा है। बच्चे बारी-बारी से इन सभी बिन्दुओं से जुड़े अपने विचार साझा कर सकते हैं।

एक शिक्षिका ने बच्चों से बातचीत की, उनके यहाँ आजकल खेत में क्या-क्या बोया जा रहा है? बच्चों ने कई फसलों के नाम और बुआई से जुड़े अनुभव साझा किए। इसके बाद शिक्षिका ने बच्चों से सवाल किया, मान लो आपके कोई रिश्तेदार या दोस्त हैं जो आपके गाँव में नहीं रहते और आप उन्हें ये सब बताना चाहते हो तो कैसे बताओगे? जवाब में सभी बच्चों ने पत्र लिखने की बात की। इस प्रकार बच्चों को पत्र लिखने के लिए तैयार किया गया। इसी तरह एक अन्य कक्षा में शिक्षिका ने बच्चों से यह बातचीत की, उन्हें कब-कब बहुत ख़राब लगता है? इसमें बच्चों ने ज़्यादातर एक-दूसरे से झगड़ा करना, किसी को नाम बिगाड़कर बुलाना जैसी बातें साझा कीं। फिर शिक्षिका ने बच्चों द्वारा लिखे गए पत्रों के चार नमूने बच्चों को पढ़कर सुनाए और बच्चों को एक-एक पन्ना देकर कहा कि आप जो पत्र लिखना चाहते हैं, उसे इस पन्ने पर लिख दो। शिक्षिका ने पत्र लेखन के प्रारूप पर भी बात की, जैसे- जिसे पत्र लिख रहे हैं, उसका नाम पहले लिखेंगे; फिर जो बात कहना चाह रहे हों, उसे लिखेंगे और अंत में अपना नाम।

उदाहरण

इस उदाहरण में हम देख सकते हैं कि बच्चों के साथ की गई बातचीत उनके लेखन में झलक रही है। बच्चों को लिखने का एक सार्थक व रोचक संदर्भ मिला है और उन्हें दिल खोलकर अभिव्यक्ति का मौका मिला। बच्चों के इस लेखन में मात्राओं की गलतियाँ भी देखी जा सकती हैं, लेकिन समझने की बात है कि इन बच्चों को अलग-अलग संदर्भों में जितने ज़्यादा लिखने के मौके मिलेंगे और उन्हें कक्षा में पढ़ा जाएगा, उतनी ही जल्दी मात्राओं की गलतियाँ भी कम होती जाएंगी। शिक्षक चाहें तो एक-एक बच्चे को उनकी गलतियों के बारे में फीडबैक भी दे सकते हैं।

- **डायरी लेखन**

  डायरी लेखन बच्चों को अनुभव लिखने और एक-दूसरे के अनुभव पढ़ने के सार्थक अवसर प्रस्तुत करता है। बच्चों के डायरी लेखन से तात्पर्य यही है कि बच्चे अपने अनुभवों को लिखें। ये अनुभव किसी भी प्रकार के हो सकते हैं। जैसे स्कूल में अपने दोस्तों के साथ के, अपने घर परिवार के बारे में और कहीं घूमने-फिरने के। डायरी लेखन के सम्बन्ध में दो बातें मुख्य रूप से ध्यान रखना

चाहिए- तिथियाँ व तथ्य। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के अनुभव ही तथ्य होते हैं, जिनमें बच्चे अनुभवों और कल्पना का समावेश कर सकते हैं। यहाँ डायरी लिखने का उद्देश्य यह है कि बच्चे तिथिवार व नियमित अपने अनुभवों को दर्ज करें। ऐसा करने से बच्चों का लेखन कौशल मजबूत और विस्तारित होगा, जिसे हम कभी भी बच्चे के लेखन की विकास यात्रा के रूप में देख सकते हैं। इन्हें बच्चे अपने भविष्य के लिए भी सहेजकर रख सकते हैं।

हमारी पाठ्यपुस्तकों में भी डायरी लेखन के कुछ उदाहरण मिल जाएँगे। जैसे- पर्यावरण अध्ययन एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तक कक्षा चार 'हमारे आसपास' में दिया गया पाठ 'ओमना की डायरी', हिंदी पाठ्यपुस्तक 'रिमझिम' कक्षा पाँच का पाठ 'वे दिन भी क्या दिन थे' इत्यादि। बच्चों को बच्चों के द्वारा लिखे गए डायरी लेखन के नमूने दिखाना भी अनुभवों को समृद्ध करने का एक बेहतर तरीका हो सकता है। अनुभव जाग्रत करने व दर्ज करने हेतु बाल विज्ञान पत्रिका 'चकमक' आदि में छपे बच्चों के अनुभवपरक लेखों का सन्दर्भ लिया जा सकता है। इन अनुभवों को पाठों के संदर्भ में लेते हुए और इनमें अपने अनुभव भी शामिल करते हुए बातचीत आयोजित की जा सकती है।

(डायरी लेखन से जुड़ी प्रक्रिया को 'अन्य विधाओं द्वारा भाषा शिक्षण' वाले खंड में हम विस्तार से देखेंगे)

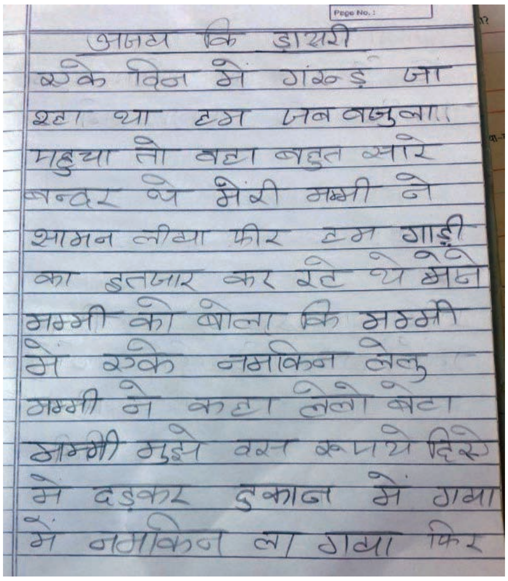

Figure 75 एक बच्चे की डायरी की एक झलक

भाषाई रूप से समृद्ध कक्षा की चर्चा और उस दिशा
में प्रयास करते हुए हमें इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि कक्षा को सजाना और प्रिंट रिच बनाना बिलकुल अलग है। प्रिंट रिच सामग्री का उपयोग दिन-प्रतिदिन के भाषा शिक्षण प्रक्रियाओं में होना ही चाहिए और उनके तथा भाषा शिक्षण के बीच एक संबंध बना रहना चाहिए। प्रिंट रिच और इसके साथ ही साथ पढ़ने और लिखने से संबन्धित कॉर्नर स्थापित करने हेतु संदर्भ सामग्री की एक सूची यहाँ प्रस्तुत की जा रही है:

- बाल साहित्य के साथ ही साथ कक्षा में अनेक कैलेंडर और चार्ट डिस्प्ले किये जाएँ और समय-समय पर शिक्षण में इनका सन्दर्भ लिया जाता रहे। इस सामग्री में पाठ्य सामग्री संबंधित चार्ट, जैसे- पहेलियाँ, मुहावरे, प्रश्नसूची, मापन प्रणालियों के चार्ट, पशु-पक्षियों के बारे में सूचनाओं वाले चार्ट, भोजन व आवास संबंधी चार्ट, पेड़-पौधों के डाटा चार्ट आदि शामिल किए जा सकते हैं। साथ ही विभिन्न प्रकार के नियम चार्ट, जैसे- सड़क सुरक्षा, दिशा सूचक इत्यादि के चार्ट उपयोग में लाए जा सकते हैं। विद्यालय के नियमों के चार्ट, जैसे- समय सारणी, स्कूल और कक्षा से जुड़े सबकी सहमति से बने नियम, बच्चों की कमेटियों के संचालन से सम्बंधित नियम, पुस्तकालय कमेटी के संचालन के चार्ट भी लगाए जाने चाहिए।

- विद्यालय में स्थानीय भाषा शब्दकोश के चार्ट लगे हों। इसके साथ बच्चों के परिवेश और अनुभव से जुड़े विभिन्न प्रकार के एकल, सामूहिक स्टिल (स्थिर) और क्रियात्मक चित्र आदि भी उपयोग में लिए जा सकते हैं।
- कविताओं और कहानियों के चार्ट लगातार बदले जा सकने की संख्या में होने चाहिए, ताकि बच्चों के बीच नई कहानियों और कविताओं को पढ़ने का चाव और कौतूहल बना रहे। यदि संभव हो तो बच्चों से जुड़े और उन्हें आकर्षित करते विभिन्न प्रकार की ऑडियो विज़ुअल सामग्रियों को भी इसी सामग्री में शामिल करना बेहतर होगा।
- पहेली का कोना जिसमें कुछ नमूना पहेलियाँ लिखी हों और बच्चे दिए गए विषयों पर अपनी पहेलियाँ दर्ज करें।
- मेरी बात का एक कोना जिसमें बच्चे अपने मन की बात को बेझिझक लिख सकें। यहीं बच्चों के काम को भी डिस्प्ले किया जाए और इसमें बच्चों का लिखित कार्य, चित्र, ऑरिगेमी आदि को स्थान दिया जाए।
- हमारे अपने TLC और LRC में मौजूद थैला पुस्तकालय की पुस्तकों का उपयोग भी रीडिंग कॉर्नर के लिए किया जा सकता है। इसके साथ ही विशेषकर कक्षा एक और दो के बच्चों के लिए शिक्षकों को बरखा सीरीज़ की किताबों से परिचित कराया जा सकता है।

रीडिंग और राइटिंग कॉर्नर से जुड़ी गतिविधियों को देखें तो इन्हें कराए जाने की निरंतरता के क्रम में तीन भागों में बाँटा जा सकता है। उदाहरण के लिए:

प्रतिदिन किए जाने वाले काम

- पढ़ने का समय तय करना। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा की कक्षा के अतिरिक्त प्रत्येक दिन की एक पढ़ने की घंटी भी तय होनी चाहिए और इसके लिए कम से कम 40-50 मिनट निर्धारित किए जाने चाहिए। इस दौरान सभी एक साथ पढ़ सकते हैं, या कक्षावार लंच के पहले या लंच के बाद बैठ सकते हैं। बच्चे अपनी पसंद से किताबें स्वयं चुनें, पढ़ें और चर्चा करें। इस काम में शिक्षक बच्चों की मदद कर सकते हैं। इस दौरान शिक्षक की अनुपस्थिति में ऐसे बच्चे जिनको पढ़ना आ गया है, ऐसे बच्चों की मदद करें जिनको अभी पढ़ना नहीं आया, बड़े बच्चे छोटे बच्चों की मदद करें।
- इस समय का एक हिस्सा ऐसा हो जिसमें हम या शिक्षक बच्चों की पसंद की किसी एक किताब/कहानी को पढ़कर सुनाएँ और फिर उस पर चर्चा करें। इसके बाद के दूसरे हिस्से में बच्चों को स्वतंत्र पठन के लिए प्रेरित किया जाए और फिर उसके बाद उन्हें पढ़ने से जुड़े अपने अनुभव, पसंद-नापसंद, प्रतिक्रिया इत्यादि को सृजनात्मक रूप में, चित्र या लिखित रूप से व्यक्त करने हेतु प्रेरित करें।

सप्ताह में किए जाने वाले काम

- पढ़ी हुई किताबों पर चर्चा– इस काम को सुबह की सभा या शनिवार की सभा में किया जा सकता है। कोई और समय निर्धारित कर सकते हैं। इसमें ज़रूरी है कि बच्चों ने छह दिनों में क्या-क्या पढ़ा है? उसमें उन्हें क्या अच्छा लगा, क्या समझे? आदि पर बात हो। हम स्वयं भी अपनी पढ़ी किताब/

कहानी से चर्चा शुरू कर सकते हैं। बच्चों द्वारा घर पर कहानी सुनाने से जुड़े अनुभवों पर चर्चा, उन्हें सुनना और फिर लिखने के लिए प्रेरित करना।

- पढ़ी हुई किताब का सारांश लिखना, किसी पात्र विशेष के स्वभाव या चित्रण पर लिखना, किताब की अपने शब्दों में समीक्षा लिखना, या फिर चित्रों की सहायता से भी इन्हें अभिव्यक्त किया जा सकता है। पढ़ी गई किताबों पर लिखना, चित्र बनाना, कोई नाटक या रोलप्ले करना, 'दीवार पत्रिका', 'बॉक्सफाइल' आदि के रूप में डिस्प्ले करना आदि।
- लाइब्रेरी संचालन पर चर्चा– किताबों का रखरखाव, इसमें आ रही किसी दिक्कत पर बात करना, किताबों की मरम्मत करना, कितनी पुस्तकों का लेन-देन हुआ आदि की चर्चा करना।

माह में किए जा सकने वाले काम

- इस बात का विश्लेषण करना कि कौन-सी किताबें ज़्यादा पढ़ी जा रही हैं। किसी दिए गए महीने में किन किताबों पर बात की गई, की सूची निर्मित और प्रदर्शित करना। नई पठन सामग्री जुटाना।
- बच्चों के पढ़ने की गति या तरीकों में आ रहे बदलाव को देखना और दर्ज करना, उनकी प्रगति का विश्लेषण करना।

उपरोक्त प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित सामग्री का सृजन, उनको सहेजना और उनका पुनः इस्तेमाल

बच्चों और शिक्षकों द्वारा निर्मित उक्त प्रक्रिया-जनित सामग्री, जैसे चित्र, आलेख को एक अलग तरह की प्रक्रिया के ज़रिए अनेक रूपों में व्यवस्थित कर सहेजा जा सकता है। विद्यालय में उपलब्ध अवसरों, सम्भावनाओं, स्थानों में प्रदर्शित किया जा सकता है। इस सामग्री का सृजनात्मक उपयोग करते हुए इस प्रक्रिया में बच्चों को भागीदार बनाया जा सकता है। इसके साथ ही इस सामग्री का उपयोग पुन: पढ़ने-लिखने में भी किया जा सकता है। जैसे–

सुबह की सभा

सुबह की सभा तो आमतौर पर हर स्कूल में होती है, जिसमें बच्चे लाइन में खड़े होकर कोई प्रार्थना गाते हैं, इसके साथ ही समूह-गान, पीटी व राष्ट्रगान भी प्रतिदिन होने वाली गतिविधियाँ होती हैं। भाषा शिक्षण के संदर्भ में सुबह की सभा को भी एक प्लेटफॉर्म के रूप में देखा जा सकता है और इसे कक्षा शिक्षण से जोड़ा जा सकता है। इस दौरान यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रतिदिन होने वाली गतिविधियों में विविधता और नयापन हो। सुबह की सभा एक ऐसा अवसर होता है जब सभी बच्चे और शिक्षक एक मंच पर एक साथ होते हैं, इसलिए यहाँ भाषा शिक्षण को ध्यान में रखते हुए ऐसी गतिविधियाँ की जा सकती हैं जो सभी के लिए सार्थक हों।

नीचे ऐसी कुछ गतिविधियाँ सुझाई जा रही हैं और आप इनके जैसी और भी गतिविधियाँ सोच सकते हैं:

पढ़ी हुई किताब के अनुभव सुनाना

प्रत्येक विद्यालय में पुस्तकालय की स्थापना और उसके नियमित संचालन और रखरखाव की अपेक्षा की गई है। पुस्तकालय संचालन और पढ़ने-लिखने की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सुबह की सभा भी एक बेहतर फोरम होता है, जहाँ बच्चे अपनी पढ़ी हुई किसी किताब के अनुभव सुनाएँ। बच्चों के

Figure 76 पढ़ी गई कहानियों का मंचन पढ़ने के प्रति आकर्षण में वृद्धि करता है

साथ मिलकर शिक्षक इसकी योजना बना सकते हैं कि किस दिन कौन-कौन से बच्चे अपनी पढ़ी हुई किताब के अनुभव साझा करेंगे। शिक्षक स्वयं भी इस फोरम में किसी किताब के अनुभव सुना सकते हैं, जिससे कि बच्चों को आइडिया लगेगा और वे तैयारी के साथ किसी किताब को पढ़ेंगे और अनुभव साझा करेंगे।

'इनसे मिलिए' और परिचय गतिविधि

सभी बच्चे खुलकर अभिव्यक्ति कर पाएँ, यह सुबह की सभा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। कक्षा में तो बच्चे एक-दूसरे को जानते-समझते हैं, लेकिन अन्य कक्षाओं के बच्चों को भी जानने-समझने में सुबह की सभा बेहतर फोरम हो सकता है। इसमें अलग-अलग कक्षाओं के बच्चे सामने आकर एक-दूसरे का परिचय जान सकते हैं, जैसे- नाम, कहाँ से आते हैं, घर में कौन-कौन हैं, उन्हें क्या अच्छा लगता है, क्या ख़राब लगता है आदि अनेक प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं। इस प्रक्रिया को किसी रिटायर्ड शिक्षक, डॉक्टर, सिपाही, पोस्टमास्टर, किसान आदि को बुलाकर व उनका साक्षात्कार लेकर और भी रोचक बनाया जा सकता है। इसके लिए पहले से ही तैयारी करनी होगी, जो कि कक्षा शिक्षण के दौरान की जा सकती है।

झटपट नाटक / तुरंती

किसी स्थान, जैसे- स्कूल, मंडी, रेलवे स्टेशन, बाज़ार, अस्पताल आदि के बारे में एक मिनट सोचने के लिए कहें। उदाहरण के लिए अस्पताल के बारे में सोचते हुए अपने लिए कोई एक पात्र चुनें। अब 6-7 बच्चे एक साथ आकर अस्पताल का कोई सीन क्रिएट करें, जिसमें प्रत्येक प्रतिभागी कोई-न-कोई किरदार निभा रहा हो। यह किसी कहानी के साथ भी किया जा सकता है। यह ज़रूरी है कि सुबह की

सभा में होने वाले इस तरह के कामों को कक्षा शिक्षण से जोड़कर देखा जाए। इसके लिए कक्षा शिक्षण के कई तरह के टास्क व उससे जुड़ी तैयारी की ज़रूरत होगी।

आज के मुख्य समाचार या कोई सन्देश

इसमें बच्चों को समूहवार ज़िम्मेदारी दी जा सकती है, जिसमें वे विभिन्न अख़बारों, टेलीविजन व आसपास होने वाली घटनाओं के आधार पर लिखित रूप में 'आज के मुख्य समाचार' सभी के समक्ष रखें। साथ ही कोई सार्थक संदेश या 'आज का विचार' जो बच्चों के स्तर का हो, इसे पढ़कर सुनाया जा सकता है।

डमशेरेड्स (Dumb Charade)

यह गेम टोली में साप्ताहिक रूप से खेला जा सकता है। इसमें एक टोली के बच्चे किसी पाठ पर, किताब पर, किसी व्यक्ति के बारे में, किसी फिल्म के बारे में, या किसी अन्य विषय पर बाकी बच्चों के सामने मूक अभिनय (बिना बोले) करेंगे। इससे पहले वे एक हिंट के तौर पर बाकी बच्चों को यह बता देंगे कि वे आज पुस्तकालय की किसी किताब या पाठ्यपुस्तक के किसी पाठ के बारे में, किसी एक शिक्षक के बारे में कुछ अभिनय करेंगे और फिर उनके अभिनय के आधार पर बाकी के बच्चों को अनुमान लगाकर सही उत्तर तक पहुँचना है।

प्रश्न पूछना

प्रश्न जिज्ञासा के वाहक होते हैं और सीखने की राह आसान करते हैं। इसलिए प्रश्नों का फलना-फूलना ज़रूरी है। अक्सर पाठों के अंत में दिए गए अभ्यास प्रश्नों के उत्तर देने को ही शिक्षा मान लिया जाता है और हम प्रश्न पूछने के दूसरे पहलुओं, जैसे- प्रश्न कर पाना, प्रश्न बनाना आदि पर गौर नहीं कर पाते। इसी से जुदा एक और पहलू है, प्रश्न का उद्गम जानने का। एक बच्चे द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर जो भी हो, लेकिन वो प्रश्न उस बच्चे के बारे में हमें बहुत कुछ बता देता है। इस नज़रिए से देखें तो यह ज़रूरी लगता है कि विद्यालय में कोई ऐसा मंच हो जहाँ बच्चे अपने मन के प्रश्नों को रख पाएँ, कह पाएँ और समूह की ओर से इसका जवाब दिया जाए या तलाशा जाए। इसे भी साप्ताहिक रूप से किया जा सकता है। बच्चे अपने मन के प्रश्न पूछें और बच्चे ही इसका जवाब दें। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक भी मदद करें। यदि किसी प्रश्न का जवाब उसी दिन नहीं दिया जा सकता तो शिक्षक यह तय करें कि जिस प्रश्न का जवाब आज नहीं मिला, उसका जवाब कौन खोजकर लाएगा और कब तक। इससे स्कूल में प्रश्न निर्माण करने, उन्हें पूछने, उनके उत्तर खोजने की संस्कृति विकसित होगी। फिर महीने में बच्चों द्वारा पूछे गए प्रश्नों को उत्तरों के साथ एक जगह लाया जा सकता है। दीवार पत्रिका या पुस्तकालय सामग्री में इसे शामिल किया जा सकता है।

पहेली-मुहावरे के अर्थ बूझना, वाक्य के लिए एक शब्द

इसके लिए बच्चों के साथ पहले तैयारी कर पहेली और मुहावरों के अर्थ बूझने, एक वाक्य के लिए एक शब्द बताने जैसे कार्य किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, रसोई में खाना पकाने वाला व्यक्ति- रसोइया, बस चलाने वाला व्यक्ति- बस ड्राइवर इत्यादि।

डिस्प्ले बोर्ड

आजकल ऐसे बोर्ड या कोई जगह स्कूल परिसर में अमूमन बनाए जाते हैं जिन पर सन्देश चस्पा करना आसान हो जाता है। उदाहरण के लिए, यहाँ आज की बात, आज के कार्यक्रम, आवश्यक सूचना, कलात्मक कार्य आदि डिस्प्ले किए जा सकते हैं।

कविता, कहानी और पढ़ना-लिखना

कविताएँ और कहानियाँ जीवन से जुड़ी और इसके अनुभवों को अपने में समेटे हुए होती हैं। ये बच्चों को भी उसी प्रकार आकर्षित करती हैं जिस प्रकार वयस्कों को। अतः भाषा की कक्षाओं में इनका उपयोग जहाँ एक ओर शिक्षण प्रक्रिया को रोचक बनाती है, वहीं दूसरी ओर पढ़ना और लिखना सीखने के अनगिनत आकर्षक मौके भी मुहैया कराती है। किन्तु हम पाते हैं कि विद्यालय इससे जुड़ी समझ के अलग-अलग स्तर पर हैं और इसी कारण कक्षाओं में भी इससे जुड़ी अलग-अलग चुनौतियाँ नज़र आती हैं, जो कि इस प्रकार हैं:

मान्यताएँ / चुनौतियाँ

भाषा की आरंभिक कक्षा में कविता और कहानी के प्रयोग को लेकर आमतौर पर प्रचलित मान्यताएँ और चुनौतियाँ इस प्रकार हैं:

- कुछ शिक्षक भाषा शिक्षण में कविताओं और कहानियों के महत्त्व को समझते ही नहीं हैं, तो वहीं कुछ शिक्षकों की समझ यह है कि कविता और कहानी को हावभाव से सुनाने के लिए किसी ख़ास तरह की विशेषज्ञता की ज़रूरत होती है और हर कोई यह नहीं कर सकता।
- कुछ शिक्षक कविताओं और कहानियों का उपयोग तो करते हैं, लेकिन इनके उपयोग की प्रक्रिया की जानकारी का अभाव होता है।
- कुछ कक्षाओं में पाठ्यपुस्तक के इतर भी कविताएँ और कहानियाँ सुनाई जाती हैं। यहाँ हर दिन की शुरुआत कविता या कहानी से होती है, मगर इन्हें शिक्षण के अगले स्तर पर जाकर पढ़ने और लिखने से जोड़ने में शिक्षकों को समस्या आती है। वे इस प्रक्रिया को लेकर स्पष्ट नहीं होते।
- अधिकतर कक्षाओं में कहानी के उपयोग के दौरान पूरा ज़ोर उस कहानी से मिलने वाली शिक्षा पर होता है और बच्चों को इसे स्पष्टता से याद करके बताना होता है। इससे बच्चे कहानी को अपने अनुभवों से जोड़ते हुए अलग-अलग परिदृश्यों में देखने के अवसर से वंचित रह जाते हैं।

उपरोक्त मान्यताओं के अतिरिक्त जब हम प्राथमिक कक्षाओं में कविता और कहानी के उपयोग की वास्तविकता देखते हैं तो यह हमें और निराश कर जाती है। अधिकतर जगह हम पाते हैं कि कक्षाओं में इन दोनों महत्त्वपूर्ण विधाओं के द्वारा भाषा न पढ़ाकर, इन्हें ही पढ़ाया जाने लगता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि कविता और कहानी के भाषा शिक्षण में महत्त्व, कक्षा में आ रही चुनौतियों और इस दौरान अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं पर अलग-अलग बात की जाए।

2.7 दीवार पत्रिका और बाल अख़बार

2.7.1 दीवार पत्रिका

अपनी बात लिखने का कौशल विकसित करना भाषा शिक्षण का एक मूलभूत कौशल है। इस कौशल को विकसित करने के लिए कक्षा शिक्षण के दौरान तथा स्कूल की अन्य प्रक्रियाओं में बच्चों को उनकी मौलिक समझ को लिखकर अभिव्यक्त करने के ढेरों अवसर दिए जाने की ज़रूरत है। इस प्रकार की मौलिक अभिव्यक्ति को छोटी-छोटी कहानियों के लेखन, कविता लेखन, अनुभव लेखन, साक्षात्कार लेखन और चित्र अभिव्यक्ति की शक्ल में उभारे जाने की ज़रूरत है। भाषा शिक्षण में प्रिंट रिच वातावरण की महती उपयोगिता है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों को भाषा की विभिन्न विधाओं में अपनी बात लिखने के ढेरों अनुभव दिए जाने की ज़रूरत है और यह प्रक्रिया कक्षा में भाषा शिक्षण का अहम हिस्सा होना चाहिए। चूँकि प्रत्येक बच्चा अपने आप में विशेष होता है तो उनकी मौलिक अभिव्यक्ति में भी विविधता आवश्यक है। हम यह भी जानते हैं कि बच्चे दुनिया के बारे में समझ अपने सहपाठी समूह में बातचीत करते हुए और एक-दूसरे के विचारों को सुनते और पढ़ते हुए भी विकसित करते हैं। ऐसे में ज़रूरी है कि बच्चों की मौलिक अभिव्यक्ति को कक्षा और स्कूल में जगह मिले। दीवार पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जिसमें बच्चों की मौलिक अभिव्यक्ति जगह पाती है। चूँकि बच्चे अपनी बात को लिखने का हुनर विकसित कर रहे हैं तो उनका लिखा मौलिक विचार दीवार पत्रिका की विषयवस्तु बनता है।

बच्चे दुनिया के बारे में समझ अपने सहपाठी समूह में बातचीत करते हुए और एक-दूसरे के विचारों को सुनते और पढ़ते हुए भी विकसित करते हैं। ऐसे में ज़रूरी है कि बच्चों की मौलिक अभिव्यक्ति को कक्षा और स्कूल में जगह मिले। दीवार पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जिसमें बच्चों की मौलिक अभिव्यक्ति जगह पाती है।

Figure 77 एक विद्यालय में दीवार पत्रिका

पत्रिका शब्द के अपने विशेष मायने हैं। इसमें पत्रिका के शीर्षक, किसी पत्रिका के अंक के बारे में एक सम्पादकीय, इसका व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण और पत्रिका का प्रसार महत्त्वपूर्ण अवयव हैं। दीवार पत्रिका के संदर्भ में भी उपरोक्त बातें लागू होती हैं। हालाँकि इसका उद्देश्य बच्चों में लेखन क्षमता का पूर्णतया विकास करना है, साथ ही इस विधा से जुड़े अन्य कौशल का विकास भी इसका अहम उद्देश्य है। अमूमन यह देखा जाता है कि शिक्षक की रुचि बच्चों की अभिव्यक्ति को किसी चार्ट पर लगाकर कक्षा की दीवार पर डिस्प्ले करने की होती है। ऐसे में ज़रूरी है कि यह डिस्प्ले इस रूप में हो जो कि स्कूल के बच्चों का ध्यान उनके सहपाठियों के विचारों को पढ़ने की तरफ दिला पाए। चूँकि इस प्रक्रिया के अपने शैक्षिक उद्देश्य हैं तो किसी दीवार पत्रिका में प्रत्येक बच्चे की मौलिकता को जगह मिलना उनकी रचनात्मकता को विकसित करने के लिए निहायत ज़रूरी है। यह प्रक्रिया लाज़िमी तौर पर बच्चों में पढ़ने और अपनी बात लिखने का रोमांच और उत्साह पैदा करने के लिए ज़रूरी है।

कक्षा में 8-10 बच्चों के समूह बनाकर छोटी-छोटी दीवार पत्रिकाएँ सृजित की जाएँ और किसी बड़े कैलेंडर की दीवार पत्रिका के सृजन से बचा जाए। साथ ही एक समय के बाद इन दीवार पत्रिकाओं को बाल पत्रिकाओं की शक्ल में ढालकर संरक्षित कर लिया जाए।

कई बार देखा जाता है कि दीवार पत्रिका में बच्चों की अभिव्यक्ति को एक बड़े चार्ट पर बेतरतीबी से भी लगा दिया जाता है और फिर समय के साथ यह प्रयास अपनी रचनात्मकता खो देता है। ऐसे में पूरी प्रक्रिया एक उत्पाद निर्मित करने के इर्द-गिर्द ही सीमित हो जाती है। इस चुनौती का सामना करने के लिए ज़रूरी है कि कक्षा में 8-10 बच्चों के समूह बनाकर छोटी-छोटी दीवार पत्रिकाएँ सृजित की जाएँ और किसी बड़े कैलेंडर की दीवार पत्रिका के सृजन से बचा जाए। साथ ही एक समय के बाद इन दीवार पत्रिकाओं को बाल पत्रिकाओं की शक्ल में ढालकर संरक्षित कर लिया जाए। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे कक्षा और स्कूल के लिए उपयोगी पठन सामग्री के रूप में विकसित होगी। यहाँ इस बात को ध्यान रखने की ज़रूरत है कि दीवार पत्रिका के लेआउट में बच्चों का काम तरतीब से लगाया जाए, ताकि दीवार पत्रिका को आसानी से बाल पत्रिका का स्वरूप दिया जा सके। पत्रिका की अवधि तय की जा सकती है, यह पाक्षिक या मासिक हो सकती है।

इसके लिए बच्चों की अलग-अलग टोलियों को काम बाँट देना चाहिए। जैसे- समाचार संकलन, लेखन, चित्र बनाना व संकलित करना, कहानी, कविता, विज्ञापन, साक्षात्कार इत्यादि एकत्र करना, फिर एकत्र सामग्री का सम्पादन, जैसे- सामग्री को पुनः लिखना, शीर्षक देना, लेआउट में जमाना व सजाना आदि काम कराए जाएँ।

दीवार पत्रिका का काम सभी प्राथमिक कक्षाओं के साथ सम्भव है, परन्तु कक्षा 3 से 5 में यह कुछ अधिक व्यवस्थित तरीके से उभरेगा और धीरे-धीरे विद्यालय अपने लिए उपयोगी पठन सामग्री विकसित करता नज़र आएगा।

2.7.2 बाल अख़बार

बाल अख़बार भी भाषा पढ़ने व लिखने का एक अच्छा तरीका है। इसमें कक्षा शिक्षण या कक्षा के अलावा भी सीखने-सिखाने की अनेक प्रक्रियाओं से जनित सामग्री को एक अख़बार की शक्ल में संयोजित किया जाता है और इस अख़बार को स्कूल में ऐसी जगह डिस्प्ले किया जाता है जहाँ से अधिकतर बच्चे इसे आसानी से पढ़ सकें। इसके अलावा सायास भी यह प्रक्रिया स्कूलों में कराई जा सकती है। इसके लिए पहले बच्चों के साथ अख़बार का विश्लेषण करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि उसमें क्या-क्या विषयवस्तु होती है, फिर बच्चों के साथ यह चर्चा करनी है कि इस तरह की विषयवस्तु हम कैसे संकलित करें या लिखें, इसके लिए बच्चों की अलग-अलग टोलियों को काम बाँट देना चाहिए। जैसे- समाचार संकलन, लेखन, चित्र बनाना व संकलित करना, कहानी, कविता, विज्ञापन, साक्षात्कार इत्यादि एकत्र करना, फिर एकत्र सामग्री का सम्पादन, जैसे- सामग्री को पुन: लिखना, शीर्षक देना, लेआउट में जमाना व सजाना आदि काम कराए जाएँ। पत्रिका की ही तरह बाल अख़बार भी साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक हो सकता है। इस प्रक्रिया में बच्चे टीम में काम करना, विचार कम्पोज करना, साक्षात्कार के लिए प्रश्न बनाना, सामग्री का चयन करना, शीर्षक देना, लिखना, लिखे हुए को पढ़ना, सामग्री को संक्षेप में लिखना या विस्तार देना, डिजाइन बनाना, क्राफ्टिंग जैसे बहुत-से कौशल रुचि और उत्साह के साथ सीखते हैं।

Figure 78 बाल अख़बार

2.8 कविताएँ और पढ़ना-लिखना सीखना

भाषा शिक्षण की कक्षा में कविताओं के उपयोग से संबन्धित संभावित अवलोकनीय कक्षा प्रक्रियाएँ (ऑब्ज़र्वेबल क्लासरूम प्रैक्टिसेज़) और उनके संकेतक–

कविताएँ और पढ़ना-लिखना सीखना	
कक्षा एक व दो के लिए	**कक्षा तीन से पाँच के लिए**
1. कक्षा में पाठ्यपुस्तक की ही कविताओं का इस्तेमाल किया जाता है।	1. कक्षा में बच्चों के साथ पाठ्यपुस्तक की कविताओं के साथ-साथ अतिरिक्त कविताओं को भी स्थान मिलता है।
2. कक्षा में पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ अन्य कविताओं को भी सुनाया जाता है।	2. कक्षा में कविताओं के छपे हुए या हाथ से लिखे हुए कुछ पोस्टर लगे हुए हैं।
3. कविताओं को हावभाव के साथ गाया जाता है।	3. बच्चों से कविताओं पर चर्चा होती है, जैसे- कविता किसके बारे में है, कविता में कौन-कौन है, क्या हो रहा है?
4. कविताओं के पोस्टर बनाकर दीवारों पर लगाया जाता है और उन पर बात होती है।	4. कविता के आधार पर कल्पनाशीलता के विकास और तर्क करने के अवसर दिए जाते हैं।
5. कविताओं पर होने वाली बात में कविता शिक्षण की व्यवस्थित योजना की समझ दिखाई देती है।	5. कविता की लय और तुक पर भी बात होती है। स्वयं कविता बनाने के अवसर दिए जाते हैं।
6. कक्षा में शिक्षक जिन कविताओं को लेकर काम करते हैं, ये कविताएँ छोटी-छोटी हैं, स्तरानुकूल हैं और ऐसी हैं जिन्हें बोलने में बच्चों को मज़ा आ रहा है।	6. ‘तुकांत शब्द’ या ‘समान ध्वनि वाले शब्द’ कौन-से हैं आदि मुद्दों तक बातचीत होती है। साथ ही इस बातचीत को आगे बढ़ाकर लिखने के अवसरों में भी बदला जाता है।
7. कविता सुनने-सुनाने की इस प्रक्रिया में बच्चे सक्रिय हिस्सा लेते नज़र आते हैं।	7. रेखांकित शब्दों को बच्चों के द्वारा पढ़ा जाता है और अर्थ बताया जाता है।
8. कविताओं को पढ़ना-लिखना सिखाने से जोड़ा जाता है, जैसे: कौन-से शब्द बार-बार आए हैं, समान ध्वनि वाले शब्द कौन-से हैं, किसी वर्ण विशेष से शुरू होने वाले शब्द कितनी बार आए हैं आदि।	8. कविता के वाक्यों का क्रम पहचानने/क्रम जमाने की गतिविधि समूह में और व्यक्तिगत रूप से कराई जाती है।
9. रेखांकित शब्दों को बच्चों के द्वारा पढ़ा जा रहा है और अर्थ बताया जा रहा है।	9. नये शब्दों की पहचान पर पर्याप्त काम किया जाता है।
10. कविता के वाक्यों का क्रम पहचानने/क्रम जमाने की गतिविधि समूह में और व्यक्तिगत रूप से कराई जा रही है।	10. कक्षा के काम पढ़ने और बातचीत से लिखने तक जाते दिखाई देते हैं।
11. नए शब्दों की पहचान पर काम किया जाता है।	11. कुछ बच्चे जिनको पढ़ने में ज़्यादा दिक्कत है, उन पर अलग से ध्यान दिया जाता है।
12. कविता सुनाने और उस पर बात करने का अवसर हर बच्चे को दिया जाता है और उनके प्रदर्शन के बारे में टिप्पणियाँ दर्ज की जाती हैं।	12. कक्षा का काम पाठ्यपुस्तकों से आगे भी जाता है। अपने मन से या सोचकर लिखने के अभ्यास दिए जाते हैं।
13. कविता में आए शब्दों की पहचान का मौक़ा हर बच्चे को बारी-बारी से दिया जाता है और उसके आधार पर उनके पठन कौशल का आकलन किया जाता है।	13. कविता सुनाने और उस पर बात करने का अवसर हर बच्चे को दिया जाता है और उसके प्रदर्शन के बारे में टिप्पणियाँ दर्ज की जाती हैं।

कविताएँ और पढ़ना-लिखना सीखना	
कक्षा एक व दो के लिए	**कक्षा तीन से पाँच के लिए**
14. कविता तथा शब्द-जाल के शब्दों को बोर्ड, दीवार या कॉपी पर लिखने के अवसर दिए जाते हैं और उनके आधार पर लेखन की प्रगति के बारे में टिप्पणियाँ दर्ज की जाती हैं। 15. दर्ज अवलोकनों के मुताबिक बच्चों की आवश्यकताओं को समझकर उनकी यथायोग्य मदद करते हैं।	14. दर्ज अवलोकनों के मुताबिक बच्चों की आवश्यकताओं को समझकर उनकी यथायोग्य मदद करते हैं ।

बच्चे और कविता

अनुमान लगाना पढ़ने के कौशल के केंद्र में है। इस कौशल के विकास में कविता आश्चर्यजनक योगदान देती है। नियमित रूप से कविताएँ सुनकर, बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएँ ग्रहण कर लेते हैं। कविता इसके लिए विशेष रूप से उपयोगी इसलिए है क्योंकि उसे याद रखना आसान होता है। कविता याद रखने के लिए छोटे बच्चों को कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता। बार-बार सुनने और दोहराने से कविता अपने-आप याद हो जाती है।

'चंदा मामा दूर के, पुए पकाएँ बूर के। आप खाएँ थाली में, मुन्ने को दें प्याली में।'
'हरा समंदर, गोपी चंदर, बोल मेरी मछली कितना पानी?'
'मछली जल की रानी है, जीवन उसका पानी है...'
'अक्कड़ बक्कड़ बंबे बो...'
टेसू राजा बीच बाज़ार, खड़े हुए ले रहे अनार। इस अनार में दाने कितने? जितने हों कंबल में खाने।

उपरोक्त और इन जैसी अनगिनत तमाम कविताएँ कब बच्चे के जीवन में आती हैं और घर कर जाती हैं, बच्चे को स्वयं भी पता नहीं चलता। बस उसे इतना महसूस होता है कि इनके आने से उसकी दिनचर्या कुछ और मज़ेदार हो गई है।

भाषा की जादुई दुनिया में प्रवेश करते ही बच्चों का तरह-तरह के शब्दों से खेलना अनायास ही शुरू हो जाता है। दुनिया का शायद ही ऐसा कोई बच्चा हो जिसने अपने बचपन में शब्दों को उलट-पुलट कर न बोला हो, भले ही यह काम दोस्तों को चिढ़ाने के लिए हो, उनके नाम की ध्वनियों में हेरफेर करके। यही वो समय भी होता है जब बच्चों का कविता से संपर्क शुरू होता है। माँ की लोरियाँ, आसपास बजते गाने, उनके खुद के खेल गीत, और उन्हें दोहराते वक़्त खुद से उनमें कुछ जोड़ देना। कहने का तात्पर्य यह कि कविता की दुनिया किसी भी बच्चे के लिए नई नहीं है।

स्कूल और कविता

दुनिया का कोई कोना हो, उस कोने में अगर बच्चों की अपनी दुनिया है तो कविता उसका एक अभिन्न हिस्सा होगी। कविताएँ स्कूल आने के बहुत पहले से ही बच्चे के प्रगाढ़ परिचय में होती हैं। लेकिन फिर क्या कारण है कि बहुत ही प्यारी और अपनी-सी लगने वाली कविताएँ स्कूल की ज़िंदगी में आते ही कष्टकर और अनाकर्षक लगने लगती हैं? और फिर बढ़ती उम्र और एक-एक कर कक्षाओं में जिस स्पीड से हम आगे बढ़ते हैं, कविताओं से हमारा रिश्ता उसी स्पीड से कमज़ोर होता हुआ एक समय आने तक खत्म हो जाता है। कविता के खेत-खलिहान, बाग-बगीचे, चिड़िया, हाथी, चूहा, शेर, तितली, चाँद-सितारे, सब कुछ बहुत ही अनजाने और अपरिचित-से लगने लगते हैं। कविता बोरिंग लगने लगती है और फिर हम ताउम्र कविता के साथ बचपन वाला रिश्ता कायम नहीं कर पाते। सच कहा जाए तो किसी एक समय में मज़े के सागर में गोते लगवाती कविता, स्कूल में भाषा की घंटी में गले की फाँस बन जाती है। इसके कारण कई हो सकते हैं और उनमें से कुछ प्रमुख कक्षा में कविता को बरतने के तरीकों से जुड़े हुए हैं।

हमारी कक्षाओं मे कविता को पढ़ाने के तरीके पिछले कुछ दशकों में शायद ही बदले हों। आज भी कक्षा में कविता चुनते वक़्त उनकी शब्द संरचना, उसमें शामिल विभिन्न विषयों या उनसे बनने वाले विभिन्न बिंबों को केंद्र में रखने के बजाय उनमें आदर्श और संदेश ढूँढने की कोशिश की जाती है, जिसके फलस्वरूप बच्चों का सामना अधिकतर ऐसी कविताओं से होता है जो कविता कम और शब्दों की तुकबंदी ज़्यादा नज़र आती हैं। जैसे 'आँख में अंजन दाँत में मंजन, नित कर नित कर नित कर।' इन कविताओं में ऐसा कुछ नहीं होता कि ये जब एक बार ज़बान पर चढ़ें तो जायका देर तक रहे। अधिकतर राज्यों की हमारी भाषा की अधिकतर पाठ्यपुस्तकें इसी तरह की कविताओं से भरी पड़ी हैं। लेकिन अन्य किसी सामग्री के अभाव और अनुशासन के दो पाटों के बीच फँसे बच्चे इन्हें भी रट लेते हैं और मांग किए जाने पर बार-बार सुना भी देते हैं। लेकिन क्या वे इन्हें अपनाते हैं? तो उत्तर स्पष्ट है, 'नहीं'!

कैसी कविताएँ

अधिकांश पाठ्यपुस्तकों में दी गई कविताएँ प्रायः कोई बहुत अच्छी नहीं होती हैं और उनका भाषा के विकास की दृष्टि से उपयोग मुश्किल से ही किया जा सकता है। अतः यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न हो जाता है कि अच्छी कविताओं का चुनाव कैसे करें। बच्चों में पढ़ने के कौशल के विकास के लिए एकदम अलग किस्म की कविताएँ चाहिए। ऐसी कविताएँ जिनमें कोई कहानी हो, बच्चे हों, उनका परिवेश हो, उनके सुख-दु:ख हों, उनके खेल हों, और उनकी अपनी भाषा हो।

कविताएँ अगर किसी घटना पर आधारित होंगी तो बच्चों को कविता में चल रही कहानी दोगुना मज़ा दे सकती हैं। पढ़ना सीखना तब कुछ आसान हो जाता है जब पढ़े जा रहे साहित्य से पाठक जुड़ पाए, तादात्म्य स्थापित कर पाए। अर्थ निर्माण तक पहुँचकर ही तो पढ़ना सीखने का सफ़र पूरा होता है और यह तब आसान हो जाता है, जब पढ़ी जा रही कविता की विषयवस्तु बच्चे के अपने अनुभवों के आसपास होती है। अतः पढ़ना सीखने के शुरुआती दौर में बच्चों के लिए ऐसा साहित्य मददगार होता है

जो उनके परिवेश से सीधे जुड़ा हो। उदाहरण के लिए इस कविता को देखते हैं :

बहुत जुकाम हुआ नंदू को
एक रोज़ वह इतना छींका,
इतना छींका, इतना छींका
इतना छींका, इतना छींका
सब पत्ते गिर गए पेड़ के
धोखा हुआ उन्हें आंधी का!

रामनरेश त्रिपाठी की यह कविता हमारे जीवन के एक बहुत आम अनुभव जुकाम के बारे में है। ऐसी कविताएँ हमें बच्चों को अपने जीवन में प्रवेश कराने के कई मौके उपलब्ध कराती हैं। शायद ही कोई बच्चा होगा जिसके पास जुकाम का अपना कोई-न-कोई किस्सा न हो। यह कविता झट से उस अनुभव को जगा देगी और फिर भाषा अपने तमाम पहलुओं के साथ काम में लग जाएगी। बच्चे इस कविता को पढ़ते हुए एक पैर अपने अनुभव पर रखते हुए अपना दूसरा पैर कल्पना की ओर बढ़ा देंगे। इतना छींका, इतना छींका, इतना छींका... यह ठेठ बच्चों का किसी बात को बताने का तरीका होता है। वे अक्सर ऐसे प्रयोग अपनी बातों में करते हैं। पेड़ के सब पत्ते गिरने का अनुभव उनमें से ज़्यादातर के पास है। आंधी का भी है। वहीं छींक से आंधी आने की कल्पना बेहद आनंददायी होगी। और फिर जब पेड़ को पता चला होगा कि यह नंदू की छींक थी, आंधी नहीं! तब उसे कैसा लगा होगा? क्योंकि कविता की आखिरी पंक्तियों में पेड़ को धोखा हो जाने की बात है।

एक और कविता का उदाहरण लेते हैं, जो बच्चों की बेहद पसंदीदा कविता बन चुकी है:

पैसे पास होते तो चार चने लाते
चार में से एक चना तोते को खिलाते
तोते को खिलाते तो टांव टांव गाता
टांव टांव गाता तो बड़ा मज़ा आता।
पैसे पास होते तो चार चने लाते
चार में से एक चना घोड़े को खिलाते
घोड़े को खिलाते तो पीठ पर बिठाता
पीठ पर बिठाता तो बड़ा मज़ा आता। ...

यह कविता इंसान की इस पुरातन इच्छा का विनम्र स्वीकार है कि 'काश' ऐसा होता तो हम फलाँ चीज़ कर लेते। हमारे मन में रोज़ ही ऐसी लहरें अपने किनारों से टकराकर फिर-फिर लौटती हैं, जब हम कोई आकांक्षा करते हैं और उसके लिए योजनाएँ बनाते हैं। हमारी दुनिया में एक बेहद बड़ी संख्या उन लोगों की है जिनका तो जैसे जीवन ही इस बात के साथ शुरू होता है कि पैसे पास होते तो...। बचपन भी ऐसी ही इच्छाओं का घर है और वहाँ भी यही राग बार-बार सुनाई पड़ता है कि हम ऐसा कुछ करते जिसमें बहुत मज़ा आता। शायद इसीलिए यह कविता बच्चों को बेहद पसंद आती है। ऊपरी तौर पर देखें तो कविता की बुनावट में अनुप्रास का चमत्कार भी है, पैसे- पास का और चार- चने का।

बच्चे खेल के दौरान भी ऐसी कई कविताओं का उपयोग करते हैं जिन्हें यदि संकलित किया जाए तो इनका पढ़ना-लिखना सीखने में महत्त्वपूर्ण उपयोग किया जा सकता है।

> दरअसल कक्षा में कविताओं के साथ हो यह रहा है कि कविता के शब्दों के लुभावनेपन, उसकी लय और ध्वनि को एक किनारे कर कविता को समझाने पर ज़ोर दिया जा रहा है। साथ ही साथ उसी भाव तथा अर्थ को याद करने पर बल दिया जाता है जो अध्यापक ने स्वयं समझा होता है, या फिर जो अर्थ कुंजी या पासबुक में दिया गया होता है।

कक्षा में कविताओं पर काम कैसे करें

भाषा का अध्यापक होने के नाते हमें समझना होगा कि प्राथमिक कक्षाओं में कविताओं को कैसे पढ़ाया जाए, जिससे कविता के साथ बच्चों का पुराना आनंददायी रिश्ता कभी टूटे नहीं, बल्कि उसमें और भी प्रगाढ़ता आए और बच्चे कविता पढ़ने के साथ-साथ खुद भी कविता लिखने की ओर बढ़ें।

कविता पढ़ाने के तरीकों की बात करने से पहले यह समझना ज़रूरी है कि कविता का स्वभाव कैसा होता है। कविता भाषा की सबसे कलात्मक अभिव्यक्ति है। सामान्य से कथन को शब्दों के हेरफेर से विशेष बना देना कविता का रूप धर लेता है। कविता साहित्य की सबसे पुरानी विधा है और बच्चे की भाषिक क्षमता बढ़ाने के लिए कविताओं से उसकी दोस्ती बनी रहे, यह बहुत ज़रूरी है। कविता के मूल में संवेदना है, राग तत्त्व है। सीधे शब्दों में कहें तो कविता शब्दों का खेल है। शब्दों से खेलना, उनसे मेलजोल बढ़ाना, शब्दों के भीतर सदियों से छिपे अर्थ की परतों को भिन्न-भिन्न रूपों में समझना, यह सब कविता की दुनिया में प्रवेश कराता है। कविता को कक्षा में बच्चों के सामने प्रस्तुत कैसे करें, ताकि वे उसका उतना ही मज़ा लें जितना कि पहले भी लेते रहे हैं।

आमतौर पर शिक्षक कविता की शुरुआत आदर्श वाचन से करते हैं और बच्चों से अपेक्षा करते हैं कि वे भी उसी तरह से पढ़ कर सुनाएँ। यहीं से आरंभ हो जाती है कविता के प्रति अरुचि की यात्रा। इसके बाद शिक्षक श्यामपट्ट पर कविता में आए कुछ अपरिचित-से शब्दों का अर्थ लिखते हैं या फिर मौखिक रूप से बताते हैं। फिर एक-एक पंक्ति का अर्थ बताने की अपेक्षा करते हैं कि कक्षा में दो-चार बच्चे उस अर्थ को दोहराएँ। अगले क्रम में कविता से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं और उम्मीद की जाती है कि बच्चे वही उत्तर दें जो उत्तर अध्यापक के मानस में बैठ चुका है। बच्चे ने अपने अनुभवों के आधार पर जिस अर्थ को समझा है या समझने का प्रयास किया है, कक्षा में उसे स्वीकृति नहीं मिलती। इसके बाद स्वाभाविक है कि अपनी-सी लगने वाली कविता पराई-सी लगने लगती है और कविता के प्रति पैदा हुई बेरुखी बढ़ती ही जाती है। अतः ज़रूरत है कि कविता पढ़ाने के तरीकों को कुछ अलग तरीके से देखा-समझा जाए।

कविताओं के बारे में बात करें और उनके प्रति रुचि पैदा करें। कविता के साथ बने चित्रों और उनमें मौजूद बारीक संकेतों की ओर ध्यान दिलाएँ और कविता की विषयवस्तु, पात्रों, घटनाओं आदि के बारे में अनुमान लगाने को कहें। इसके बाद बच्चों को स्वयं से कविता पढ़ने दें और इसमें उनकी मदद करें। एक बार तो अवश्य कुछ बच्चे मन ही मन पढ़कर खुश होंगे, शायद कुछ बोल-बोलकर भी पढ़ना चाहें। कविता के प्रति समझ

बनाने के उनके अपने तरीके हैं, पढ़ते-पढ़ते बच्चे अर्थ की परतों को खोलते चलते हैं। अतः एक ही बार में पढ़कर भाव और अर्थ समझने का भ्रम पालने से बचें।

रचनाकार के बारे में थोड़ी-सी बात करें। यह बात सही है कि छोटी कक्षाओं में रचनाकार के बारे में नहीं पूछा जाता, पर यह इसलिए ज़रूरी है ताकि बच्चे रचनाकार का परिचय प्राप्त करें। उनके बारे में जानें। इसके बाद बच्चों के सामने अपनी ओर से वाचन प्रस्तुत करें। उच्चारण के दौरान लय और ध्वनि का ध्यान रखें, पर कदापि अपेक्षा न करें कि सभी बच्चे आपके तरीकों को अपनाएँ। कम से कम पहली बार तो कदापि नहीं।

अब आती है अर्थ बताने की बारी। यहाँ पर यह बात गौरतलब है कि किसी भी कविता का कोई एक अर्थ नहीं होता और वह हमारे अनुभवों से जुड़कर नए-नए अर्थ हमें देती है। अर्थ समझने के लिए ज़रूरी है कि बच्चों को कविता में आए प्रमुख बिन्दुओं पर ध्यान देने के लिए कहें। कविता पढ़कर जो भाव मस्तिष्क में उभर रहे हैं, वह अर्थ खोजने में बहुत मदद करेंगे। पहली बार में जिस तरफ ध्यान जाए, उस अर्थ को भी स्वीकार करते चलें, भले ही बाद में उसमें परिवर्तन की शंका हो। ध्यान रखें कि कविता को खंडों में रखकर न तो समझें और ना ही समझाएँ, उसे समग्र रूप में ही समझने और समझाने की ज़रूरत है। इस दौरान कविता में पिरोए गए दृश्यों, वस्तुओं, घटनाओं और भावनाओं तथा विचारों को इस प्रकार उभरा जाए कि पढ़ने वालों पर उसका प्रभाव पड़े। उसमें व्यक्त की गई भावनाओं और संवेदनाओं को छूएँ और ऐसा करने में यदि संभव हो तो बच्चों के स्वयं के भावनात्मक अनुभवों का उपयोग करें। कहने का तात्पर्य यह है कि कविता में प्रतिबिंबित चीज़ों, दृश्यों और घटनाओं से गहरे तक जुड़ना होगा। उस जुड़ाव की जो प्रतिक्रिया मन पर होगी, वही कविता का अर्थ हो सकता है। कविता में उभर रहे बिम्ब और भाव पढ़ने और सुनने वाले को अपने से जोड़ते हैं। यह आवश्यक है कि बच्चों को कक्षा में कविता पढ़ाने से पहले स्वयं भी बार-बार पढ़ी जाए और इस बात की समझ बनाई जाए कि इसका उपयोग कक्षा में बच्चों के साथ कैसे करना है। इसके बाद कविता को कहानी में कैसे कहा या ढाला जाए, इस तरह की कोशिश भी की जाए तो पढ़ने-लिखने की क्षमताओं के विकास का फ़लक और भी बढ़ेगा। बच्चों से भी तरह-तरह की कविताएँ बनवाएँ और उन्हें अपने स्तर पर कविता बनाने को प्रेरित करें।

गीत-कविता पर वर्ष भर रचनात्मक काम करने के लिए शिक्षक की योजना में विविधता होनी ज़रूरी है। शिक्षक बच्चों को हावभाव के साथ गीत-कविताएँ सुनाएँ। इसके बाद कक्षा के बच्चों को उपसमूहों में कोई गीत तैयार कर बड़े समूह में गाने के लिए कहें। जब वे कुछ दिनों में दो-दो, चार-चार के समूह में गाने का आत्मविश्वास प्राप्त कर लेंगे तो फिर वे अकेले भी इसे सुना सकेंगे।

आप और बच्चे जिनकी कविताओं पर सुनने-सुनाने का अभ्यास कर रहे हों, उनके पोस्टर बनाकर कक्षा में लगाएँ। जब बच्चे गाए जा रहे गीतों का लिखित रूप कक्षा में प्रदर्शित देखेंगे तो उन्हें स्वतः ही पढ़ने के प्रयास शुरू कर देंगे। इससे उनकी पढ़ना-लिखना सीखने की गति में इज़ाफा होगा। साथ ही शिक्षक लगभग 10 ऐसी कविताएँ चुनें जो बेहद सरल हों और जिनमें आगे बढ़ाए जाने की भरपूर संभावना हो। इस प्रकार की कुछ कविताओं के बने-बनाए पोस्टर उपयोग में लाए जा सकते हैं, या फिर बच्चों के साथ मिलकर उनका निर्माण भी किया जा सकता है। यहाँ इकतारा प्रकाशन के कुछ कविता पोस्टरों को देखा जा सकता है:

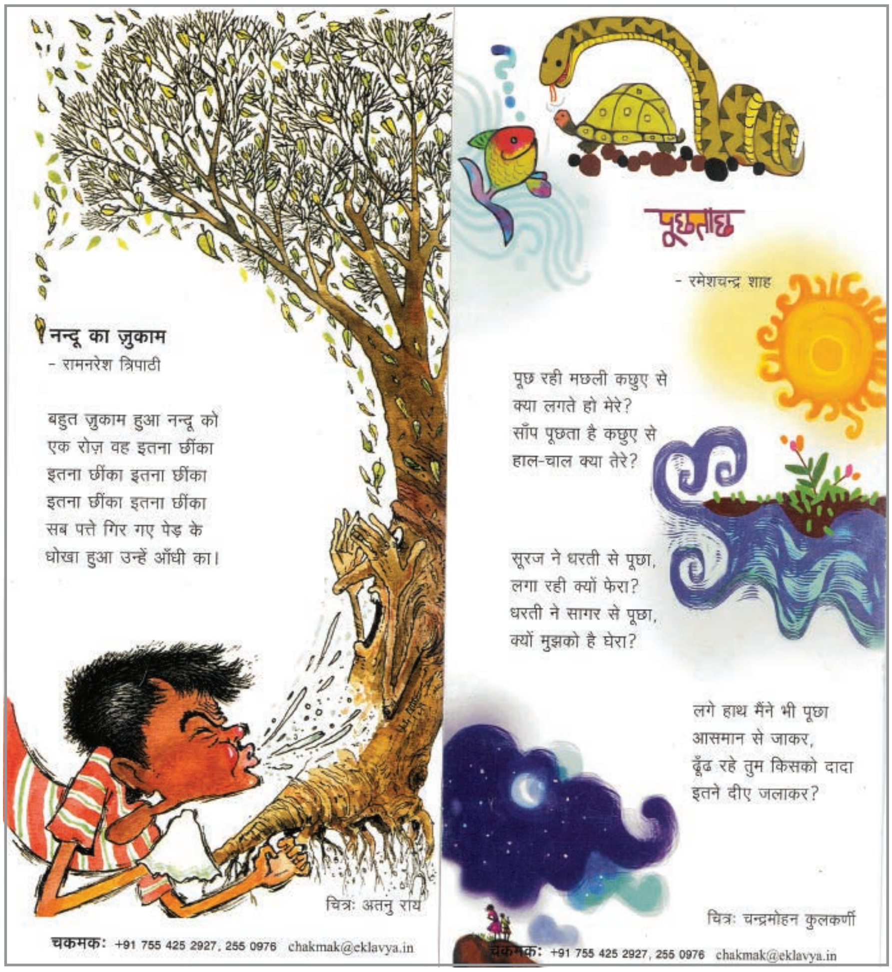

Figure 79 इकतारा द्वारा बनाए छोटी-छोटी कविताओं के पोस्टर

उदाहरण

प्रस्तुत है कक्षा एक और दो के साथ कविताओं पर कार्य का एक अनुभव– गर्मियों की छुट्टी के बाद स्कूल खुले अभी तीन दिन ही हुए हैं। आज अधिक उमस तथा लाइट की अनुपस्थिति के कारण कक्षा एक तथा दो के बच्चों को बरामदे में ही अलग करके बैठाया गया। आज पहली कक्षा के मात्र चार ही बच्चे उपस्थित थे और दूसरी के सात। पहली के बच्चों ने इसी सप्ताह विद्यालय आना आरंभ किया था तो वे कुछ डरे, सिमटे और सकुचाए हुए थे। तो फिर हमने शुरुआत कक्षा दो के बच्चों से की, उन सबने अपना नाम बताया और इसके बाद उन्होंने अपना नाम बोर्ड पर भी लिखने की कोशिश की। सात में से पाँच बच्चों ने अपना नाम सही लिखा। इसके बाद कक्षा एक के बच्चों से कहा गया कि वो अपना नाम बताएँ, जिससे कि उसे भी श्यामपट्ट पर लिखा जा सके। चार में से तीन बच्चों ने अपना नाम धीमी आवाज़ में बताया, जिसे बोर्ड पर बड़े अक्षरों में लिखा गया। एक बच्ची फिर भी नहीं बोली तो हमने उसे अधिक परेशान नहीं किया।

इस प्रक्रिया के बाद आज की योजना के अनुसार बच्चों को कविताओं की किताब का एक पृष्ठ खोलकर दिखाया, जिस पर बादल, बिजली, बारिश, घास और एक फूल बना हुआ था, साथ ही बादल तथा फूल के बीच में कुछ पंक्तियाँ अंकित थीं। इस पृष्ठ पर बातचीत के दौरान हम सभी बच्चों का ध्यान केन्द्रित करने में सफल हुए। बादल को तो सभी आसानी से पहचान गए, लेकिन बिजली का कॉन्सेप्ट समझाने में थोड़ी चुनौती

आई। बिजली चमकना उनको समझ में नहीं आ रहा था तो हमने पूछा कि बादल में जो चमकता है, वो क्या है, तो लगभग सभी ने कहा 'तारा'। फिर यह याद दिलाया कि जब बादल में बहुत तेज़ आवाज़ होती है और उसके बाद ज़ोर से कुछ चमकता है तो क्या होता है? उत्तर आया डर लगता है, घर में भाग जाते हैं, गाय कूदने लगती है आदि। तो फिर जोड़ा गया कि यही जो चमकता है, उसे ही बिजली कहते हैं। फिर बात आगे बढ़ाई गई कि बारिश होने पर कैसा लगता है, इसके उत्तर अपेक्षित थे। इसी दौरान एक बच्ची ने वहीं बैठे-बैठे हमें बादल दिखाया, और सभी वही देखने की कोशिश करने लगे। हालाँकि बादल-दर्शन की इस प्रक्रिया ने चर्चा की गति को अवरुद्ध किया, किन्तु स्वतःस्फूर्त इस प्रक्रिया में विघ्न डालने की न तो मेरी इच्छा हुई और न ही हिम्मत, तो मध्यमार्ग अपनाते हुए मैं भी बादल देखने को प्रस्तुत हुआ और फिर हमने उनके रंग-रूप-स्वरूप-गति पर अपनी समझ, अनुभव और कल्पना के आधार पर बात की। दस मिनट के इस आकर्षक व्यवधान के पश्चात हम पुनः वापस आए और उसी पृष्ठ को लेकर बैठे।

इस बार सवाल यह था कि ये जो लिखा है, ये क्या हो सकता है। दूसरी के वे बच्चे जिन्हें थोड़ा बहुत पढ़ना आता है, पढ़ने की कोशिश करने लगे। जिससे और लोग पेज छोड़ उन्हें देखने लगे, ख़ासकर पहली के वे चार बच्चे। अतः पढ़ने की प्रक्रिया को रोककर बच्चों को पुनः अनुमान की प्रक्रिया और चित्रों से पाठ के सामंजस्य तक लाने का प्रयास किया गया। सबसे पहले बिना पढ़े अनुमान के अनुसार बताने को कहा गया कि क्या लिखा हो सकता है। बच्चों ने सटीक अनुमान लगाए और बताया कि यहाँ बादल, बिजली, घास, हवा, पानी, आसमान आदि के बारे में लिखा होगा।

अब सारे अनुमान लगा लेने के बाद बच्चे अपने अनुमानों का परीक्षण करना चाहते थे। अतः हमने इस कविता को पढ़ने का निर्णय लिया। कविता पहले मैंने पढ़ी और उन्होंने सुनी। फिर मैंने पढ़ी और बच्चों ने अनुमान से शब्दों पर उंगलियाँ फेरते हुए सुनी। इसके बाद हमने साथ-साथ पढ़ने की कोशिश की। इसके बाद यह निश्चय किया गया कि इसे हावभाव के साथ पढ़ा जाए। फिर हम खड़े हुए और यथासंभव हावभाव के साथ कविता गाई गई। उत्साहजनक बात यह रही कि अब कक्षा एक के बच्चे भी चपल अंग संचालन की प्रक्रिया में रमे हुए बेझिझक और प्रसन्न नज़र आ रहे थे। हमारे इस हावभाव के प्रदर्शन और शोर ने बाकी की कक्षाओं का ध्यान भी खींचा और फिर हमने कक्षा 5 की एक छात्रा को सहायता के लिए आमंत्रित किया, फिर मेरे निर्देशन और उस छात्रा के सहायक निर्देशन में बच्चों ने कविता की इन चार पंक्तियों को अत्यंत मुखरता से प्रस्तुत किया। इसके बाद हम सब ने तय किया कि लंच के बाद हम इस कविता को चार्ट पर लिखकर कक्षा में चिपकाएँगे और फिर सभी लोग इसे अपनी कॉपी में भी लिखेंगे और चित्र बनाएँगे।

लंच में यह कविता गॉसिप का हॉट-टॉपिक बनी रही और चार्ट पर कविता को लिखे जाने की उत्सुकता में आज इन दो कक्षाओं के बच्चों ने अपनी छुट्टी जल्दी खत्म कर दी। फिर हम सब मिलकर कविता लिखने बैठे। पूछने पर बच्चों ने कहा कि लिखने के लिए काले रंग का उपयोग किया जाए। तो फिर कविता काले रंग से लिखी गई। इसके बाद समस्या तब आई जब बादल बनाए गए, क्योंकि कविता में काले-काले बादल थे और बच्चे चाहते थे कि बादल के लिए कोई दूसरा रंग उपयोग में लाया जाए, क्योंकि काले से तो पहले ही लिखा जा चुका है, तो फिर उपलब्ध रंगों में से काले के सबसे नजदीक रंग को बादल बनाने के लिए चुना। फिर हमने घास, फूल और बूंदें बनाईं। यह करके निश्चित रूप से हम सभी को अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हुआ।

इसके बाद बच्चों से जब पूछा गया कि क्या वो इसे लिखना चाहेंगे तो उन्होंने अवसर को जाने नहीं दिया और तैयार हो गए। कक्षा एक के बच्चों के पास कॉपी न होने के कारण हमने उन्हें अपनी तरफ से पेज दिए और पेंसिल भी। इसके बाद कक्षा दो के बच्चों ने भी अपनी कॉपी का उपयोग न करने का फैसला लिया। क्यों, यह बाद में समझ में आया। बच्चों ने अपनी लिपि और अपनी प्रक्रिया के अनुसार इसे कॉपी पर उतारा और चित्र भी बनाए। इन चित्रों में रंग भी भरा गया और सभी ने अपने बादलों को काला ही रंगा। फिर कक्षा दो के बच्चों ने बताया कि अब वे इस पेज को अपनी-अपनी फाइल में लगाएँगे और लगा दिया। कक्षा एक के बच्चे इससे निराश हुए, क्योंकि उनके नाम की फाइलें अभी बनी नहीं थीं। मैडम ने विश्वास दिलाया कि जल्दी ही उनकी फाइलें आ जाएंगी और तब तक वे इसे अपने पास रखें।

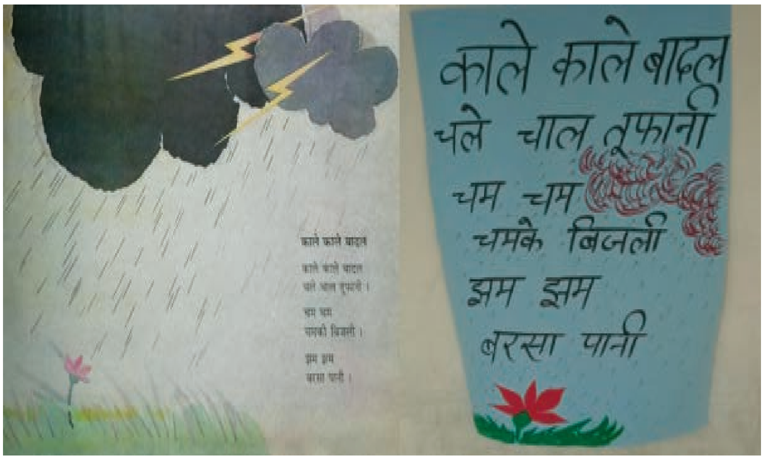

Figure 80 कविता पर काम के दौरान बना कविता चार्ट

कक्षा एक के बच्चों ने पहली बार अपनी पसंद से कुछ लिखा था और इसे उन्होंने खुशी से सहेजा। लंच के दौरान हम सभी ने मिलकर विद्यालय के पूरी तरह घिस चुके कैरम-बोर्ड को उसकी पुरानी रंगत वापस दिलाने की भी कोशिश की।

इसी प्रकार कुछ कविताओं को लिखकर और उन्हें कविता के संदर्भों से जुड़े चित्रों से सजाकर भी पोस्टर के रूप में कक्षा की दीवारों पर चिपकाया जा सकता है। इसके साथ ही साथ हम आरंभिक कक्षाओं के लिए कुछ ऐसी कविताओं का चयन कर सकते हैं जिनमें कल्पना करने और आगे बढ़ाने के अवसर होते हैं। उदाहरण के लिए:

चींटी ओ चींटी कहाँ गई थी?
अरे यहीं थी पास में, चीनी की तलाश में।
गाय ओ गाय कहाँ गई थी?
अरे यहीं थी पास में, घास की तलाश में।
बिल्ली ओ बिल्ली कहाँ गई थी?
अरे यहीं थी पास में, ... की तलाश में।
.... ओ .... कहाँ गई थी?
अरे यहीं थी पास में,....... की तलाश में।

उपरोक्त कविता को देखें तो इसमें लय के साथ ही साथ अनुमानों का एक क्रम भी नज़र आता है। ऐसी कविताएँ बच्चों को अनुमान लगाने और कल्पना करने के विविध रोचक मौके प्रदान करती हैं। इस प्रकार की कविताओं के द्वारा बच्चों को स्वयं से पढ़ने-लिखने की ओर लाया जा सकता है। इस हेतु शिक्षक स्वयं पहल करें और इसकी शुरुआत बोर्ड से करें। फिर कुछ दिन बाद इसी प्रकार के कार्य को बच्चों को उपसमूह में और फिर अकेले करने के लिए दिया जा सकता है। इस प्रक्रिया से गुज़रने के बाद बच्चों को कविता की रचना करना दूर की कौड़ी नहीं लगेगी। उनमें आत्मविश्वास आएगा कि वे भी कविता बना सकते हैं। कुछ और उदाहरण इस प्रकार हो सकते हैं:

यह काम और अधिक प्रभावी हो जाएगा, यदि बच्चों की स्थानीय भाषा के गीत-कविताओं के साथ इसकी शुरुआत की जा सके। इसके बाद बच्चों को झरना, पेड़, पहाड़, नदी आदि विषय देकर दो-दो, चार-चार के समूह में कविता बनाने के लिए दे सकते हैं।

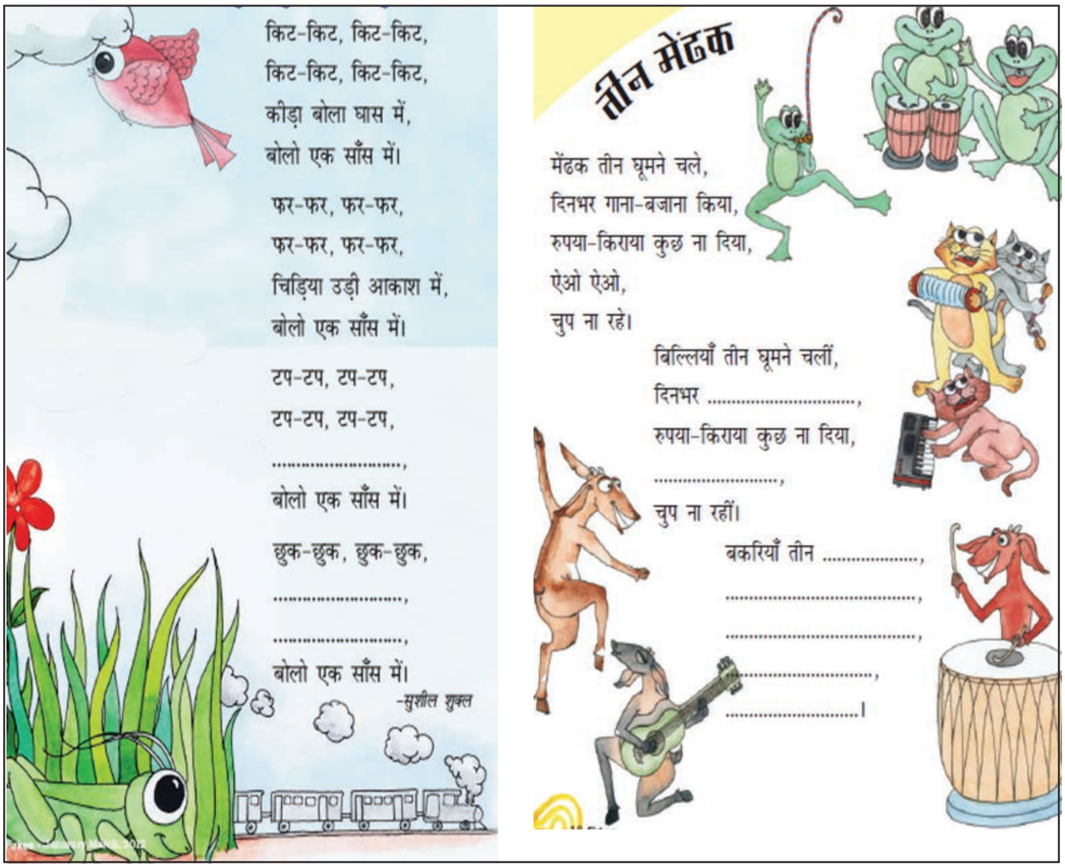

Figure 81 कविता के कुछ अभ्यास 'फिरकी' पत्रिका से

बच्चों की बनाई कविता को शिक्षक बड़े समूह में सुनाएँ, उन पर चर्चा करें। इसके साथ बच्चों को पढ़ने के लिए अन्य कविताओं के संकलन भी उपलब्ध कराएँ। शिक्षक कक्षा में उनका पाठ करें, ताकि बच्चों के भीतर उन्हें पढ़ने की ललक पैदा हो सके। गीत-कविता की ज़रूरत को समझकर, भाषा विकास में इसकी अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण ज़बरदस्त उपयोगिता को देखकर, और योजनाबद्ध ढंग से काम करके कक्षा में ऐसे सृजनात्मक वातावरण का निर्माण संभव है। इससे बच्चों का मन तो लगेगा ही, साथ ही वे हर दिन सुबह स्कूल आने के लिए प्रेरित भी होंगे।

कक्षा 1 व 2 में कविता द्वारा भाषा शिक्षण की प्रक्रियाएँ

हम ऐसी किसी कविता का चयन करें जो मज़ेदार हो और बातचीत करने के अवसर प्रदान करती हो। बच्चों के लिए उपयोग में लाई जाने वाली कविताओं की लम्बाई अधिक न हो, इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

नीचे दिए गए उदाहरण में कविता पर काम करने की प्रक्रिया को दर्शाया गया है। एक कविता पर किसी कक्षा में कम से कम चार से पाँच दिनों तक काम किया जाना चाहिए। कक्षा की आवश्यकतानुसार यह अवधि बढ़ भी सकती है। साथ ही कविता पर काम करने के चरण भी आपकी आवश्यकता के अनुसार विस्तारित किए जा सकते हैं। जैसे, संभव है कि किसी कविता से आप केवल कुछ ध्वन्यात्मक शब्दों की पहचान करवाना चाहते हैं और उसी तरह के नए शब्दों पर बातचीत करना चाहते हैं तो आप उसी चरण तक काम करेंगे, और यदि इससे आगे जाकर कविता की पंक्तियों के द्वारा शब्दों और वाक्यों पर काम करना है तो इसे आगे बढ़ाया जा सकता है।

उदाहरण के लिए:

पौधा

पौधा तो जामुन का ही था
लेकिन आए आम
जब उनको खाया तो पाया
ये तो हैं बादाम
जब उनको बोया ज़मीन में
पैदा हुए अनार
पकने पर हो गए संतरे
मैंने खाए चार

Figure 82 कविता पर कार्य की संभावनाएँ

2.8.1 कविता पर कार्य की प्रक्रिया

मौखिक भाषा विकास से संबन्धित कार्य

1. कविता को हावभाव के साथ गाया जाए। हावभाव के साथ गाने से बच्चों को कविता के अर्थ तक पहुँचने में मदद मिलती है।
2. कविता पर बच्चों के साथ चर्चा और प्रश्न किए जाएँ। जैसे- यह कविता किसके बारे में है? इस कविता में पौधा किसका था और उसपर कौन से फल आए? वे सारे फल जो कविता में आए हैं? आदि।
3. यदि हम देखें तो यह कविता बच्चों को आकर्षित करने का सारा सामान अपने में समेटे हुए है। इस कविता में जो हो रहा है, वह हमारी सामान्य तार्किकता से परे कुछ जादू-जादू जैसा है, ठीक वैसा जैसा कि बच्चे सोचते हैं या चाहते हैं। एक अलग दुनिया जहाँ के नियम-कायदे निराले ही हैं और जहाँ वयस्कों या उनकी गढ़ी सोच का भी स्थान नहीं है। ऐसी कविताएँ बच्चों को बेतरह रिझाती हैं और बच्चे इन्हें बार-बार पढ़ना चाहते हैं। इस बार-बार पढ़ने का कारण मात्र ध्वनियों का आकर्षण भर नहीं है, बल्कि इसमें घटने वाली आश्चर्यजनक घटना को महसूस करना भी है, उसका विजुअलाइजेशन करना भी है। अतः इन सभी मुद्दों पर बच्चों के साथ बात की जाए। उन्हें इस कविता के आधार पर और भी आश्चर्यजनक और अकल्पनीय कल्पनाएँ करने के लिए प्रेरित करें।

लिखित भाषा विकास (पढ़ने-लिखने) से संबन्धित कार्य

1. बच्चों को इसके आधार पर अपने मनपसंद शब्द (फलों) को चुनने, उनके बारे में बताने, उसके स्वाद को महसूस करने, उसकी आकृति को चित्रित करने, उसमें रंग भरने, उसे लिखने को प्रेरित करें। जहाँ बच्चे कठिनाई महसूस करें, वहाँ बनाए गए चित्रों के नाम लिखने में उनकी सहायता करें।
2. जिससे कि इस कविता के द्वारा पढ़ने-लिखने की ओर जाना एक बोरियत भरा नहीं, बल्कि स्वतःस्फूर्त कदम हो। फिर हम निम्न चरणों के अनुसार भी पढ़ने-लिखने की ओर बढ़ सकते हैं–
3. कविता को चार्ट पर से देखकर कई बार उंगली रखकर पढ़वाया जाए, ताकि बच्चों को यह स्पष्ट हो सके कि पौधा शब्द जो वे बोल रहे हैं, उसे लिखा कैसे जाता है।
4. कविता में लगभग समान शब्द और समान ध्वनि वाले शब्दों जैसे- आम, बादाम, अनार, चार आदि को छाँटें। इन शब्दों को रेखांकित करवाएँ। इन्हें बोर्ड पर लिखें। ऐसे ही और शब्द बताएँ तथा बच्चों को बताने के लिए कहें। उन्हें भी बोर्ड पर लिखें और चर्चा करें। इसके बाद बच्चों को इन शब्दों को कॉपी या स्लेट पर लिखने के लिए कहें।
5. इसके बाद कविता से किसी शब्द को चुनकर उस पर शब्द-जाल बनवाना, जैसे- पौधा या आम। इन्हीं चुने शब्दों की पहली ध्वनि, जैसे- पौधे का प, आम का आ आदि लेकर उस ध्वनि से बच्चों को जितने शब्द आते हों, उन सबको बोर्ड पर दर्ज करना, उन्हें पढ़ना, उन पर चर्चा करना, और फिर अपनी कॉपी में लिखने को कहना, साथ ही इनमें से वे शब्द जिनके चित्र बन सकते हों, उनके चित्र बनाना।

6. कविता के क्रम पर वाक्य पट्टी की सहायता से काम करना- कविता का क्रम बच्चों को याद हो जाता है, अतः इसके आधार पर कविता को छोटी-छोटी पट्टियों में काट लिया जाए और उन पट्टियों को बच्चों को बाँट दिया जाए और उन्हें चार्ट को देखते हुए कविता को क्रम से लगाने का काम दिया जाए।
7. कविता की पंक्तियों पर शब्द पट्टी की सहायता से काम करना- कविता के वाक्यों को शब्दों में काट लिया जाए और बच्चों को शब्दों को जोड़कर वाक्य बनाने को कहा जाए।
8. कविता की विषयवस्तु या घटनाओं से जुड़ते अन्य घटनाओं या दृश्यों को सोचना, उन पर बात करना फिर उन्हें पढ़ने और लिखने से जोड़ना चाहिए।

(इस संदर्भ में आरंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण के अंतर्गत कक्षा प्रक्रिया उदाहरण क्र० 8, पृष्ठ सं- 16 पुनः देख सकते हैं)

कक्षा 3 से 5 में कविता द्वारा भाषा शिक्षण की प्रक्रियाएँ

विशेष रूप से जब हम कक्षा एक और दो से आगे बढ़ते हैं तो हमें इन कक्षाओं के लिए कविताओं के फ़लक का भी विस्तार करना आवश्यक हो जाता है। अब उनके लिए कुछ ऐसी कविताओं की आवश्यकता होती है जो उन्हें सोचने-समझने के साथ ही साथ लिखने और पढ़ने के लिए भी प्रेरित करे। कविता अपने में व्यापक संभावना लिए होती है। कविता में निहित इस व्यापक संभावना को जानने के लिए यह ज़रूरी है कि कक्षा में छात्रों को कविता का आस्वाद लेने के अवसर हों। उसका पाठ रुचि के साथ किया जाए और उन्हें उसके मर्म तक पहुँचने में सहायता की जाए। उन्हें कविता की भाषा में निहित लाक्षणिक और व्यंजनापरक अर्थों तक पहुँचने के अवसर उपलब्ध हों। यानी कविता को आनंद के लिए भी पढ़ा जाए और कविता की विषयवस्तु पर चर्चा के अवसर भी हों। उसके शिल्प पर भी चर्चा के अवसर हों। कई बार एक ही कवि की विविध कविताओं का पाठ किया जाए, तो कई बार एक जैसी विषयवस्तु पर आधारित विविध कविताओं का पाठ हो और उन पर चर्चा की जाए। कभी उन्हें स्वयं कविता रचने के अवसर दिए जाएँ, तो कई बार एक विषयवस्तु के इर्द-गिर्द कविता, कहानी तथा अन्य विधाओं से जुड़ी रचनाओं पर बात हो। इस तरह की गतिविधियों का उत्तरोत्तर विस्तार आगे आने वाली कक्षाओं में बच्चों की भाषा से जुड़ी समझ का विस्तार करने में सहायक होगा। उन्हें यह समझने में आसानी होगी कि एक ही बात को एक ही व्यक्ति एक से अधिक तरीकों से कह सकता है। एक ही बात को समझाने के लिए एक से अधिक, एक जैसे, या फिर बिलकुल ही अलग तरह के उदाहरणों की मदद ली जा सकती है और बहुत थोड़ा-सा कहकर भी बहुत कुछ समझाया जा सकता है।

इस तरह कविताओं का इस्तेमाल न सिर्फ़ बच्चों के लिए पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को सहज बनाता है, बल्कि दुनिया के साथ उनके निजी रागात्मक संबंध का भी विकास करता है। ज़रूरी यह है कि शिक्षक इन कविताओं के साथ संवाद किस तरह का रचते हैं। आरंभिक कक्षाओं में कविता से जुड़े काम को अब आगे बढ़ाते हुए उन्हें आनंद से कविता के स्वयं पठन के अधिक अवसर दिए जाएँ, कक्षा में कविता से संबन्धित आकर्षक पोस्टर निर्माण और खुद अपनी कविताएँ रचने के मौके हों, पढ़ी और लिखी जाने वाली कविताओं के बहाने बच्चों के साथ खूब सारी बातें हों।

उद्देश्य

कक्षा 3 से 5 तक में कविता पढ़ाने के उद्देश्य निम्नलिखित हो सकते हैं:

1. कविता को हावभाव से गाकर उसका आनंद लेना।
2. कविता में भाषाई सौन्दर्य (ध्वन्यात्मक शब्द, बिम्ब, प्रतीक) की ओर ध्यान आकृष्ट करवाना।
3. कविता के मूल भाव को समझ पाना।
4. कविता का सार बता पाना।
5. अपनी कल्पना से या दिए गए विषय पर सरल कविता लिख पाना या तुकबंदी कर पाना।
6. दी गई कविता के मूल भाव से मिलती-जुलती कविताओं को खोजकर पढ़ना और उनके अर्थ पर बात कर पाना।

शिक्षक की तैयारी

1. कविता द्वारा भाषा शिक्षण की प्रक्रियाओं की समझ होना।
2. कविता को पढ़कर उसके भाव तक पहुँचना।
3. कविता के ज़रिए पढ़ने-लिखने के विस्तार से संबन्धित गतिविधियाँ तैयार करना।
4. कविता के भाव या थीम से मिलती-जुलती अन्य कविताओं को इकट्ठा करना।

कविता द्वारा पढ़ना-लिखना सीखने से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ

1. कविता में क्या कहा जा रहा है, इस बारे में बच्चों से बातचीत करना और उनकी बात को बोर्ड पर लिखना।
2. बच्चों को समूहों में बाँटकर उन्हें कविता पढ़ने के लिए देना और उस पर बात करने को कहना। अब हर समूह को उनके द्वारा समझा गया अर्थ प्रस्तुत करने को कहना और इस दौरान शिक्षिका उनकी कही गई बात को थोड़े सुधार के साथ बोर्ड पर लिखती जाए और फिर बच्चों से भी इसे लिखने के लिए कहना।
3. बच्चों को कविता का क्रम समझ में आया या नहीं, इसकी जाँच के लिए कुछ गतिविधियाँ की जा सकती हैं। जैसे- कविता की पट्टियों को क्रम से लगाने जैसी गतिविधि की जा सकती है।
4. कविता में आए ध्वन्यात्मक शब्दों, नए प्रतीकों, बिम्बों की ओर ध्यान दिलाया जाए।
5. पुस्तकालय या रीडिंग कॉर्नर की पुस्तकों से ऐसी कविताएँ छाँटने को कहा जाए जिनके विषय या थीम पढ़ाई जा रही कविता के समान हों।
6. किसी कविता को पूरा करना, विभिन्न घटनाओं, वस्तुओं, अनुभवों पर कविता का निर्माण करना, दिए गए शब्दों से कविता बनाना, चित्र को देखकर कविता लिखना, कविता को कहानी में परिवर्तित करना आदि गतिविधियाँ पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को रोचक बनाने के साथ ही साथ इससे जुड़ी दक्षताओं को भी समृद्ध करती हैं।

उदाहरण

आइए, इसी संदर्भ में कक्षा में कविताओं पर कार्य से संबन्धित उदाहरण देखते हैं:

सुरेश और अमित घर के सामने वाले पेड़ की डाल पर बैठे गप्पें मार रहे थे। दोनों कक्षा-4 में पढ़ते थे, पर अलग-अलग स्कूल में। सुरेश ने अमित से कहा, 'आज तो मेरा होमवर्क करने का बिल्कुल मन नहीं कर रहा'। अमित ने पूछा, ''क्यों? क्या हुआ?''

''आज मैडम ने एक कविता पढ़ाई थी- 'पढ़क्कू की सूझ'। मुझे तो कुछ पल्ले नहीं पड़ा। ऊपर से मैडम ने उसका भावार्थ लिखने का काम दे दिया है। मुझे तो ये भी नहीं पता, भावार्थ होता क्या है।'' सुरेश ने खीझते हुए कहा। अमित ने कहा- ''अरे! यह कविता तो बड़ी मज़ेदार है। परसों मेरे सर ने भी यही कविता पढ़ाई थी। हम सब तो हँस-हँस के लोटपोट हो गए थे और हमारे सर तो कभी भावार्थ-शावार्थ लिखने के लिए नहीं कहते। बल्कि वे जो काम देते हैं, उसे करने में तो बहुत मज़ा आता है।''
''चल-चल! क्यों मुझे उल्लू बना रहा है। कविता भी कहीं मज़ेदार होती है और ये कविता? ये तो सिर के ऊपर से निकल जाती है।'' सुरेश ने अमित की बात का विश्वास ही नहीं किया।

आपको क्या लगता है? ऐसा क्यों होता है कि एक ही कविता एक कक्षा में बोझ जैसी बन जाती है तो दूसरी कक्षा में वही कविता हँसने-गुदगुदाने और खेल खेलने का साधन बन जाती है? यकीनन इस अंतर का रहस्य कविता 'पढ़ाने' के तरीके में छिपा है।

अमित के अध्यापक ने इस कविता को कक्षा में इस तरह बच्चों के सामने प्रस्तुत किया कि वह बच्चों के लिए आनंददायक और सहज हो गई। जबकि सुरेश की अध्यापिका ने शायद किसी रस्म की तरह काम निपटा भर लिया।

आप 'पढ़क्कू की सूझ' कविता एन.सी.ई.आर.टी द्वारा प्रकाशित हिंदी पाठ्यपुस्तक 'रिमझिम, भाग-4' में देख सकते हैं। इसे हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखा है। आइए, स्वयं अमित के अध्यापक की ज़बानी सुनते हैं कि उन्होंने अपनी कक्षा में 'पढ़क्कू की सूझ' कविता को किस तरह भाषाई आदान-प्रदान का माध्यम बनाया।

वातावरण निर्माण- उस रोज़ मैंने कक्षा में जाकर रोज़ की तरह बच्चों से बातचीत शुरू कर दी। बच्चे छुट्टियों के बाद स्कूल में लौटे थे। मैंने बच्चों से पूछा- छुट्टियों में क्या किया? कौन-कौन घूमने गए थे? कहाँ गए थे? किस-किससे मिले? क्या-क्या देखा? आदि।

बच्चे अपने अनुभव बहुत खुशी और उत्साह से बता रहे थे। कुछ बच्चों ने बताया, ''सर, हमने अपने नाना के साथ खेती भी की।''
''अच्छा? नाना जी हल बैलों से चलाते हैं या ट्रैक्टर से?'' ''बैल से। हमारे पास एक बैल है।'' उस बच्चे ने बताया। ''बैल और किस-किस काम आता है?'' मैंने पूछा। बच्चों ने बताया- बोझा उठाने

के लिए, हल चलाने के लिए, गाड़ी खींचने के लिए, कोल्हू चलाने के लिए आदि। अब मैंने बच्चों से कोल्हू के बारे में पूछा। बच्चों को कोल्हू के बारे में ज़्यादा कुछ पता नहीं था। मैं अपने साथ कोल्हू और बैल के फोटोग्राफ लेकर गया था। मैंने वे चित्र बच्चों को दिखाए और बोर्ड पर लगा दिए। इसके बाद मैंने बच्चों से पूछा- कोल्हू में गोल-गोल घूमता बैल क्या सोचता होगा? जिस-जिस बच्चे का मैं नाम लूँगा, वह सामने आकर कोल्हू के बैल की एक्टिंग करेगा और डायलॉग बोलेगा।

मैंने तीन-चार बच्चों के बारी-बारी से नाम लिए। हर बच्चा सामने आता, गोल चक्कर में झुककर घूमता और खुद को बैल की जगह रखकर उसके मन की अभिव्यक्ति करता। किसी ने कहा- हाय राम। कब तक गोल-गोल घूमना पड़ेगा। किसी ने कहा- इससे अच्छा तो मैं गाय होता। कम-से-कम मालिक मेरी सेवा तो करता। किसी ने कहा- काश मेरा मालिक बिजली से चलने वाली मशीन लगा ले। मुझे भी थोड़ा आराम मिल जाए।

बच्चों का अभिनय देखकर और संवाद सुनकर पूरी कक्षा खिलखिलाकर हँस रही थी। इसी हँसी भरे माहौल का लाभ उठाते हुए मैंने बच्चों को बताया, ‘‘रिमझिम में कोल्हू के बैल के बारे में एक मज़ेदार कविता है। उसे गाएँ?’’
बच्चे एक स्वर में बोल उठे, ‘‘हाँ’’।
किसी ने तुरंत किताब में से वह पृष्ठ खोल लिया तो किसी ने उसका नाम भी बता दिया– पढ़क्कू की सूझ! इसका मतलब बच्चे पन्ने पलट-पलटकर उस कविता को बहुत पहले ही खोज चुके हैं। मेरा ही नहीं, आपका भी यह अनुभव रहा होगा कि प्रत्येक बच्चा नई किताब को हाथ में लेते ही एक-एक करके उसके सारे पन्ने और चित्रों पर खुद-ब-खुद नज़र डाल लेता है।

हर बच्चा मन में उमंग और उत्साह लिए विद्यालय में कदम रखता है। वह बहुत कुछ कहना चाहता है, सीखना चाहता है। यह तभी संभव हो सकता है जब शिक्षक कक्षा के प्रत्येक बच्चे को स्नेह दें, उसकी हर बात ध्यान और धैर्य से सुनें, उससे आत्मीय नाता बनाएँ, और बच्चे की रुचि को ध्यान में रखते हुए शिक्षण प्रक्रिया के दौरान विभिन्न गतिविधियाँ करवाएँ। बच्चे को शिक्षक से स्नेह मिलेगा तो वह शिक्षक को उससे भी अधिक स्नेह और सम्मान देगा। बच्चे की आयु, स्तर और रुचि को केंद्र में रखते हुए सीखने का अवसर दिया जाए तो निश्चित रूप से वह इस अवसर का भरपूर लाभ उठाएगा।

किसी कविता को सुनने-सुनाने से पहले उसके लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इससे बच्चे उस कविता के कथ्य और भाव को अधिक अच्छी तरह समझ पाते हैं और उसके द्वारा बेहतर रसानुभूति कर पाते हैं। इससे कक्षा के मानस को कवि के मानस तक पहुँचने में सहायता मिलती है। मैंने बातचीत, अभिनय और चित्रों के द्वारा कविता हेतु उपयुक्त वातावरण रचने का प्रयास किया। आप किसी खेल, कहानी, फिल्म या कार्टून द्वारा भी यह कार्य कर सकते हैं।

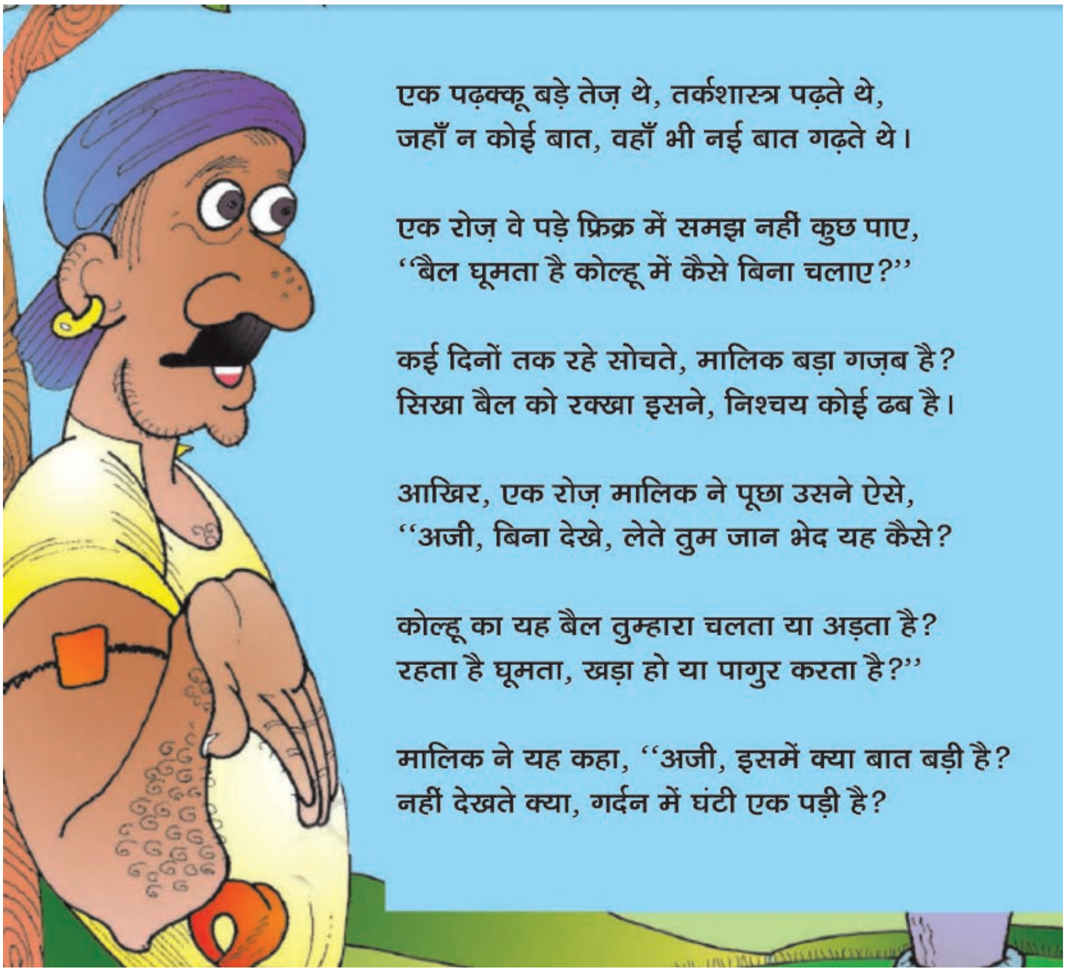

Figure 83 रिमझिम-4 से 'पढ़क्कू की सूझ' कविता का पृष्ठ

कविता सुनना-सुनाना

इसके बाद मैंने बच्चों को कविता के लिहाज़ से उचित सुर, ताल और लय के साथ कविता गाकर सुनाई। मैं बच्चों को कविता सुनाने से पहले ही मेज पर थाप देकर कविता की लय का अभ्यास कर चुका था। इस कारण मुझे बीच में अटकना नहीं पड़ा।

एक बार मैंने बच्चों से कहा, "मैं कविता की एक-एक पंक्ति गाऊँगा। तुम मेरे बाद उसे दोहराना।" फिर मैंने कहा, "कविता की एक पंक्ति मैं गाऊँगा, तुम अगली पंक्ति गाना।" इसके बाद मैंने कहा, "कविता की एक पंक्ति तुम गाना, उससे अगली मैं गाऊँगा।" फिर मैंने कहा, "तुम कविता की एक-एक पंक्ति गाओ। मैं तुम्हारे पीछे-पीछे उन्हें दोहराऊँगा।" बच्चों को बड़ा अच्छा लगता है, जब शिक्षक उनके पीछे-पीछे पंक्तियों को दोहराते हैं। उनमें नए जोश और आत्मविश्वास का संचार होता है।

एक बार मैंने बच्चों को एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित रिमझिम ऑडियो सी.डी. में से वह कविता सुनाई। वाद्य यंत्रों के साथ कविता सुनने का अलग ही मज़ा होता है। ऑडियो सी.डी. से कविता सुनकर बच्चे बहुत उत्साहित थे। मैंने कहा, "चलो, हम अपनी कक्षा की चीज़ों को ही बाजे की तरह इस्तेमाल करके कविता गा लेते हैं।" इसके बाद मैंने ताली, मेज पर थाप, पैरों की ताल, जांघों पर हथेली की

थाप, ज्योमेट्री बॉक्स हिलाने से हुई आवाज़ों की ताल पर बच्चों के साथ कविता गाई। बच्चे ताल के साथ मिलकर बहुत अच्छी तरह गा रहे थे।

इसके बाद मैंने बच्चों को समूहों में बाँट दिया और उन्हें अपने-अपने समूह में कविता का एक-एक अंश अपने ख़ास तरीके से तैयार करने को कहा। इस काम के लिए मैंने प्रत्येक समूह को 10 मिनट का समय दिया। मैं प्रत्येक समूह के पास जाकर देख रहा था कि वे किस तरह और क्या तैयारी कर रहे हैं। उनसे बातचीत करके मैं उनके विचारों को स्पष्ट करने में उनकी मदद कर रहा था। तैयारी के बाद प्रत्येक समूह ने अपने अनोखे अंदाज़ में कविता के अंशों को प्रस्तुत किया। यदि कविता छोटी हो तो प्रत्येक समूह को पूरी कविता को प्रस्तुत करने के लिए भी कहा जा सकता है।

बातचीत व स्पष्टीकरण

कविता सुनाने के बाद मैंने बच्चों से कविता के बारे में बातचीत की। बातचीत का कोई पूर्व-निर्धारित मुद्दा या एजेंडा नहीं था। बस बच्चों की प्रतिक्रियाओं के अनुसार बात में से बात निकलती गई। कक्षा में बातचीत करना हिंदी शिक्षण का एक अनिवार्य अंग होता है। बातचीत द्वारा बच्चे अपनी संपूर्ण शब्दावली तथा व्याकरणिक क्षमताओं का सार्थक इस्तेमाल ही नहीं करते, बल्कि अपनी बात आत्मविश्वासपूर्वक कहना, धैर्यपूर्वक सुनना, दूसरों की अभिव्यक्ति का सम्मान करना, अपनी बात के समर्थन में उदाहरण देना, दूसरों की बात को गलत साबित करने के लिए तर्क देना, अपने अनुभव, कल्पनाएँ, योजनाएँ, पसंद-नापसंद, इच्छाएँ आदि बताना जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं।

बातचीत द्वारा बच्चों को किसी रचना को आत्मसात करने में सहायता मिलती है और वे उसके अनछुए पहलुओं तक पहुँच पाते हैं। बातचीत द्वारा रचना को बच्चों के दैनिक जीवन और पूर्व-अनुभवों से जोड़ा जा सकता है और रचना की (भाषाई) विशेषताओं की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। बातचीत के आधार पर बच्चों को बाद में औपचारिक क्रियाकलापों, जैसे- प्रश्न-उत्तर, गृहकार्य आदि को करने में भी उल्लेखनीय सहायता मिलती है। बातचीत करते-करते बच्चों को कवि के जीवन, कविता की पृष्ठभूमि, परिवेश आदि के बारे में भी बताया जा सकता है।

मैंने बच्चों से कविता के बारे में जो बातचीत की, उसके कुछ मुख्य बिंदु निम्नलिखित थे:

- पढ़क्कू बड़े तेज़ थे। तेज़ किसे कहेंगे? हमारी कक्षा में कौन-कौन तेज़ हैं? कौन बड़ा तेज़ है? कौन छोटा तेज़ है? क्यों तेज़ है?
- गढ़ना क्या होता है? गढ़ने-बनाने में फर्क, समानता।
- कोल्हू के मालिक को कोल्हू के चलने का पता कैसे चलता था? तुम्हें कौन-कौन से कामों का पता बिना देखे, सुनकर/सूँघकर चल जाता है?
- ‘कोरी’ चीज़ों के नाम- कोरा पन्ना, कोरी दीवार आदि। ‘कोरा’ का मतलब?
- घंटी की आवाज़ कहाँ-कहाँ से आती है?
- पढ़ने से समझदार बनते हैं या मूर्ख? पढ़क्कू क्या बन गए थे, क्यों? जो पढ़-लिख नहीं पाते? उनमें समझदारी कहाँ से आई?

- बैल भी मोटी-मोटी किताबें पढ़ लेता तो क्या होता?
- मालिक पढ़क्कू पर क्यों हँसा?
- कोल्हू का उपयोग, विकल्प, फायदे, नुकसान।
- पुस्तक में दिए चित्र पर बातचीत, चित्र की बारीकी जैसे- कौन किसे देख रहा है? क्या-क्या नज़र आ रहा है? चित्र के आधार पर सवाल पूछने का खेल, जिसमें बच्चे पूछेंगे, शिक्षक बताएगा बच्चों को।
- बातचीत द्वारा कविता में आए नए शब्दों के अर्थ समझना।

रोचक गतिविधियाँ

बातचीत के बाद मैंने कविता को आधार बनाकर अनेक तरह की रोचक गतिविधियाँ अगले कुछ दिनों तक करवाईं। इन गतिविधियों को करने में बच्चों को आनंद तो आया ही, उन्होंने विविध तरीकों से भाषा का सार्थक संदर्भों में इस्तेमाल किया, नई शब्दावली का अभ्यास हुआ, और बच्चों की शाब्दिक अभिव्यक्ति क्षमता का भी विकास हुआ। मैंने ये सभी क्रियाकलाप बच्चों के सुविधाजनक आकार के समूह बनाकर किए। समूह बनाकर कार्य करना शैक्षिक तथा व्यावहारिक दृष्टि से बहुत उपयोगी रहता है। छोटे समूह में सभी बच्चों को योगदान करने के अवसर मिलते हैं और वे एक-दूसरे की सहायता से नई बातें और कौशल भी बिना किसी दबाव के अर्जित कर लेते हैं। एक शिक्षक के दृष्टिकोण से भी देखा जाए तो समूहों का निरीक्षण और उनके कार्य का मूल्यांकन अधिक सुविधाजनक होता है। मैंने जो गतिविधियाँ समूह बनाकर करवाईं, उनमें से कुछ गतिविधियाँ आगे दी गई हैं:

कविता का अभिनय

मैंने प्रत्येक समूह को कोल्हू के मालिक और पढ़क्कू के बीच हुई बातचीत का अभिनय करने के लिए कहा। समूहों ने स्वयं निर्धारित किया कि कौन बच्चा मालिक की भूमिका करेगा और कौन पढ़क्कू की। सबने मिलकर स्वयं संवाद बनाए और प्रस्तुति दी। किसी-किसी समूह में एक बच्चे ने बैल का भी अभिनय किया, जो मालिक और पढ़क्कू की बातचीत सुनकर अपने चेहरे से ही बहुत कुछ अभिव्यक्त कर रहा था।

तुलना

मैंने बच्चों को याद दिलाया– यह कविता रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखी है। इन्हीं की लिखी कविता तुमने पिछली कक्षा में भी पढ़ी थी- मिर्च का मज़ा। उस कविता और इस कविता की तुलना करके निम्नलिखित तालिका भरो:

	पढ़क्कू की सूझ	मिर्च का मज़ा
लेखक • कविता के मुख्य पात्र • कविता की सबसे रोचक बात • कविता का वह शब्द जो समझ में नहीं आया • कविता की कुल पंक्तियों की संख्या • सबसे महत्त्वपूर्ण शब्द		

मैंने यह तालिका बोर्ड पर बना दी, ताकि प्रत्येक समूह अपनी कॉपी पर इसे बना सके। प्रत्येक समूह को कक्षा-3 से एक-एक किताब (रिमझिम) मंगाकर दे दी गई, ताकि वे दोनों कविताओं की तुलना कर सकें।

क्रम से

मैंने प्रत्येक समूह को लिखने के लिए कागज़ के चौकोर कार्ड दे दिए। वे कार्ड बच्चों की मदद से पहले से ही तैयार कर लिए गए थे। मैंने बच्चों से कहा- कविता में से अपनी मनपसंद पंक्ति चुन लो और उसे इन कार्डों पर लिख लो। प्रत्येक कार्ड में केवल एक शब्द लिखना है।

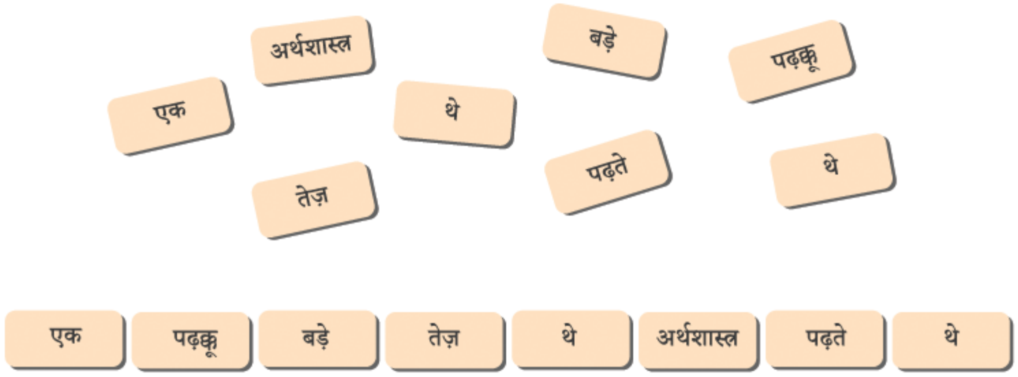

इसके बाद मैंने प्रत्येक समूह के कार्ड लेकर उनका क्रम बिगाड़ दिया। प्रत्येक समूह के कार्डों के सेट मैंने मेज पर अलग-अलग रख दिए। फिर मैंने एक-एक करके प्रत्येक समूह को बुलाया और उन्हें किसी दूसरे समूह के कार्ड दे दिए। जब सबको कार्ड मिल गए, मैंने उन्हें बताया-''तुम्हारे पास जो कार्ड हैं, उनसे कविता की सही पंक्ति बनाइए। जो समूह सबसे पहले सही पंक्ति बना लेगा, वह जीत जाएगा।''

सभी समूह क्रम ठीक करने में जुट गए। विजेता समूह के लिए तालियाँ बजवाई गईं। जब सभी समूहों ने अपने-अपने वाक्य बना लिए तब मैंने पूछा- किस टोली की पंक्ति कविता में सबसे पहले आई थी? उसके बाद किस समूह की पंक्ति आई थी?

इस तरह सभी समूहों ने अपनी-अपनी पंक्तियों को कविता के क्रम में लगा दिया।

चित्र बनाना

मैंने बच्चों से कविता के बारे में अपने मन से चित्र बनाकर रंग भरने को कहा। मैंने बताया कि वे 'कविता' के बाद या पहले हुई बातों या घटनाओं का चित्र भी बना सकते हैं। चित्र बनाने के बाद बच्चों ने अपने-अपने चित्रों को शीर्षक दिए और कक्षा के प्रदर्शन बोर्ड पर लगा दिए।

कहानी

मैंने बच्चों से कहा, ''आज हम पढ़क्कू की कहानी बनाएँगे। हर बच्चा एक-एक वाक्य कहानी में जोड़ता

जाएगा।” पहला वाक्य मैंने कहा। अगला वाक्य एक बच्चे ने, उससे अगला वाक्य अगले बच्चे ने कहा और इस तरह कहानी बनती चली गई। जब कहानी पूरी हो गई, मैंने कहा, ‘‘अब सब बच्चे अपनी-अपनी कॉपी में यह कहानी लिख लो।’’

कविता संग्रह

बच्चों की अपनी मनपसंद कविताओं का संग्रह करने का काम अनेक तरीकों से करवाया जा सकता है। कुछ तरीके हैं- कविता की कॉपी, कविता-थैली, कविता-बोर्ड, कविता की स्क्रैप-बुक आदि। मैंने कक्षा में एक डिब्बा रख दिया और बच्चों से उनकी मनपसंद कविताएँ ढूँढने के लिए कहा। बच्चों ने पाठ्यपुस्तकों, पत्रिकाओं, पुस्तकालय, समाचार पत्रों से कविताएँ एकत्रित कीं। उन्हें बच्चों ने समान आकार के रंगीन कागज़ों पर लिखा और डिब्बे में रख दिया। साल के अंत तक आते-आते डिब्बे में रोचक कविताओं का अच्छा-ख़ासा संग्रह तैयार हो गया।

उदाहरण

कक्षा में कविता निर्माण से संबन्धित कार्य का संक्षिप्त अनुभव (शिक्षिका रेखा चमोली जी)

आज कविता पर काम करना था। मैंने पिछले दिनों कक्षा में कहानी और कविता के स्वरूप को लेकर बच्चों से बात की थी। बच्चे कविता व कहानी में अन्तर पहचानते हैं, पर अभी उनके लिखने में ये ठीक से नहीं आ पाया है। शुरुआती लेखन के लिए मैंने बच्चों का ध्यान लय, तुकान्त शब्द, कम शब्दों का उपयोग व बिंबों की ओर दिलाने का प्रयास किया। मैं जानती हूँ कि कविता एक संवेदनशील हृदय की अभिव्यक्ति है। एक अच्छी कविता हमारे मन को छू लेती है। हमें ऊर्जा से भर देती है या कुछ कर गुज़रने को प्रेरित करती है। हर व्यक्ति कविता नहीं लिख पाता, पर यहाँ अपनी कक्षा में मैं कविता को इस तरह देखती हूँ कि बच्चे किसी चीज़ के प्रति अपने भावों को व्यक्त करना सीखें, अपने लिखे को मन से पढ़ पाएँ। कक्षा 4 व 5 वाले बच्चे अपनी कक्षा में कुछ विषयों पर कविता लिखने का प्रयास कर चुके हैं। कुछ ने छोटी-छोटी कविताएँ लिखी हैं। ये बहुत सी कविताओं को सुन व पढ़ चुके हैं।

मैंने कविता लिखने के लिए विषय चुना- पानी। बच्चों से पानी को लेकर बातचीत की। प्रत्येक बच्चे ने पानी को लेकर कुछ-न-कुछ बात कही। जैसे:

पानी नल से आता है।
पानी को हम पीते हैं।
पानी नदी, धारे-पनियारे, बारिश से भी आता है।

पानी कहाँ से आता है? उससे क्या-क्या करते हैं? यदि पानी न हो तो क्या होगा? पानी हमारे किन-किन काम आता है? आदि के आसपास ही बच्चों की ज़्यादातर बातें रही। कक्षा में बातों का दोहराव होता देख मैंने बच्चों से कहा, मैं श्यामपटट् पर पानी शब्द लिखूंगी, इससे जुड़ी तुम्हारे मन में पानी को लेकर जो भी बातें आती हैं, उसे एक शब्द में बताना है। जो शब्द एक बार आ जाएगा, उसे दुबारा नहीं बोलना है। बच्चे शब्द बोलते गए, मैं उन्हें लिखती गई। कुल 50-60 शब्द हो गए।

उदाहरण के लिए– पानी पीना, खाना बनाना, मुँह धोना, नहाना, प्यास, मरना, मीठा, गन्दा, गरम, ठंडा, चाय, स्वच्छ, निर्मल, बादल, इन्द्रधनुष, पहाड़, झरने, गौमुख, नदी, भागीरथी, गंगा, गाड़, पनियारा, टंकी, बाल्टी, कोहरा, बुखार, भींगना, सिंचाई, बिजली, बांध, जानवर, खेती, रोपाई, बहना, भाप निकलना, जीवन, मछली, साँप, मेंढक, आकाश, भरना, ज़रूरत, होली, सफाई आदि।

अब मैंने बच्चों से तुकान्त शब्दों पर बात की। हमने पानी, काम, बादल, जल, भींगना, गीला आदि शब्दों पर तुकान्त शब्द बनाए। फिर मैंने श्यामपटट् पर एक पंक्ति लिखी-

“ठंडा-ठंडा निर्मल पानी,
पानी से मुँह धोती नानी।”

इन पंक्तियों को बच्चों को आगे बढ़ाने को कहा, बच्चों ने मिलजुल कर कविता को आगे बढ़ाया।

पानी आता बहुत काम
इसके बिना न आता आराम
हमको जीवन देता पानी
बताती हमको प्यारी नानी।

इसके बाद मैंने बच्चों से एक और कविता पानी पर ही लिखने को दी। बच्चों ने अपनी-अपनी कविताएँ लिखीं। बच्चों ने अपनी कविताएँ सुनानी शुरू की।

सरस्वती (कक्षा 5) ने अपनी कविता में मीठा, पर्वत व कहानी शब्द लिखे थे।
अनिल (कक्षा 5) ने मछली के जीवन व काम का उपयोग बताया था।
दीपक (कक्षा 5) ने ठंडा, धरती से पानी का निकलना और पानी का कोई रंग ना होना बताया था। जबकि पूर्व की बातचीत में पानी के रंग पर कोई बात नहीं आई थी।
अंबिका (कक्षा 5) ने धारा, नदी व जीवन की बात कही थी।
कुछ बच्चों ने बहुत सुंदर कविताएँ लिखीं-

जैसे प्रवीण (कक्षा 5) ने लिखा–

‘इस पानी की सुनो कहानी
इसे सुनाती मेरी नानी
पानी में है तन मन
पानी में है जीवन
कहती थी जो वह बह जाता
कहीं ठोस से द्रव बन जाता।’

मुझे प्रवीण की कविता में पहले पढ़ी किसी कविता का प्रभाव दिखा। जबकि इससे पहले पढ़ी कविताओं में कम सधापन था, पर उनमें मौलिकता अधिक थी। कुछ बच्चों ने पूरे-पूरे वाक्य लिख दिए थे। कुछ की पहली पंक्ति का दूसरी से सामंजस्य नहीं था। शब्दों की पुनरावृत्ति अधिक थी।

मेरी स्वयं भी कविता के विषय में समझ कम है, पर मैं ये चाहती थी कि बच्चे अपनी बात को इस तरह लिखें कि कम शब्दों में ज़्यादा बात कह पाएँ और अगर उसमें लय भी हो तो मज़ा ही आ जाए। बात आगे बढ़ाते हुए मैंने श्यामपट्ट पर एक वाक्य लिखा:
पानी के बिना हमारा जीवन अधूरा है।
फिर इसी पंक्ति को अलग-अलग तरीके से लिखा–
1- पानी बिन जीवन अधूरा
2- बिन पानी अधूरा जीवन
3- पानी बिन अधूरा जीवन

जब इन पंक्तियों में बच्चों से अंतर जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि पहली पंक्ति कहानी या पाठ की है, जबकि बाद की पंक्तियाँ कविता की है। कारण पूछने पर बच्चों में से ही बात आई कि कविता छोटी होती है। शब्द कम होते हैं, उनका ज़्यादा अर्थ निकालना पड़ता है। अब मैंने मनीषा से अपनी कविता पढ़ने को कहा व उसे श्यामपट्ट पर लिख दिया। मनीषा ने लिखा था–

पानी आता है गौमुख से
पानी आता पहाड़ों से
पानी आता है नल से
पानी हम पेड़ पोधौं को देते हैं।
पानी का कोई रंग नहीं होता है।

मैंने बच्चों से पूछा, क्या इन पंक्तियों को किसी और तरीके से भी लिख सकते हैं?
“हाँ जी”, शिवानी ने कहा–

पहाड़ों से निकलता पानी

अरविन्द ने दूसरी पंक्ति जोड़ी।

गौमुख का ठंडा स्वच्छ पानी

इसी प्रकार पंक्तियाँ जुड़ती गईं।

नल से आता है स्वच्छ पानी
पेड़ पौधे भी पीते पानी
बिना रंग का होता पानी।

फिर हमने इस पर बात की कि पहली लिखी पंक्तियों व बाद की पंक्तियों में क्या अंतर है।
कौन कविता के ज़्यादा नजदीक है?
बच्चों के जबाव आए- दुबारा लिखी पंक्तियाँ।

क्यों? क्योंकि कम शब्दों में ज़्यादा बात कह रही हैं। अन्त के शब्द मिलते-जुलते हैं। मैंने बच्चों से कहा, ज़रूरी नहीं कि हर पंक्ति में अन्त में तुकान्त शब्द आएँ, पर हमें कोशिश करनी चाहिए कि हमारी कविता में एक लय हो और इससे कोई बात निकलकर आ रही हो। मैंने बच्चों से अपनी अभी लिखी हुई कविता को एक बार और ठीक करके लिखने को कहा।

इस बार बच्चों ने अपनी पंक्तियों को और परिष्कृत करके लिखा।

उदाहरण के लिए बच्चों ने लिखा–

प्रियंका (कक्षा 3)

नदिया बहती कल-कल-कल
पानी करता छल-छल-छल

प्रीति (कक्षा 3)

कैसे पानी पीते हम
पानी से जीते हम

शुभम (कक्षा 3)

जब मछली पानी से बाहर आती
इक पल भी वो जी न पाती।

दिव्या (कक्षा 4)

ठंडा ठंडा निर्मल पानी
कहानी सुनाती मेरी नानी
पानी बहुत दूर से आता
बर्फ से पानी जम जाता
पर्वत से आता पानी
धरती से निकलता पानी।

Figure 84 झील देखकर खुश होती बच्ची का चित्र

निधि (कक्षा 5)

पानी होता बहुत अच्छा
इसके बिना न चलता काम
पानी से हम सबका जीवन
इसके बिना सब परेशान।

दीपक (कक्षा 5)

झरने से सब पानी पीते
झरने से बाढ़ भी आती
झरने बहुत सुन्दर दिखते
इसके नीचे हम नहाते
झरने बहुत तेज़ी से आते
झरने पत्थरों से टकराते

इस तरह सभी बच्चों ने अपनी-अपनी कविताएँ लिखीं और ठीक कीं।

2.9 कहानियाँ और पढ़ना-लिखना सीखना

भाषा शिक्षण कक्षा में कहानियों के उपयोग से संबन्धित संभावित अवलोकनीय कक्षा प्रक्रियाएँ (ऑब्ज़र्वेबल क्लासरूम प्रैक्टिसेज़) और उनके संकेतक–

कहानियाँ और पढ़ना-लिखना सीखना	
कक्षा एक व दो के लिए 1. कक्षा में पाठ्यपुस्तक के अलावा अन्य कहानियों को सुनाया जाता है और उन पर चर्चा होती है। 2. कहानियों को हावभाव और आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ सुनाया जाता है। 3. कक्षा में कहानी के पोस्टर लगे हैं और उन्हें अक्सर बदला भी जाता है। 4. शिक्षक कहानी को पढ़ने-लिखने से जोड़ने सम्बन्धी गतिविधियाँ करते हैं। 5. कहानी को पुस्तक से, चार्ट या बोर्ड पर लिखकर पढ़ा जाता है। उसमें से शब्दों को रेखांकित किया जाता है। 6. शब्दों की पहचान पर काम किया जाता है। शब्दों के द्वारा कुछ वर्णों और मात्राओं पर काम किया जाता है। 7. कहानी के वर्णों से शब्द-जाल आदि की गतिविधियाँ करवाई जाती हैं। 8. कहानी के पात्रों और क्रम पर बच्चों से बात की जाती है। इसके लिए कहानी के क्रम को पहचानने/क्रम में जमाने की गतिविधि समूह में एवं व्यक्तिगत रूप से कराई जाती है। 9. बच्चे कहानी से कुछ शब्दों/वाक्यों को कॉपी में, बोर्ड पर लिख पा रहे हैं। 10. कहानी से सम्बंधित गतिविधियों में बच्चों की प्रगति का नियमित आकलन किया जाता है, उसे दर्ज भी किया जाता है। 11. जिन बच्चों को विशेष सहायता की आवश्यकता होती है, उन्हें रेखांकित करके उचित सहायता प्रदान की जाती है।	**कक्षा तीन से पाँच के लिए** 1. पाठ्यपुस्तकों से और बाल साहित्य से भी चुनकर कहानियाँ कक्षा में सुनाई जाती हैं। 2. बच्चों की कहानी के चयन को लेकर एवं उसकी कक्षा स्तर पर प्रासंगिकता को लेकर स्पष्टता दिखाई देती है। 3. कहानियों का बच्चों के सन्दर्भ से जुड़ाव दिखाई देता है। 4. कहानियों को पढ़ने-लिखने से बखूबी जोड़ा जाता है। 5. कक्षा में पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य किताबें उपलब्ध कराई जाती हैं और उनके आधार पर अभिव्यक्ति, पढ़ने-लिखने के अवसर नियमित रूप से उपलब्ध कराए जाते हैं। 6. बच्चों की भाषा एवं किताब की भाषा की शब्दावलियों पर कोड मिक्सिंग करके अर्थ निर्माण करने पर कार्य करवाने का काम दिखता है। 7. बच्चों को एकल और समूह में कहानी को चार्ट से पढ़ने के अवसर दिए जाते हैं और उसके आधार पर उनके पठन कौशल का आकलन किया जाता है। 8. कक्षा के आधे से ज़्यादा बच्चे किताब को पढ़ लेते हैं। जो गति के साथ नहीं पढ़ पाते, वे भी अटक-अटककर कुछ पढ़ने में सफल हो जाते हैं। उन बच्चों की मदद की जाती है। 9. बच्चों को अपने मन से कहानी सुनाने और लिखने के अवसर दिए जाते हैं और इस आधार पर उनकी मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति का आकलन किया जाता है। 10. कक्षा में अधिकांश बच्चे स्वतंत्र रूप से कहानी के आधार पर सरल वाक्य और अनुच्छेद लेखन कर पाते हैं। 11. कहानी पर विविध गतिविधियाँ जैसे- चित्र देखकर पात्रों के नाम लिखना, शब्दों से कहानी बनाना, अधूरी कहानी को पूरा करना आदि कराई जाती हैं और उनके आधार पर बच्चों की अभिव्यक्ति, लेखन कौशल आदि का आकलन किया जाता है। 12. जिन बच्चों के साथ मुश्किलें आती हैं, उनके साथ अतिरिक्त काम की योजना बनाई गई है।

2.9.1 कहानी की परंपरा

कहानियाँ मानव विकासक्रम का एक अभिन्न अंग हैं। मानव, सभ्यता की शुरुआत से ही अपनी सोच, समझ, अनुभव, आशंकाओं, आविष्कारों और यहाँ तक कि स्वयं को भी कहानियों में ही व्यक्त करता आया है। लिखित भाषा के विकास और विस्तार से पहले तक कहानियाँ ही ज्ञान और अनुभवों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने और उन्हें हज़ारों हज़ार साल तक जीवित रखने में मदद करती रही हैं। आज शायद ही कोई देश होगा जहाँ कथा साहित्य न हो और जहाँ आनंद प्राप्ति के लिए कहानियाँ कही या पढ़ी न जाती हों। संसार में कहानियों को कहने, सुनने और पढ़ने-लिखने की एक विस्तृत परंपरा रही है और इस परंपरा का लाभ बच्चों को मिलता भी रहा है।

आज शायद ही कोई देश होगा जहाँ कथा साहित्य न हो और जहाँ आनंद प्राप्ति के लिए कहानियाँ कही या पढ़ी न जाती हों। संसार में कहानियों को कहने, सुनने और पढ़ने-लिखने की एक विस्तृत परंपरा रही है और इस परंपरा का लाभ बच्चों को मिलता भी रहा है।

बात कहानियों की करें तो ये ऐसे वृत्तांत होते हैं जो हमें दुनिया को समझने में मदद करते हैं। कहानियों में हमारे अंदर उन हिस्सों तक पहुँचने की शक्ति है जहाँ शायद सामान्य शिक्षा नहीं पहुँच पाती। इससे यह पता चलता है कि भाषा की कक्षा में भाषा सिखाने के अलावा और भी कई बातें सीखने को मिलती हैं। हमारे विद्यार्थी हमें बताते हैं और दिखाते भी हैं कि उनका विश्वास, व्यवहार और नज़रिया हमारी कहानियाँ सुनने के बाद किस तरह बदल जाता है। विचारों और व्यवहार पर पड़ने वाला यही प्रभाव भाषा सीखने को अनुभव संपन्न बना देता है, जिसे छात्र बहुत ही अमूल्य पाते हैं।

वर्तमान परिस्थितियों की बात करें तो हाल-फिलहाल इस परंपरा का ह्रास हुआ है। कहानी परंपरागत रूप से जिन परिस्थितियों में सुनाई जाती थी, वह आज के पारिवारिक और सामाजिक जीवन में उपलब्ध नहीं है। आज का मानव शायद सबसे व्यस्ततम मानव है, और जीवन में अन्य विभिन्न माध्यमों की उपस्थिति के कारण कहानियों को सुनने-सुनाने में लगने वाला समय कहीं और ही खो जाता है, और बच्चे अपने स्वाभाविक विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अवयव, कहानी से महरूम हो जाते हैं। लेकिन परिवार और समाज की इन परिस्थितियों में आज भी बच्चों को कहानी सुनाने की उतनी ही ज़रूरत है जितनी पहले थी।

बच्चे और कहानी

अतः आवश्यक है कि कहानी सुनाने की कला को नए सिरे से प्रोत्साहन दिया जाए। लोककथाओं और परी कथाओं की संरचना छोटे बच्चों की सोचने की शैली से मेल खाती है और यही इन कहानियों के प्रति छोटे बच्चों के आकर्षण का ख़ास आधार भी है। बहुत ही गंभीर विधाओं के कल्पनाशील और न्यायसम्मत हल इन कहानियों की संरचना में गुँथे होते हैं। ये कहानियाँ समाज में अपना जीवन एक छोटे शरीर और तमाम तरह की आशंकाओं के साथ शुरू कर रहे छोटे बच्चों की कई मानसिक मांगें पूरी करती हैं।

कहानी सुनना लगभग हर बच्चे को अच्छा लगता है, क्योंकि कहानी सुनने के दौरान उसे आनंद मिलता है। इन कहानियों को सुनते हुए छोटे बच्चे अपनी मातृभाषा की बुनियादी बातों के संपर्क में आते हैं और इसके फलस्वरूप शब्द और वाक्य रचना का एक भरा-पूरा भंडार उनके हाथ लगता है। इस भंडार से वंचित रह जाने वाले बच्चे कुछ बड़े होकर जब पढ़ना और लिखना सीखते हैं तब उनके लिए भाषा आंतरिक चुनौती बन जाती है और वह सहज ज़रूरत या इच्छा नहीं बन पाती। परिणामस्वरूप वे ध्यानपूर्वक सुनने, सही ढंग से बोलने, संवाद में हिस्सा लेने जैसी क्षमताओं का सामान्य रूप से विकास नहीं कर पाते।

इन कहानियों को सुनते हुए छोटे बच्चे अपनी मातृभाषा की बुनियादी बातों के संपर्क में आते हैं और इसके फलस्वरूप शब्द और वाक्य रचना का एक भरा-पूरा भंडार उनके हाथ लगता है।

बच्चे को कहानी कितनी सरस लगती है, वह कितने ध्यान और धैर्य के साथ सुनता है, यह काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि शिक्षक ने कहानी कैसे सुनाई।

स्कूल और कहानी

हमारे स्कूलों में आजकल जल्दी से जल्दी पढ़ना-लिखना सिखाने पर ज़ोर दिया जा रहा है। ऐसे बच्चों की कमी नहीं है जिनको तीन-चार वर्ष की आयु में ही अक्षर ज्ञान करा दिया गया हो। बिना किन्हीं सार्थक संदर्भों के प्राप्त किया गया यह अक्षर ज्ञान न केवल अनुपयोगी है, बल्कि अभिव्यक्ति की क्षमताओं के विकास में बाधा भी उत्पन्न करता है। सब कुछ तुरंत हासिल कर लेने के इस वातावरण में कहानी सुनाने जैसा धीमा और नियमित काम कहीं पीछे रह जाता है। कुछ लोगों का तर्क यह होता है कि ये कहानियाँ बच्चों को एक काल्पनिक दुनिया में रहने की प्रेरणा देती हैं। शिक्षा से जुड़े अनेक लोग यह कहते मिल जाएँगे कि कहानी सुनाने का मुख्य फायदा यह है कि कहानी के ज़रिए कोई अच्छी सीख बच्चों को दी जा सकती है। इस मान्यता के बल पर सीख को ध्यान में रखकर उसके इर्द-गिर्द कहानियाँ बुनी और सुनाई जाती हैं। उनके लिए यह समझना कठिन है कि कहानी कहने की उपयोगिता कहानी की सीख नहीं, कहने के धीरज और ढंग में है। कहानी के ज़रिए नैतिकता, ज्ञान विज्ञान, इतिहास और संस्कृति का ज्ञान बच्चों को देने की बात बहुत हो चुकी है और इस बात के परिणाम कोई ख़ास नहीं निकले। तो क्यों ना अब इस बात पर ज़ोर दिया जाए कि एक सुनने लायक कहानी सुनाई जाए?

कहानियों में बच्चे भाषा को टुकड़ों में सुनने की जगह, एक संदर्भ में सुन पाते हैं। कहानियों में बच्चों को नई शब्दावली और भाषा का परिचय मिलता है, वो भी संबंध के जाल में बुना हुआ। इनके अतिरिक्त कहानियों का उनके ज्ञान व व्यक्तित्व के निर्माण पर भी गहरा प्रभाव होता है। इसके साथ ही कहानियों से बच्चों को अपनी मान्यताओं के सीमित दायरे का एहसास हो सकता है और उन्हें सोचने-समझने के विकल्प भी मिल सकते हैं।

कैसी कहानियाँ

कहानी कहने का प्रमुख उद्देश्य आनंद लेना है, मगर यहाँ हम कहानियों का इस्तेमाल भाषा शिक्षण के लिए भी करने की बात कह रहे हैं। बच्चों के लिए कहानी चुनते समय यह ध्यान रखना चाहिए, क्या यह कहानी बच्चों को आनंद देगी और क्या यह कहानी बच्चों को पढ़ने-लिखने में मदद करेगी?

> क्यों न अब इस बात पर ज़ोर दिया जाए कि एक सुनने लायक कहानी सुनाई जाए?

मानव के साथ कहानियों ने भी अपनी वर्तमान परिस्थिति तक पहुँचने से पहले एक बहुत लंबा सफ़र तय किया है। जहाँ कुछ कहानियाँ समय की शिलाओं से टकराकर कहीं खो-सी जाती हैं, वहीं कुछ कहानियाँ समय की धाराओं के साथ प्रवाहित होती हुई हमेशा हमारे आसपास मौजूद होती हैं। आज हमें कक्षा में बच्चों के लिए बिल्कुल ऐसी ही कहानियों की ज़रूरत है जो समय के साथ विलुप्त नहीं हुईं और प्रासंगिक बनी रहीं। ऐसी पारंपरिक कहानियाँ पत्रिकाओं और व्हाट्सऐप में बहुतायत से मौजूद स्तरहीन और अनाकर्षक कहानियों से कहीं बेहतर हैं। अतः हमारा प्रयास होना चाहिए कि बच्चों के लिए पारंपरिक कहानियों का चुनाव किया जाए और उन्हें पूरी तैयारी से सुनाया जाए। पंचतंत्र की कहानियाँ इसका एक उदाहरण हैं।

पंचतंत्र, जातक, देश और दुनिया के अलग-अलग हिस्से के प्रसिद्ध लोककथाएँ और इनके साथ ही साथ बच्चों के कुछ प्रसिद्ध साहित्य, बरखा-सीरीज की किताबें और एकलव्य, तूलिका, रूम टू रीड, कथा झरना, इकतारा आदि प्रकाशनों से प्रकाशित कहानियाँ बच्चों के साथ पढ़ने और पढ़कर सुनाने के लिए उपयोग में लाई जा सकती हैं।

आरंभिक स्तर पर हमें छोटी-छोटी ऐसी कहानियाँ लेनी चाहिए जिनमें समान लयात्मक पंक्तियों या घटनाओं का दोहरान नज़र आए। कहानियाँ प्रकृति से संबंधित हो सकती हैं, जानवरों की हो सकती हैं, सूरज चाँद की हो सकती हैं, या फिर उसके पात्र बड़े और बच्चे भी हो सकते हैं। कहानियों के पात्र ऐसे हों जिनसे बच्चे परिचित हों। ये कहानियाँ अपने आप में रोचक हों और अच्छे ढंग से कही जाएँ। जैसे- लालू और पीलू, रूसी और पूसी, बिल्ली के बच्चे, भालू ने खेली फुटबॉल, टिपटिपवा आदि। इसके अतिरिक्त पाठ्यपुस्तक की कहानियों का भी उपयोग इस उद्देश्य के साथ किया जा सकता है। यदि उनमें चित्र स्पष्ट न हों तो उन चित्रों की बड़ी कॉपी करवाकर चार्ट पर लगाया जा सकता है और उन पर बात की जा सकती है।

2.9.2 भाषा की कक्षा और कहानी

भाषा की कक्षा में कहानी– कक्षा में कहानी सुनाने के लिए जीवंत माहौल की ज़रूरत होती है, कहानी सुनाने वाले को कहानी सुनाने से पहले कहानी सुनाने का माहौल बनाना पड़ता है। इसलिए कहानी को पढ़ने, सुनाने या पेश करने से पहले कहानी की प्रकृति, कथानक और पात्रों के हिसाब से रणनीति बननी चाहिए। इस बात का आभास और तैयारी कहानी सुनाने की होनी चाहिए कि अमुक कहानी पर बच्चे क्या सोच सकते हैं, क्या पूछ सकते हैं या उनसे किस बात पर चर्चा होनी चाहिए। अलग-अलग कहानी को बरतने की अलग-अलग

रणनीति होती है। बच्चों की आयु, लर्निंग लेवल और परिवेश के हिसाब से कहानी का चयन और योजना बनाना ठीक रहता है।

उदाहरण

घटना पेंगुइन वाली कहानी की है। कहानी में पेंगुइन के बच्चे खेलते-खेलते दूर समुन्दर में निकल जाते हैं। समुद्री शिकारी अक्सर उन्हें पकड़ लेता है। ये और बात है कि कभी कछुआ तो कभी मछली आकर उन्हें बचा लेते हैं और घर पहुँचा देते हैं। अगली बार जब कहानी में पेंगुइन के बच्चे खेलते-खेलते समुन्दर में दूर निकल गए तो ढाई साल के अबीर ने ज़ोर देकर कहा, "शिकारी को मत लाना, बच्चे अभी खेलकर घर वापस आ जाएँगे।" उसकी बात में दृढ़ता थी और एक सहज संवेदना भी, कि कहानी ही सही, पर ये शिकारी के ख़ौफ़ वाला हिस्सा क्या डिलीट नहीं किया जा सकता? क्यों किसी कहानी को सनसनीखेज़ बनाने के लिए पेंगुइन के बच्चों की जान जोखिम में डालने की ज़रूरत पड़ती है? एक धरातल कहानी का था और दूसरा विचार का। अबीर दोनों धरातलों पर बराबरी से खड़ा था। मुझे यह बात जँची और मैंने तय किया कि कहानी में अब शिकारी कभी नहीं आएगा। उसकी जगह मैं नाविक लेकर आया, जिसके आते ही बच्चों ने उसे 'बोट वाले अंकल' नाम दे दिया। मुझे समझ में आया कि यह सोचा-समझा यत्न था। 'बोट वाले अंकल' कहकर एक तरह से उन्होंने उस पात्र को पेंगुइन के बच्चों के पक्ष में, या यूँ कहें कि अपने पक्ष में कर लिया था और एक तरह से कहानी का भविष्य तय कर दिया था। बच्चे अपनी बात कहते हैं और पूरेपन से कहते हैं, बशर्ते उन्हें भरोसा हो कि उनकी बातें 'बच्चों की बात' मानकर उड़ाई नहीं जाएंगी। बच्चे अपनी बात तब भी कहते हैं जब वे देख पा रहे हों कि बड़े भी उसी कड़ी में अपनी बातें रख रहे हैं।

स्कूली जीवन में कहानी का पहला उद्देश्य आनंद होना चाहिए। शिक्षण और आनंद के संबंध में गिजूभाई कहते हैं कि जहाँ कहीं भी शिक्षण की क्रिया आनंद से विहीन रहेगी, वहाँ आज नहीं तो कल शिक्षण कार्य निष्फल हो जाएगा। कहानी मात्र आनंद प्राप्ति का ही साधन नहीं है, अपितु आनंद के साथ सीखने-सिखाने का सर्वोत्तम माध्यम भी है। कहानी के द्वारा हम निम्नलिखित कौशलों का विकास कर सकते हैं:

- **कल्पनाशीलता का विकास**

  कहानी के माध्यम से बच्चों में कल्पनाशीलता का विकास स्वयमेव होता है। कहानी संकल्पना का प्रतिफल होती है। भले ही वह वास्तविकता से युक्त हो तथापि उसका विन्यास कल्पना का परिणाम होता है। कहानी सुनते समय नन्हे बच्चे जो अभी साक्षर भी नहीं बने हैं, अपनी वास्तविक दुनिया से कहीं बड़ी काल्पनिक दुनिया बना लेते हैं।

- **अनुमान लगाना**

  अनुमान लगाने का कौशल वास्तव में पढ़ने की कुंजी है। इस कौशल के विन्यास में कहानी आश्चर्यजनक योगदान करती है। नियमित रूप से कहानी सुनाने से बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएँ ग्रहण करने लगते हैं। बच्चे कहानी से आनंद प्राप्त करना सीख जाते हैं, इसलिए भी कई बार एक कहानी को बार-बार पढ़ना चाहते हैं। पहले से परिचित कहानी को सुनते या पढ़ते समय बच्चे अनुमान लगाते हैं कि आगे क्या होगा। अनुमान का सही सिद्ध होना बच्चे को आनंदित तो करता ही है, उसका विश्वास भी बढ़ाता है। यही विश्वास पढ़ने की क्षमता के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- **तार्किकता**

कहानियाँ बच्चों में तार्किकता का गुण विकसित करने में भी अत्यंत उपयोगी रही हैं। कहानियाँ सुनते हुए बच्चे ये बड़ी सहजता से समझ जाते हैं, क्या सही है व क्या गलत है? भले ही वे इसे व्यक्त नहीं कर पाएँ। कहानियाँ सुनते हुए जब बच्चे किसी बात या घटना को उचित अथवा अनुचित के रूप में समझते हैं तो निश्चिय ही उस समय कई सारे तर्क-वितर्क उनके मन में चल रहे होते हैं। कहानी सुनते समय बच्चे स्वयं को उसके किसी चरित्र के रूप में आरोपित करने लगते हैं। ये आरोपण यूँ ही बिना किसी तर्क के नहीं होता, अपितु बच्चे कहानी में आए पात्रों का बहुत गहराई से विश्लेषण करने के बाद ही स्वयं की उस रूप में कल्पना करते हैं। जैसे जब हम बच्चों को शेर और खरगोश की कहानी सुनाने के बाद पूछते हैं कि आप क्या बनना पसंद करोगे, शेर या खरगोश, तो बावजूद इसके कि शेर बहुत शक्तिशाली होने के कारण हमेशा जंगल का राजा रहा है, फिर भी अधिकतर बच्चे खरगोश बनना पसंद करते हैं।

- **शब्द भंडार का विकास**

भाषा शिक्षण के दौरान कहानियों के नियमित उपयोग से बच्चों के शब्दकोश में लगातार वृद्धि होती है, जिसका उपयोग बच्चे बोलने, सुनकर समझने तथा लिखने जैसे भाषाई कौशलों में करते हैं। बचपन में रूसी कहानियाँ पढ़ते हुए शाह बलूत का पेड़, अजदहा, ऊकाब पक्षी जैसे अपरिचित शब्द कब हमें स्वतः अर्थ प्रदान करने लगते हैं, इसका पता ही नहीं चलता। इसके साथ ही कहानियों के माध्यम से नई भाषाओं के शब्दों को सीखना, उनसे अर्थ ग्रहण करना, अपनी भाषा में उनका उपयोग करना आदि एक मज़ेदार खेल बन जाता है।

- **एकाग्रता के साथ सुनना**

कही जा रही बातों को समझते हुए धैर्यपूर्वक सुनना, भाषा का एक कौशल है। सुनने की इस प्रक्रिया में बच्चों के मन में कल्पना, तर्क, विश्लेषण और वर्गीकरण एक साथ चलता है। यही एकाग्रता चिंतनशील होने की प्रक्रिया का अहम हिस्सा है। अपनी पसंदीदा कहानियाँ सुनते समय बच्चे बहुत ही एकाग्र होते हैं। आप अगर कहानी की घटनाओं के क्रम या पात्रों की भूमिका में थोड़ा-सा भी बदलाव करने का प्रयास करते हैं तो वे तुरंत इस बात को पकड़ लेते हैं। दूसरों की बातें सुने बिना ही अपनी प्रतिक्रिया देना, आधी बात सुनकर ही निर्णय ले लेना, या निर्णय तक पहुँचने की जल्दबाज़ी करना, और बिना सुने ही स्थिति या व्यक्ति विशेष के प्रति धारणा बना लेना, ये सब आज हमारे समाज, परिवार और स्कूलों में कहानियों की अनुपस्थिति के कारण भी हो सकता है।

- **अभिव्यक्ति विकास**

सामान्यतः आपने कक्षा शिक्षण के दौरान ये अनुभव किया होगा कि कुछ बच्चे लगातार प्रयास करने के बाद भी कुछ नहीं बोलते या अक्सर ख़ामोश रहते हैं, किन्तु जब आप कोई मज़ेदार कहानी सुना रहे होते हैं, उस समय पूरी कक्षा का वातावरण जीवंत हो उठता है। कहानी के बीच-बीच में जब आप बच्चों से प्रश्न करते हैं तो वे तरह-तरह के अनुमान लगाकर जवाब देते हैं। ऐसे अनुमान और भविष्यवाणियाँ बच्चे करते हैं जिनके बारे में हमने कभी सोचा भी नहीं होगा। कहानी शिक्षण के दौरान बच्चों को अभिव्यक्ति के ढेर सारे अवसर मिलते हैं और वे इस तरह के अवसरों का भरपूर उपयोग करते हुए एक बेहतर वक्ता होने की ओर उन्मुख होने लगते हैं।

- **स्मरण व क्रमबद्धता**

प्रत्येक कहानी में एक केन्द्रीय भाव होता है और इस केन्द्रीय भाव के इर्द-गिर्द कई छोटी-छोटी घटनाओं की क्रमबद्ध शृंखला होती है। इन छोटी-छोटी घटनाओं की रोचक प्रस्तुति ही कहानी को मज़ेदार बनाती है। इन घटनाओं को समझने के लिए एकाग्रता की आवश्यकता होती है। किसी कहानी को एक-दो बार सुनकर बच्चे उसे अपने सहपाठी या छोटे भाई-बहन को अपने शब्दों में सुना देते हैं, कहानी के केन्द्रीय भाव में बिना कोई बदलाव किए। हाँ, कहानी सुनाते वक्त घटनाओं की प्रस्तुति के लिए उनके अपने शब्द और भाषा हो सकती है जो कि भाषा शिक्षण की सार्थकता को ही दर्शाता है। कहानियों का उपयोग मात्र भाषा शिक्षण के लिए ही नहीं, अपितु किसी भी विषय की शुरुआत के लिए किया जा सकता है।

कहानी द्वारा विकसित होने वाले कौशल :

- कल्पनाशीलता का विकास
- अनुमान लगाना
- तार्किकता
- शब्द भंडार का विकास
- एकाग्रता के साथ सुनने की क्षमता का विकास
- अभिव्यक्ति विकास
- स्मरण व क्रमबद्धता
- संवेदनशीलता
- मूल्यों का बोध
- सौंदर्यबोध
- समाजबोध
- उत्साही पाठक बनना
- साहित्य सृजन
- भाषा विश्लेषण

- **संवेदनशीलता**

सरलतम शब्दों में किसी दूसरे व्यक्ति के दर्द या परेशानी को खुद से जोड़कर उस स्थिति का अनुभव करना कि किस स्थिति में वह व्यक्ति है तथा उसे इन कठिन परिस्थितियों से निकालने के प्रयास करने को संवेदनशीलता कहा जा सकता है। उदाहरण के रूप में प्रेमचंद की ईदगाह कहानी ली जा सकती है, जिसमें नन्हा हामिद अपनी बूढ़ी दादी के उस दर्द का एहसास करता है जो रोटी बनाते वक्त चिमटा नहीं होने की वजह से हाथ जलने पर उनको होता था। इस तरह की कहानियों को सुनते या पढ़ते समय बच्चों के चेहरे के भाव बदल जाते हैं और वे स्वयं को हामिद जैसे चरित्र के रूप में आरोपित करने लगते हैं। जेंडर का मुद्दा पूरी मानवता का मुद्दा है, अतः कहानियों के माध्यम से इस तरह के प्रयास किए जाने चाहिए कि बच्चों में बचपन से ही जेंडर समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके। बहुत-सी कहानियाँ जहाँ कई सारे जानवरों को एक विलेन और क्रूर चरित्र के रूप में प्रस्तुत करती हैं, वहीं कई सारी कहानियाँ बच्चों के मन से इन रूढ़ छवियों को तोड़कर उन्हें उनके प्रति संवेदनशील भी बनाती हैं। इसी तरह कहानियों के माध्यम से श्रम की गरिमा का एहसास बच्चों को कराया जा सकता है। इस तरह कहानियों के योजनाबद्ध शिक्षण से बच्चों में संवेदनशीलता के गुणों का बेहतर विकास किया जा सकता है।

- **मूल्यों का बोध**

उपदेश देकर बच्चों में मूल्यों के विकास की कल्पना जैसे निरर्थक विचारों से शिक्षक को बचना चाहिए। मूल्य और मानवीय संवेदनाएँ बच्चों के जीवन में सहज रूप से शामिल होते हैं, जो कि उम्र और अनुभव के साथ लगातार मुखरित होते जाते हैं। मूल्य कहानियों के ताने-बाने में गुँथे हुए होते हैं। इन्हें अलग

से बताने की बजाय कक्षाओं में बच्चों के बीच ऐसी चर्चाओं को खोलें जिसके आधार पर बच्चे उन मूल्यों को आत्मसात कर पाएँ। जैसे- ईदगाह कहानी सुनाने के बाद अलग से शिक्षक को यह कहने की आवश्यकता कतई नहीं है कि हमें दूसरों के प्रति दया या संवेदना रखनी चाहिए, वरन् ऐसे प्रश्न बच्चों के बीच रखने चाहिए जिसमें कक्षा के सभी बच्चों को अपनी बात रखने का अवसर मिल सके।

आइए, कुछ अनुभवी कहानी सुनाने वालों से उनके अनुभव सुनते हैं (पत्रिका 'प्राथमिक शिक्षा के मुद्दे' से):

गीता रामानुजम– "कहानी सुनाना मेरे लिए पढ़ाने का एक कुदरती तरीका है। वास्तव में पेशेवर कहानी सुनाने वाली बनने से पहले मैं एक अध्यापिका ही थी। मैं इतिहास और सामाजिक ज्ञान जैसे विषयों को पढ़ाने के लिए कहानियों का इस्तेमाल करती थी। उदाहरण के लिए, सिंधु घाटी सभ्यता पढ़ाने के लिए मैं टूटे हुए बर्तन या मोहर के कुछ टुकड़े या धातु से बनी कुछ चीज़ें और चूड़ियाँ व लकड़ी ज़मीन में गाड़ देती थी और बच्चों को उन्हें खोदकर ढूँढने को कहती। बच्चे खजाना खोजने निकल पड़ते और उन्हें खोदकर ले आते। इनके बाद मैं उन्हें मोहरों, उस क्षेत्र के लोगों के जीवन, मूल्यों, धर्म और संस्कृति से संबन्धित कहानी सुनाती। इस तरह शुरू हुआ विषयों को मज़ेदार बनाने के लिए कहानियों और अन्य रचनात्मक तरीकों की खोज का लंबा सफर।"

पारो आनंद– "मुझे लगता है कि किताब पढ़ने की तरफ बढ़ने के लिए कहानी सुनाना एक ज़रूरी कदम है। क्योंकि किताबों के अंदर जाने वाला रास्ता बच्चों के लिए कठिन और ख़तरनाक भी है। यह एक अनजानी दुनिया में जाने के सफ़र के समान ही है। काले शब्द पन्नों पर ऐसे रेंगते लगते हैं जैसे कई दुश्मन कीड़े। बच्चे जब पढ़ना शुरू करते हैं तो वे बहुत-सी अज्ञात चीज़ों से रूबरू होते हैं। वे ऐसे लोगों से मिलते हैं जिन्हें वे कभी नहीं मिले, ऐसी जगहों पर जाते हैं जिनके बारे में उन्होंने सुना तक नहीं होगा। इस कार्य को कम घबरा देने वाला बनाने के लिए आप क्या कर सकते हैं? मेरे लिए इस प्रश्न का स्वाभाविक जवाब कहानी सुनाना है।"

- **सौंदर्यबोध**

भाषाई सौंदर्य हो या परिवेशगत, कोई चीज़ सुंदर है तो क्यों है? यदि कोई वस्तु, रचना, फिल्म आदि अच्छी है तो वे कौन-से बिंदु हैं जो उसे अच्छा बनाते हैं, उनके बारे में स्पष्ट सोच होना बहुत ज़रूरी है। बाहरी सुंदरता की बजाय आंतरिक सुंदरता का महत्त्व अधिक होता है और साहित्य की इसी आंतरिक सुंदरता को समझने के लिए भाषाई काबिलियत की आवश्यकता होती है। सौंदर्यबोध की यह अंतर्दृष्टि कहानियों में भरी पड़ी है। कथानक, रचना शैली, घटनाओं की क्रमिकता, संयोग, संवाद, ये सभी मिलकर कहानी को ख़ूबसूरती प्रदान करते हैं।

- **समाजबोध**

वास्तव में कहानियाँ समाज का आईना होती हैं, क्योंकि कहानीकार स्वयं समाज का अभिन्न हिस्सा होते हुए अपने आसपास घट रही घटनाओं को कहानियों के रूप में प्रस्तुत करता है। समाज में व्याप्त ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी, शोषण आदि समस्याएँ कहानियों के केन्द्र में रही हैं। इस तरह कहानियों में समाज का चेहरा स्पष्ट दिखलाई देता है। कहानियाँ बच्चों को अपने परिवेश और आसपास के समाज का विश्लेषण करने

का अवसर प्रदान करती हैं, साथ ही इसके लिए ज़िम्मेदार कारकों को पहचानने की काबिलियत भी विकसित करती हैं।

- **उत्साही पाठक बनाना**

पढ़ना सीखने का मतलब डिकोडिंग करना मात्र नहीं, वरन् एक नियमित और जिज्ञासु पाठक होना है। कोई व्यक्ति तब ही एक नियमित और उत्साहित पाठक हो सकता है जबकि वह टेक्स्ट के साथ तार्किक और भावनात्मक रिश्ता कायम कर पाए। व्यक्ति और टेक्स्ट के बीच यह संबंध विकसित करने में कहानी एक बड़ी भूमिका निभाती है। बच्चे कहानी पढ़ते या सुनते समय खुद को कहानी के किसी पात्र के रूप में आरोपित करने लगते हैं। वे कहानी को अपने जीवन से जोड़कर उसका आनंद उठाने लगते हैं और यहीं से आरंभ होती है, एक उत्साही पाठक होने की यात्रा। अब बच्चों में पाठ्यपुस्तकों के अलावा साहित्य की चाह बढ़ जाती है। वे अपने आसपास उपलब्ध किताबों की दुनिया से नाता जोड़ने लगते हैं। इस समय शिक्षक की भूमिका और ज़िम्मेदारी बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है, बच्चों के इस साहित्यिक उत्साह को बनाए रखने के लिए उसे स्कूल में एक बेहतर साहित्यिक माहौल विकसित करना होता है।

इंदिरा मुखर्जी– “मैं सोचती हूँ कि कहानियाँ सुनाना और कहानियाँ सुनना बड़े होने का अनिवार्य हिस्सा है। कहानियाँ विस्मय की अनुभूति को बढ़ाती हैं, कल्पनाशीलता को तेज़ करती हैं, और संवेदना, सहानुभूति व आपसी समझ के विकास में मदद करती हैं। कहानी हमारे झुकावों, पक्षपातों, मूल्यों और मान्यताओं को भी संप्रेषित करती हैं। कई सालों के अनुभव के दौरान मैंने महसूस किया है कि कुछ पक्षपातों का बार-बार कहानियों के माध्यम से उजागर होना अत्यंत हानिकारक भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, ऐसी कई कहानियाँ हैं जिनमें रंगभेद काफी स्पष्ट होता है– मुख्य अभिनेता जो अच्छा होगा, हमेशा गोरा होगा और खलनायक खराब होता है और काला भी होता है। कौवे को हमेशा विश्वासघाती गुणों के साथ बेहद चालाक पक्षी के रूप में दिखाया जाता है। परियों की ज़्यादातर कहानियों में हमेशा राजकुमार, राजकुमारी को बचा रहा होता है। राजकुमारी को निहायत असहाय दिखाया जाता है।” मैं अपनी कहानी सुनाने की कार्यशालाओं के कुछ अनुभव आपके साथ बाँटना चाहती हूँ, जिनमें मैंने लिंग पक्षपातों की सशक्त भावनाएँ देखीं।

1. एक कार्यशाला में प्रतिभागी अपने बचपन में सुनी कहानियों को याद करने की कोशिश कर रहे थे। एक प्रतिभागी सुनीता ने अपने बचपन का एक किस्सा, जब वह छह साल की थीं, याद करके सुनाया। “मैं वे रातें कभी नहीं भूल सकती। रोज़ रात को हम अपनी दादी माँ के चारों तरफ बैठ जाते और उनकी मज़ेदार कहानियाँ सुनते। वास्तव में हर रात वह हममें से किसी एक बच्चे को चुनतीं और उस बच्चे के बारे में एक कहानी बुनतीं। एक रात मेरे भाई की बारी थी। वह बहुत रोचक कहानी थी और मेरे भाई को एक शक्तिशाली राजकुमार के रूप में चित्रित किया गया था। वह जवान, सुन्दर और बहादुर था और वह सब मुसीबतों का सामना कर सकता था।

- **साहित्य सृजन**

किसी कहानी को पढ़ने या सुनने के बाद उसे अपने शब्दों में लिखना या अपने अनुभवों को व्यवस्थित

रूप से लिखना साहित्य सृजन की दिशा में बढ़ना माना जा सकता है। कहानियाँ सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में घटित घटनाओं का संयोजन मात्र हैं। प्रत्येक समाज और व्यक्ति के जीवन में घटनाओं का यह चक्र अनवरत चलता रहता है। समाज और जीवन में घटित इन्हीं घटनाओं के संसार से किसी एक घटना को केन्द्र में रखकर सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करना ही कहानी की रचना करना है। बच्चों को ऐसे अवसर उपलब्ध कराए जाएँ जिसमें वे कहानी विधा को अन्य साहित्यिक विधाओं में रूपांतरित करने का प्रयास कर सकें तथा उसे अभिव्यक्त कर सकें। लगातार कहानी पढ़ते और सुनते हुए बच्चों के मन में कहानी की रचना की एक रूपरेखा तैयार हो चुकी होती है, जिसमें घटनाओं को रखना मात्र होता है। शिक्षकों के प्रयास से बच्चे अपने अनुभवों या कल्पनाओं को सुंदर ढंग से कहानियों के रूप में अभिव्यक्त कर सकते हैं, इसके लिए उन्हें लगातार प्रोत्साहित करते रहने की ज़रूरत है।

- **भाषा विश्लेषण**

बच्चों की भाषा में इस बात के पर्याप्त संकेत मिलते हैं कि वे अपनी भाषा का व्याकरण अच्छी तरह जानते हैं। पर व्याकरण की सचेत समझ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को उसके विभिन्न पक्षों की पहचान विविध सार्थक संदर्भों और आसपास के परिवेश से जोड़कर कराई जाए। व्याकरण की अवधारणाओं की अमूर्त परिभाषाएँ याद करने से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण उन्हें वास्तविक संदर्भों में समझना है। बच्चों में कहानियों के माध्यम से व्याकरण की समझ विकसित करना उनके लिए रोचक और सहज हो सकता है। उदाहरण के लिए संज्ञा की परिभाषा तथा उसके प्रकारों को रटवाने की बजाय किसी कहानी में आए संज्ञा शब्दों के माध्यम से समझाया जा सकता है। इस तरह से संज्ञा की जो समझ बच्चे में विकसित होगी, वो स्थायी और सार्थक होगी। इसी तरह कहानियों के माध्यम से वचन, लिंग, काल,

अगली रात मेरी बारी थी। मैं अपनी दादी माँ के सामने ध्यान लगाकर बैठी थी। मैंने सोचा कि मुझे भी वैसे ही बहादुर राजकुमारी की तरह चित्रित किया जाएगा जैसे मेरे भाई को निडर और शक्तिशाली चित्रित किया था। परंतु मुझे निराश होना पड़ा। मुझे सिर्फ़ एक निराश और असहाय राजकुमारी की तरह दिखाया गया, जो एक बहादुर राजकुमार द्वारा बचाए जाने और उस बहादुर राजकुमार से शादी करने के लिए है।"

2. कहानी सुनाने के एक अन्य सत्र में एक छोटी-सी साँवली लड़की ने कहानी सुनाने वाले को एक ख़ास वाक्य दोहराने को कहा और जब भी वह वाक्य दोहराया जाता, उसका चेहरा जगमगा उठता और आँखें चमक जातीं। वह वाक्य जो इस लड़की के लिए इतना महत्त्व रखता था, वह था- "एक लड़की थी जो साँवली और सुन्दर थी।" शायद तब तक उसने एक ही तरह का वाक्य सुना होगा, "एक लड़की थी जो गोरी और सुन्दर थी।"

"आपके साथ ये दो अनुभव बाँटकर मैं आपको यह कहना चाहती हूँ कि अगर हमारे बच्चों को कुछ सीमित कहानियाँ ही सुनने को मिलेंगी तो उनमें कुछ पक्षपात विकसित हो सकते हैं, जो उनके सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करेंगे और यहाँ तक कि उनके संज्ञानात्मक विकास में भी बाधा बन सकते हैं।
इसलिए यह ज़रूरी है कि बच्चों को अनेकानेक तरह की कहानियों से परिचित करवाना चाहिए, कहानियाँ जिनमें विषयवस्तु और रूप दोनों में विविधता हो।"

पर्यायवाची, मुहावरे, कहावतें, लोकोक्तियाँ, विशेषण, विराम चिह्नों की उपयोगिता, वाक्यों के प्रकार आदि को सहज ढंग से बच्चों को समझाया जा सकता है।

Figure 85 बच्चों को चित्र-कथा निर्मित कर कहानी सुनाती शिक्षिका

प्रभावी ढंग से कहानी सुनाने के तरीके

कहानी सुनाना भी एक कला है। कितनी ही अच्छी कहानी क्यों न हो, यदि रोचक ढंग से नहीं सुनाई जाए तो कहानी अपना दम तोड़ देती है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि प्रभावशाली ढंग से कहानी सुनाने के लिए कुछ बातों का विशेष ध्यान रखा जाए:[4]

- ध्वनि-प्रक्रिया– कहानी सुनाते समय आवाज़ इतनी तेज़ हो कि सभी बच्चे आसानी से सुन सकें। कहानी के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए मौखिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ शब्दों का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए।
- भाव-भंगिमा/हावभाव– अर्थपूर्ण तरीके से, खुलकर भाव-भंगिमा/हावभाव का उपयोग करना चाहिए, जिससे बच्चे कहानी में अधिक रुचि लेने लगें।
- बच्चों से जुड़ाव– कहानी सुनाते समय बच्चों की एकाग्रता और उनके साथ लगातार आँखों का संपर्क बनाए रखना।
- चरित्र-चित्रण– कहानी सुनाते समय प्रत्येक पात्र/चरित्र के अनुसार आवाज़ बदलनी चाहिए, जिससे बच्चों को पता चलेगा कि कौन-सा पात्र बोल रहा है।
- दिलचस्पी बनाए रखना– कहानी को इस तरह से सुनाया जाना चाहिए कि शुरू से अंत तक बच्चों की दिलचस्पी कहानी में बनी रहे।

- सहायक सामग्री का प्रयोग– कहानी को और भी अधिक रोचक और प्रभावी बनाने के लिए यदि आवश्यकता हो तो सहायक सामग्री जैसे- मुखौटे, कठपुतलियाँ (फिंगर पपेट, स्टिक पपेट, छाया पपेट और कागज़ के मिश्रण, दस्तानों व तार से बनी कठपुतलियाँ आदि), कहानी की किताब, कहानी चार्ट,

4. 'प्राथमिक शिक्षक' पत्रिका से रीतू चंद्रा जी द्वारा लिखित अंश

कहानी बॉक्स, फ्लैश कार्ड, चित्र कार्ड, नमूना, ऑडियो रिकॉर्डिंग, रेडियो, चादर, खाट एवं दैनिक जीवन की अन्य वस्तुएँ आदि का प्रयोग यथास्थान किया जाना चाहिए।

- शिक्षक की कुशलता– शिक्षक को आराम से, धीमी गति से और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कहानी सुनानी चाहिए, ताकि बच्चे कहानी ठीक से सुन सकें।

कहानी सुनाने की विभिन्न विधियाँ

कहानी सुनाना एक कला है, जिसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह बच्चों का ध्यान कितना आकर्षित करती है। शिक्षक कहानी सुनाने के लिए निम्नलिखित विधियों का प्रयोग कर सकता है।

- अभिनय द्वारा– अभिनय द्वारा कहानी सुनाना एक अत्यंत मनोरंजक विधि है। इस विधि में बच्चे और शिक्षक सभी सक्रिय रूप से कहानी में भाग लेते हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास और परस्पर सहयोग की भावना का विकास होता है। कहानी में अभिनय शिक्षक द्वारा, बच्चों द्वारा, शिक्षक व बच्चों द्वारा मिलजुलकर, अन्यथा बाहर से किसी समूह को बुलाकर करवाया जा सकता है। अभिनय द्वारा कहानी सुनाते समय आवाज़ तेज़ और साफ होनी चाहिए।
- कठपुतलियों द्वारा– कठपुतलियों द्वारा कहानी सुनाना अपने आप में एक बड़ी ही अद्भुत विधि है, जो बच्चों को सीखते समय आनंद की अनुभूति करवाती है। कठपुतलियों का प्रयोग कभी भी और कहीं भी किया जा सकता है। इसका प्रयोग करने के लिए किसी भी व्यावसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है, बल्कि आवश्यकता है थोड़ा-सा सृजनशील होने की। कठपुतलियों द्वारा कहानी सुनाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए:
  - कठपुतली का आकार बड़ा हो।
  - किसी खाट या कुर्सी पर पर्दा लगाएँ।
  - बच्चों को पर्दे के सामने अर्धगोलाकार स्थिति में बैठाएँ।
  - निश्चित कर लें कि सभी बच्चे कठपुतली को ध्यान से देख पा रहे हैं।
  - रोचकता लाने के लिए आवाज़ में उतार-चढ़ाव लाएँ।
  - भाव-भंगिमा/हावभाव– इस विधि में मौखिक रूप से बच्चों को कहानी सुनाई जा सकती है। आवाज़ बदलकर और भाव-भंगिमा/हावभाव द्वारा वर्णन करके किसी भी घटना व संकल्पना का चित्रण किया जाता है।
  - सहायक सामग्री के प्रयोग द्वारा– सहायक सामग्री जैसे- मुखौटे, कठपुतलियाँ (फिंगर पपेट, स्टिक पपेट, छाया पपेट और कागज़ के मिश्रण, दस्तानों व तार से बनी कठपुतलियाँ आदि), कहानी की किताब, कहानी चार्ट, कहानी बॉक्स, फ्लैश कार्ड, चित्र कार्ड, नमूना, ऑडियो रिकॉर्डिंग, रेडियो, चादर, खाट एवं दैनिक जीवन की अन्य वस्तुएँ आदि ऐसी सामग्री हैं जिनकी सहायता से यदि कहानी सुनाई जाए तो कहानी का प्रभाव और भी बढ़ जाता है।

    सहायक सामग्री द्वारा कहानी सुनाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए:
  - कहानी की किताब, फ्लैश कार्ड, कहानी चार्ट, चित्र कार्ड आदि में पृष्ठों की संख्या लगभग 10-12 से अधिक ना हो।
    - फिंगर पपेट, स्टिक पपेट, छाया पपेट, कहानी बॉक्स, कहानी की किताब, फ्लैश कार्ड, कहानी चार्ट, चित्र कार्ड आदि में चित्र बड़े बने हों।

- कठपुतलियाँ, कहानी बॉक्स, कहानी की किताब, फ्लैश कार्ड, कहानी चार्ट आदि बच्चों की आँखों के स्तर पर रखें, अन्यथा अधिक ऊँचाई होने से बच्चे ठीक से नहीं देख पाएँगे।
- ऑडियो रिकॉर्डिंग और रेडियो की आवाज़ स्पष्ट और तेज़ होनी चाहिए।
- सभी प्रकार की सामग्री बच्चों के दृष्टिकोण से सुरक्षित और मज़बूत होनी चाहिए।

- सचित्र पुस्तकों से पढ़कर कहानी सुनाना– इस विधि में पुस्तक से पढ़कर कहानी सुनाई जाती है और बच्चे ध्यानपूर्वक कहानी सुनते हैं।
- बच्चों को स्वयं कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करना– जैसा कि विदित है कि बच्चे स्वयं करके सीखते हैं, इसलिए बच्चों को स्वयं कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें, इससे बच्चों में आत्मविश्वास पैदा होता है। अच्छा यह होगा कि बच्चों को उन्हीं के द्वारा सुनी-बुनी कहानियाँ सुनाने के पर्याप्त अवसर दें।

कहानी सुनाते समय ध्यान देने योग्य ज़रूरी बातें:

- कहानी सुनाते समय बैठक व्यवस्था ऐसी हो जिसमें शिक्षिका सभी बच्चों को आसानी से देख सकें और प्रत्येक बच्चा भी शिक्षिका के हावभाव को आसानी से देख व सुन सके।
- कहानी सुनाते समय शिक्षिका बच्चों को अर्द्ध-घेरे में अपने पास ही बैठाएँ। शिक्षिका और बच्चों में ज़्यादा दूरी नहीं होनी चाहिए।
- कहानी सुनाने से पूर्व शांत खेल द्वारा वातावरण का निर्माण करें।
- सरल शब्दों तथा छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करें।
- कहानी की विषयवस्तु के अनुसार उचित हावभाव तथा आरोह-अवरोह का ध्यान रखें।
- कहानी के बीच में छोटे-छोटे प्रश्नों के माध्यम से बच्चों को भी कहानी से जोड़ने का प्रयास करें।
- बच्चों की रुचि को ध्यान में रखते हुए आवश्यकतानुसार कहानी को छोटा या बड़ा रूप स्वयं दें।
- सुनाई गई कहानियों पर बच्चों से अभिनय भी करवाएँ।
- कहानी में मुखौटे का प्रयोग कर रहे हैं तो सुनिश्चित कर लें कि वे ठीक प्रकार से बने हों। यदि मुखौटे का प्रयोग नहीं कर रहे हैं तो भावों पर ध्यान दें।
- कहानी में यदि विशेष प्रकार की पोशाक पहनी जानी है तो सुनिश्चित कर लें कि वह आरामदेह हो।

कक्षा प्रक्रिया उदाहरण (कक्षा 1 व 2 में कहानी द्वारा भाषा शिक्षण)

कहानी सुनाना और उस पर काम करना भाषा शिक्षण का महत्त्वपूर्ण अंग है। कहानियाँ बच्चों को भाषा की संरचना और शब्दावली को समझने में मदद करती हैं। कहानियाँ शब्दकोश का विस्तार करती हैं, कल्पनाशीलता का विकास करती हैं, अनुमान लगाने का कौशल विकसित करती हैं। अतः कहानियों को भाषा शिक्षण से जुड़ी कक्षा प्रक्रियाओं का आवश्यक अंग बनाया जाना चाहिए।

शुरुआती कहानियाँ चित्र कहानियाँ हो सकती हैं, उसके बाद चित्र के साथ एक या दो पंक्तियों की कहानी को चुना जा सकता है, इस हेतु बरखा सीरीज़ की किताबों से सहायता मिल सकती है। प्रक्रिया के अगले चरण में

इन्हीं कहानियों को चार्ट या बोर्ड पर लिखकर पढ़ा जा सकता है, उनमें से शब्दों की पहचान कराई जा सकती है, विविध ध्वनि के शब्दों का जाल बनाया जा सकता है, और उनके द्वारा मात्राओं की पहचान तक जाने का काम किया जा सकता है।

एक और महत्त्वपूर्ण तथ्य जो कविता और कहानी दोनों पर लागू होती है, वह है अभिनय। कविताओं को पूरे एक्शन से हावभाव के साथ सुनाने की बात हो या फिर कहानियों को उनकी पूरी नाटकीयता के साथ श्रोताओं के लिए ज़िंदा कर देने की बात हो, अभिनय इसमें एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आगे चलकर कहानियों को थोड़े-बहुत फेरबदल के साथ अभिनयात्मक प्रस्तुति के लिए तैयार किया जा सकता है। कक्षा एक में जहाँ इन प्रक्रियाओं को पूरा करने का दारोमदार शिक्षक पर हो सकता है, वहीं दूसरी या इसके बाद की कक्षाओं में इसकी ज़िम्मेदारी बच्चों को दी जा सकती है। अभिनय के द्वारा बच्चे विभिन्न परिस्थितियों और संदर्भों में भाषा के मौखिक उपयोग को उसकी पूरी सजीवता के साथ समझेंगे और प्रयुक्त करेंगे।

Figure 86 कहानी पर कार्य की संभावनाएँ

2.9.3 प्रक्रिया

पूर्व तैयारी

1. कहानी ठीक से याद हो, उसे दो-तीन बार पढ़ लिया गया हो।
2. कहानी के चित्रों को बारीकी से देखा जाए। जिस चित्र पर बात करनी हो, उसे भी देख लिया जाए और संभावित प्रश्नों को रेखांकित करके रख लिया जाए।
3. कहानी को कहाँ रोका जाएगा, कहाँ बच्चों से प्रश्न किए जाएँगे, इसकी भी योजना बना लेना उचित होगा।

उदाहरण के लिए एक कहानी 'बिल्ली के बच्चे' पर काम करने की रूपरेखा दी जा रही है। इस बात का ध्यान रखा जाए कि कहानी और इस पर काम करने की प्रक्रिया केवल उदाहरण मात्र है और यह न्यूनतम अपेक्षा है कि कम से कम इतना तो किया ही जाए। आप अपनी कक्षा की स्थिति और संदर्भ के मुताबिक कोई कहानी (लोककथा भी हो सकती है) चुन सकते हैं। अर्थात् जिन बच्चों को आप पढ़ा रहे हैं, उनके परिवेश और बोलचाल में आने वाले शब्दों से बनी कहानियों का इस्तेमाल किया जा सकता है। अपने शिक्षण उद्देश्यों के मुताबिक प्रक्रिया के चरणों में जोड़-घटाव कर सकते हैं। साथ ही किन ध्वनियों पर काम करना है, यह भी चुनी गई कहानी के आधार पर ही तय होगा।

यह भी ध्यान में रखा जाए कि कहानी पर काम करने की यह प्रक्रिया 4 से 5 दिन की है।
उदाहरण– 'बिल्ली के बच्चे' कहानी पर काम करने के लिए बच्चों को इस तरह से गोल घेरे में बैठाया जाए कि सभी बच्चों को किताब दिखाई दे और शिक्षक को भी सभी बच्चों से बात करने में आसानी हो।

प्रक्रिया के चरण

मौखिक भाषा विकास से संबन्धित प्रक्रियाएँ

1. कहानी के सन्दर्भ में बच्चों का पूर्व ज्ञान टटोलना, जैसे- बिल्ली देखी है? कहाँ देखी है, किस रंग की होती है? क्या आपके यहाँ बिल्ली है, है तो उसका क्या नाम है? वह कैसी आवाज़ निकालती है, क्या खाती है? आदि।
2. इसके बाद कहानी की किताब दिखाते हुए उसके आवरण पृष्ठ पर चर्चा की जाए, जैसे- क्या दिख रहा है इसमें, कितनी बिल्लियाँ हैं? उनके नाम क्या होंगे? वे क्या कर रही हैं, इनका आपस में क्या रिश्ता होगा?
3. चित्र पर बातचीत के बाद किताब के शीर्षक पर चर्चा की जाए और हाथ रखकर उसे पढ़ा जाए।
4. इसके बाद अगले पृष्ठ पर जाया जाए। किताब का पृष्ठ किस तरह से पलटना है, यह भी बच्चों को बताएँ। (जिन बच्चों को पूर्व में औपचारिक प्रिंट का बहुत अधिक अनुभव (एक्स्पोज़र) नहीं मिला हो, उनके लिए यह जानना भी ज़रूरी होता है कि पुस्तक कैसे पलटी जाती है, पुस्तक को किस तरह और तरफ से पकड़ा और पढ़ा जाता है, चित्रों का लिखे गए से क्या और कैसा संबंध होता है आदि)।
5. इसके बाद कहानी के लेखक के नाम की ओर ध्यान दिलाते हुए इस बारे में बताएँ कि कहानी को जो लिखता है, उसे लेखक कहा जाता है और उसका नाम किताब में लिखा होता है।
6. इसके बाद पृष्ठ-दर-पृष्ठ आगे बढें। हर पृष्ठ में दिखाए गए चित्रों में क्या हो रहा है, यह पहले बच्चों से पूछें और इस तरह के क्लू दिए जाएँ जिनसे वे अनुमान लगा सकें। उनकी प्रतिक्रिया के बाद उसमें क्या लिखा है, उसको हाथ रखकर पढ़कर बताएँ।

7. कहानी में आगे चूहे, मेंढक, मछली का ज़िक्र आया है। इन पात्रों के बारे में चर्चा की जा सकती है कि इन्हें कहाँ देखा है? क्या करते हैं? क्या खाते हैं? कैसे बोलते हैं? कहाँ रहते हैं? आदि।
8. कहानी पूरी हो जाने के बाद एक बार बच्चों से पूरी कहानी बताने को कहा जाए।

लिखित भाषा विकास से संबन्धित प्रक्रियाएँ

कहानी में आए मुख्य पात्रों और शब्दों को बोर्ड पर लिख दिया जाए और उन शब्दों को पढ़ा जाए। जैसे- चूहा, बिल्ली, मेंढक, मछली, काला, भूरा, सफ़ेद आदि।

1. सभी शब्दों को एक शब्द चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगा दें। संभव हो तो इन शब्दों के नीचे इनके चित्र भी बना दें।
2. इस कहानी में जिन वर्णों पर काम किया जाना है, उन्हें तय कर लिया जाए। उदाहरण के लिए ब, ह, च, म की ध्वनियों पर काम करना।
3. एक चार्ट पेपर पर इन सभी वर्णों से शुरू होने वाले शब्द-जाल के रूप में बच्चों से पूछकर लिखे जा सकते हैं। जैसे:
   - ब से शुरू होने वाले शब्द- बाज़ार, बंटी, बालक, बन्दर, बिल्ली और इन शब्दों के नीचे इनके चित्र।
   - ह से शुरू होने वाले शब्द- हाथी, हाथ, हम, होली आदि और इन शब्दों के नीचे इनके चित्र।
   - च से शुरू होने वाले शब्द- चाचा, चाँद, चकली, चमचम, चरखा आदि और इन शब्दों के नीचे इनके चित्र।
   - म से शुरू होने वाले शब्द- माँ, मीना, माला, मोबाइल, मोटर आदि और इन शब्दों के नीचे इनके चित्र।
4. इन शब्दों की पहली ध्वनि अलग करके बच्चों का ध्यान उस ओर आकर्षित कराएँ, सभी शब्दों को पढ़ा जाए।
5. कुछ शब्द ऐसे भी लिखें जिसमें वह वर्ण बीच में या अंत में आए, जैसे- 'ब' के लिए शब्द तबला, नकाब, रबड़, जिससे कि वह वर्ण शब्द में कहीं भी आए, बच्चे उसको साफ़ तौर पर पहचान सकें। इस तरह से सभी वर्णों के साथ किया जा सकता है। कुछ दिनों के अभ्यास के बाद ये वर्ण पक्के हो जाएँगे।
6. वर्ण की पहचान के बाद इसी क्रम में मात्राओं पर काम किया जा सकता है, जिसमें बच्चों का ध्यान एक ही ध्वनि से बने शब्द-जाल के शब्दों की ओर आकर्षित कराया जाए और हम के 'ह', हाथी के 'हा' और होली के 'हो' की ध्वनि में फ़र्क की ओर ध्यान दिलाया जाए।
7. अगली गतिविधि के रूप में किताब में या किसी पाठ में यह वर्ण कितनी बार आया है, यह भी बच्चों को छाँटने के लिए दे सकते हैं।
8. इसके बाद इस कहानी पर बच्चों से चित्र बनाने को कहा जा सकता है।
9. बच्चों को शब्द-जाल के शब्दों में से अपने मनपसंद शब्दों को लिखने और पढ़ने को कहा जा सकता है। जो बच्चे ठीक से लिखने की स्थिति में हों, उन्हें इस कहानी के बारे में लिखने को कह सकते हैं। शब्द-जाल के शब्दों से बच्चों को नई कहानी बनाने को भी कहा जा सकता है।
10. कहानी के चित्रों और वाक्यों को उनके क्रम से लगाने को कह सकते हैं।
11. इन्हीं पात्रों से सम्बंधित किसी अन्य कहानी या कविता को कक्षा में सुनाया और दिखाया (ऑडियो और वीडियो) जा सकता है।

उदाहरण

आइए देखते हैं, बच्चों के साथ 'बुढ़िया की रोटी' कहानी से जुड़ा प्रो॰ कृष्ण कुमार जी का एक अनुभव– उस दिन क्या हुआ। मैं इस कहानी को आठ-दस बार सुना चुका था। फिर भी यह कहानी उन बच्चों के बीच काफी लोकप्रिय रहती थी और इसके साथ वे कई तरह के अभिनय भी करने लगे थे। जैसे कि बुढ़िया रोटी बेलती है तो वे बेलते थे। अन्त में जब रोटी बेल ली जाती है तो किसके साथ खाई होगी, उसको लेकर चर्चा होती थी कि अचार के साथ खाई होगी, कोई कहता था नहीं, उसने सब्ज़ी बनाई होगी या कहीं से ली होगी इत्यादि। इसके बाद बुढ़िया ने क्या किया होगा, तो बच्चे कहते थे कि सो गई होगी। थोड़ी देर के लिए वो सो भी जाते थे वहाँ पर।

तो कई तरह से वे इस कहानी से जुड़ चुके थे। उनके मानस में बुढ़िया और इन तमाम अन्य चरित्रों की बहुत गहराई से जगह बन चुकी थी, वे इससे संतृप्त हो चुके थे, जैसा रसायन शास्त्र में कहते हैं। उस दिन सुबह चलते समय कुछ ऐसा ही दिमाग मेरा चला कि मैंने अपने साथ एक रोटी ले ली। रात की बची हुई थी। सुबह जब मैं आठ बजे घर से निकला तो डब्बा खोल के एक रोटी अपने साथ रख ली, प्लास्टिक की थैली में और जब कहानी समाप्त होने को हुई, यानी कि जब कौए ने घबराकर रोटी गिराई और वह रोटी सीधे बुढ़िया की थाली में गिरी, उस समय मैंने कहा, "बच्चों, वह रोटी मेरे पास है। आप देखेंगे?" तो मैंने वह थैला खोलकर रोटी दिखाई। आप उस क्षण की कल्पना कर नहीं सकते कि वहाँ क्या हुआ होगा। अव्वल तो उस क्लास में हमेशा ही चार-पाँच बच्चे कुछ-न-कुछ शोर मचाते ही रहते थे। एकदम सन्नाटा छा गया और उसके बाद हरेक बच्चा उस रोटी को छूने के लिए लालायित हो रहा था। बाद में जब मैं निकलने लगा तो कई बच्चों ने पूछा कि "सर, आपको यह कहाँ से मिली?" यानी कि वो रोटी इस कहानी के द्वारा छू ली गई थी। उनको विश्वास हो गया था। हालाँकि वे आधुनिक युग के बच्चे हैं, टेलीविज़न देखते हैं। केन्द्रीय विद्यालयों में इंटरनेट भी आ चुका है। सब कुछ है, लेकिन उनके ऊपर यह सब जादू और दुनिया और सम्मोहन- यह रहस्य खत्म हो चुका है। फिर भी वे कुछ क्षणों के लिए यह मानने के लिए तैयार थे कि वो रोटी वही है जो कौए के मुँह से गिरी थी। किसी-न-किसी प्रकार से मेरे हाथ में पहुँच गई है और सर हमारे लिए लाए हैं वो रोटी। एक साधारण रोटी थी, इसमें जगह-जगह कुछ इस तरह के छेद बने हुए थे कि लगे हाँ, कौए की चोंच लग गई है। इसलिए एक बच्चे ने पूछा भी कि क्या यहीं पर उसने चोंच गड़ाई थी और पूरी क्लास में हर बच्चे के हाथ से वह रोटी गुज़री। उन्होंने उसको छूकर देखा, जैसे कि कोई बहुत बड़ी निराली चीज़ जो किसी संग्रहालय से लाई गई हो।

"मैं उस दिन बहुत ही विचलित-सा महसूस कर रहा था कि यह जो चीज़ आज हुई है इस कक्षा में, इसकी किस तरह की मीमांसा करें। उस शाम मुझे एहसास हुआ कि दरअसल यहाँ साहित्य ने एक ऐसा काम किया जो साहित्य का सबसे बुनियादी कर्म है। यह है कि वो भाषा और संसार के बीच जो पुल भाषा ने बनाए थे, उनकी मरम्मत करता है। रोटी शब्द से जो चीज़ व्यंजित होती है, उस रोटी शब्द को दोबारा इस कहानी ने कहीं जाग्रत किया, दोबारा उसको सेंका। उस रोटी में, उसको छू सकने में एक विलक्षणता का बोध इस कहानी के ज़रिए पैदा करना सम्भव हो गया। वरना रोटी इतनी साधारण चीज़ है। बड़ी मात्रा में जगह-जगह फेंकी जाती है, स्कूलों में भी फेंकी जाती है, यदि अच्छी न बनी हो तो।

रोटी एक साधारण चीज़ है, लेकिन उस साधारण चीज़ को इस कृति ने एक असाधारणता थोड़ी देर के लिए दी। और निश्चित रूप से अगर आप तकनीकी सन्दर्भ में भी देखें तो वो सम्मोहन का समय था। अंग्रेज़ी में जिसे हम हिप्नोटिज़्म के नाम से जानते हैं। जो हमारे सामने होता है वो हमें नहीं दिखता, जो नहीं होता वो दिखता है। अगर जादूगर कहता है कि गुलाब का फूल तुम्हें सुंघा रहा हूँ, भले ही वह फूल कागज़ का हो, उसमें भी हमें गुलाब की गन्ध आती है। इस कहानी ने बहुत सहज ढंग से इसको सम्भव बनाया। एक तरह का चमत्कृत होने का वह क्षण था जिसमें एकदम समझ में आया कि यह जो तमाम मनोविज्ञान में कहा जाता है कि जब कोई बच्चा किसी चीज़ को नाम देता है कि यह बिल्ली है, कि यह मेज़ है तो वह बिल्ली या मेज़ एक पूरा जगत होती है उसके लिए।"

कहानी द्वारा भाषा शिक्षण (कक्षा 3-5)

उद्देश्य

कक्षा 3 से 5 तक में कहानी के उपयोग के निम्न उद्देश्य संभव हैं:

1. कहानी को सुनकर उसका आनंद लेना।
2. सुनने का धैर्य विकसित करना।
3. कहानी में भाषाई सौन्दर्य (मुहावरे, पर्यायवाची, कहने की शैली आदि) की ओर ध्यान आकृष्ट करवाना।
4. कहानी के मूल भाव को समझ पाना।
5. अनुमान लगाने का कौशल विकसित करना।
6. कहानी का सार बता पाना।
7. कहानी को जीवन से जोड़कर देख पाना।
8. कल्पना कर पाने की क्षमता विकसित करना।
9. अपनी कल्पना से या दिए गए विषय पर कहानी लिख पाना।
10. परिवेश में व्याप्त कहानियों या घर-परिवार से सुनी कहानियों को लिखना और उन्हें प्रस्तुत करना।
11. दी गई कहानी के मूल भाव से मिलती-जुलती कहानियों को खोजकर पढ़ना, उनके सार लिखना और उस जैसी अन्य कहानियों को लिखना।

कहानी शिक्षण की सुझावात्मक प्रक्रिया

1. पूर्व की तरह ही कहानी के शीर्षक, कथानक व इनके चित्रों पर बातचीत करना।
2. कहानी का शिक्षक द्वारा वाचन करना।
3. वाचन के बाद बच्चों को कहानी के बारे में पूछना (कहानी के विभिन्न घटनात्मक मोड़, कहानी का सकल अर्थ या सार)।
4. बच्चों को कहानी को मन में पढ़ने के लिए कहना।
5. अब पूरी कहानी पर एक साथ बात की जाए, जैसे- सबसे पहले क्या हुआ, फिर कौन आया, यह क्यों हुआ आदि (घटनाओं का क्रम याद करना)।
6. कहानी के बारे में ऐसे प्रश्न पूछना जो उस कहानी से जुड़ी समझ का आकलन कर सके।
7. अब बच्चों को पाठ के पीछे का अभ्यास कार्य स्वयं एकल या समूह के रूप में करने के लिए देना (इस दौरान शिक्षिका हर बच्चे के पास जाकर देखती जाएँ कि वे किस तरह काम कर रहे हैं)।
8. पुस्तकालय से कुछ पुस्तकें बच्चों को दी जाएँ और उनसे कहा जाए कि आपने जो कहानी पढ़ी, उससे मिलते-जुलते भाव की कहानी खोजकर पढ़िए और फिर उन्हें सुनाइए।
9. बच्चों से इसी प्रकार की मिलती-जुलती घटनाओं या पात्रों वाली कहानी लिखने के लिए कहना।
10. कक्षा में कुछ शब्द या कोई विषय चुनकर उस पर बच्चों से कहानी लिखवाई जा सकती है।
11. कहानी को आगे बढ़ाना, चित्रों को देखकर कहानी सुनाना और लिखना, चित्र कथा को संवाद के रूप में लिखने के अवसर देना और इसमें मदद करना जैसे कार्य कक्षा में कराए जा सकते हैं।
12. कहानी को पढ़ाने के बाद भी अनेक अभ्यास किए जा सकते हैं। जैसे- कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना, कहानी को पढ़ने के बाद रिक्त स्थानों में कहानी पूरी करना, कहानी से संबन्धित वाक्यों को काटकर उन्हें सही क्रम में जोड़ना। कहानी के पात्रों को बदलकर कहानी निर्माण करना आदि।

कहानी के आधार पर इन कक्षाओं में संभावित उपरोक्त गतिविधियों की प्रक्रियाएँ

समूह में एक-एक वाक्य जोड़कर कहानी निर्माण– इस कार्य में पूरी कक्षा को शामिल करते हुए शिक्षक प्रक्रिया को समझाएँ कि हम सभी एक-एक वाक्य जोड़कर एक कहानी का निर्माण करेंगे। हर बच्चा बारी-बारी से एक-एक वाक्य जोड़ेगा और नया जोड़े जाने वाला वाक्य पिछले वाक्य से पूरी तरह जुड़ता तथा अब तक लिखे सभी वाक्यों के संदर्भ से मिलता हुआ हो। इसकी शुरुआत शिक्षक स्वयं पहला वाक्य बोलने से कर सकते हैं (जैसे- एक बहुत बड़ा जंगल था), या फिर वे बच्चों की राय से एक कहानी बनाकर उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं और फिर बच्चों को इसमें शामिल कर सकते हैं। बच्चों के द्वारा बोले गए वाक्यों को शिक्षक साथ ही साथ बोर्ड पर लिखते चलें। यह नियम भी हो सकता है कि यदि कहानी कहीं फँस जाए और आगे वाक्य न मिल रहे हों तो कहानी में एक नए पात्र की इंट्री कराई जा सकती है (जैसे- तभी वहाँ एक बड़ी-बड़ी मूछों वाला आदमी आया)।

- **चित्रों के आधार पर कहानी निर्माण**

  बच्चों के साथ किसी भी एक चित्र पर विस्तृत बात कर, उसकी घटनाओं को क्रम में समझकर कहानी का निर्माण किया जा सकता है। यहाँ कहानी निर्माण से पहले चित्र में दिख रहे पात्रों, उनके संभावित कार्यों, वहाँ घट रही घटनाओं आदि पर विस्तृत चर्चा चित्र के काल्पनिक घटनाक्रम निर्मित करने में सहायक होंगे। यहाँ यह भी बात हो सकती है कि चित्र में उपस्थित पात्रों में क्या बातचीत हुई होगी और कैसे। इस

प्रकार कहानी या एक घटना को संवादात्मक रूप में लिखने का एक्सपोज़र भी मिलता है। यहाँ भी शुरुआत शिक्षक द्वारा स्वयं लिखकर प्रदर्शित करने से होगी।

- **शब्दों के आधार पर कहानी निर्माण**
  इस गतिविधि के लिए भी शिक्षक पहले स्वयं बच्चों से पाँच-छह शब्दों की मांग करें। ये कुछ भी हो सकते हैं, जैसे वस्तुएँ, रिश्ते, घटनाएँ आदि। इसके बाद वे बोर्ड पर इनमें से प्रत्येक शब्द को एक-एक वाक्य में शामिल करते हुए एक संक्षिप्त कहानी के निर्माण का प्रयास करें। इस प्रक्रिया में बोलकर सोचते हुए (जैसे- मच्छर पेड़ पर बैठा होगा या पानी पर...) बच्चों से प्रतिक्रियाएँ और उनके विचार आमंत्रित करें और फिर उन्हें कहानी में शामिल करें। इसके बाद बच्चों को आपस में ही शब्द चुनने और कहानी बनाने के लिए कहें। उन्हें पूरी छूट दें कि वे कहीं फँस जाने पर आपके पास आकर सहायता ले सकते हैं। (बच्चों को आइडिया दें कि यदि कहानी फँस गई है और बचे शब्द तार्किक रूप से कहानी आगे नहीं बढ़ा रहे हैं तो कहानी का पात्र सपना देखकर या कल्पना करके कहानी को आगे बढ़ाने में मदद कर सकता है। क्योंकि सपने में हमारे लिए वो देखना भी संभव होता है जो हकीकत में कहीं से भी तार्किक नहीं होता)।

- **कहानी के पात्रों में परिवर्तन कर नई कहानी का निर्माण**
  शिक्षक किसी कहानी के प्रमुख एक या दो पात्रों को बदलकर नई कहानी का निर्माण कर सकते हैं। बच्चों के लिए यह देखना दिलचस्प होगा कि कैसे कभी-कभी कहानी के एक पात्र के बदल जाने से पूरी कहानी का घटनाक्रम ही बदल जाता है। उदाहरण के लिए- यदि कोई कहानी चूहे और बिल्ली के बारे में है और फिर उस कहानी में से चूहे के पात्र के स्थान पर कुत्ते के पात्र को रख दिया जाए तो कहानी में क्या होगा और कहानी कैसे आगे बढ़ेगी? इसके साथ ही साथ ऐसा भी किया जा सकता है कि कहानी में एक और प्रमुख पात्र भी जोड़ दिया जाए तो कहानी कैसे मोड़ लेगी।

- **पढ़ी हुई कहानी को सुनाना और उसका सारांश लिखना**
  यह किया जा सकता है कि बच्चों को अपनी पसंद की किताब पढ़ने के अवसर दिए जाएँ और उनके सामने यह विकल्प दिया जाए कि यदि वे इसे सुनाना चाहें तो प्रातःकालीन सभा या अन्य अवसरों पर सुना सकते हैं। इस प्रकार यदि एक-दो बच्चों से भी शुरुआत होती है तो बाकी के बच्चे इससे प्रभावित होकर पढ़ने और सुनाने के लिए तत्पर होंगे। इसके बाद बच्चों को इसका सारांश लिखकर राइटिंग कॉर्नर पर प्रदर्शित करने को कहें। उन्हें यह भी लिखने को कहें कि उन्हें यह कहानी क्यों अच्छी लगी और उनके साथियों को यह किताब क्यों पढ़नी चाहिए।

बच्चों को इस प्रकार के लेखन मज़ेदार लगते हैं और वे इसमें पूरी तरह रम जाते हैं। वे अपनी तरफ से पूरा प्रयास करते हैं कि कहानी वो ठीक वैसी ही लिखें जैसी उन्होंने दिमाग में बुनी है। इस प्रक्रिया में वे रोचकता के साथ ही साथ इस बात का भी ध्यान रखते हैं कि उपलब्ध विकल्पों में से सबसे सटीक शब्दों का चयन करें, जिससे कि लिखने का प्रभाव अधिक पड़े। इस प्रक्रिया में बच्चे बेहिचक शिक्षक और सहपाठियों से मदद लेते हैं, जो उनके बीच के आपसी रिश्ते को और प्रगाढ़ करता है। सभी बच्चों को अपनी स्वयं की कहानियों और कविताओं के संकलन बनाने को भी प्रेरित किया जा सकता है।

उदाहरण

इसी संदर्भ में प्रस्तुत है कक्षा तीन और चार में कहानियों पर कार्य के दौरान के दो संक्षिप्त उदाहरण–
कक्षा 3 में बच्चों के साथ एक-एक वाक्य जोड़कर कहानी के निर्माण का कार्य हो रहा है। नियम स्पष्ट हैं कि हर बच्चे अपनी बारी आने पर एक-एक वाक्य बोलकर कहानी को आगे बढ़ाएँगे। ध्यान इस बात का रखना है कि बोला गया वाक्य पिछले वाक्यों से जुड़ा हुआ हो और कहानी को आगे ले जा रहा हो। साथ ही कहानी कहीं फँस जाए तो अब तक आए पात्रों या घटनाओं के अनुसार नए पात्र को जोड़कर कहानी को आगे बढ़ाया जा सकता है। शिक्षक ने अपनी भूमिका इस रूप में तय की हुई है कि वे बनती हुई कहानी के प्रत्येक बोले गए वाक्य को श्यामपट्ट पर लिखते चलेंगे। कहानी कुछ यूँ शुरू होती और आगे बढ़ती है-
"एक राजा था। वह महल में रहता था। एक दिन उसका एक मित्र उससे मिलने के लिए आया। आते समय वह रास्ते में बीमार हो गया। फिर वह एक आम के पेड़ के नीचे आराम करने लगा। तभी वहाँ से एक बैलगाड़ी वाला गुज़रा। उसने आदमी को वहाँ पड़े देखा तो उससे पूछा। आदमी ने बताया कि उस की तबीयत बहुत खराब हो गई है। बैलगाड़ी वाले ने कहा कि चलो मैं तुम्हें डॉक्टर के पास ले चलता हूँ।
(जब कहानी में यह वाक्य जोड़ा जाता है तो कक्षा की एक अन्य विद्यार्थी खड़ी होती है और आपत्ति जताते हुए कहती है कि वो डॉक्टर के पास नहीं वैद्य के पास ले जाएगा! यहाँ बच्ची द्वारा डॉक्टर शब्द के उपयोग पर की गई आपत्ति रोचक थी, अतः शिक्षक ने बात आगे बढ़ाई और कारण पूछा। बच्ची ने फिर जवाब दिया कि "राजा के समय में वैद्य होते थे, डॉक्टर नहीं।" बाकी बच्चों में से भी कुछ ने इस तथ्य से सहमति जताई। यहाँ जिस बात ने शिक्षक को सुखद आश्चर्य से भर दिया, वह था संदर्भ के अनुसार उचित शब्द चुनने की समझ। स्वयं शिक्षक के लिए भी इस कक्षा में संदर्भ के अनुसार उपयुक्त शब्दों के चुनाव का प्रथम प्रसंग था। अतः उन्होंने इसका श्रेय बच्चों की अपनी दृष्टि और समझ को दिया। व्यक्ति मात्र यह चाहता है कि उसके द्वारा बनी कोई भी चीज़ किसी भी तरह से उन्नीस न हो और वह इसके लिए पूरा प्रयास करता है। बच्चे भी इसका अपवाद नहीं हैं, वे एक अच्छी कहानी बनाने का प्रयास कर रहे थे और इस प्रक्रिया में अपने पूर्व के अनुभवों और ज्ञान का भरपूर उपयोग भी कर रहे थे।)

इसके बाद कहानी आगे बढ़ाई जाती है। किसान मित्र को वैद्य के पास ले जाता है, फिर राजा के महल ले जाता है। राजा प्रसन्न होता है और किसान को इनाम भी देता है।

फिर शिक्षक बच्चों के साथ-साथ श्यामपट्ट से इस कहानी को एक बार पढ़ते हैं और इसके बाद इसे मिटाने के लिए बढ़ते हैं। कुछ बच्चे उन्हें रोकते हैं और कहते हैं कि पहले वे सब कहानी लिख लें, उसके बाद ही मिटाया जाए। शिक्षक सहर्ष तैयार हो जाते हैं और बच्चे सहर्ष अपने द्वारा निर्मित कहानी को लिखने लगते हैं।

उपरोक्त प्रक्रिया को देखें तो यह भी स्पष्ट होता है कि इस कक्षा में बच्चों को कहने या सुनने-सुनाने का ठीक-ठाक अनुभव है। तभी उन्हें एक राजा और उसके काल के संदर्भ का कुछ-कुछ ज्ञान था। इसे कहानी में आए अन्य घटनात्मक मोड़ों, यथा बीमार होकर पेड़ के नीचे लेटना, बैलगाड़ी वाले का आना और राजा का प्रसन्न होकर इनाम देना आदि यह बताता है कि बच्चों ने ढेर सारी कहानियाँ सुन रखी हैं और वे उसका उपयोग अब अपनी कहानियों में कर रहे हैं। हम कह सकते हैं कि कहानियाँ लिखने-पढ़ने को आकर्षक बनाती हैं। कहानियाँ

हमें संदर्भ और परिस्थिति के अनुसार शब्दों के चयन के प्रति जागरूक करती हैं और इस प्रक्रिया में शब्द भंडार और भाषा पर हमारी पकड़ भी मजबूत करती हैं।

उदाहरण

कक्षा-4 के बच्चों को एक दिन आदिवासी नृत्य गवरी से जुड़ी पाठयपुस्तक की एक कहानी सुनाई गई। इस कहानी में भारतीय मिथक कथाओं की शंकर जी और भस्मासुर से संबंधित एक प्रसिद्ध कथा का ज़िक्र है। इस कहानी के दौरान एक दृश्य में भस्मासुर ताज़ा-ताज़ा मिले वरदान के परीक्षण के लिए शंकर जी को दौड़ा लेता है और शंकर जी भस्म हो जाने के डर से भागते हैं। कहानी सुनाने के दौरान शिक्षक इस दृश्य को बड़े ही मज़ेदार ढंग से सुनाते हैं कि किस तरह से शंकर जी आश्चर्य और डर से आगे-आगे भागते हैं और भस्मासुर उन्हें पकड़ने के लिए उनके पीछे-पीछे दौड़ता है। कहानी का यह सीक्वेंस बच्चों को खूब पसंद आया।

इसके बाद कक्षा की कार्यवाही आगे बढ़ी और पाठ पर अन्य काम किए गए। इस घटना के दो दिन बाद जब शिक्षक ने बच्चों को अपने मन से कहानियाँ लिखने को कहा तो कक्षा के सात बच्चों में से तीन बच्चों की कहानियों ने शिक्षक को मुस्कुराने पर विवश किया।

Figure 87 पाठ्यपुस्तक 'रुनझुन-5' के पाठ 'गवरी का खेल' से एक चित्र

ऐसा इसलिए नहीं कि उनकी कहानियाँ एक जैसी थीं, बल्कि इसलिए कि अलग-अलग होते हुए भी उनकी कहानियों का महत्त्वपूर्ण सीक्वेंस एक जैसा ही था। जहाँ एक कहानी चोर और पुलिस की थी, वहीं दूसरी कहानी चूहे और बिल्ली की और तीसरी शेर और कुत्ते की। लेकिन तीनों कहानियों में दो दिन पहले सुनाई गई कहानी का आगे-पीछे दौड़ने और दौड़ाने वाला हिस्सा विस्तार से मौजूद था- 'आगे-आगे और पीछे-पीछे, दौड़े जा रहे थे, दौड़े जा रहे थे'। और बच्चों ने इस घटना को अपनी कहानी में अपने द्वारा चुने हुए पात्रों के साथ बेहतरीन और तार्किक तरीके से बुना था।

बहुत हद तक संभव है कि उपरोक्त तीनों बच्चों ने इस एक घटना को केंद्र में रखकर कुछ विशेष विशेषताओं वाले पात्रों का चुनाव किया और फिर उन पात्रों की विशेषताओं को इस घटना के केंद्र में विस्तार देते हुए तार्किक समापन तक पहुँचती कहानियों का निर्माण किया। कहने का तात्पर्य यह कि एक ओर जहाँ बच्चे अपने मनपसंद पात्रों के इर्द-गिर्द उनकी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए कहानियों का निर्माण करते हैं, वहीं दूसरी ओर वे अपनी मनपसंद घटनाओं को केंद्र में रखते हुए उनके अनुसार संदर्भ और पात्रों का चयन करते हुए भी कहानी का निर्माण करते हैं। आवश्यकता बस इस प्रकार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराने की है।

यह घटना जहाँ एक ओर लिखने के लिए और अधिक पढ़ने और सुनने-बोलने की महत्ता को पूरी मज़बूती से स्थापित करती है, वहीं बच्चों में उपस्थित अपार संभावनाओं और सशक्त संज्ञानात्मक क्षमताओं से भी हमारा परिचय कराती है।

2.10 अन्य विधाओं पर कार्य

भाषा की पाठ्यपुस्तकों को देखें तो अधिकतर राज्यों में कक्षा 3 या इसके बाद की कक्षाओं में बच्चों को कहानी और कविता के साथ ही साथ अन्य विधाओं के पाठ भी पढ़ने के लिए मिल जाते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में कविता और कहानी के अतिरिक्त अन्य विधाओं को देने का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को इन विधाओं की जानकारी देना न होकर बच्चों को विभिन्न प्रकार के साहित्य और साहित्येतर टेक्स्ट का अनुभव प्रदान करना और उनके पढ़ने-लिखने से जुड़े अनुभवों को विविधता प्रदान करना है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि कक्षा में इन विभिन्न प्रकार के टेक्स्ट से जुड़े अनुभवों से बच्चों को इस प्रकार गुज़ारा जाए कि वे इनकी विशेषताओं को पहचान सकें और फिर इनके आधार पर अपने पढ़ने और लिखने से संबन्धित रुचियों और दिशाओं में स्वयं आगे बढ़ सकें।

प्राथमिक कक्षाओं में कविता और कहानी के अतिरिक्त अन्य विधाओं को देने का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को इन विधाओं की जानकारी देना न होकर बच्चों को विभिन्न प्रकार के साहित्य और साहित्येतर टेक्स्ट का अनुभव प्रदान करना और उनके पढ़ने-लिखने से जुड़े अनुभवों को विविधता प्रदान करना है।

यहाँ कुछ ऐसी ही विधाओं को उनकी विशेषताओं और कक्षा में उनके साथ भाषा शिक्षण पर कार्य की संभावित प्रक्रियाओं के साथ प्रस्तुत किया गया है।

2.10.1 भाषाई कौशलों के विकास में डायरी की भूमिका

डायरी का कक्षा प्रक्रिया से जुड़ाव– बच्चों में स्वतंत्र एवं रचनात्मक लेखन के विकास के लिए डायरी एक महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में दिखाई देती है, क्योंकि इस विधा में ऐसी कोई बाध्यता नहीं है जिसमें भाषा का पैमाना लागू हो। व्यक्ति की अपनी निजता, अपनी बात को खुलकर लिखना ज़्यादा असरदार होता है। लेकिन इसे स्वैच्छिक रखना ज़रूरी होगा, जिससे इसकी सार्थकता बनी रहे। बच्चों के भीतर लिखकर अभिव्यक्त करने की ललक जगाने में डायरी की अहम भूमिका हो सकती है।

बोलचाल के दौरान हम न जाने कितने शब्दों को सुनते और प्रयोग करते जाते हैं, लेकिन हमें अंदाज़ा नहीं होता कि उन शब्दों से हमारी जान-पहचान भी है। जब ये शब्द कलम से कागज़ पर उतरने की प्रक्रिया में आते हैं, तब समझ में आता है कि अरे, यह तो एक शब्द था, हमारी ही अंटी में बंधा हुआ। इसके तो तमाम अर्थ हैं, जैसा इस्तेमाल वैसा अर्थ। डायरी लेखन एक बेहद अनौपचारिक विधा है, इसलिए यहाँ लेखन से जुड़े किसी संकोच की कोई गुंजाइश ही नहीं है। अतः हर आड़ा-बेड़ा-टेढ़ा शब्द यहाँ आकर जुड़ता जाता है। लिखते वक्त हमें समझ में आता है कि वो शब्द हमारे कितने करीब था, या कितने नये शब्दों से परिचय हो रहा है। अनौपचारिक भाषा व शब्दों की मिठास डायरी की जीवन्तता को भी बढ़ाती है और रस को भी।

इस विधा को बच्चों के दैनिक जीवन से जोड़ने व लिखने के लिए सबसे पहले इसके महत्त्व को बच्चों के बीच रखना होगा कि हम जो भी अपने आसपास देखते हैं, अनुभव करते हैं, बस उसे ही लिखना है। इससे पहला फ़ायदा यह होता है कि हम अपने आप को यह बता पाते हैं कि हम क्या देख रहे हैं और क्या सोच रहे हैं। और दूसरा हमें लिखना आ जाता है। अपने लिखे को देखकर यह जान पाते हैं कि हम कैसा लिख रहे हैं। जब बच्चे खुद अपनी कॉपी / डायरी में कुछ भी अपनी मर्ज़ी से लिखने के लिए स्वतंत्र होते हैं और आश्वस्त होते हैं कि वे जो लिख रहे हैं, वो कोई नहीं पढ़ेगा तो उनकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति आकार लेती है।

अतः बच्चों को यह समझाना आवश्यक है कि यह लिखने की एक ऐसी प्रक्रिया है जो पूरी तरह से व्यक्तिगत है। डायरी हमारे नितांत व्यक्तिगत और अंतरतम क्षणों को अपने में समाहित करती है। उन्हें यह लिखकर बताया जा सकता है कि डायरी में ऐसे सभी विषयों के बारे में लिखा जा सकता है और वो सबकुछ लिखा जा सकता है जिसके बारे में उनके पास कहने को बहुत कुछ है, लेकिन वे डर या संकोचवश किसी से कह नहीं सकते।

कुछ विषय जिनके बारे में डायरी में लिखा जा सकता है

प्रतिदिन की घटनाओं में से कोई दो घटनाएँ तारीख के साथ, एक वो जो अच्छी लगी हो और दूसरी जो बुरी लगी हो। या फिर दिन भर का सार, क्या-क्या हुआ, किस-किस से मिले, क्या-क्या बातें हुईं, क्या करना था लेकिन नहीं हो पाया, क्या देखा, क्या नया हुआ? आदि।

डायरी हमारे नितांत व्यक्तिगत और अंतरतम क्षणों को अपने में समाहित करती है। उन्हें यह लिखकर बताया जा सकता है कि डायरी में ऐसे सभी विषयों के बारे में लिखा जा सकता है और वो सबकुछ लिखा जा सकता है जिसके बारे में उनके पास कहने को बहुत कुछ है, लेकिन वे डर या संकोचवश किसी से कह नहीं सकते।

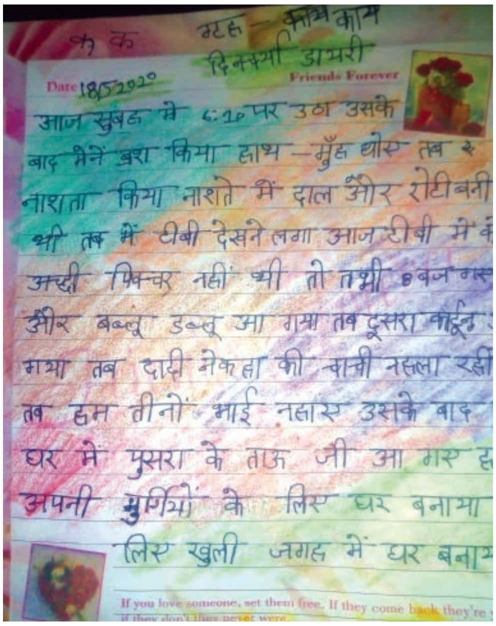

Figure 88 एक बच्चे की दैनिक डायरी का एक पन्ना

दोस्तों, परिवार के सदस्यों, शिक्षकों और बाकी लोगों के बारे में। उनमें क्या अच्छा या बुरा लगता है? यदि उनसे कह पाते तो क्या कहते? उनकी कौन-सी आदतें हैं जो आप बदलना चाहते हैं?

अपनी आकांक्षाओं और योजनाओं के बारे में। क्या सपने देखते हैं, क्या करना चाहते हैं, क्या बनना चाहते हैं और क्यों? क्या-क्या नहीं बनना चाहते और क्यों? आदि।

डायरियों के अंशों का ज़िक्र करते हुए बाचतीत की प्रक्रिया शुरू की जा सकती है। इसमें सबसे बड़ा अंतर यह दिखता है कि यह अपनी होती है, अपने पास रहती है, उस दिन की बात के साथ तारीख और वार लिखा होता है, किसी दूसरे तक अपनी बात नहीं जाती है। हम अपनी खुशी, नाराज़गी, प्यार, अपनी पसंद-नापंसद, अपने बारे में सब कुछ पन्ने पर लिखकर मन हल्का कर लेते हैं और यह बात किसी दूसरे को पता नहीं चलती है।

उदाहरण

"शिक्षिका स्नेहलता बिष्ट ने अपने बच्चों को उनके मन की बात लिखने की ओर प्रेरित किया। धीरे-धीरे यह लिखना डायरी का आकार लेने लगा। कुछ बातें बच्चे गोपनीय ढंग से 'मन की बात' बॉक्स में डालने लगे। शिक्षिका को इस तरह बच्चों के करीब जाने और उनकी समस्याओं को समझने का अवसर मिला।"

"शिक्षिका आभा गौढ़ बताती हैं कि बच्चे अपने मन की बात को इस तरह से व्यक्त करते हैं कि जैसे मैं उनकी माँ हूँ। यदि उन्हें मेरी कोई बात अच्छी या बुरी लगती है तो वे उसी दिन उसे लिखकर अभिव्यक्त कर देते हैं।"

"नीलम विश्नोई बच्चों द्वारा लिखी बातों को पढ़ती हैं, उनको अकेले में बुलाकर उनसे बात करती हैं। यदि अभिभावकों से संबंधित कोई दिक्कत है तो अभिभावकों को बुलाती हैं, उनसे भी अलग बात करती हैं। वे कहती हैं कि अपनी बात को खुलकर लिखकर व्यक्त करना अपने आप में बड़ी बात है, इसलिए कोशिश यह होनी चाहिए कि बच्चे अपनी कुछ भी बातें लिखें, उनका सम्मान हो एवं उनकी गोपनीयता बनाए रखते हुए हल की ओर बढ़ा जाए।"

डायरी पर बनते विश्वास के साथ जब बच्चों को अपने मन की बात लिखने का अभ्यास बन जाता है तो वे दुनिया-जहान की बातें, मेरी-तेरी-उसकी बातें, गाँव-शहर की बातें, गली-मोहल्ले की बातें, किस किताब में क्या बात अच्छी लगी और क्या अच्छी नहीं लगी। विद्यालय में कौन और क्या अच्छा लग रहा है, क्या नहीं, त्योहार कौन-सा और क्यों पसंद या नापसंद, कौन-सा खेल पसंद या नापसंद, दादी-नानी की कहानी, वह क्या थी, चुटकुला कौन-सा पसंद आया आदि। कई तरह के प्रसंगों को लिखना आरंभ कर देते हैं। जैसा कि उपरोक्त शिक्षकों ने अपनी बात में कहा भी है। दस से पद्रंह पेज की कॉपी में लिखने की शुरुआत की जा सकती है। इस बात का ध्यान रखना होगा, जब भी लिखें और जितना लिखें, उस पेज पर तारीख और समय अवश्य लिखें।

यूँ तो सभी साहित्यिक विधाएँ जीवन्त होती हैं, लेकिन यात्रा साहित्य की जीवन्तता ही इसका प्राण है। यहाँ जीवन्तता से आशय सक्रियता से है। अपनी जगह को छोड़कर कहीं और जाए बगैर यात्रा संभव नहीं, और बिना यात्रा किए यात्रा साहित्य संभव नहीं। इस जीवन्तता को यात्रा साहित्य के पाठ्यपुस्तकों में दिए गए उदाहरणों में महसूस करना सबसे पहले एक शिक्षक के लिए बेहद ज़रूरी है। देखने में आया है कि पाठ्यपुस्तकों में दर्ज यात्रा साहित्य अक्सर पाठ भर बनकर रह जा रहे हैं। कक्षाओं में अभी कथेतर विधाओं जिनमें यात्रा भी एक है, को लेकर कोई विशेष प्रक्रियाएँ अपनाई जाती हों, ऐसा कम ही दिखता है।

2.10.2 भाषाई कौशलों के विकास में यात्रा साहित्य की भूमिका

इस विधा द्वारा पढ़ने और लिखने पर काम की सफलता बहुत कुछ इस बात पर निर्भर है कि एक शिक्षक कक्षा में यात्रा साहित्य के पाठ को किसी पाठ की तरह पढ़ाने की बजाय यात्रा के किस्से के रूप में किस तरह रोचकता के साथ साझा करते हैं। ज़रूरी है कि अभ्यास के प्रश्नों की चिंता-फ़िक्र छोड़कर सबसे पहले उस टेक्स्ट के साथ बच्चों का एक रिश्ता कायम किया जाए। यात्रा करने वाले कैसे महसूस करते हैं, उसे किस तरह लिखते हैं। इसपर बातचीत करते हुए बच्चों में यात्राओं के प्रति ललक, उत्सुकता जगाई जाए। उन्हें बताया जाए कि किस तरह यात्राओं के दौरान किसी दूसरे शहर से दोस्ती करनी होती है, उससे बातें करनी होती हैं, उसकी बात सुननी होती है। उसे अपनी बातें, अपने शहर की बातें बतानी होती हैं, वहाँ के लोगों के बारे में जानना होता है। अगर किसी प्राकृतिक जगह पर गए हों, जैसे पहाड़, जंगल, समंदर या नदी, तो प्रकृति के उन नज़ारों को महसूस करना, वहाँ की सुबहों को, शामों को, रातों को, सूरज, चाँद, सितारों को, पानी की कलकल को, जंगल की खुशबू को, पहाड़ियों के शीर्ष पर सजी चांदी-सी बर्फ को महसूस करना होता है। उसके बाद उस अनुभव को लिखना कितना आसान हो जाता है। जो देखा, जो महसूस किया, उसे वैसा का वैसा लिख दिया... बस। और फिर एक अच्छा पाठक भी उसे महसूस करते हुए आत्मसात कर पाता है।

> यात्राओं के दौरान मिले नए समाज, वहाँ की भाषा व बोली के शब्दों का किसी भी यात्रा वृत्तांत में ज़िक्र होना लाज़िमी है। पढ़ने वाला कई बार नए शब्दों में अटकता है और फिर उसे समझते हुए अपने शब्दकोश में वृद्धि करते हुए आगे बढ़ता है।

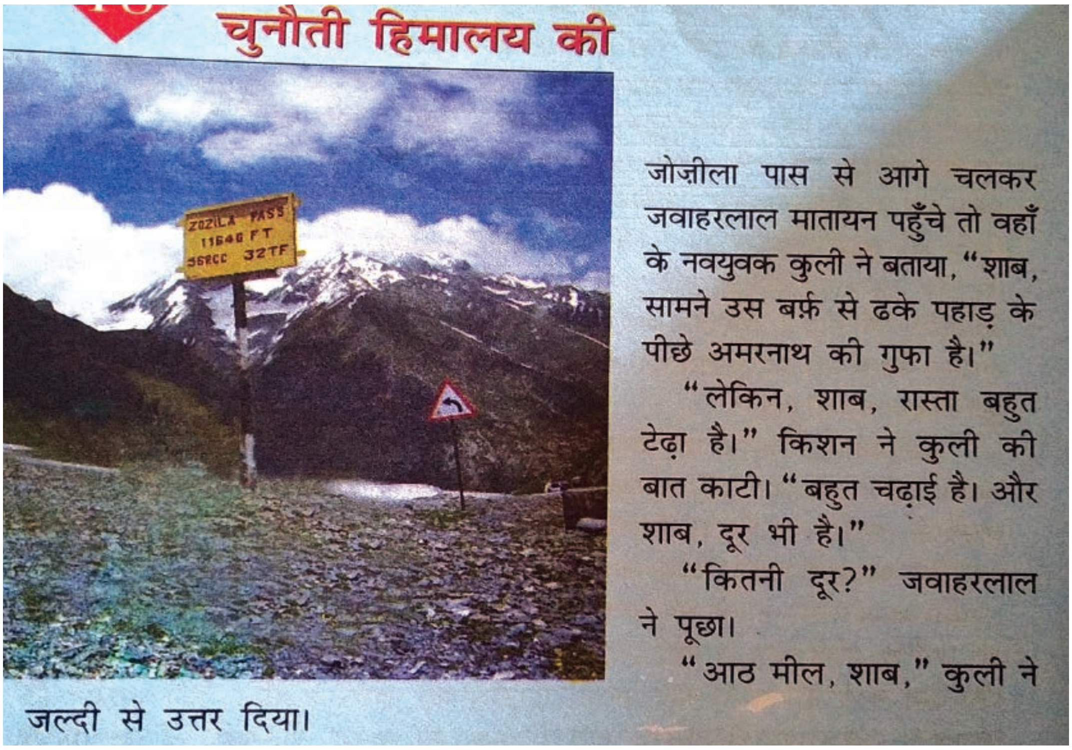
चुनौती हिमालय की

जोज़ीला पास से आगे चलकर जवाहरलाल मातायन पहुँचे तो वहाँ के नवयुवक कुली ने बताया, "शाब, सामने उस बर्फ़ से ढके पहाड़ के पीछे अमरनाथ की गुफा है।"

"लेकिन, शाब, रास्ता बहुत टेढ़ा है।" किशन ने कुली की बात काटी। "बहुत चढ़ाई है। और शाब, दूर भी है।"

"कितनी दूर?" जवाहरलाल ने पूछा।

"आठ मील, शाब," कुली ने जल्दी से उत्तर दिया।

Figure 89 एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तक में यात्रा-वर्णन से संबन्धित अध्याय

यात्राओं के दौरान मिले नए समाज, वहाँ की भाषा व बोली के शब्दों का किसी भी यात्रा वृत्तांत में ज़िक्र होना लाज़िमी है। पढ़ने वाला कई बार नए शब्दों में अटकता है और फिर उसे समझते हुए अपने शब्दकोश में वृद्धि करते हुए आगे बढ़ता है। इस लिहाज़ से देखें तो यात्राएँ न सिर्फ़ लेखक को भाषाई तौर पर समृद्ध करती हैं, बल्कि पाठकों को भी परिमार्जित करती हैं। अक्सर हमारे आस-पास कई भाषाएँ जानने वाले लोग होते हैं, उनकी पृष्ठभूमि में उनका उन तमाम भाषा वाले समाजों से साक्षात्कार होना प्रमुख कारण दिखता है।

कक्षा प्रक्रिया

इसके लिए शिक्षक बच्चों से उनके द्वारा की गई यात्राओं के बारे में बातचीत कर सकते हैं। अपनी यात्राओं के बारे में बता सकते हैं। बच्चों को उनकी गर्मी की छुट्टियों में या किसी शादी-विवाह में या ऐसे ही किसी कारण कहीं जाने के अनुभवों को लेकर बातचीत भी शिक्षक कर सकते हैं। जिसमें उनका बस या रेल में बैठना, सामान की पैकिंग, वहाँ क्या देखा, कैसा महसूस किया, क्या अलग दिखा जैसे छोटे-छोटे सवालों से बात शुरू की जा सकती है।

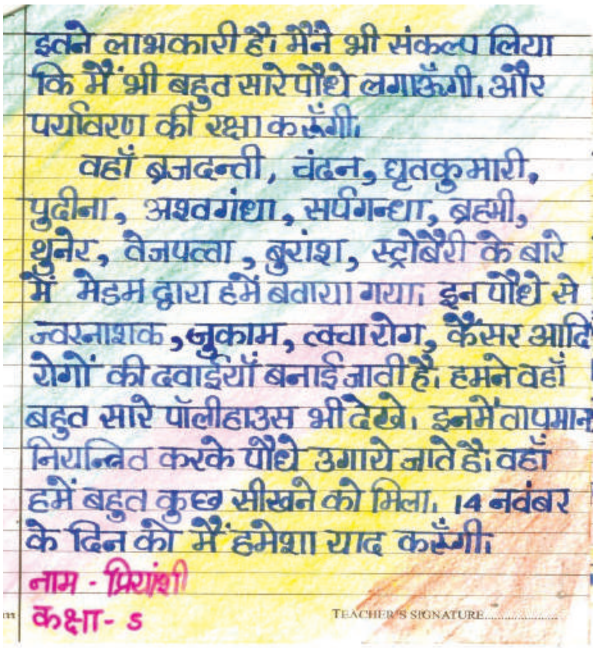
इतने लाभकारी है। मैंने भी संकल्प लिया
कि मैं भी बहुत सारे पौधे लगाऊँगी। और
पर्यावरण की रक्षा करूँगी।
वहाँ ब्रजदन्ती, चंदन, घृतकुमारी,
पुदीना, अश्वगंधा, सर्पगन्धा, ब्रह्मी,
थुनेर, तेजपत्ता, बुरांश, स्ट्रोबेरी के बारे
में मेडम द्वारा हमें बताया गया। इन पौधे से
ज्वरनाशक, जुकाम, त्वचा रोग, कैंसर आदि
रोगों की दवाईयाँ बनाई जाती है। हमने वहाँ
बहुत सारे पॉलीहाउस भी देखे। इनमें तापमान
नियन्त्रित करके पौधे उगाये जाते है। वहाँ
हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। 14 नवंबर
के दिन को मैं हमेशा याद करूँगी।
नाम - प्रियांशी
कक्षा - 5
TEACHER'S SIGNATURE..................

Figure 90 एक विद्यार्थी द्वारा लिखे यात्रा-वर्णन का भाग

कक्षा-कक्ष प्रक्रिया के तहत शिक्षक बच्चों को आसपास की किसी जगह पर ले जा सकते हैं। फिर लौटकर उन्होंने वहाँ क्या-क्या देखा, उन्हें कैसा महसूस हुआ, क्या कोई ऐसा अनुभव भी हुआ जो पहली बार हुआ हो आदि पर विस्तार से बात कर सकते हैं। अगर ये सारी प्रक्रियाएँ यात्रा साहित्य का पाठ पढ़ाने से पहले होती हैं तो इसके बाद उनके साथ पाठ को पढ़ने, उस पर बातचीत करने, अंत में दिए गए सवालों और कुछ नए सवालों पर भी बात करने से बच्चों में पाठ के प्रति रुचि जगती है। हो सकता है कि दूसरी यात्राओं के बारे में जानने की उनकी जिज्ञासा बढ़े।

जब शिक्षक बच्चों को कक्षा-कक्ष में यात्रा साहित्य पढ़ने को उत्साहित कर रहे हों तो इस दौरान बच्चों की उन छोटी-छोटी यात्राओं के बारे में बात करना और उनके बारे में लिखने का प्रोत्साहन भी शामिल होगा जिन्हें अब तक वो यात्रा के तौर पर नहीं देख रहे थे। ऐसे में उन्हें भाषाई आज़ादी देना लाभकर होता है। वो रोज़मर्रा की बोलचाल के उन शब्दों को भी यात्रा के अनुभव लिखते समय दर्ज कर सकते हैं जो अब तक उपेक्षित थे। और उन शब्दों

जब शिक्षक बच्चों को कक्षा-कक्ष में यात्रा साहित्य पढ़ने को उत्साहित कर रहे हों तो इस दौरान बच्चों की उन छोटी-छोटी यात्राओं के बारे में बात करना और उनके बारे में लिखने का प्रोत्साहन भी शामिल होगा जिन्हें अब तक वो यात्रा के तौर पर नहीं देख रहे थे ।

के इस्तेमाल से उनके अनुभवों को भाषाई ताज़गी भी मिलती है। साथ ही नए शब्दों को अपनाने को लेकर हिचक भी टूटेगी। बच्चे की ननिहाल की भाषा ददिहाल की भाषा से अलग हो सकती है, लेकिन 'मेरी ननिहाल यात्रा' में दोनों भाषाओं का इस्तेमाल बच्चे कर सकेंगे। यह शिक्षक और कक्षा के दूसरे बच्चों के लिए भी नए शब्दों को जानने का एक माध्यम हो सकता है।

2.10.3 भाषाई कौशलों के विकास में संस्मरण की भूमिका

कक्षा के संदर्भ में संस्मरण विधा, बच्चों को उनकी स्मृति में संचित विभिन्न व्यक्तियों से जुड़े अनुभवों को अभिव्यक्त करने के बेशुमार अवसर देती है। सजीव स्मृति बच्चों का यथार्थ है, उन आत्मीय स्मृतियों के प्रत्यक्षीकरण को उनके कल्पना विस्तार व रचनात्मकता को भरपूर अवसर देने के रूप में देखा जा सकता है। संस्मरण संतुष्टि प्रदान करते हैं, इस सम्बन्ध में बच्चों की झिझक को कम करने, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने, नए ढंग से सोचने और स्व-आकलन की ओर भी प्रेरित किया जा सकता है।

प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में यदि संस्मरण द्वारा भाषाई कौशलों के शिक्षण की बात करें तो इसके लिए कक्षा 4 व 5 के बच्चों की एक स्तर की समझ बनाई जा सकती है। प्राथमिक कक्षाओं में संस्मरण लिखने की आशा करना शायद समीचीन न हो, किन्तु कक्षा शिक्षण में इस पर समझ बनाई जा सकती हैं, मसलन- प्रारंभ में अपने जीवन के बीते हुए पलों को याद करते हुए कोई ऐसी घटना रोचक ढंग से सुनाएँ जो आपसे जुड़ी हो। ऐसी घटनाओं में विद्यालय के किसी अध्यापक या बच्चे से जुड़ी घटना भी हो सकती है। किंतु यह ध्यान रखना है कि ऐसा कोई प्रसंग न हो जिससे कोई लज्जित या दु:खी हो। यदि अध्यापक को ऐसा कोई प्रसंग याद नहीं आता तो वह अपने निजी जीवन में कुछ व्यक्तियों के साथ बिताए गए पलों को भी अपनी स्मृति के आधार पर प्रस्तुत कर सकता है।

प्रारंभ में अपने जीवन के बीते हुए पलों को याद करते हुए कोई ऐसी घटना रोचक ढंग से सुनाएँ जो आपसे जुड़ी हो। ऐसी घटनाओं में विद्यालय के किसी अध्यापक या बच्चे से जुड़ी घटना भी हो सकती है।

शिक्षक अपना संस्मरण सुनाने के बाद बच्चों से उनके अपने पिछले दिनों के किन्हीं महत्त्वपूर्ण पलों या परिवेशीय घटनाओं जिनमें वे स्वयं शामिल रहे हों आदि को कक्षा में प्रस्तुत करने को कहें। जब दो या तीन बच्चे अपने संस्मरण प्रस्तुत कर चुके हों तो चर्चा करें कि इस प्रस्तुति में ख़ास-ख़ास बातें क्या हैं। फिर यह समझाने का प्रयास करें कि ये सभी बीते दिनों की घटनाएँ हैं तथा किन्हीं विशेष पलों के वर्णन हैं, जिनमें बच्चे स्वयं शामिल रहे हैं। ये वर्णन किसी समय विशेष में घटी घटनाओं अथवा अनुभवों से जुड़ी हैं तथा ये जिन व्यक्तियों

शिक्षक अपना संस्मरण सुनाने के बाद बच्चों से उनके अपने पिछले दिनों के किन्हीं महत्त्वपूर्ण पलों या परिवेशीय घटनाओं जिनमें वे स्वयं शामिल रहे हों आदि को कक्षा में प्रस्तुत करने को कहें। जब दो या तीन बच्चे अपने संस्मरण प्रस्तुत कर चुके हों तो चर्चा करें कि इस प्रस्तुति में ख़ास-ख़ास बातें क्या हैं।

या वस्तुओं से जुड़े वर्णन हैं, वे व्यक्ति या वस्तु उनके जीवन में विशेष महत्त्व रखते हैं। और इन वर्णनों को प्रस्तुत करने का आधार उनकी स्मृतियाँ हैं।

बच्चों को अपने परिवार, रिश्तेदारों अथवा मित्रों से सम्बन्धित किन्हीं विशेष पलों के अनुभवों को एक या डेढ़ पेज में लिखने को कहें। जब सभी बच्चे लिख चुके हों तो वे अपने संस्मरण कक्षा में पढ़कर सुना सकते हैं या दीवार पर चिपका सकते हैं, जिसे सभी बच्चे बारी-बारी से पढ़ सकें।

बच्चों को उनकी पाठ्यपुस्तक या पुस्तकालय से कोई संस्मरण जो उनके स्तर अनुरूप हो, पढ़ने को दें, फिर जब वे पढ़कर आएँ तो उस पर निम्न प्रश्नों के माध्यम से चर्चा कर सकते हैं–

- यह किसने लिखा है? और किसके बारे में है? इसकी ख़ास-ख़ास बातें क्या हैं?
- इस लेख में लेखक का अनुभव क्या है?

इस प्रकार संस्मरण लेखन और पठन द्वारा बच्चे भाषा के प्रयोग के कुछ अन्य तरीकों को समझ और उनका अनुभव कर पाएँगे। फलस्वरूप उनके लिए लिखना-पढ़ना और अधिक दिलचस्प हो जाएगा।

2.10.4 भाषाई कौशलों के विकास में एकांकी की भूमिका

एकांकी जीवन की किसी एक घटना पर आधारित होती है, अतः कक्षा शिक्षण में इसका प्रयोग बड़ी सहजता से किया जा सकता है। सर्वप्रथम एकांकी का पठन किया जाए। यह पठन भी दो स्तरों पर किया जा सकता है। सर्वप्रथम एक घेरे अथवा वृत्त में सभी छात्र बैठ जाएँ और किसी भी गद्य विधा की तरह उसका पाठन करें। दूसरा स्तर यह हो सकता है कि एकांकी में उपयुक्त पात्रों के आधार पर छात्रों को भूमिका दें और फिर उसका पठन करवाएँ।

Figure 91 एक संस्मरणात्मक पाठ

यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि बच्चों का आपसी संवाद उनके व्यक्तिगत अनुभव पर ही आधारित हो, उसमें एकांकी की नकल मात्र न हो, घटना भी एकांकी के समान हो सकती है, पर केंद्रीय समस्या ज़रूरी नहीं कि एकांकी जैसी ही हो। संवाद एकांकी का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। संवाद ही वह अंग है जो एकांकी को साहित्य की अन्य विधाओं से विलग करती है। संवाद एकांकी का ही नहीं, मानव जीवन का भी एक महत्त्वपूर्ण अंग है। जिसे एकांकी के माध्यम से समझा जा सकता है। बोलना एक कला है, पर जब तक हम यह नहीं जानते हैं कि कब, कहाँ, कैसे और क्या बोलना है, यह कला मुखरित नहीं हो पाती है। एकांकी का कथोपकथन बच्चों को स्वयं की अभिव्यक्ति का अवसर देता है, साथ ही संवाद की क्रिया का उन्हें सही ज्ञान भी देता है। यदि एकांकी के माध्यम से कथोपकथन का अभ्यास करवाया जाए तो बच्चे दैनिक जीवन में भी आपसी संवाद का महत्त्व समझ सकते हैं।

जब चर्चा-परिचर्चा से बात प्रस्तुति पर आ जाए तो छात्रों को पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह पात्रों के अनुरूप संवादों का प्रयोग करें। पात्रों का यह संवाद छात्रों के अपने अनुभव और कल्पना पर आधारित हो सकता है। इस प्रक्रिया में छात्र पात्रों, घटनाओं को समझने, उसे अभिव्यक्त करने के लिए अपनी संपूर्ण कल्पनाशक्ति का प्रयोग कर सकते हैं, जिससे उनमें सोचने-समझने एवं निर्णय लेने की क्षमता का विकास होगा। वह प्रस्तुति को और रोचक एवं मनोरंजक बनाने के लिए कक्षा में उपलब्ध साधनों का प्रयोग कर सकते हैं, जिससे उनके भीतर वस्तु एवं पदार्थ के जीवन में प्रयोग से संबंधित समझ भी विकसित हो सकती है।

संवाद एकांकी का ही नहीं, मानव जीवन का भी एक महत्त्वपूर्ण अंग है। जिसे एकांकी के माध्यम से समझा जा सकता है। बोलना एक कला है, पर जब तक हम यह नहीं जानते हैं कि कब, कहाँ, कैसे और क्या बोलना है, यह कला मुखरित नहीं हो पाती है ।

एकांकी में चयनित पात्रों की स्थिति एवं उनकी प्रस्तुति के दौरान यह ध्यान रखें कि सभी पात्र अपने आप में उस एकांकी या प्रस्तुति के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। प्रत्येक पात्र की अपनी विशेषता एवं योग्यता होती है, इसलिए किसी भी आधार पर किसी को ज़्यादा एवं किसी को कम महत्त्व नहीं दिया जाए। एकांकी की प्रस्तुति के दौरान किए जाने वाले इस व्यवहार से ही बच्चों में समाजिकता एवं समाज में प्रयोग की जाने वाली भाषा को जानने-समझने का मौका मिलेगा।

2.10.5 भाषाई कौशलों के विकास में जीवनी की भूमिका

हिंदी भाषा के शिक्षण में साहित्यिक विधाओं के माध्यम से बच्चों को विविध प्रकार की जानकारियों को प्राप्त करने तथा साहित्य का आनंद लेते हुए भाषा में कुशलता का अवसर देने का प्रयास किया जाता है। जीवनी विधा की सहायता से शिक्षण के दौरान बच्चों के साथ कुछ गतिविधियों को अंजाम दिया जा सकता है।

प्रायः यह देखा जा रहा है कि प्रत्येक स्तर पर भाषा की पुस्तकों को पढ़ते हुए, बच्चों को किसी भी विधा की रचना को साहित्य के रूप में पढ़ने का आनन्द मिल पाना जहाँ एक बड़ी चुनौती है, वहीं प्राथमिक स्तर पर तो यह चुनौती और भी बड़ी है। आमतौर पर पाठ्यपुस्तकों में शामिल जीवनी विधा की रचनाओं को शामिल

करने का उद्देश्य उनके साहित्यिक अथवा भाषाई खूबियों का अनुभव और आनंद देने के स्थान पर शिक्षा और प्रेरणा देना नज़र आता है।

बच्चों की समझ बनाने के लिए उनके साथ निम्नलिखित गतिविधियाँ की जा सकती हैं। बच्चे अपने दोस्त के बारे में बताएँ। इसमें वे जो महत्त्वपूर्ण बातें उसके जीवन से संबंधित जानते हैं और जिनकी जानकारी दूसरों को देनी उपयोगी होगी, उसे बताएँ तथा बताने के बाद चर्चा करें। चर्चा के बिंदु इस प्रकार हो सकते हैं कि मुख्य-मुख्य बातें क्या हैं, उसके नाम, निवास व परिवार के बारे में, उसकी दिनचर्या, व्यवहार, उसकी पढ़ाई-लिखाई के बारे में, उसकी उपलब्धियों के बारे में चर्चा करें। इस चर्चा में कुछ ऐसे प्रसंग व बातें हो सकती हैं जो सभी को न पता हों, किंतु उसके व्यक्तित्व को समझने के लिए उपयोगी हों।

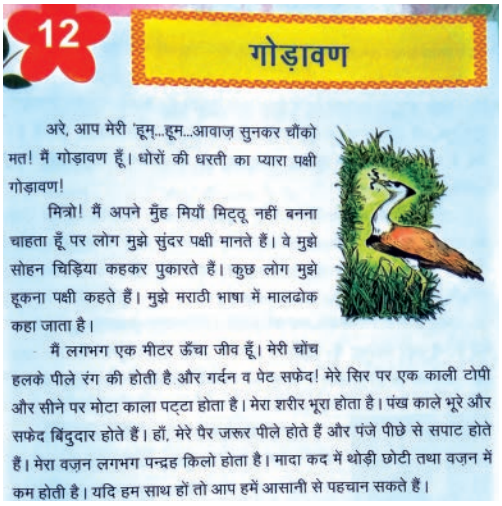

12

गोड़ावण

अरे, आप मेरी 'हूम्...हूम...आवाज़ सुनकर चौंको मत! मैं गोड़ावण हूँ। धोरों की धरती का प्यारा पक्षी गोड़ावण!

मित्रो! मैं अपने मुँह मियाँ मिट्ठू नहीं बनना चाहता हूँ पर लोग मुझे सुंदर पक्षी मानते हैं। वे मुझे सोहन चिड़िया कहकर पुकारते हैं। कुछ लोग मुझे हूकना पक्षी कहते हैं। मुझे मराठी भाषा में मालढोक कहा जाता है।

मैं लगभग एक मीटर ऊँचा जीव हूँ। मेरी चोंच हलके पीले रंग की होती है और गर्दन व पेट सफेद! मेरे सिर पर एक काली टोपी और सीने पर मोटा काला पट्टा होता है। मेरा शरीर भूरा होता है। पंख काले भूरे और सफेद बिंदुदार होते हैं। हाँ, मेरे पैर जरूर पीले होते हैं और पंजे पीछे से सपाट होते हैं। मेरा वज़न लगभग पन्द्रह किलो होता है। मादा कद में थोड़ी छोटी तथा वज़न में कम होती है। यदि हम साथ हों तो आप हमें आसानी से पहचान सकते हैं।

Figure 92 राजस्थान राज्य की कक्षा-4 की पाठ्यपुस्तक में एक आत्मकथात्मक पाठ

10

नारी शक्ति की प्रतीक

– भगिनी निवेदिता

अपने देश की बहुत कुछ कर गुजरने वाली महिलाओं से हमारा इतिहास भरा पड़ा है, परन्तु एक विदेशी महिला ने भारत के लिए जो कार्य किया, वह अनूठा है। भगिनी निवेदिता स्वामी विवेकानन्द से प्रभावित होकर उनके आह्वान पर भारत की महिलाओं को शिक्षित करने के लिए भारत आई थी। उनका जन्म आयरलैण्ड में हुआ, परन्तु उन्होंने भारत भूमि में अपनी मातृभूमि के दर्शन किए और भारत की बेटी बनकर स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रांतिकारी भूमिका निभाई।

उनका पूरा नाम 'मार्गेट एलिजाबेथ नोबेल' था। उनके पिता का नाम 'सेमुअल रिचमण्ड नोबेल' व माँ का नाम 'मैरी इसाबेला' था। बचपन में ही इनके माता–पिता का देहांत हो गया था। इनका लालन–पालन नाना हमिल्टन दवारा किया गया था। हमिल्टन आयरलैण्ड के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधारों में से एक थे। मार्गेट की शिक्षा लंदन चर्च के आवासीय विद्यालय में हुई।

Figure 93 राजस्थान राज्य की कक्षा-5 की पाठ्यपुस्तक में जीवनी विधा का एक पाठ

बच्चों से अपने दोस्त के बारे में विभिन्न जानकारियाँ जो उसके जीवन से संबंधित हों, उनके बारे में लिखने को कहें। एक या डेढ़ पेज का यह लेख बच्चे समूह में सुनाएँ तथा जिसके बारे में लिखा है, उससे इस बात की तस्दीक की जा सकती है कि संबंधित बातें सत्य हैं या नहीं। दूसरे बच्चे भी अपनी जानकारी के अनुसार बताई गई बातों को प्रमाणित कर सकते हैं।

बच्चों के कुछ समूह बनाएँ, जिसमें बच्चे किसी एक बच्चे से उसके बारे में अधिकतम जानकारियाँ पता करें तथा उसके दोस्तों से भी पूछें और लिखकर प्रस्तुत करें। बच्चे इसे बड़े समूह में पढ़कर सुना सकते हैं तथा समूह के बच्चों से यह चर्चा हो सकती है कि बताई गई जानकारी से जिस बच्चे के बारे में बताई गई है, उन्हें कौन-कौन-सी नई जानकारी मिली।

बच्चों को उनके कक्षा स्तर की पाठ्यपुस्तक अथवा पुस्तकालय से कोई जीवनी पढ़ने को दें और फिर उस जीवनी के माध्यम से उन्हें संबंधित व्यक्ति के बारे में क्या-क्या जानकारियाँ मिलीं, उसकी चर्चा कर सकते हैं, लिख सकते हैं।

प्राथमिक स्तर पर जीवनी पर कक्षा चार और कक्षा पाँच के बच्चों के साथ काम किया जा सकता है। इस स्तर पर बच्चों को उनकी पाठ्यपुस्तक में उपलब्ध जीवनी के पाठ को पढ़ने से पहले जीवनी के मुख्य चरित्र यानी जिसकी जीवनी लिखी गई है, उसके सम्बन्ध में एक सामान्य किन्तु रोचक परिचय करा देना उचित गतिविधि होगी। इससे बच्चे रुचि लेकर पढ़ने को प्रेरित होंगे। बच्चों के पढ़ चुकने के बाद जीवनी के मुख्य चरित्र के सम्बन्ध में कुछ इस प्रकार के प्रश्न बच्चों से पूछे जाने चाहिए, जिससे वे उसके जीवन के सम्बन्ध में पाठ से मिली जानकारी के क्रमबद्ध सम्बन्ध को समझ सकें। बच्चों से चर्चा द्वारा भी जीवनी के मुख्य अंशों पर उनकी जानकारी को आधार बनाते हुए उन्हें अपने शब्दों में लिखने को कहा जा सकता है। यदि मुख्य चरित्र के जीवन सम्बन्धी चित्रकथा उपलब्ध हो तो बच्चों को उसे पढ़ने को दें, फिर उस चरित्र के सम्बन्ध में जन्म से लेकर आगे तक की उपलब्ध जानकारी बच्चों द्वारा कक्षा में मौखिक रूप से बताने अथवा लिखकर प्रस्तुत करने को भी कहें।

2.10.6 भाषाई कौशलों के विकास में निबंध की भूमिका

वर्तमान में निबंध कथेतर गद्य साहित्य की एक व्यक्तिगत और विचार प्रधान विधा है। निबंध में लेखक व्यक्तिगत अनुभूति के साथ किसी विषय पर अपने विचार प्रभावशाली और रोचक ढंग से रखता है। निबंध एक ऐसी रचना है जिसमें लेखक अपने दृष्टिकोण का प्रतिपादन किसी भी विषय में स्वच्छंदतापूर्वक कर सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो निबंध एक ऐसी सुगठित गद्य रचना होती है जो सीमित आकार में निजीपन के साथ किसी विचार परंपरा को उद्घाटित करती है। निबंध मे लेखक का व्यक्तित्व अभिन्न रूप से छिपा रहता है। सामान्य शब्दों में कहें तो किसी निबंध को पढ़ना उसे लिखने वाले को पढ़ते और समझते चलना भी होता है। निबंध के रूप में किसी भी विषय पर स्वतंत्र रूप से विचार किया जा सकता है, और इसमें लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

कक्षाओं में जब हम निबंध पर काम करने की सोचते हैं तो हमें पाठ्यपुस्तकों में पाठ के रूप में दिए निबंधों पर तो काम करना ही होगा, साथ ही अन्य सहायक सामग्री, विभिन्न प्रकार के पाठ्यपुस्तकेतर निबंध, लेख आदि का संग्रह भी बच्चों के उपयोग हेतु हमारे पास होना चाहिए। उनके माध्यम से बच्चों में लेखन की क्षमताओं के विकास हेतु निरंतर अभ्यास कराना चाहिए, एक तो पाठ शिक्षण के रूप में और दूसरे स्वतंत्र लेखन अभ्यास के रूप में। यहाँ हम निबंध विधा सिखाने या समझाने का प्रयास न कर आरंभिक स्तर पर बच्चों में लेखन कौशल के विकास हेतु एक वैकल्पिक विधि की शुरुआत की बात कर रहे हैं। जिससे बच्चे आगे की कक्षाओं में निबंध व अन्य विधाओं के स्वरूप जैसे तमाम तरह के टेक्स्ट को समझते हुए स्वतंत्र रूप से निबंध व अन्य विधाओं में लेखन का कार्य कर सकें।

कक्षा प्रक्रियाएँ

प्राथमिक स्तर पर शिक्षक बच्चों में भाषा विकास के लिए विभिन्न भाषाई कौशलों, जैसे- बातचीत, पढ़ना, लिखना, अनुमान लगाना, कल्पना करना आदि पर काम करते हैं। इन्हीं कक्षाओं में विशेष रूप से कक्षा 4 व 5 के बच्चों के साथ हम निबंध पठन (पाठ के रूप में) व लेखन (अभ्यास व रचनात्मक लेखन) पर कार्य कर सकते हैं। यह कार्य बहुत ही योजनाबद्ध ढंग से और उनके स्तर व पूर्वज्ञान को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। इसके लिए ज़रूरत होती है बच्चों को सकारात्मक माहौल और उचित प्रोत्साहन देने की।

जब हम निबंध के पाठ पर काम करने की योजना बनाएँ तो उससे पहले आवश्यकता होती है स्वयं की सघन तैयारी की। इसके लिए पाठ योजना बनाकर काम करना अत्यंत आवश्यक है। पाठ शिक्षण की शुरुआत यदि बच्चों से पढ़वाकर की जाए तो भी बुरा नहीं। शिक्षक पाठ से कुछ प्रश्न पूछकर व विभिन्न बिन्दुओं पर बातचीत करके देख सकते हैं कि बच्चों ने समझकर पढ़ा है या नहीं। यदि बच्चों को निबंध पाठ समझने में समस्या आ रही है तो शिक्षक बच्चों की मदद कर सकता है। बच्चों के स्वयं से पढ़कर समझने के बाद शिक्षक बच्चों को पाठ के शीर्षक, उसमें आए तथ्यों, घटनाओं और अन्य सभी जानकारियों के बिन्दुओं को उनके पूर्वज्ञान से जोड़ते हुए, विस्तार से बातचीत कर सकते हैं। यहाँ शिक्षक पाठ में आने वाली कुछ ख़ास घटनाओं से संबन्धित अथवा विषयवस्तु से जुड़ी हुई कुछ प्रासंगिक घटनाएँ और कहानियाँ भी बच्चों को सुनाते चलें तो ध्यानाकर्षण के साथ-साथ रोचकता भी बनी रहती है।

पाठ शिक्षण का दूसरा तरीका यह भी हो सकता है कि शिक्षक बच्चों से बातचीत करते हुए पाठ पढ़वाएँ और बाद में स्वयं भी उसकी व्याख्या बच्चों को समझाते जाएँ। उपरोक्त काम के बाद शिक्षक पाठ्यपुस्तक के पाठ से जुड़ती हुई कुछ अन्य पुस्तकें व संदर्भ सामग्री बच्चों को पढ़ने, स्वयं से समझने और उन पर आपस में चर्चा करने के अवसर दें।

निबंध लेखन के अवसर

किसी निबंध को पाठ के रूप में पढ़ने, समझने और उस पर खुली चर्चा करने के जितने अवसर एक शिक्षक बच्चों को दे सकता है, उतने ही स्वतंत्र अभ्यास के भी देने चाहिए। इससे बच्चों में लेखन कौशल का विकास तो होगा ही, वे रचनात्मक लेखन की ओर भी अग्रसर होंगे। बच्चों को स्वतंत्र निबंध लेखन अभ्यास और उनको कक्षा में साझा करने के भरपूर मौके मिलने चाहिए। साथ ही उनकी लिखित सामग्री को या तो रीडिंग-राइटिंग कॉर्नर पर प्रदर्शित किया जा सकता है या उसकी पुस्तिकाएँ बनाई जा सकती हैं।

बच्चों को स्वतंत्र निबंध लेखन अभ्यास और उनको कक्षा में साझा करने के भरपूर मौके मिलने चाहिए। साथ ही उनकी लिखित सामग्री को या तो रीडिंग-राइटिंग कॉर्नर पर प्रदर्शित किया जा सकता है या उसकी पुस्तिकाएँ बनाई जा सकती हैं।

स्वतंत्र निबंध लेखन अभ्यास कराने हेतु शिक्षक ऐसे विषयों का चयन कर सकते हैं जिनमें बच्चों को कल्पना करने, सोचने-विचारने, चिन्तन करने और अपने मत को स्वतंत्र रूप से लिखने के भरपूर अवसर मिलें। इसके लिए बच्चों के आसपास के विभिन्न विषयों, जैसे- कोई पालतू पशु-पक्षी (गाय, घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली आदि),

जंगल व पेड़-पौधे, मेरा घर, मेरा परिवार, मेरी पुस्तक, मेरा स्कूल, रसोई घर, पूजा के स्थान, स्थानीय मेले, यात्रा व भ्रमण के अनुभव, विभिन्न त्योहार आदि को चुनकर उन पर बच्चों से लेखन कार्य करवाया जाना चाहिए। किसी विषय पर लेखन कार्य करवाने से पहले बच्चों से उसके विषय पर बात की जा सकती है, और उनके पूर्वानुभवों को जाना जा सकता है। उन्हें पाँच से दस मिनट का समय सोचने के लिए दिया जा सकता है, फिर बच्चों से उस विषय पर लिखने को कह सकते हैं।

जब हम उपरोक्त विषयों पर बच्चों के साथ लेखन का अभ्यास कराते हैं तो बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है। यदि हम बच्चों के साथ किए गए काम के अनुभवों को देखें तो आरम्भ में बच्चे किसी विषय पर दो-तीन वाक्य ही लिखते हैं। लेकिन अभ्यास के बाद वे पाँच-सात वाक्य क्रमबद्धता से लिखने लगते हैं। जैसे- गाय एक पालतू पशु है। गाय के चार पैर होते हैं। गाय के दो कान होते हैं आदि। यहाँ ये पैटर्न इसलिए भी उभरता है, क्योंकि बच्चों को स्वतंत्र लेखन का अवसर शायद पहले नहीं मिला हो। बच्चे यहाँ से फिर अपनी बात को धीरे-धीरे आगे बढ़ाते हैं। उसमें भी 'गाय' शब्द का बार-बार दोहरान तो करते हैं, लेकिन कुछ वाक्यों में लगने लगता है कि बच्चों ने ये बात अपने अनुभव से लिखने का प्रयास किया है, जैसे- 'गाय के दूध से चाय भी बनाते हैं'। इससे समझ में आता है कि बच्चों की लेखन को लेकर समझ बढ़ रही है और फिर लेखन तेजी से समृद्ध होने लगता है।

हमें बच्चों को यदि काल्पनिक लेखन कराना हो तो हम इस तरह के विषय चुनें, जैसे- यदि मैं बकरा/बकरी होती, यदि मैं चाँद पर होता, यदि मैं पेड़ होती, यदि मैं बस होता, यदि मैं सरपंच होती आदि। इस तरह के लेखन में बच्चे पहले यथार्थवादी विचार लिखते हैं। अर्थात् वे वही बातें लिखते हैं जिन्हें उन्होंने अपनी आँखों से देखा और अनुभव किया हो। फिर वे धीरे-धीरे कल्पना लोक में प्रवेश करते हैं। जब बच्चे सहज रूप से आठ-दस वाक्यों में अपने विचार लिखने लगें तो यहाँ शिक्षक उन्हें और आगे बढ़ने में सहयोग कर सकते हैं। जैसे- यदि मैं बकरा/बकरी होता/होती तो अपने लिए बड़ा सा घर बनाता/बनाती, मोटरसाइकिल पर घूमता/घूमती आदि। इस तरह के प्रयासों के बाद बच्चों के लेखन में उनके अपने विचार आने लगते हैं। वे अपनी सहमति और असहमति भी दर्ज करने लगते हैं, तर्क करने लगते हैं। यहीं से बच्चे निबन्ध लेखन में अपने भावों और विचारों को एकत्रित कर उन्हें सही क्रम देने का प्रयास करने लगते हैं और इसके साथ ही उदाहरण देकर अपनी बात को पुष्ट करने के प्रयासों में भी गति लाने लगते हैं।

किसी विषय पर लेखन कार्य करवाने से पहले बच्चों से उसके विषय पर बात की जा सकती है, और उनके पूर्वानुभावों को जाना जा सकता है। उन्हें पाँच से दस मिनट का समय सोचने के लिए दिया जा सकता है, फिर बच्चों से उस विषय पर लिखने को कह सकते हैं।

2.10.7 बाल शोध मेला

बाल शोध मेले में एक शिक्षिका ने बच्चों को टास्क दिया कि आपको एक चार्ट बनाना है जिसमें आपको यह लिखना है कि आपने कौन-कौन-सी किताबें पढ़ी हैं और आगे आने वाले महीने में कौन-कौन-सी किताबें पढ़ने का प्लान है। यह टास्क बच्चों के लिए बहुत ही रोचक रहा, पुस्तकालय में उनका आना तो बढ़ा ही, साथ ही वे यह भी देखने लगे कि उनके साथी कौन-कौन-सी और कितनी किताबें पढ़ रहे हैं।

शिक्षण की अनेक विधियों में से एक है शोध विधि। इसको खोजबीन, अन्वेषण आदि नामों से भी जाना जाता है। इसके साथ ही शिक्षण की कई अन्य प्रचलित उपविधियाँ भी समाहित हैं। जैसे- करके सीखना, प्रश्नोत्तर, प्रोजेक्ट, वैज्ञानिक विधि आदि। सामान्यतः इस विधि की शुरुआत विज्ञान शिक्षण के रूप में की गई थी, लेकिन धीरे-धीरे इसको पर्यावरण अध्ययन, गणित और भाषा आदि के शिक्षण में भी अपनाया जाने लगा। यह सीखने-सिखाने की ऐसी विधि है जिसमें बच्चे स्वयं करके ज्ञान सृजित करते हैं। पिछले 8-10 वर्षों में इस विधि को शिक्षण की एक प्रभावी और रोचक विधि के रूप में देखा जाने लगा है। एनसीएफ़-2005 के मूलभूल सिद्धांतों को इस विधि के माध्यम से सरलता से शिक्षण में पिरोया जाने लगा है।

Figure 94 बाल शोध मेले के दौरान बनाया गया एक प्रोजेक्ट-चार्ट

इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- आधारभूत या बुनियादी दक्षताओं व कौशलों (मुख्य रूप से भाषा, पर्यावरण और गणित) का विकास
- सीखने के प्रतिफलों की अपेक्षित सम्प्राप्ति, अवधारणाओं की स्पष्टता व सीखे हुए तथा सृजित ज्ञान व समझ को पुख्ता करना
- रचनात्मकता, सृजनात्मकता और अभिव्यक्ति के अवसर
- पाठ्यपुस्तकों पर निर्भरता को कम करते हुए शिक्षण के दूसरे माध्यमों व तौर-तरीकों (पुस्तकालय, परिवेश और आईसीटी आदि) को बढ़ावा देना
- शिक्षण प्रक्रियाओं में समुदाय को भागीदार बनाते हुए विद्यालय और समुदाय के आपसी समन्वय को बेहतर करना

Figure 95 भाषा से संबन्धित बाल शोध मेले के दौरान बच्चों द्वारा पढ़े बाल साहित्य का विवरण

इस विधि की विशेषताएँ

- बच्चों को स्वयं करके सीखने, प्रश्न पूछने, खोजने के और आत्मनिर्भर होने के अवसर
- परिवेश के माध्यम से शिक्षण
- जीवंत और रोचक शिक्षण
- अभिव्यक्ति के कौशलों का विकास
- परिवेश और विषयगत ज्ञान में सहसंबंध
- एकत्रित तथ्यों का दस्तावेज़ीकरण और प्रस्तुतीकरण
- समूह में कार्य करने व एक-दूसरे से सीखने (पीयर लर्निंग) का वातावरण
- कक्षाओं तथा विषयों की सीमाओं से बाहर समन्वित रूप से सीखना
- व्यावहारिक शिक्षण से स्वयं सिद्धांतों को समझने की ओर बढ़ना
- पाठ्यपुस्तकों से सीखने की निर्भरता को कम करना
- विद्यालय और समुदाय के मध्य संबंधों को अधिक प्रगाढ़ बनाना
- बच्चों के शिक्षण में समुदाय के प्रत्यक्ष योगदान को बढ़ावा देना

बाल शोध मेला और भाषा शिक्षण

बच्चे प्रश्न बनाते हैं, पूछते हैं, लिखते हैं, तर्क करते हैं, चर्चा करते हैं, व्याख्या करते हैं, प्रस्तुतीकरण करते हैं। फिर इन प्रक्रियाओं से प्राप्त तथ्यों व सूचनाओं का उपयोग लिखने और पढ़ने के विस्तार के रूप में करते हैं, कहानियाँ-कविताएँ बनाते हैं, लिखते हैं, सुनाते हैं, अनुमान लगाते हैं, कल्पना करते हैं। शोध विषय/थीम/टॉपिक को प्रस्तुतीकरण हेतु व्यवस्थित रूप में लिखते हैं। इसके अतिरिक्त सौन्दर्यबोध, प्रबंधन, नेतृत्व, योजना निर्माण व उसका क्रियान्वयन, सहयोग, समूह में कार्य करने आदि से जुड़े मूल्यों व कौशलों का विकास भी होता है। भाषा शिक्षण में शोध विधि का मुख्य स्रोत है- पुस्तकालय और पर्यावरण, लोकगीतों-लोककथाओं आदि के जानकार स्थानीय व्यक्ति।

हिन्दी भाषा (कक्षा 3 से 5) शिक्षण को केंद्र में रखते हुए शोध विधि हेतु प्रस्तावित विषय/थीम/टॉपिक का चुनाव

- लोकगीत, खेलगीत, श्रमगीत, कविता आदि संकलित करना
- कहानी, लोककथाएँ संकलित करना
- अलग-अलग विषयों पर निबन्ध लिखना
- पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों में से पत्र संकलित करना व बच्चों द्वारा स्वयं तरह-तरह के पत्र लिखना
- महापुरुषों की गाथाएँ पढ़ना व लिखना
- डायरी में दिनचर्या, घटनाक्रम, संस्मरण, यात्रा का विवरण, मेले, पर्व एवं त्योहारों को मनाए जाने के आख्यान संकलित करना, यानी बच्चों द्वारा स्वयं के अनुभव लिखना
- वर्ग पहेली / शब्द पहेली खोजना, संकलित करना, लोकोक्तियाँ, मुहावरे व कहावतें संकलित करना
- अनेक तरह के लोगों के साक्षात्कार करना व लिखना
- बातचीत, संवाद और भाषण तैयार करना
- रचनात्मक लेखन, जैसे- अधूरी कहानी पूरी करना, कहानी का सारांश लिखना, चित्रों पर कहानी लिखना, कुछ शब्दों पर कहानी लिखना, कहानी के जैसे कहानी लिखना, कहानी पर चित्र बनाना आदि। इसी तरह कविताओं पर भी काम किया जा सकता है।
- चित्रकला व पेंटिंग की अलग-अलग थीम पर चित्रकारी करना
- जलस्रोत, इनके उपयोग, पानी-पनिहारों से सम्बंधित गीत-कहानियाँ, पानी का दूषित होना, पानी साफ़ करने के उपाय, पानी में रहने वाले प्राणी, जलचक्र, पानी के दूसरे नाम, पानी की हिफ़ाज़त और किफ़ायत के उपाय इत्यादि।
- घर-परिवार, रिश्ते-नातों के बारे में जानना, वंश-वृक्ष बनाना
- कृषि संस्कृति, जैसे- स्थानीय फसलों की जानकारी, वर्गीकरण करते हुए बुआई, सिंचाई, कटाई जैसी खेती से जुड़ी विभिन्न प्रक्रियाओं से संबन्धित चार्ट निर्मित करना
- स्थानीय भोजन व पकवान से सम्बंधित जानकारी के विवरण लिखना
- स्थानीय आयोजनों, मेले और त्योहारों के आख्यान व उनके मनाए जाने के पीछे की प्रचलित कहानियों को संकलित कर लिखना
- पशु-पक्षियों और वनस्पतियों से जुड़ी जानकारियाँ संकलित करना, उदाहरण के लिए– स्थानीय पशु-पक्षियों की विशेषता, भोजन-आवास, पेड़-पौधे, जड़ी-बूटियाँ और घरेलू औषधियों की जानकारी के विवरण व चार्ट बनाना

- मौसम चक्र में वातावरण व जीवन में होने वाले बदलाव, जैसे खानपान, वेशभूषा इत्यादि के बारे में लिखना या चित्रित करना
- पर्यावरण एवं स्वच्छता के उपाय लिखना, चित्रित करना
- यातायात के साधन की जानकारी लिखना, यात्रा एवं सफ़र
- व्यवसाय व काम-धंधों का सर्वे करना, लिखना आदि
- आजीविका व आय के साधनों का सर्वे कर दर्ज करना
- स्थानीय कलाएँ, कारीगरी व शिल्प पर आधारित शोध विधि द्वारा शिक्षण की चरणबद्ध प्रक्रिया
- सड़क सुरक्षा तथा इसी प्रकार के अन्य जागरूकता कार्यक्रमों से जुड़े विज्ञापन, होर्डिंग, पैम्फलेट,

लीफलेट आदि संकलित करना

- गाँव, कस्बे या आसपास का इतिहास मालूम करके लिखना

शोध की चरणबद्ध प्रक्रिया

- पूर्व तैयारी- उद्देश्यों का निर्धारण, सीखने के प्रतिफलों व सीखने के क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए कब करेंगे, कैसे करेंगे, साथ ही साथ आवश्यक संसाधनों, स्रोतों की पहचान, योजना निर्माण आदि।
- विषय, थीम या टॉपिक का चयन- बच्चों के साथ मिलकर विषय का चयन करना। इस चयन में पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों या पाठ्यवस्तु को ध्यान में रखा जाए।
- सवाल निर्माण की प्रक्रिया- शोध हेतु चयनित विषयवस्तु की विस्तृत जानकारी के लिए कौन-से संभावित प्रश्न हो सकते हैं और हम उस विषय में क्या-क्या जानना चाहते हैं, इसे ध्यान में रखकर प्रश्नों का निर्माण।
- चयनित थीम/विषयों के अनुसार संदर्भ व स्रोतों की पहचान करना।
- चयनित विषयों पर अपने-अपने समूहों में शोध कार्य– बच्चे अपने-अपने समूहों में चिह्नित संसाधनों व स्रोतों के अनुसार प्रश्नावली को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य शुरू कर सकते हैं। वे अवलोकन करें, पूछें, लिखें व दर्ज करें, आपस में चर्चा-परिचर्चा कर पुनः व्यवस्थित रूप में लिखें, प्रस्तुतीकरण करें। प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण करें, निष्कर्ष निकालें, व्याख्या करें, उनको लिखें-पढ़ें, कहानी-कविताएँ बनाएँ, सुनाएँ आदि। यह प्रक्रिया कई दिनों तक चल सकती है। हर एक टॉपिक या थीम के दस्तावेज़ीकृत काम को प्रोजेक्ट फाइल के रूप में संकलित किया जा सकता है और फिर आखिर में एक दिन इन्हें मेले के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है।
- समुदाय के साथ विचार-विमर्श– शोध कार्य तथा मेले की अवधारणा को अभिभावकों के साथ साझा करना, ताकि वे बच्चों का सहयोग कर सकें एवं मेले की प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता करें।

बाल शोध मेले की तैयारी

किए गए शोध कार्य से प्राप्त जानकारी व निष्कर्षों के प्रदर्शन हेतु विद्यालय स्तर पर तैयारी करना। कौन, क्या, कैसे समुदाय के साथ साझा करना है, यह भी निश्चित करना। चार्ट, प्रोजेक्ट फ़ाइल, नाटक, गीत, नृत्य, चित्रकारी आदि कई माध्यम हो सकते हैं। साथ ही समुदाय के साथ मेले के सफल आयोजन हेतु मिलकर योजना बनाना, आवश्यक संसाधन जुटाना, मेले की जगह, तारीख आदि तय करना। मेले का आयोजन करना। प्रदर्शनी सजाना, प्रस्तुतियाँ करना तथा समुदाय के साथ अनुभवों को साझा करना।

संकलित या सृजित सामग्री की थीमेटिक पुस्तिकाएँ बनाना

भाषा शिक्षण में पढ़ने-लिखने, सृजन और अभिव्यक्ति की प्रक्रिया में बहुत-सी सामग्री एकत्र हो जाती है, जिन्हें बाल अखबार, दीवार पत्रिका, डिस्प्ले बोर्ड पर प्रदर्शित किया जाता है, प्रात:कालीन सभा में साझा किया जाता है, बच्चों के अपने निजी कलेक्शन या बॉक्स फ़ाइल का हिस्सा हो सकता है। इसके साथ ही ये बाल मेले में डिस्प्ले होता है, मगर कुछ समय बाद यह सामग्री भद्दे रूप में कूड़े की शक्ल में आ जाती है, उखड़ने लगती है। तब आवश्यकता यह होगी कि उनकी जगह नई सामग्री डिस्प्ले की जाए, लेकिन ऐसा करते हुए पुरानी सामग्री को श्रेणीबद्ध करके पुस्तिकाओं का रूप दिया जा सकता है। जो सामग्री दीवार पत्रिका या बाल अखबार के रूप में संयोजित है, उनको क्रमशः स्पाइरल में लगाकर बिग बुक जैसे रूप में संयोजित किया जा सकता है। यह सामग्री रीडिंग कॉर्नर में बच्चों को पढ़ने के लिए रखी जानी चाहिए और कुछ सामग्री बच्चों के बॉक्स फ़ाइल या पोर्टफोलियो फ़ाइल (बच्चे का ऐसा निजी कलेक्शन होता है जिसमें कक्षा की नोटबुक के अलावा जो फुटकर काम बच्चे स्वतःस्फूर्त या निर्देशों के साथ करते हैं, वह कलेक्ट रहता है) का हिस्सा हो सकती है। इस प्रक्रिया में भी बच्चों को लगाया जाना चाहिए, इससे भी बच्चे अपने काम को व्यवस्थित करना व सहेजना सीखते हैं।

यह सामग्री रीडिंग कॉर्नर में बच्चों को पढ़ने के लिए रखी जानी चाहिए और कुछ सामग्री बच्चों के बॉक्स फ़ाइल या पोर्टफोलियो फ़ाइल का हिस्सा हो सकती है।

उपरोक्त प्रक्रियाओं के द्वारा आकलन

स्कूल में पढ़ने-लिखने के विस्तार की उक्त प्रक्रियाओं में अनेक मुकाम पर शिक्षार्थी की प्रगति का आकलन किया जा सकता है। प्रक्रिया में ही आकलन को देखते हुए यह समझा जा सकता है कि शिक्षार्थी को किस तरह के फीडबैक व मदद की ज़रूरत है। इस प्रक्रिया में बच्चे अनेक रूपों में मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति करते हैं, जैसे- कक्षा में पाठ्यपुस्तकों के पाठों पर काम करने के दौरान सतत आकलन, प्रातःकालीन सभा में प्रस्तुतियों का अवलोकन, रीडिंग कॉर्नर में अनेक बाल पुस्तकों को पढ़ने, उन पर बातचीत करने और पसंद-नापसंद इत्यादि से जुड़े लिखित अनुभव, लिखे गए पत्र, डायरी, निबंध आदि। बच्चों के अनेक तरह से लिखित प्रक्रियात्मक आलेख, सृजनात्मक आलेख, अनुभव का विश्लेषण, बाल शोध प्रक्रिया से जनित डाटा का आकलन करना चाहिए। बच्चों की डायरी आकलन के लिहाज़ से शानदार दस्तावेज़ है, इसमें बच्चों की विकास यात्रा साफ़ नजर आती है। प्रक्रिया की किसी निर्धारित अवधि में वर्कशीट के ज़रिए भी सीखे गए का आकलन किया जा सकता है। शुरुआती प्रक्रिया में वर्तनी पर बहुत टोकाटोकी ठीक नहीं होती, बल्कि करना यह चाहिए कि बच्चों के रिस्पोंस का आकलन कर यह समझ लिया जाए कि बच्चा कहाँ गलती करता है, फिर संशोधन के दौरान इस तरह के अभ्यास कराए जा सकते हैं जिनके ज़रिए वर्तनी व व्याकरण की गलतियों को सुधारा जा सकता है।

2.11 भाषा विश्लेषण- व्याकरण पक्ष पर कार्य प्रक्रिया

2.11.1 भाषा में शुद्धता का आग्रह

भाषा शिक्षण को एक पाठ्यपुस्तक केन्द्रित विषय के रूप में देखने की प्रवृत्ति आरंभिक कक्षाओं में अक्सर हावी नज़र आती है। इसका परिणाम यह होता है कि शिक्षण के दौरान भाषा की शुद्धता और उच्चारण पर ज़रूरत से अधिक ध्यान दिया जाता है। लेखन और उच्चारण दोनों में शुद्धता का यह आग्रह मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति में विचारों की मौजूदगी जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों से ध्यान हटा देते हैं और फिर आकलन के दौरान भी यही सब जाँचा जाता है कि उच्चारण शुद्ध है कि नहीं, लेखन त्रुटिरहित है कि नहीं; और फिर अभिव्यक्ति में विचारों का प्रवाह, कल्पना, तार्किकता, रोचकता, सृजनात्मकता जैसे कौशल पिछड़ जाते हैं, या फिर इनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया जाता। शिक्षकों का काफी समय उच्चारण की त्रुटियों को ठीक करवाने में ज़ाया होता है।

भाषा शिक्षण को एक पाठ्यपुस्तक केन्द्रित विषय के रूप में देखने की प्रवृत्ति आरंभिक कक्षाओं में अक्सर हावी नज़र आती है। इसका परिणाम यह होता है कि शिक्षण के दौरान भाषा की शुद्धता और उच्चारण पर ज़रूरत से अधिक ध्यान दिया जाता है।

सवाल यह है कि क्या वास्तव में उच्चारण दोष को इतनी भयानक समस्या की तरह देखा जाना चाहिए जिसके लिए कक्षा शिक्षण के उपलब्ध समय का अधिकांश हिस्सा खर्च किया जाए और इसके बाद भी नतीजा सिफ़र ही निकले? इस बात से कोई गुरेज़ नहीं है कि किसी भाषा को बोला जाता है तो उसका सही उच्चारण ही प्रभावी रूप से हमारे सामने आता है और उसी के आधार पर हम तय करते हैं कि उस व्यक्ति की भाषा पर पकड़ अच्छी है या नहीं। यदि प्रभावी रूप से बोलना भाषा के कौशलों में से एक है, और वह व्यक्ति कुछ शब्दों के अशुद्ध उच्चारण के साथ भी अपनी बात को सही तरीके से कह पाने में समर्थ है, या कायदे की बात तर्कसहित कह पा रहा है तो क्या हम उसे अयोग्य मानेंगे, बनिस्बत उस व्यक्ति के जो अत्यंत शुद्ध उच्चारण में बेकायदा या सिर्फ़ रटी-रटाई बात कह रहा हो?

यहाँ यह हरगिज़ नहीं कहा जा रहा है कि किसी भाषा में शब्दों का गलत उच्चारण मान्य किया जाना चाहिए और उसे सुधारने के उपाय नहीं किए जाने चाहिए, पर इससे पहले शिक्षक होने के नाते हमें यह भी जानना होगा कि उच्चारण दोष होते क्यों हैं। हम सभी जानते हैं कि हमारे शरीर में अवस्थित स्वर यंत्र या वोकल कॉर्ड की सहायता से हम बोलते हैं और हमारी जीभ, तालू और दाँत बोलने में हमारी सहायता करते हैं। हम बचपन में जब अपनी मातृभाषा बोलना सीखते हैं तो उसमें जिस तरह की ध्वनियाँ होती हैं, उनके उच्चारण के लिए हमारी स्वर यंत्रियाँ और जीभ अनुकूलित हो जाते हैं। बच्चों के साथ मातृभाषा अर्जित करने के दौरान भी यही होता है। लेकिन जब वे स्कूल आते हैं तो एक नई भाषा से उनका सामना होता है। यदि उनकी मातृभाषा और स्कूल की भाषा की ध्वनियाँ लगभग समान हैं तो उन्हें उनका उच्चारण करने में ज़्यादा दिक्कत नहीं आएगी, मगर यदि

कोई ऐसी ध्वनि है जो उनकी भाषा में है ही नहीं तो उस ध्वनि का उच्चारण उन्हें सीखना होगा, या दूसरे शब्दों में कहें तो उस ध्वनि के लिए अपने स्वर यंत्र को अनुकूलित करना होगा। उदाहरण के लिए, मराठी में उपयोग में लाई जाने वाली 'ळ' की ध्वनि हिन्दी में नहीं है, अतः हिन्दीभाषी बच्चा मराठी के उन शब्दों को जिनमें ळ ध्वनि आती है, ल की तरह या ड की तरह उच्चरित करेगा और इस ध्वनि को शिक्षक द्वारा लाख प्रयास किए जाने पर भी उसके द्वारा सही उच्चरित करवाना आसान नहीं होगा।

सबसे पहले शिक्षक के रूप में हमें अपने उच्चारण पर ध्यान देना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि अनजाने में हमारे अपने ही उच्चारण में कोई समस्या हो और बच्चे बस स्वाभाविक रूप से इसका अनुसरण ही कर रहे हों ।

इसके साथ ही यह भी समझना होगा कि यदि बच्चे की मूल भाषा और स्कूल की भाषा की सभी ध्वनियाँ समान हैं, पर उसके आसपास चाहे घर हो या स्कूल, कुछ शब्दों को अलग तरह से ही बोला जाता रहा है तो वह उन शब्दों को उसी तरह से बोलेगा। स और श की गलतियाँ इसके सटीक उदाहरण हैं, जहाँ लोग शाला को साला और सोशल को शोशल कहते सुनाई देते हैं। हम लोगों में से भी कितने ही लोग आज भी इस तरह की गलतियाँ करते नज़र आते हैं।

अब इस बात पर आते हैं कि उच्चारण दोष ठीक किस तरह होते हैं। इसके लिए तो सबसे पहले शिक्षक के रूप में हमें अपने उच्चारण पर ध्यान देना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि अनजाने में हमारे अपने ही उच्चारण में कोई समस्या हो और बच्चे बस स्वाभाविक रूप से इसका अनुसरण ही कर रहे हों। इसके अतिरिक्त अनुभव बताते हैं कि कई बार उच्चारण दोष समय के साथ ठीक हो जाते हैं, कभी शिक्षक या अन्य वयस्कों के ध्यान दिलाने से तो कभी अपने साथियों द्वारा ही इंगित किए जाने से। एक बार एहसास हो जाने के बाद उन ध्वनियों को बार-बार सुनकर और बोलकर स्वर यंत्रों को उन ध्वनियों को बोलने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है, मगर यह सब कुछ दिन या कुछ महीनों में नहीं होता। शायद सालों लगें... साथ ही यह तब तो बिल्कुल नहीं हो सकता जब इन गलतियों के लिए बच्चों को लगातार टोका जा रहा हो या अपमानित किया जा रहा हो। सीखना डर और अपमान के माहौल में तो हरगिज़ नहीं हो सकता। हाँ, यह हो सकता है कि शिक्षक द्वारा एक बार इंगित कर दिए जाने के बाद बच्चे स्वयं उस दोष को दूर करने के प्रयास में लग जाएँ और सफलता हासिल कर लें।[1]

शिक्षक या अभिभावकों की ओर से शुद्धता का यह आग्रह इतना सशक्त होता है कि लेखन के दौरान बच्चे का सारा ध्यान इस ओर ही केन्द्रित होकर रह जाता है कि लिखने के दौरान उससे कहीं कोई गलती न हो जाए।

कुछ ऐसा ही लेखन में शुद्धता के आग्रह के दौरान भी होता है। और शिक्षक या अभिभावकों की ओर से शुद्धता का यह आग्रह इतना सशक्त होता है कि लेखन के दौरान बच्चे का सारा ध्यान इस ओर ही केन्द्रित होकर रह

[1] 'पाठशाला' पत्रिका में भारती पंडित के आलेख 'उच्चारण की गलतियाँ' का अंश

जाता है कि लिखने के दौरान उससे कहीं कोई गलती न हो जाए। कहीं कोई मात्रा गलत न हो जाए, कहीं कोई विराम चिह्न न छूट जाए, कहीं पैराग्राफ बदलना न छूट जाए आदि। परिणाम वही ढाक के तीन पात, प्राथमिक शिक्षा के पाँच वर्ष सिर्फ मात्राओं को दुरुस्त करने और शुद्ध लिखने की कवायद में इस तरह इन्वेस्ट कर दिए जाते हैं कि अभिव्यक्ति में विचारों की नवीनता, रचनात्मकता या सृजनात्मकता का स्थान कहीं पीछे, बहुत पीछे छूट जाता है या फिर बचता ही नहीं है। ऐसे में यह सुनिश्चित किया जाना आवश्यक हो जाता है कि कब बच्चों को अभिव्यक्ति (मौखिक और लिखित) में त्रुटियों की ओर ध्यान दिलाना है, कितना दिलाना है और कैसे दिलाना है। ऊपर हमने मौखिक अभिव्यक्ति में इस प्रकार के प्रयासों की बात की है, ठीक उसी प्रकार हमें लिखित भाषा में त्रुटियों को दूर करने के लिए भी कुछ प्रयास करने होंगे।

इस पूरी प्रक्रिया में भाषा समृद्ध कक्षा की भूमिका एक बार पुनः बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। जिस प्रकार त्रुटिहीन तरीके से बोलने के प्रयास में त्रुटिहीन भाषा को सुनना मदद करता है, उसी प्रकार लिखित अभिव्यक्ति को बेहतर करने के लिए यह आवश्यक है कि पढ़ने के बेशुमार मौके बच्चों के लिए उपलब्ध हों। ये मौके विभिन्न प्रकार के टेक्स्ट से हों, जिससे कि लिखित भाषा की संरचना और उसके विभिन्न रूपों से वाकिफ़ हुआ जा सके, और फिर उनका प्रयोग लिखने के दौरान किया जा सके। इसके साथ ही यदि बच्चों की लेखन में त्रुटियों को ढूँढने और उन्हें दुरुस्त करने की प्रक्रियाओं को थोड़ा लचीला बनाया जाए तो उससे भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि यदि चुनना अवश्यंभावी हो जाए तो पहले भाषा में विचारों का पक्ष मजबूत किया जाए और उसके बाद लेखन में त्रुटियों की ओर ध्यान दिलाया जाए। क्योंकि यदि पहले गलतियाँ ही ठीक करने लगेंगे तो लिखना मशीनी हो जाएगा और लेखन में रुचि बनने से पहले ही खत्म हो जाएगी। फिर लिखना लिखे हुए को ध्यान से, सही-सही, बिना किसी मात्रा की त्रुटि के उतार लेना भर रह जाएगा और अपने मायने खो देगा।

हम सिर्फ़ गलतियों को ढूँढ-ढूँढकर अंडरलाइन करने या फिर उन पर घेरा लगाने की बजाय बच्चों से यह पूछें कि उन्होंने क्या लिखा है और फिर उन्हीं वाक्यों को बताए हुए बच्चे द्वारा लिखित वाक्यों के नीचे ठीक-ठीक लिख दें। फिर हमें बच्चों को यह बताने की ज़रूरत नहीं होगी कि उसके लेखन में कितनी त्रुटियाँ हुई हैं और वे स्वयं ही दोनों लिखे हुए के बीच तुलना करके इसे समझ जाएँगे और भविष्य में इस बात का पूरा ध्यान रखेंगे कि ऐसी गलतियाँ न दोहराई जाएँ। यहाँ यह भी ध्यान में रखना होगा कि यह लेखन में विचारों के आने की कीमत पर न हो।

2.11.2 भाषा शिक्षण में व्याकरण

उदाहरण

एक विद्यालय की कक्षा 3 का दृश्य

शिक्षक ने कुछ विशेषण शब्दों को बोर्ड पर लिख दिया। बच्चे शब्दों को हूबहू अपनी कॉपियों पर उतारे जा रहे थे। शिक्षक बीच-बीच में टहलते हुए बच्चों की कॉपियों में देख रहे थे। विशाल खिड़की के बाहर देखते हुए बरसात के दृश्य को कॉपी में बनाने की कोशिश कर रहा था और शिखा अपने रिबन के धागों को खींच-खींचकर छोटे-छोटे फूल बनाने में मग्न थी। शिक्षक ने जैसे ही देखा, दोनों को कक्षा के बाहर खड़े होने का आदेश दे दिया। विशाल की आँखों में आँसू आ गए और शिखा सिर झुकाकर अपनी ही चोटियों को उमेठने लगी।

दूसरे विद्यालय की कक्षा 3 का दृश्य

शिक्षक ने बच्चों से कहा-"अपने बस्ते से या अपने आसपास से एक वस्तु लाकर मेज पर रखो और उसकी एक-एक विशेषता बताओ।" मेज पर ढेर सारा सामान एकत्र हो गया।

शिक्षक– यह क्या है मधु?

मधु– पेन

शिक्षक– ठीक से देखो, पेन कैसा है?

मधु– टूटा पेन

शिक्षक– यह चूड़ी किस रंग की है दीनू?

दीनू– यह चूड़ी लाल रंग की है।

शिक्षक– हाथ कैसे हैं?

सभी– हाथ गंदे हैं।

शिक्षक ने कहा, "इसी तरह आसपास दिखाई दे रही चीज़ों की विशेषता लिखकर लाओ।"

बच्चों के पास बहुत-से शब्दों के जोड़े थे– काला कुत्ता, सफ़ेद गाय, मोटी रोटी, गंदे हाथ, पीली दाल, छोटी चम्मच...

इस कक्षा में शिक्षक ने जो कुछ पढ़ाया-समझाया, बच्चे उसे कभी नहीं भूल सकेंगे।

उपरोक्त दोनों उदाहरण हमें भाषा की कक्षा में व्याकरण सिखाने के तौर-तरीकों से परिचित कराते हैं। जहाँ आज भी अधिकतर कक्षाओं में पहले उदाहरण या इससे मिलती-जुलती प्रक्रियाओं का ही अनुकरण किया जाता है। इस प्रकार की प्रक्रियाओं का विश्लेषण किया जाए तो यहाँ व्याकरण शिक्षण को एक अलग आयाम की तरह देखा जाता है और इसे सीखने वाली प्रक्रियाओं का अक्सर कक्षा में पढ़ने-लिखने से संबन्धित अन्य प्रक्रियाओं से कोई सीधा संबंध नज़र नहीं आता और इसकी प्रतिक्रिया में होता यह है कि व्याकरण शिक्षण की यह पूरी प्रक्रिया परिभाषाओं और उनके साथ चिपके उदाहरणों को रट लेने तक ही सीमित होकर रह जाती है। साथ ही इन परिभाषाओं को समझने के लिए बच्चों के अपने जीवन के अनुभवों या आसपास की घटनाओं से भी कोई सहायता नहीं ली जाती। इससे होता यह है कि

बच्चे इससे जुड़ नहीं पाते और फिर आगे चलकर व्याकरण परीक्षाओं में मात्र परिभाषाओं को रटकर कुछ अधिक अंक अर्जित करने का साधन मात्र बनकर रह जाता है। लेकिन व्याकरण भाषा का एक महत्त्वपूर्ण अंग है और इसका ज्ञान होना आवश्यक है, ऐसे में उपाय क्या हैं?

दूसरा उदाहरण हमें इन उपायों की ओर बढ़ने की राह सुझाता है। आइए देखते हैं कि इस प्रक्रिया को हम अपनी कक्षाओं में क्यों और कैसे अपनाएँ।

व्याकरण भाषा का अध्ययन और विश्लेषण होता है। भाषा से अलग व्याकरण की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं होती। भाषा में परिवर्तन एक धीमी प्रक्रिया है, और परिवर्तन की इस प्रक्रिया को समय-समय पर व्याकरण अपने आप में आत्मसात करता चलता है।

भाषा में व्याकरण एक महत्त्वपूर्ण अवयव है, किन्तु शिक्षण में व्याकरण का क्या स्वरूप हो और इसे कैसे बरता जाए, इसे लेकर मत अलग-अलग हो सकते हैं। मान्यता यह भी है कि व्याकरण की जानकारी से भाषा में शुद्धता आती है, अतः भाषा की शुद्धता के लिए व्याकरण आवश्यक है। किन्तु इससे सवाल उठता है कि क्या व्याकरण द्वारा ही भाषा सीखी जाती है? क्या शुद्ध-शुद्ध बोलने के लिए व्याकरण एकमात्र अनिवार्य शर्त है? आखिर शुद्ध भाषा हम किसको मानेंगे? क्या भाषिक व्यवहार में हम व्याकरण के सभी नियमों को याद रखते हैं? क्या व्याकरण भाषा के नियमों की सूची है या इससे आगे कुछ और? क्या बच्चा व्याकरण के नियमों को जानने के बाद ही भाषा बोल पाता है?

भाषा के जटिल नियमों को, ध्वनि, शब्द और वाक्य की संरचना को सन्दर्भ में सीखता है। बच्चों को लिंग, वचन, कारक आदि की परिभाषा भले नहीं आती हो, किन्तु व्यवहार में वे उसका सही-सही उपयोग करते हैं।

उपर्युक्त प्रश्नों पर विचार करें तो एक बात स्पष्ट है कि किसी भी बालक को भाषा सिखाने के लिए उसके माता-पिता या शिक्षक सबसे पहले उसे व्याकरण के नियमों को नहीं सिखाते। बच्चा, वयस्कों द्वारा बोली जाने वाली भाषा के पैटर्न को पकड़ता है। भाषा के जटिल नियमों को, ध्वनि, शब्द और वाक्य की संरचना को सन्दर्भ में सीखता है। बच्चों को लिंग, वचन, कारक आदि की परिभाषा भले नहीं आती हो, किन्तु व्यवहार में वे उसका सही-सही उपयोग करते हैं। जैसे- लड़का खेल रहा है। लड़के खेल रहे हैं। लड़की खेल रही है। लड़कियाँ खेल रही हैं। भाषा के इन रूपों को बालक व्याकरण के नियमों को जाने बिना कैसे पकड़ता है? इसका एकमात्र कारण भाषा के पैटर्नों के प्रति बच्चों की समझ है, जिसे भाषाविद भाषा का सार्वभौमिक व्याकरण कहते हैं।

भाषा शिक्षण के नवीन दृष्टिकोण में व्याकरण को कैसे देखें

बच्चे सामान्य भाषाई जगत से संपर्क के अतिरिक्त अन्तर्निहित भाषाई क्षमता के साथ जन्म लेते हैं। अगर उन्हें पर्याप्त अवसर मिलें तो वे नई भाषा आसानी से सीख जाते हैं। बच्चों का भाषा अधिग्रहण समाज में होता है। समाज में प्रयुक्त भाषा के सामान्य नियमों एवं व्यवस्था को बच्चे भली-भाँति समझते और उपयोग करते

हैं। बच्चे सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में उपयोग हो रहे वाक्यों से वचन और लिंग की जटिल अवधारणा के अतिरिक्त व्याकरण की विभिन्न संकल्पनाओं को आत्मसात कर लेते हैं। वे वाक्यों से लेकर ध्वनियों तक आए भाषिक प्रतीकों का वर्गीकरण और विश्लेषण करते हैं। उदाहरण के रूप में "मुझे जल पीना है", "लकड़ी जल गई", दोनों वाक्यों में प्रयुक्त जल शब्द ध्वनि के स्तर पर एक होने के बावजूद बच्चों में अर्थ के स्तर पर असमंजस पैदा नहीं करता। कोई बच्चा गलत भाषा या भाषा का गलत उपयोग करता है तो वयस्क उसे व्याकरण के नियमों को नहीं समझाते, बल्कि सही विकल्प प्रदान करते हैं। कक्षा में अगर बच्चों के पूर्वज्ञान का उपयोग करते हुए पाठ के उदाहरणों द्वारा भाषा के गूढ़ नियमों पर चर्चा करें तो एक साथ हम उन्हें तर्क, चिन्तन, विश्लेषण करने का अवसर प्रदान कर रहे होंगे तथा व्याकरण के नीरस और उबाऊ नियमों से भी निजात दिला रहे होंगे।

भाषा शिक्षण के प्रति नवीन दृष्टिकोण कक्षा में भाषिक वातावरण के निर्माण पर अधिक बल देता है। यह दृष्टिकोण कक्षा में बच्चों को अधिक से अधिक भाषा के व्यावहारिक प्रयोग पर बल देता है। अतः स्वाभाविक है कि इसके आलोक में व्याकरण शिक्षण का हमारा नज़रिया भी व्यावहारिक हो। जिन व्याकरणिक नियमों को जाने बिना भी बच्चा सही-सही अपनी भाषा में उपयोग करता है, भाषा के उस पैटर्न को खोजने, उनका वर्गीकरण करने तथा विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालने का अवसर देना व्याकरण शिक्षण का प्रस्थान बिन्दु होना चाहिए। सही मायनों में व्याकरण सिखाने के लिए बच्चों को भाषा में डूबने देना आवश्यक है। यदि बच्चों को विविध तरीके की ढेर सारी सामग्री पढ़ने के लिए दी जाए, उस भाषा का उपयोग करने दिया जाए और दी गई सामग्री को पढ़कर उसमें से व्याकरण के नियम और पैटर्न स्वयं खोजने के अवसर दिए जाएँ तो उनके लिए व्याकरण को समझना बहुत आसान हो जाएगा।

जिन व्याकरणिक नियमों को जाने बिना भी बच्चा सही-सही अपनी भाषा में उपयोग करता है, भाषा के उस पैटर्न को खोजने, उनका वर्गीकरण करने तथा विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालने का अवसर देना व्याकरण शिक्षण का प्रस्थान बिन्दु होना चाहिए।

कक्षा में व्याकरण सिखाने से संबन्धित कुछ उदाहरण

यहाँ भाषा को बरतते हुए व्याकरण को सीखने की प्रक्रिया से संबन्धित कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

गतिविधि 1 (कक्षा 3 से 5)–

संज्ञा (नाम वाले शब्द)

रामलाल दूध बेचता था। उसने बेईमानी से दूध बेचकर ख़ासा मुनाफ़ा कमाने का उपाय सोच लिया था। वह दूध में पानी मिलाकर बेचता था। उसके पास बहुत धन इकट्ठा हो गया था।

एक दिन वह अपने ग्राहकों से दूध के रुपए इकट्ठे करके घर लौट रहा था। गरमी के दिन थे। चलते-चलते वह थक गया और नदी के किनारे एक पेड़ की छाँव में सुस्ताने के लिए लेट गया। पेड़ पर ढेर सारे बंदर थे।

बंदरों को शरारत सूझी। एक बंदर ने दूधवाले की रुपयों की थैली निकाल ली। बंदर ने वह थैली खोलकर आधे रुपए नदी में और आधे दूधवाले के पास फेंक दिए। तब से यह कहावत बन गई कि पानी का धन पानी में......

प्रक्रिया- इस अंश पर पहले बात की जाए और सारे नामों पर शिक्षक चर्चा करें, ज़रूरत लगे तो उन शब्दों को रेखांकित भी कराया जा सकता है। उसके बाद बच्चों से कहानी के इस अंश में आए हुए नामों को नीचे दिए गए शीर्षकों के अंतर्गत व्यवस्थित करा सकते हैं।

व्यक्ति	वस्तु	स्थान	भाव

यह गतिविधि शिक्षक द्वारा हरेक पाठ के साथ कराई जा सकती है और नाम वाले शब्दों की पहचान कराई जा सकती है।

गतिविधि 2 (कक्षा 3 से 5)–

वचन

नीचे कुछ शब्द और उनके वचन परिवर्तन के नियम दिए गए हैं। उन्हें ध्यान से देखें।

पत्ता पत्ते

(जब शब्द के अंत में आ आए और शब्द पुल्लिंग हो तो बहुवचन में ए की मात्रा लगती है।)

जंगल जंगल

(जब शब्द के अंत में व्यंजन हो और शब्द पुल्लिंग हो तो बहुवचन में शब्द में कोई परिवर्तन नहीं होता।)

अब दिए गए शब्दों के बहुवचन देखकर वचन परिवर्तन के नियम पहचानकर लिखें:

मोर	मोर
पतंग	पतंगें
लड़की	लड़कियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ

गतिविधि 3 (कक्षा 4, 5)–

दिए गए वाक्यों को ध्यान से देखें:

वह लड़का जाता है।	वे लड़के जाते हैं।
उस लड़के ने हाथ धोए।	उन लड़कों ने हाथ धोए।
ए लड़के! यहाँ आ।	ए लड़कों! यहाँ आओ।

- क्या इन वाक्यों की संरचना के माध्यम से आप विविध वाक्यों में कर्ता (लड़का) और क्रिया (हाथ धोना, आना) के बीच किसी तरह का संबंध देख पा रहे हैं?
- अब नदी, पेड़, बालिका, कविता और कमरा शब्दों से इसी तरह के वाक्य बनाइए।
  (वचन और वाक्य संरचना की पहचान के लिए कर्ता और क्रियाओं को अलग-अलग कार्ड्स पर लिखा जा सकता है और बच्चों को उनके सही मिलान से वाक्य बनाने के लिए कहा जा सकता है।)

गतिविधि 4 (अ) (कक्षा 3 से 5)–

विशेषण

बच्चों से कहा जाए कि

- अपने किसी साथी की वे पाँच बातें लिखें जो आपको अच्छी लगती हों।
- अब उन शब्दों को रेखांकित करें जो आपके साथी की विशेषता बताते हैं।
- अपने बारे में पाँच ऐसी बातें लिखें जो आपको अच्छी लगती हों और पाँच वे बातें लिखें जो आपको अच्छी नहीं लगती हों।
- अब लिखे गए वाक्यों का विश्लेषण करते हुए उनमें विशेषण शब्दों को रेखांकित किया जाए, साथ ही कर्ता, क्रिया आदि के क्रम को पहचान कर लिखें।

गतिविधि 4 (ब) (कक्षा 3, 4, 5)–

दिए गए अनुच्छेद में से विशेषता बताने वाले शब्दों को चुनकर दिए गए स्थान में भरें:

बगीचे में रंग-बिरंगे फूल मुस्कुरा रहे थे। हवा भी ठंडी हो चली थी। बगीचे में छोटे-बड़े हर उम्र के बच्चे खेल रहे थे। कुछ बच्चों के हाथ में बड़ी-सी फुटबॉल थी, तो कुछ के हाथों में रंग-बिरंगी गेंदें। कुछ बच्चे अपनी छोटी-छोटी साइकिलें थामे थे। सभी खुश थे, मौसम का आनंद ले रहे थे।

विशेषता बताने वाला शब्द (विशेषण)	किसकी विशेषता बता रहा है (विशेष्य)

गतिविधि 5 (कक्षा 4, 5)–

क्रियाविशेषण

इसके लिए बच्चों के दो समूह बनाए जाएँ। एक समूह को वे शब्द कार्ड दिए जाएँ जिनमें क्रियाएँ लिखी गई हों और दूसरे समूह को वे कार्ड्स दिए जाएँ जिनमें क्रियाविशेषण शब्द लिखे हो। जैसेः धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी। बच्चों को अपने कार्ड पर लिखी गई क्रिया के लिए सही क्रियाविशेषण पहचानकर अपने साथी के साथ जोड़ा बनाने और उन्हें सभी बच्चों के सामने बताने के लिए कहा जाए। इन क्रियाओं को अभिनय करके भी प्रदर्शित किया जा सकता है और बाकी बच्चों को उन्हें पहचानने का अवसर दिया जा सकता है। जैसे- यदि किसी बच्चे के पास रोना क्रिया का कार्ड है तो वह धीरे-धीरे या ज़ोर-ज़ोर से कार्ड वाले बच्चे के साथ जोड़ा बना सकता है। फिर समूह के सामने इस क्रिया का अभिनय कर सकता है। सभी समूहों के शब्दों को बच्चों को अपनी कॉपी में लिखने और उनके आधार पर उन्हें नीचे दी गई तालिका भरने के लिए कहा जा सकता है। इसके बाद उन्हीं से क्रियाविशेषण की परिभाषा बनवाई जा सकती है।

कार्ड 1- क्रियाविशेषण	कार्ड 2- क्रिया

गतिविधि 6 (कक्षा 4, 5)–

मुहावरों पर काम करना

कक्षाओं में सामान्यतः मुहावरों को पढ़ाते समय बच्चे उनके अर्थ को रट लें, इस बात पर अधिक ध्यान दिया जाता है। मुहावरों के वाक्य में प्रयोग भी कई स्थानों पर दिए हुए होते हैं, मगर उनकी संख्या सीमित होती है। साथ ही वे अलग-अलग वाक्यों की तरह प्रस्तुत होते हैं, अतः किसी कहानी में मुहावरे किस तरह से चमत्कार उत्पन्न करते हैं, उसकी भाषाई सुन्दरता को किस तरह से बढ़ा देते हैं, इसका अनुभव बच्चों को नहीं मिल पाता।

नीचे दी गई कहानी के हिस्से को देखें, जिसमें मुहावरों का भरपूर प्रयोग हुआ है।

छियाँ जी चियाँ जी पर चिंघाड़ रहे थे- अंधे हो क्या? दिखता नहीं क्या? साइकिल ऊपर चढ़ाए जा रहे हो, चढ़ाए जा रहे हो?

चियाँ जी भी दहाड़ रहे थे- आसमान सर पर न उठाओ छियें। साइकिल ऊपर चढ़ा ही देता तो इतना आग बबूला न होते।

छियाँ जी को अब भयंकर तैश आ गया, बोले- तो भैया चियाँ, क्या राह चलते किसी राहगीर को सरे राह कुचल डालोगे? ये तो वही मिसाल हुई, क्या कहते हैं वो, उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे। चियाँ जी के सब्र का घड़ा भर गया। उन्होंने नहले पर दहला फटकारा- देखिए छियाँ जी, इस तरह से आप ना-कुछ-सी बात को हवा दे रहे हो। बात अब हद से आगे बढ़ चुकी है, पानी सिर के ऊपर से गुज़रने लगा है। मैं अब अगर अपनी पर आ गया तो आप जो तूफां मचा रहे हो, कहीं दीयों में नहीं दिखोगे। टॉर्च लेकर ढूँढने पर भी नज़र नहीं आओगे। गनीमत इसी में है कि पतली गली से निकल जाइए, वरना वो हंगामा खड़ा होगा कि तमाशबीन तमाशा देखेंगे। छियाँ जी को ऐसी झिड़की तो उनके अब्बू जान ने भी नहीं पिलाई थी। बोले- ललकारो मत, ललकारो मत चियें। खुदा कसम मेरा खून खौल गया तो कोहराम मच जाएगा। भलाई इसी में है कि अब तुम रफूचक्कर हो जाओ।

इस कहानी को पढ़कर बच्चों से मुहावरे छाँटने को कहा जा सकता है, इन मुहावरों से नए वाक्य बनाने और कुछ मुहावरों का प्रयोग करते हुए नई कहानी गढ़ने को कहा जा सकता है। ऐसे में बच्चे मुहावरों का अर्थ रटने की बजाय वाक्य में उनके प्रयोग को समझेंगे और इससे उन्हें नई कहानी लिखते समय इन मुहावरों का उपयोग करने में मदद मिलेगी।

सम्मिलित गतिविधि 1

नीचे दी गई कहानी को पढ़ें और उसके आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखें:

एक थी रूसी और एक थी पूसी। दोनों में गाढ़ी दोस्ती थी। एक दिन रूसी चित्र बना रही थी, तभी पूसी आई और छलांग मारकर उसकी कुर्सी की पीठ पर जा बैठी।

"यह तुम क्या कर रही हो?"
"मैं तुम्हारे लिए एक घर बना रही हूँ।" रूसी बोली, "देखो यह इसकी छत है, उसके ऊपर यह चिमनी और यह रहा दरवाज़ा।"
"पर मैं वहाँ जाकर क्या करूँगी?" पूसी ने पूछा।
"तुम वहाँ अपना चूल्हा बनाना और उस पर खाना पकाना।" रूसी ने चिमनी से निकलता हुआ धुआँ भी चित्र में बना दिया।

1. कहानी में आए नाम वाले शब्दों की सूची बनाइए।
2. कहानी में ऐसे कितने शब्द आए हैं जिनसे ऐसा लगता है कि कोई काम किया जा रहा है?
3. कहानी में से ऐसे वाक्य ढूँढिए जिनके अंत में–
   - ? (प्रश्नवाचक) चिह्न आया हो
   - । (पूर्ण विराम) चिह्न आया हो
   - , (अल्प विराम) चिह्न आया हो
   - "......" (उद्धरण) चिह्न आया हो

क्या आप बता सकते हैं कि ये चिह्न वहाँ क्यों लगाए गए हैं?
(इस गतिविधि के बाद बच्चों को विराम चिह्नों के महत्त्व और उनके उपयोग की जानकारी दी जाए)

सम्मिलित गतिविधि 2
नीचे दी गई सामग्री को ध्यान से पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर लिखें:
1. भारी-भरकम शरीर मेरा
   खंभे जैसे पाँव
   छोटी-छोटी आँखों से मैं
   देखूँ सारा गाँव।
2. पिंटू (चिंटू से)– चिंटू, जब बारिश होती है तो बिजली क्यों चमकती है?
   चिंटू– अरे, इतना भी नहीं पता, बादल टॉर्च जलाकर देखते हैं कि कोई जगह सूखी तो नहीं रह गई है।
3. भोपाल! दिन भर की उमस के बाद आखिर बादलों ने शहर पर मेहरबानी कर ही दी। दोपहर 2 बजे से ही घने बादल छा गए और घना अँधेरा हो गया। करीब दो घंटे तक मूसलाधार बारिश हुई। शहर के कई हिस्सों में पानी भर गया। मौसम विभाग की जानकारी के अनुसार दो घंटों में दो इंच वर्षा रिकॉर्ड की गई। मौसम विभाग ने अगले चौबीस घंटों में भी भारी वर्षा की चेतावनी दी है।
   1. ऊपर तीन तरह के पाठ दिए गए हैं। क्या आप उनकी पहचान कर सकते हैं?
   2. तीनों पाठों की वाक्य संरचना में क्या अंतर है?
   3. तीनों पाठों में किन-किन विराम चिह्नों का प्रयोग किया गया है? और क्यों?
   4. विविध प्रकार के पाठ एकत्रित करें और उनकी संरचना में अंतर रेखांकित करने का प्रयास करें।

के, में, ने, को, से...

"कोको की माँ ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था।"

ऊपर लिखे वाक्य में जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है वे वाक्य में शब्दों का आपस में संबंध बताते हैं। नीचे एक मज़ेदार किताब "अनारको के आठ दिन" का एक अंश दिया गया है। उसके खाली स्थानों में इस प्रकार के सही शब्द लिखो।

अनारको एक लड़की है। घर .... लोग उसे अन्नो कहते हैं। अन्नो नाम छोटा जो है, सो उस .... हुक्म चलाना आसान होता है। अन्नो, पानी ले आ, अन्नो धूप में मत जाना, अन्नो बाहर अँधेरा-कहीं मत जा, बारिश .... भीगना मत, अन्नो! और कोई बाहर .... घर में आए तो घरवाले कहेंगे-ये हमारी अनारको है, प्यार से हम इसे अन्नो कहते हैं। प्यार .... हुँ-ह-ह !

आज अनारको सुबह सोकर उठी तो हाँफ रही थी। रात सपने .... बहुत बारिश हुई। अनारको .... याद किया और उसे लगा, आज .... सपने में जितनी बारिश हुई उतनी तो पहले के सपनों .... कभी नहीं हुई। कभी नहीं। जमके बारिश हुई थी आज .... सपने .... और जमकर उसमें भीगी थी अनारको। खूब उछली थी, कूदी थी, चारों तरफ़ पानी छिटकाया था और खूब-खूब भीगी थी।

Figure 96 पाठ्यपुस्तक से एक उदाहरण

2.12 आकलन प्रक्रिया- अभ्यास प्रश्नों पर कार्य प्रक्रिया

आकलन : शिक्षण का अभिन्न अंग

भाषा शिक्षण की प्रक्रिया तब तक पूर्ण नहीं होती जब तक कि सीखे हुए का आकलन न कर लिया जाए। आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है और सीखने में शामिल अन्य प्रक्रियाओं की तरह यह भी एक सतत प्रक्रिया है। आकलन एक ऐसा ज़रिया है जिसकी मदद से इस बात को जाना जा सकता है कि सीखने वाले ने न केवल कितना सीखा है, अपितु किस गहराई के साथ सीखा है। आकलन सीखी हुई समझ की परतें खोलता है। ज़ाहिर है, आकलन केवल कितना सीखा गया है, उसको अंक देना ही नहीं है, बल्कि उस सीखे हुए 'कितना' को परत-दर-परत जानना भी है, और सही मायनों में आकलन पूर्ण भी तभी होता है।

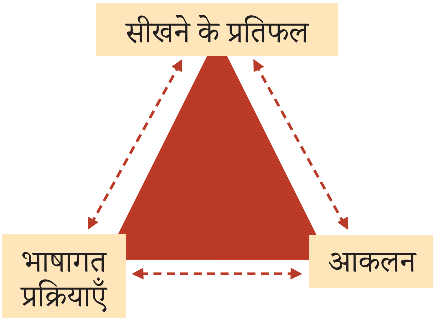

भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के आधार पर सुनिश्चित किए गए कक्षावार सीखने के प्रतिफल एक ओर जहाँ कक्षा प्रक्रियाओं को निर्मित और निर्धारित करने में मदद करते हैं, वहीं दूसरी ओर इनके आधार पर सीखे हुए के आकलन की प्रक्रियाओं को भी निर्धारित करने में सहायक होते हैं। इस तथ्य को यहाँ दिए रेखाचित्र से आसानी से समझा जा सकता है। अतः यह कहना तार्किक होगा कि आकलन की प्रक्रिया अपने आप में कोई अलग-थलग प्रक्रिया न होकर सीखने-सिखाने का ही एक अंग है, जो एक ओर तो स्वयं सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं से प्रभावित होता है और दूसरी ओर इन प्रक्रियाओं को प्रभावित भी करता है।

आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है और सीखने में शामिल अन्य प्रक्रियाओं की तरह यह भी एक सतत प्रक्रिया है।

आकलन एक ओर हमें यह समझने में सहायता करता है कि बच्चे ने सीखने के किन प्रतिफलों को हासिल कर लिया है और किन को नहीं, वहीं दूसरी ओर इस ओर भी इंगित करता है कि अमुक सीखने के प्रतिफलों को हासिल करने के लिए संभवतः हमें अपनी कक्षा प्रक्रियाओं में परिवर्तन की आवश्यकता है। वहीं भाषा की कक्षा में होने वाली विभिन्न शिक्षण प्रक्रियाएँ भी आकलन के विभिन्न अवसर प्रदान करती हैं, जिनके द्वारा सीखने-सिखाने के दौरान भी आकलन संभव हो पाता है।

वर्तमान स्थिति

अक्सर शिक्षकों में इस बात की स्पष्टता नहीं होती कि बच्चों के सीखने के वे कौन-से मापदंड हैं जिससे कि यह आकलन किया जा सके कि उन्होंने क्या सीखा है।

भाषा शिक्षण के मामले में आकलन को कक्षा कार्य के ही विस्तार के रूप में देखा जाना ज़रूरी है। भाषा के संदर्भ में यदि हम आकलन की मौजूदा प्रक्रिया का अवलोकन करें तो मुख्य बात यह समझ में आती है कि मौखिक और लिखित परीक्षा द्वारा बच्चों की शब्द संपदा, व्याकरण तथा पढ़ने और लिखने के कौशल की जाँच की जाती है। जाँच के लिए जो परीक्षा पत्र या प्रश्नपत्र तैयार किया जाता है, वह आमतौर पर पाठ्यपुस्तक पर ही आधारित होता है और उनका उत्तर देना भाषा की समझ पर कम और स्मृति के कौशल पर अधिक आधारित होता है।

अतः वे पाठ्यपुस्तक को संपूर्ण पाठ्यक्रम मानकर पाठों के अंत में दिए गए प्रश्नों के आधार पर आकलन करते हैं। शिक्षक की सुविधा कहें या कुछ और, आकलन के लगभग सभी तरीके लिखित टेस्ट के इर्द-गिर्द ही घूमते रहते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, अवलोकन आदि का कोई स्थान आकलन की प्रक्रिया में नज़र ही नहीं आता। मान्यता यह भी है कि पूरे सत्र में दो-चार बार के आकलन से ही हमें बच्चे की प्रगति, उसको सीखने में आ रही समस्याओं और फिर शिक्षण प्रक्रिया में इस हेतु सुधार की जानकारी भी मिल जाएगी। लेकिन ऐसा होता नहीं। तो जब बच्चा हर रोज़ सीखता है और हम हर रोज़ पढ़ाने की कोशिश करते हैं, फिर आकलन साल में केवल दो-चार बार ही क्यों?

2.12.1 सतत और व्यापक आकलन

प्राथमिक कक्षाओं में आकलन सीखने की प्रक्रिया का एक ऐसा हिस्सा होता है जो हमें यह समझने में मदद करता है कि शिक्षण किस प्रकार का हो। अतः आकलन रोज़ की गतिविधियों के साथ स्वाभाविक रूप से किया जाना चाहिए। हम सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को एक जीवंत प्रक्रिया तभी बना सकते हैं जब हम बच्चों को सीखने के ढेर सारे अवसर दें और बच्चे अपने स्तर के अनुरूप सीख रहे हैं या नहीं, इस बात का सतत आकलन करते चलें।

हम सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को एक जीवंत प्रक्रिया तभी बना सकते हैं जब हम बच्चों को सीखने के ढेर सारे अवसर दें और बच्चे अपने स्तर के अनुरूप सीख रहे हैं या नहीं, इस बात का सतत आकलन करते चलें।

आकलन के साथ-साथ अब हम उन तथ्यों के बारे में पता करेंगे जो बच्चों के सीखने में बाधक बन रही हैं, तभी हम सीखने की प्रक्रिया को सुधारने का प्रयास कर सकेंगे। यही वजह है कि सतत या रचनात्मक आकलन को 'सीखने के लिए आकलन' भी कहते हैं। इस प्रक्रिया को इन बिन्दुओं की सहायता से समझा जा सकता है:

- आकलन और कक्षा की गतिविधियाँ सदा साथ-साथ चलती हैं। एक से प्राप्त जानकारी दूसरे को सुचारू बनाती है।
- आकलन से न केवल यह पता चलता है कि बच्चे कितना सीख पाए हैं, बल्कि यह भी कि एक बच्चे में सीखने की क्षमता का कितना विकास हुआ है।
- आकलन ऐसी ही स्थितियों में होना आवश्यक है जो सीखने-सिखाने के दौरान मौजूद थीं। आकलन के लिए ख़ास परिस्थितियाँ पैदा करना गैर-ज़रूरी ही नहीं, हानिकारक भी है।

- आकलन कई संदर्भों और विविध तरह की सामग्री के साथ होना ज़रूरी है।
- आकलन दो तरह से करना आवश्यक है–
  - बच्चे की प्रगति की तुलना उसकी पहले कुछ समय तक हुई प्रगति से
  - बच्चे की प्रगति की तुलना उसके आयु या स्तर अनुरूप तय किए गए मापदंडों से

आकलन के उद्देश्य

यदि हम व्यापक संदर्भ में देखें तो आकलन का उद्देश्य बच्चों की सीखने की क्षमताओं का आकलन करना और सीखने के दौरान आने वाली समस्याओं की पहचान करना होता है। भाषा के संदर्भ में आकलन के निम्न उद्देश्य हो सकते हैं–

- बच्चों के भाषा कौशलों का आकलन
- विभिन्न संदर्भों में भाषा के इस्तेमाल की समझ का आकलन (कब, किन परिस्थितियों में कैसी भाषा प्रयोग में लानी है? उपयुक्त शब्द चयन, संक्षेप या विस्तार से कहना, भाषा के प्रभाव की समझ के आधार पर इसके इस्तेमाल को समझना)
- भाषा के सौंदर्य को सराह पाने की क्षमता का आकलन

उपर्युक्त उद्देश्यों के साथ किए जाने वाले आकलन की मदद से हम विभिन्न बच्चों की विशिष्ट कठिनाइयों और समस्याओं को पहचान सकते हैं। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए अपने शिक्षण पद्धति में उचित फेरबदल कर सकते हैं। इस प्रकार आकलन सिर्फ़ बच्चों के भाषाई विकास को आँकने का नहीं, बल्कि अपनी शिक्षण पद्धतियों के आकलन करने का मापदंड भी है।

आकलन की प्रक्रिया

जब शिक्षक कक्षा-कक्ष में आकलन करते हैं तो एक तरह से वे अपना स्वयं का आकलन भी कर रहे होते हैं। यदि कक्षा के ज़्यादातर बच्चे सीख रहे हैं तो निश्चित ही शिक्षक बधाई के पात्र हैं। यदि कक्षा के अधिकतर बच्चे नहीं सीख पा रहे हैं तो शिक्षक के लिए यह समझना ज़रूरी है कि समस्या कहाँ आ रही है और इसे दूर किस प्रकार किया जाए, साथ ही बच्चों को सिखाने के तरीकों को और प्रभावी किस तरह बनाएँ। आकलन इसके लिए आधार तैयार करता है। इसके आधार पर ही हम यह जान सकते हैं कि हम कहाँ तक पहुँचे हैं और अभी कितनी दूर आगे जाना है। आकलन को एक योजनाबद्ध तरीके से किया जाना चाहिए। इस योजना की रूपरेखा आपके स्थान विशेष की ज़रूरतों के अनुरूप कुछ इस प्रकार हो सकती है–

यदि कक्षा के अधिकतर बच्चे नहीं सीख पा रहे हैं तो शिक्षक के लिए यह समझना ज़रूरी है कि समस्या कहाँ आ रही है और इसे दूर किस प्रकार किया जाए, साथ ही बच्चों को सिखाने के तरीकों को और प्रभावी किस तरह बनाएँ। आकलन इसके लिए आधार तैयार करता है।

- शिक्षक वर्ष भर कक्षा के सभी बच्चों का सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान लगातार अवलोकन करें और साथ ही साथ सुधारात्मक प्रयास करते रहें।
- औपचारिक रूप से आकलन एवं रिकॉर्डिंग, वर्ष में तीन बार चार-चार माह के अंतराल पर कर सकते हैं।

- आकलन गतिविधि आधारित तरीके से ही करें। बच्चों से तरह-तरह की गतिविधियाँ कराकर उनके शैक्षिक स्तर की जानकारी लें।
- आकलन के दौरान शाला या कक्षा का माहौल अन्य दिनों की ही तरह बिल्कुल सामान्य रहे। जिस सरल ढंग से सीखना-सिखाना चलता है– गतिविधि, बातचीत, प्रश्न-उत्तर, चर्चा, अवलोकन आदि, वैसे ही आकलन चलता रहे।
- एक बार में सभी बच्चों को ध्यान से देखना और आकलन तथा सुधार की दृष्टि से बारीकियाँ नोट करना कठिन होगा, इसलिए शिक्षक एक बार में 5-6 बच्चों पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं। आकलन बच्चों को टोलियों में बिठाकर या अलग-अलग तरीके से किया जा सकता है। आकलन रिकॉर्ड करने के लिए प्रत्येक कक्षा के लिए शिक्षक एक आकलन रजिस्टर बनाएँ, जिसमें कम-से-कम एक पन्ना तो हर बच्चे के लिए हो।
- हर बच्चे का रिकॉर्ड नोट करें, जिसकी टिप्पणियाँ स्पष्ट, सटीक और विश्लेषणात्मक हों और बच्चों को सिखाने के प्रयासों के लिए उनका उपयोग हो सके। प्रत्येक चरण में सभी बच्चों के आकलन के बाद सुधार की दृष्टि से आकलन प्रपत्र में से महत्त्वपूर्ण जानकारी निकाली जाए, जैसे- किस बच्चे को सीखने में कौन-सी कठिनाई आ रही है?
- आकलन से प्राप्त जानकारी के आधार पर बच्चों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए उनके विकास के लिए पहले से अधिक प्रभावी योजना बनाई जाए। जैसे- किन बच्चों को एक साथ बैठाकर सिखाया जा सकता है, किस तरह की गतिविधियाँ उनके लिए उपयुक्त होंगी, किस तरह से उन्हें आपस में सीखते हुए प्रोत्साहन दिलाया जा सकता है? आदि।
- इस तरह के आकलन में शिक्षक अपना एवं अपने द्वारा कराई जा रही शिक्षण प्रक्रिया का भी आकलन करें और अपनी शिक्षण प्रक्रिया में सुधार करके बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करें। इस तरह प्रत्येक चरण के आकलन के बाद लगातार सुधार हो, सिखाने के तरीकों में और सीखने के अवसरों में, आकलन तथा टेस्ट के निष्कर्षों के आधार पर बच्चों के माता-पिता को देने के लिए एक प्रगति पत्रक बनाएँ। इस प्रगति पत्रक में शिक्षक आकलन और सत्रांत परीक्षा के आधार पर बच्चों की प्रगति का विवरण देंगे, आकलन के आधार पर अगली कक्षा के शिक्षक को जानकारी भी दी जाए।

2.12.2 सीखने के प्रतिफल और आकलन

शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा 'प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल' का निर्माण किया गया है। स्पष्ट रूप से परिभाषित ये 'सीखने के प्रतिफल' शिक्षक, विद्यालय प्रबंधन, माता-पिता तथा समुदाय सभी के लिए महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं तथा इन प्रतिफलों को प्राप्त करने में उनकी भी अहम भूमिका होगी। साथ ही उनकी ज़िम्मेदारी और उत्तरदायित्वों को सुनिश्चित करते हुए ये प्रतिफल दिशानिर्देश का कार्य कर सकते हैं, ताकि आयु या कक्षा के अनुरूप पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं की पूर्ति हो सके। एक अच्छी आकलन और परीक्षा पद्धति सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग होती है। यहाँ आकलन का अर्थ बच्चों की नियमित परीक्षा नहीं है, बल्कि दैनिक गतिविधियों और अभ्यास के उपयोग से सीखने को दिशा देना और उसका आकलन करना है। हम सभी इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि सीखना एक सतत प्रक्रिया है। और बच्चों द्वारा सीखने के दौरान समय-समय पर आने वाली कठिनाइयों को समझने और इसे दूर करने के लिए आकलन की प्रक्रिया को भी सतत होना होगा। साथ ही सीखने की कोई भी प्रक्रिया कभी भी मात्र एक पहलू तक ही सीमित नहीं रहती।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि आकलन की यह प्रक्रिया सतत होने के साथ ही साथ समग्र भी हो और सीखने के सभी पहलुओं को स्वयं में समेटे हुए हो। ये प्रतिफल जहाँ एक ओर हमें यह बताते हैं कि बच्चों को किस स्तर पर क्या आना चाहिए, वहीं वे यह संकेत भी देते हैं कि इस हेतु कक्षा शिक्षण की प्रक्रियाएँ क्या हों। सीखने के प्रतिफल हेतु आवश्यक इन्हीं कक्षा प्रक्रियाओं को यदि कुछ संकेतकों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए तो यह समझना आसान हो जाता है कि आकलन से पूर्व कक्षाओं में बच्चों को कब क्या पढ़ाया जाए। आगे भाषा की कक्षा में इन्हीं संकेतकों और उनसे संबन्धित प्रक्रिया के बारे में बात की गई है।

संकेतक

विषय की प्रकृति यह समझने में मदद करती है कि कोई विषय कैसा है और उसमें किस प्रकार की अवधारणाएँ बुनी हुई हैं। वहीं विषय शिक्षण के उद्देश्य यह तय करने में मदद करते हैं कि वे कौन-से कौशल हैं जिन्हें एक शिक्षक अपने विषय आधारित कक्षा शिक्षण के दौरान बच्चों में विकसित होते देखना चाहते हैं। कौशलों के विकास में सीखने के बिन्दुओं के विभिन्न पड़ाव होते हैं। ये पड़ाव एक क्रमबद्धता में हो सकते हैं। इन पड़ावों को हम संकेतक कह सकते हैं। किसी अवधारणा के शिक्षण के दौरान एक बच्चा किसी कौशल को किस स्तर तक अर्जित कर पाया है, इसे जानने में संकेतक सहायक होते हैं। संकेतक यह तय करने में भी मदद करते हैं कि बच्चों को कहाँ तक आ गया है और कहाँ काम करने की आवश्यकता है। इसे ध्यान में रखते हुए यहाँ पर पहली से पाँचवीं तक की कक्षाओं के लिए आकलन के कुछ मूलभूत बिंदु आपकी सुविधा के लिए दिए जा रहे हैं, जिनमें बच्चे के स्तर के अनुसार बदलाव लाया जा सकता है। आकलन के बिंदुओं में कुछ दक्षताओं के सामने द्वितीय/तृतीय चरण में आकलन लिखा है। इससे तात्पर्य है कि इन कौशलों का आकलन प्रथम चरण में करना आवश्यक नहीं, केवल द्वितीय और तृतीय चरण में करना पर्याप्त है। कुछ चीज़ें जो वर्ष के प्रथम या द्वितीय चरण में पूर्व-परिचय या शुरुआत के लिए होती हैं, बच्चे शुरू से ही उनमें दक्ष हो जाएँ, ऐसी अपेक्षा नहीं है। आप ऐसे कौशलों की प्राप्ति के लिए अलग-अलग स्तर की गतिविधियों द्वारा प्रयास तो करते रहें, पर आकलन उसी चरण में करें जो प्रपत्र में दिया है। जैसे- कक्षा 1 के प्रथम चरण में पढ़ना, समझना या लिखने के आकलन पर ज़ोर न देकर सुनना, बोलना तथा अभिव्यक्ति पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाए, क्योंकि प्रथम चरण में पढ़ना तो मात्र कुछ शब्दों और मात्राओं तक ही सीमित रहेगा। यहाँ दी गई तालिका उन्हें इस अनिश्चितता की स्थिति से उबरने में मदद करेगी। इस तालिका में एक प्रकार से भाषा शिक्षण के उद्देश्यों और कौशलों को संकेतकों के माध्यम से दर्शाया गया है–

कक्षा 1

आकलन के बिंदु	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण
सुनना, बोलना			
कविता/कहानी/विवरण हावभाव सहित सुना सकना	✔	✔	✔
कविता/कहानी/विवरण सुनकर मौखिक प्रश्नों के उत्तर दे सकना		✔	✔
चित्रों पर विवरण सुना सकना	✔	✔	✔
स्वतंत्र रूप से अपनी बात कह सकना		✔	✔
सरल मौखिक निर्देशों का पालन कर सकना	✔	✔	✔
सुनी हुई बात पर अपना मत व्यक्त कर सकना			✔
पढ़ना, समझना			
परिचित शब्दों, नामों को कविता / कहानी / श्यामपट्ट / शब्दकार्ड आदि में पहचान पाना	✔	✔	✔
शब्दों तथा छोटे-छोटे वाक्यों को प्रवाह में पढ़ना		✔	✔
अर्थ समझकर पढ़ना	✔	✔	✔
लगभग 10 अक्षर- प्रथम चरण / 20 अक्षर- द्वितीय चरण / 4-5 को छोड़कर सभी अक्षर पहचान पाना- तृतीय चरण	✔	✔	✔
2 मात्रा / 3-5 मात्रा / सभी मात्राएँ पहचान पाना	✔	✔	✔
लिखना			
शब्द / अक्षर देखकर लिख पाना	✔	✔	✔
शब्द / अक्षर मन से लिखना		✔	✔
प्रश्नों को सुनकर/पढ़कर छोटे-छोटे वाक्यों में उत्तर लिख पाना			✔
अभिव्यक्ति			
देखकर चित्र बना पाना	✔	✔	✔
कविता/कहानी सुनकर उसके अनुसार चित्र बना पाना	✔	✔	✔
स्वतंत्र चित्र बना पाना	✔	✔	✔
कविता/कहानी/परिचित घटना स्थिति का अभिनय करना	✔	✔	✔
मिट्टी तथा आसपास की अन्य सामग्री से चीज़ें बनाना	✔	✔	✔

कक्षा 2

आकलन के बिंदु	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण
सुनना-सोचकर बोलना			
कविता/कहानी अकेले या सामूहिक रूप से हावभाव सहित सुना सकना	✔	✔	✔
कविता/कहानी/विवरण सुनकर एक या दो पूरे वाक्यों में उत्तर दे सकना		✔	✔
सरल और छोटे निर्देश समझकर उनके अनुसार कार्य कर सकना	✔	✔	✔
बोलते समय लिंग सामंजस्य का ध्यान रख सकना		✔	
दैनिक जीवन/परिचित संदर्भों / कक्षा की गतिविधियों का 2-4 वाक्यों में विवरण दे सकना	✔	✔	✔
संबन्धित प्रश्न पूछ सकना		✔	✔
सुनना-सोचकर बोलना			
अपनी बात कह सकना		✔	✔
हिंदी के शब्दों को सही ढंग से बोल सकना			✔
पढ़कर समझना, समझकर व्यक्त करना			
कविता / कहानी / कार्ड / चित्र में आए शब्दों को प्रवाह में पढ़ सकना	✔	✔	✔
वर्ण पहचानकर उनसे नए शब्द बनाना और पढ़ पाना	✔	✔	✔
सभी वर्णों एवं मात्राओं से बनने वाले शब्द पढ़ सकना			✔
पुस्तकालय की किताबों में से छोटी कहानी/कविता पढ़ सकना			✔
लिखना			
पढ़े हुए शब्दों, नामों को लिख सकना	✔	✔	✔
बोले/सुने प्रश्नों का एक-दो वाक्यों में उत्तर लिख सकना			✔
स्वयं पढ़कर एक या दो वाक्यों में उत्तर लिख सकना		✔	✔
सुनकर लिख सकना	✔	✔	✔
दो-तीन वाक्यों में विवरण लिख सकना			✔
पूरी वर्णमाला क्रम से लिख सकना	✔	✔	✔
स्वतंत्र और सृजनात्मक अभिव्यक्ति			
परिचित परिस्थितियों का अभिनय कर सकना	✔	✔	✔
स्वतंत्र चित्र बना सकना	✔	✔	✔
आसपास की सामग्री से विभिन्न वस्तुएँ बना सकना	✔	✔	✔
मन से कल्पना करके कहानियाँ/कविताएँ बना सकना	✔	✔	✔
असमान वस्तुओं के बीच समानता और संबंध ढूँढ पाना		✔	✔

कक्षा 3, 4, 5

आकलन के बिंदु	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण
सुनना-समझना-सोचकर बोलना			
कविता/कहानी/विवरण हावभाव एवं आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ सुना सकना	✔	✔	✔
क्या, कब, कहाँ, किससे, कैसे और क्यों वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में दे सकना	✔	✔	✔
नाटक एवं संवाद सुनकर प्रमुख तत्त्व ग्रहण कर सकना			✔
सुनना-समझना-सोचकर बोलना			
परिचित परिस्थितियों के बारे में बोल सकना		✔	✔
हिंदी के शब्दों को स्पष्ट उच्चारण के साथ प्रवाह में पढ़ सकना		✔	✔
बोलते समय लिंग, वचन का सामंजस्य रख सकना	✔	✔	✔
हो रहे कार्य के संबंध में क्या, कब, कैसे जैसे प्रश्न पूछ सकना	✔	✔	✔
पढ़कर समझना, समझकर व्यक्त करना			
एक बार में शब्द सामग्री को प्रवाह में पढ़ सकना			
शब्दों को पढ़कर समझ सकना			
छोटी सूचनाओं को पढ़कर समझ सकना		✔	✔
पढ़ी गई सामग्री के प्रमुख तत्त्व ग्रहण कर सकना	✔	✔	✔
संदर्भ में आए नए शब्दों का अर्थ समझकर उपयोग कर सकना		✔	✔
लिखना			
क्यों, कब, कैसे वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में लिख सकना			
शब्दों को उपयुक्त दूरी और सीधी लाइन में लिख सकना	✔	✔	✔
अपरिचित शब्दों का श्रुतलेखन कर सकना	✔	✔	✔
छोटा अनुच्छेद या विवरण लिख सकना	✔	✔	✔
स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति			
स्वतंत्र चित्र बनाना	✔	✔	✔
मिट्टी एवं आसपास की वस्तुओं से अलग-अलग चीज़ें बना सकना	✔	✔	✔
किसी वस्तु का वर्णन कर सकना	✔	✔	✔
मन से कहानी बनाना, आगे बढ़ाना	✔	✔	✔
अपने आपको दूसरों की जगह रखकर उनका अभिनय कर सकना	✔	✔	✔
किसी वस्तु के सामान्य उपयोग के अलावा अन्य उपयोग सोच पाना	✔	✔	✔

उपरोक्त संकेतकों के साथ ही साथ हम सीखने के प्रतिफल को भी आकलन के लिहाज़ से बढ़ते हुए क्रम में देख सकते हैं और कक्षा में समेकित आकलन प्रक्रिया के दौरान यह निर्धारित कर सकते हैं कि बच्चे किस स्टेज पर हैं और उनके साथ अभी और क्या किया जाना उपयुक्त है। इसे निम्न टेबल के माध्यम से समझा जा सकता है।

कक्षा 1 व 2 से संबन्धित सीखने के प्रतिफल			
समेकित सीखने के प्रतिफल	**Level 1**	**Level 2**	**Level 3**
सुनी या देखी गई बातों या घटनाओं को अपनी भाषा में बातचीत के माध्यम से व्यक्त करना, मौखिक कहानी, कविता को अपने शब्दों में सुना पाते हैं, अपने घर-परिवार, स्कूल और परिवेश के बारे में बात कर पाते हैं। कविता, कहानी को हावभाव से सुना पाते हैं। बातचीत में और सुनी हुई सामग्री पर अपनी प्रतिक्रिया दे पाते हैं।	अपनी भाषा में कुछ शब्दों में व्यक्त कर पाता है। बहुत कम बात करता है। कविता, कहानी को जस का तस सुनाता है। हावभाव का ध्यान नहीं रहता। सुनी हुई बात पर बहुत कम प्रतिक्रिया दे पाता है।	देखी-सुनी हुई बातों और घटनाओं को कुछ वाक्यों में व्यक्त कर पाते हैं। मौखिक कविता, कहानी सुना पाते हैं। हावभाव के साथ नहीं कर पाते हैं। प्रतिक्रिया नहीं दे पाते हैं।	देखी-सुनी बातों को अपनी भाषा में बेहतर व्यक्त कर पाते हैं। कविता, कहानी को हावभाव के साथ सुना पाते हैं। सुनी हुई बात पर अपनी प्रतिक्रिया भी दे पाते हैं।
चित्रों को पहचान पाते हैं। किसी बड़े समेकित चित्र का सूक्ष्म व बारीक अवलोकन कर उस पर बात कर पाते हैं। अपने परिवेश की वस्तुओं के सरल रेखाचित्र बना पाते हैं। चित्रों को जोड़कर, चिपकाकर कोलाज बना पाते हैं। चित्रों के सूक्ष्म व अप्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन कर पाते हैं।	चित्रों को पहचान पाते हैं। बड़े समेकित चित्रों में कुछ बड़ी चीज़ों को पहचान पाते हैं। सूक्ष्म और बारीक अवलोकन में दिक्कत है। कुछ वस्तुओं के रेखाचित्र नहीं बना पाते हैं। कोलाज बनाने का काम मदद से करते हैं। चित्रों के अप्रत्यक्ष पहलुओं को नहीं देख पाते हैं।	चित्रों को पहचान पाते हैं। बड़े चित्रों का कुछ बारीक अवलोकन कर पाते हैं। अपने परिवेश की वस्तुओं के चित्र बना पाते हैं। कोलाज बना लेते हैं। चित्रों के कुछ बारीक व अप्रत्यक्ष पहलुओं का भी अवलोकन कर पाते हैं।	चित्रों को पहचान पाते हैं। बड़े चित्रों का अधिकतर बारीक अवलोकन कर पाते हैं। अपने परिवेश की वस्तुओं के चित्र बना पाते हैं। कोलाज बना लेते हैं और दूसरे साथियों की मदद भी कर पाते हैं। चित्रों के सूक्ष्म व अप्रत्यक्ष पहलुओं का भी अवलोकन कर पाते हैं।
ध्वनियों और शब्दों का तालमेल बैठा पाते हैं। अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचान पाते हैं। उसका क्रम बता पाते हैं, लिख पाते हैं।	कुछ ध्वनियों का तालमेल बैठा पाते हैं। कुछ अक्षरों की ध्वनियों और आकृतियों को पहचान पाते हैं। लेकिन क्रम में दिक्कत है। कुछ अक्षर लिख पाते हैं।	अधिकांश ध्वनियों का तालमेल बैठा पाते हैं। अधिकांश अक्षरों की ध्वनियों और आकृतियों को पहचान पाते हैं। पूरे वर्णमाला क्रम को पहचानने में अभी समय लगेगा। अधिकांश अक्षर लिख पाते हैं।	सभी ध्वनियों और शब्दों का तालमेल बैठा पाते हैं। सभी अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचान पाते हैं। उसका क्रम बता पाते हैं, सभी अक्षरों को लिख पाते हैं।

कक्षा 1 व 2 से संबन्धित सीखने के प्रतिफल			
समेकित सीखने के प्रतिफल	**Level 1**	**Level 2**	**Level 3**
रैपर आदि पर प्रिंट सामग्री को देखकर अनुमान लगा पाते हैं, श्यामपट्ट पर लिखे अक्षरों की पहचान कर पाते हैं और उन अक्षरों की आड़ी-तिरछी आकृतियाँ बना पाते हैं, सुनकर शब्द लिख पाते हैं, अपने अनुभव को छोटे-छोटे वाक्य बनाकर लिख पाते हैं, नये शब्दों की वर्तनी बनाकर लिख पाते हैं। सुनी या पढ़ी बातों को अपने तरीके से वाक्यों में लिख पाते हैं।	कुछ परिचित रैपर आदि पर प्रिंट सामग्री को पहचान पाते हैं, श्यामपट्ट पर लिखे कुछ अक्षरों की पहचान कर पाते हैं और उन अक्षरों की आकृतियाँ बना पाते हैं, आकृतियाँ अभी सुस्पष्ट नहीं हैं। सुनकर दो अक्षरों के कुछ सरल शब्द लिख पाते हैं, अपने अनुभव को कुछ शब्दों में लिख पाते हैं, नए शब्दों में अटक जाते हैं।	अधिकतर रैपर देखकर अनुमान लगा पाते हैं / कुछ पढ़ भी पाते हैं। श्यामपट्ट पर लिखे अक्षरों की पहचान कर पाते हैं और उन अक्षरों की आकृतियाँ बना पाते हैं। सुनकर सरल शब्द लिख पाते हैं, अपने अनुभव को छोटे-छोटे वाक्य बनाकर लिख पाते हैं, नए शब्दों की वर्तनी बनाने में दिक्कत होती है। सुनी या पढ़ी बातों को कुछ शब्दों में लिख पाते हैं।	अपने परिवेश के लगभग सभी रैपर आदि पर प्रिंट सामग्री को देखकर अनुमान लगाकर पढ़ पाते हैं, श्यामपट्ट पर लिखे अक्षरों की पहचान कर पाते हैं और उन अक्षरों की आकृतियाँ बना पाते हैं। सुनकर शब्द लिख पाते हैं, अपने अनुभव को छोटे-छोटे वाक्य बनाकर लिख पाते हैं, नए शब्दों की वर्तनी बनाकर लिख पाते हैं। सुनी या पढ़ी बातों को अपने तरीके से वाक्यों में लिख पाते हैं।
जिज्ञासु हैं, अपने मन के सवाल पूछते हैं, सवालों को पूरे वाक्यों में पूछते हैं। अपनी या स्कूल की भाषा में जानकारी के लिए नए प्रश्न पूछ पाते हैं। निजी अनुभवों से सवाल बना पाते हैं। अपनी बातों पर तर्क दे पाते हैं।	बहुत कम सवाल पूछते हैं। मन में सवाल नहीं बना पाते। सवालों में अभी स्पष्टता नहीं है। सवाल अपनी ही भाषा में पूछते हैं। स्कूल की भाषा समझने में अभी दिक्कत है। बातचीत में तर्क नहीं कर पाते हैं।	सवाल पूछते हैं, लेकिन सवालों में स्पष्टता की कमी है। अपनी और स्कूल की भाषा का मिलाजुला प्रयोग करते हैं। अपने निजी अनुभव को रखते हैं, पर उस पर तर्क नहीं कर पाते।	सवाल पूछते हैं, सवाल बना पाते हैं। अपनी और स्कूल की भाषा दोनों का प्रयोग करते हैं। अपने निजी अनुभव से जुड़े सवाल भी करते हैं। और तर्क भी करते हैं।
अपने स्तर का पाठ बिना रुकावट के पढ़ पाते हैं। संयुक्ताक्षर वाले शब्द पढ़ पाते हैं। पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ने का प्रयास करते हैं / पढ़ पाते हैं।	अपने स्तर का पाठ अटक-अटककर पढ़ पाते हैं। संयुक्ताक्षर वाले शब्द नहीं पढ़ पाते हैं। पुस्तकालय से अभी दूरी बनी हुई है। किताबों के चित्र देखते हैं और मन में ही बात करते हैं।	अपने स्तर का पाठ कुछ रुकावट के साथ पढ़ पाते हैं। संयुक्ताक्षर वाले कुछ शब्द पढ़ पाते हैं। पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ने का प्रयास करते हैं।	अपने स्तर का पाठ बिना रुकावट पढ़ पाते हैं। संयुक्ताक्षर वाले शब्द पढ़ पाते हैं। पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ पाते हैं।

कक्षा 3 से 5 तक से सम्बंधित सीखने के प्रतिफल			
समेकित सीखने के प्रतिफल	Level 1	Level 2	Level 3
कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से समझते हुए सुनते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय या स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं। अपनी बातों के लिए तर्क देते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं।	शिक्षक द्वारा कही जा रही बात, कविता, कहानी आदि के अर्थ को सुनकर दोहराते हैं, प्रश्न पूछने पर उत्तर बता पाते हैं।	कही जा रही बात, कविता, कहानी को ध्यान से सुनकर प्रश्न करते हैं, प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में बताने का प्रयास करते हैं। पूछे जाने पर अपनी राय प्रस्तुत करते हैं, पर स्पष्टता के साथ तर्क नहीं रख पाते।	कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर समझते हैं, स्वयं प्रश्न करते हुए अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, अपनी बात के लिए तर्क प्रस्तुत करते हैं, साथ ही निष्कर्ष निकालते हैं।
कविता, कहानी आदि को उपयुक्त उतार-चढ़ाव, गति, प्रवाह और सही पुट के साथ सुनाते हैं और उसका आनन्द लेते हैं।	कविता/कहानी को स्मरण करते हुए रुक-रुककर सुनाते हैं।	कविता/कहानी को धाराप्रवाह हावभाव के साथ सुनाते हैं, कविता/कहानी में स्थितियों व घटनाओं के आधार पर कुछ हद तक उतार-चढ़ाव लाते हैं।	कविता, कहानी आदि को उपयुक्त उतार-चढ़ाव, हावभाव, गति, प्रवाह और सही पुट के साथ बेहतर तरीके से सुनाते हैं और स्वयं भी उसका आनन्द लेते हैं।
आसपास होने वाली गतिविधियों व घटनाओं और विभिन्न स्थितियों में अपने अनुभवों के बारे में बताते हैं, उन पर बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं।	आसपास होने वाली घटनाओं, अपने अनुभवों को सीमित वाक्यों में / संक्षिप्त में व्यक्त करते हैं।	गतिविधियों, घटनाओं, अनुभवों का हावभाव के साथ विस्तृत वर्णन करते हैं। प्रश्न पूछे जाने पर उत्तर देने का प्रयास करते हैं।	आसपास की गतिविधियों, घटनाओं को साझा करते हुए समूह में चर्चा करते हैं, दूसरों के अनुभवों, घटनाओं आदि पर प्रश्न करते हैं। साथ ही उचित-अनुचित आदि पर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।

कक्षा 3 से 5 तक से सम्बंधित सीखने के प्रतिफल			
समेकित सीखने के प्रतिफल	**Level 1**	**Level 2**	**Level 3**
अपनी पठन सामग्री से इतर, अलग-अलग तरह की रचनाओं / सामग्री- अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स, पुस्तकालय से विभिन्न मुद्दों पर उपलब्ध सामग्री आदि को समझकर पढ़ते हैं और उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं, चर्चा करते हैं, अपनी राय देते हैं। उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते हैं और अपने अनुभवों से जोड़कर अपनी मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति देते हैं।	पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त विद्यालय/कक्षा में उपलब्ध पठन सामग्री, कक्षा अखबार, दीवार/बोर्ड पर लिखी सामग्री को पढ़ने एवं समझने का प्रयास करते हैं। पढ़ने की गति धीमी है या रुक-रुककर पढ़ते हैं। उस पर आधारित प्रश्न पूछने पर उत्तर देने का प्रयास करते हैं। कुछ वाक्यों में अपने विचार लिखने का प्रयास करते हैं।	स्वयं से पुस्तकालय/पठन सामग्री का उपयोग करते हैं, अपनी पसंद की सामग्री का चुनाव करते एवं पढ़ते हैं। पढ़कर समझ पाते हैं। मौखिक एवं लिखित रूप से अभिव्यक्त करते हैं।	अपनी रुचि से स्वयं अलग-अलग पाठ्य सामग्री का चुनाव कर पढ़ते हैं। स्पष्ट रूप से एवं धाराप्रवाह पढ़ पाते हैं। पढ़ी गई सामग्री पर चर्चा करते हैं। अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। अपने अनुभवों को जोड़ते हुए मौखिक एवं लिखित रूप से विचार अभिव्यक्त करते हैं।
अलग-अलग रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनके अर्थ का अनुमान लगाते हैं और अनुमान न लगा पाने की स्थिति में शब्दकोश की सहायता से अर्थ तक पहुंचते हैं।	अलग-अलग रचना में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझने में कठिनाई महसूस करते हैं। अर्थ का अनुमान नहीं लगा पाते।	अलग-अलग रचना में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझने का प्रयास करते हैं, शिक्षक की मदद लेते हैं, एवं शब्दकोश से खोजने का प्रयास करते हैं।	अलग-अलग रचना में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझने हेतु अनुमान लगाते हैं, शब्दकोश का इस्तेमाल करते हुए अर्थ पर पहुँचते हैं।
तरह-तरह की पाठ्य सामग्री में भाषा की बारीकियों, जैसे शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विभिन्न विराम चिह्नों की पहचान व प्रयोग करते हैं। विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते समय इन विराम चिह्नों का सही उपयोग कर पाते हैं।	पाठ्य सामग्री को सीधे-सीधे पढ़ देते हैं। पढ़ने व लिखने के दौरान कहीं-कहीं पर पूर्ण विराम चिह्न का उपयोग व पहचान भी करते हैं।	पाठ्य सामग्री में शामिल वाक्यों में संज्ञा, सर्वनाम व विराम चिह्नों को पढ़ने व लिखने के दौरान पहचान पाते हैं। साथ ही लेखन के दौरान कहीं-कहीं पर पूर्ण विराम व अल्प विराम चिह्न का उपयोग भी करते हैं।	तरह-तरह की पाठ्य सामग्री में भाषा की बारीकियों, जैसे शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विभिन्न विराम चिह्नों की पहचान व अपने लेखन में प्रयोग करते हैं। जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते समय इन विराम चिह्नों का सही उपयोग कर पाते हैं।

कक्षा 3 से 5 तक से सम्बंधित सीखने के प्रतिफल			
समेकित सीखने के प्रतिफल	Level 1	Level 2	Level 3
पढ़ी हुई सामग्री और निजी अनुभवों को जोड़ते हुए उनसे उभरी हुई संवेदनाओं और विचारों की मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति करते हैं।	पढ़ी हुई सामग्री में लिखित बातों को मौखिक रूप में अभिव्यक्त करते हैं और सीमित वाक्यों में लिखित रूप से प्रस्तुत करते हैं।	पढ़ी हुई सामग्री में प्रस्तुत घटनाओं, स्थितियों और पात्रों के साथ अपने परिवेश के अनुभव को जोड़ते हुए मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति करते हैं।	पढ़ी हुई सामग्री और निजी अनुभवों को जोड़ते हुए उनसे उभरी हुई संवेदनाओं और विचारों को बेहतर तरीके से मौखिक और लिखित अभिव्यक्त करते हैं।
स्तरानुसार अन्य विषयों में उपयुक्त शब्दावली को समझते हैं और संदर्भ एवं परिस्थिति के अनुसार उनका इस्तेमाल लेखन और मौखिक अभिव्यक्ति में कर पाते हैं।			
अपनी कल्पना से कहानी, कविता, वर्णन आदि लिखते हुए भाषा का सृजनात्मक प्रयोग कर पाते हैं। भाषा की बारीकियों को ध्यान में रखते हुए अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से लिख पाते हैं।	अपनी कल्पना से कहानी, कविता लिखने का प्रयास करते हैं, दो या तीन लाइनों में लिख पाते हैं।	अपनी कल्पना से कहानी, कविता, वर्णन आदि विस्तृत वाक्यों में लिखते हैं, भाषा संबंधी बारीकियों का कम ध्यान देते हैं।	अपनी कल्पना से कहानी, कविता, वर्णन आदि विस्तृत रूप से एवं बेहतर लिख पाते हैं। लेखन में विराम चिह्नों आदि का सही स्थान पर प्रयोग करते हैं। विचार सुस्पष्ट होना, लेखन में क्रमबद्धता होना।

2.12.3 आकलन के विभिन्न रूप

आकलन के लिए सिर्फ़ पेपर पेंसिल टेस्ट पर आश्रित रहने की बजाय यदि हम एक से अधिक आकलन की प्रक्रियाओं को अपनाएँ तो फिर इनके द्वारा भाषा के सभी कौशलों में हो रही प्रगति और आ रही समस्याओं को समझना आसान हो जाता है। भाषा सीखने की प्रक्रिया का आकलन करने के लिए यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि स्वयं बच्चों को भी आकलन की प्रक्रिया में शामिल किया जाए। स्व-आकलन तथा साथियों द्वारा आकलन विद्यार्थियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करता है।

भाषा सीखने की प्रक्रिया का आकलन करने के लिए यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि स्वयं बच्चों को भी आकलन की प्रक्रिया में शामिल किया जाए। स्व-आकलन तथा साथियों द्वारा आकलन विद्यार्थियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करता है।

मौखिक परीक्षण

यह एक बहुत ही सरल पर अधिक प्रभावशाली तकनीकी है। मौखिक परीक्षण के लिए औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से बहुत-सी गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं। कक्षा शिक्षण के दौरान बच्चों से तरह-तरह के मुद्दों पर बात करना, प्रश्न पूछना, समूह में चर्चा करवाना आदि बहुत-सी गतिविधियाँ आयोजित कर बच्चों के भाषाई कौशलों की जाँच की जा सकती है। उदाहरण के लिए:

कक्षा शिक्षण के दौरान बच्चों से तरह-तरह के मुद्दों पर बात करना, प्रश्न पूछना, समूह में चर्चा करवाना आदि बहुत-सी गतिविधियाँ आयोजित कर बच्चों के भाषाई कौशलों की जाँच की जा सकती है।

प्रश्नोत्तर सत्र

बच्चों की भाषा संबंधी तत्परता, शब्द का उच्चारण और भाषा की बुनावट संबंधित कौशल जानने के लिए तरह-तरह के सवाल बनाए जा सकते हैं। शुरुआती दौर में सवाल एक शब्द में उत्तर वाले भी हो सकते हैं। यहाँ यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि प्रश्न पाठ्यपुस्तक के इर्द-गिर्द ही ना घूमते रहे। बच्चों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी से जुड़े सवालों के द्वारा उनसे उत्कृष्ट कोटि के उत्तरों की अपेक्षा की जा सकती है। अतः सवाल बनाते समय उनकी रुचियों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। यहाँ सवाल बना लेना ही अपने आप में पर्याप्त नहीं है। पूछने का तरीका, उत्तर पाने के लिए समय देना भी ज़रूरी है और उत्तर सुनते समय शिक्षक के हावभाव, दोनों के बीच का आपसी रिश्ता बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

कहानी कहना

विद्यालय आने से पूर्व ही बच्चों का कहानी से रिश्ता सोते-जागते, उठते-बैठते किसी-न-किसी तरह से जुड़ ही जाता है। कहानी सुनना उनकी आदतों में शामिल हो जाता है। कहानियाँ सुनते-सुनते कब वे अपनी ही तरह से कहानियाँ गढ़ने लगते हैं, यह एक चमत्कार ही है। सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में सुना देना और अपनी तरफ से कहानी सुनाना भी भाषाई कौशल के आकलन की प्रभावशाली विधि है। कहानी सुनाते समय आकलन के मुख्य बिंदु होंगे:

- सुने गए शब्दों के अतिरिक्त कुछ नए शब्द स्थिति के अनुरूप उपयोग कर पाना
- आवश्यकतानुसार हावभाव का प्रयोग कर पाना
- घटनाक्रम को याद रख पाना

बोलकर पढ़ना

भाषा संबंधी आकलन के दौरान इस हेतु अपनाई जा रही पारंपरिक विधियों की उपयोगिता और महत्त्व को किसी भी दृष्टि से नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। बोलकर पढ़ने के पारंपरिक तरीके का उपयोग भी आकलन के लिए किया जा सकता है। पढ़ने के कौशल की जाँच के साथ-साथ उनमें निहित भाव के अनुसार बल देने और उतार-चढ़ाव से पढ़ने के कौशल की भी जाँच होती चलती है। विद्यार्थी को तरह-तरह की कथाएँ, कविताएँ, अन्य प्रकार के टेक्स्ट, नाटक, या फिर पाठ्यपुस्तक के पाठ के अंश बोल-बोलकर पढ़ने के लिए दिए जा सकते हैं। यहाँ यह हम पर निर्भर करता है कि सकारात्मक प्रभाव लाने के लिए किस समय उन्हें सही उच्चारण बताया जाए और किस तरीके से बताया जाए।

वर्णन करना

देखी, सुनी या पढ़ी बात का वर्णन करना सुनने में बहुत आसान लगता है, पर यह अपने आप में कहीं बहुत जटिल कौशल है। बच्चों में यह कौशल स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहता है, पर भाषाई शिक्षण की प्रवृत्तियाँ इसे पुष्ट करने के स्थान पर कुचल देती हैं। 'वर्णन करना' आकलन की दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्राथमिक स्तर के शुरुआती दौर में विद्यार्थी को किसी भी परिचित परिवेश में जानी-पहचानी वस्तु दिखाकर बच्चों को वर्णन करने के लिए कहा जा सकता है। वर्णन की शुरुआत एक वाक्य से हो सकती है।

अवलोकन

कक्षा में भाषा के लिए आप बहुत-से तरीकों का प्रयोग करते हैं, जैसे– चर्चा करना, अभिनय करना, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, समूह में संवाद, चित्र पढ़ना आदि। बच्चे जब इन प्रक्रियाओं में संलग्न होते हैं तब शिक्षक द्वारा इन सभी प्रक्रियाओं का अनौपचारिक अवलोकन, आकलन का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन जाता है। अवलोकन आकलन का हिस्सा तभी है जब वह–

- नियमित रूप से किया जा रहा हो
- किसी भी तरह के पूर्वाग्रह से दूर हो
- आवश्यकतानुसार और सुविधानुसार उसका रिकॉर्ड भी रखा जा रहा हो

यहाँ अवलोकन के लिए 'अनौपचारिक' शब्द का इस्तेमाल किया गया है, इसका तात्पर्य यह नहीं कि बिना किसी उद्देश्य के अवलोकन कर रहे हैं। किसी गतिविधि का अवलोकन भाषा का प्रवाह, किसी की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति आदि जानने के लिए किया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषाई कौशलों की जाँच अवलोकन के आधार पर भी की जाती है।

लिखित परीक्षण

पढ़ने और लिखने से जुड़े कौशल के आकलन की बात हो, या फिर वर्गीकरण और वर्णन आदि की जाँच, इसके लिए आमतौर पर सभी शिक्षक लिखित परीक्षण पर निर्भरता प्रदर्शित करते हैं। कक्षा कार्य, गृह कार्य, यूनिट परीक्षाएँ, लगभग सभी स्थितियों में लिखित परीक्षणों का ही सहारा लिया जाता है। लिखित परीक्षाएँ सिर्फ़ लिखने के कौशल का ही आकलन नहीं करती, अभी तो पढ़ना, समझना, ग्रहण करना, कल्पना करना, स्वतंत्र अभिव्यक्ति आदि सभी पक्षों का आकलन करने में मदद करती हैं। आमतौर पर प्रश्नपत्र, लिखने से जुड़े सभी आयामों की बजाय बहुत ही सीमित कौशल की जाँच करते हैं, अतः प्रश्न बनाते समय ध्यान रखा जाए कि प्रश्न–

- संदर्भ का विस्तार करने वाले हों
- कल्पनाशीलता का पोषण करने वाले हों
- समालोचनात्मक चिंतन को बल देने वाले हों
- अनुभव आधारित उत्तरों का पोषण करने वाले हों
- विश्लेषण क्षमता को बढ़ावा देने वाले हों

प्रश्नों के उत्तर के संबंध में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात पर गौर करना बहुत ही ज़रूरी है और यह है विद्यार्थी द्वारा शब्दों को महत्त्व देना।

श्रुतलेख

श्रुतलेख को भाषाई क्षमता की जाँच के उपकरण के रूप में इस्तेमाल में लाया जा सकता है। पर यह पारंपरिक श्रुतलेख से भिन्न है। यह बच्चे की स्मृति और मात्राओं की ही नहीं, बल्कि समग्र भाषिक निपुणता या दक्षता की जाँच में सहायक है। किन्तु अक्सर हम पाते हैं कि श्रुतलेख की प्रक्रिया अत्यंत ही उबाऊ और मशीनी है, क्योंकि इस हेतु चुने गए टेक्स्ट बोझिल होते हैं और उनमें रोचकता का अभाव भी होता है। इसके साथ ही श्रुतलेख की प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद जब लेखनी की अशुद्धियों को ढूँढकर उन शब्दों को बार-बार लिखने को कहा जाता है, यह प्रक्रिया बच्चों के लिए ज़रा भी रोचक नहीं लगती। अतः यह ज़रूरी हो जाता है कि श्रुतलेख के लिए जिस टेक्स्ट को चुना जाए, वो बच्चों की दृष्टि से रोचक हो।

विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक स्तर और आयु को ध्यान में रखते हुए किसी भी पाठ्य सामग्री का कोई भी हिस्सा चुनकर और फिर उसके अनुसार श्रुतलेख करवाया जाना चाहिए।

पोर्टफोलियो

पोर्टफोलियो भाषाई कौशलों के आकलन का महत्त्वपूर्ण और कारगर तरीका है। सत्र के पहले दिन से लेकर आखिरी दिन तक बच्चे तरह-तरह की गतिविधियों के द्वारा बहुत कुछ लिख रहे हैं, बना रहे हैं। यह सब उनके पोर्टफोलियो फोल्डर में रखा जा सकता है। बच्चों के कार्यों को पोर्टफोलियो में रखने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि विद्यार्थी अपने काम को उलट-पुलट कर देख सकते हैं, अभिभावकों को भी अपने बच्चों के काम की जानकारी मिलती रहती है। साथ ही शिक्षक भी इन्हें सिर्फ़ एक बार जाँचने की बजाय विभिन्न प्रकार से उपयोग करते हुए सिखाने के उपकरण बना सकते हैं। अब सवाल उठता है कि पोर्टफोलियो में क्या-क्या हो? आगे कुछ बातें प्रस्तावित रूप में दी जा रही हैं:

कक्षा 1 और 2

- तस्वीरें, चित्रकारी, हस्तलेख के नमूने, लेखन के शुरुआती दौर के वाक्य
- श्रुतलेख, अनुकरण लेखन
- अभ्यास पत्रक (वर्कशीट्स)
- किसी चित्र को देखकर वर्णन करना, घटना या कहानी पर चित्र बनाना आदि।

कक्षा 3 से 5

- अपनी समझ से लिखी गई कहानी, घटना या वृत्तांत
- तैयार किए गए विज्ञापन नोटिस
- अनुच्छेद लेखन
- निबंध लेखन
- पत्र
- क्लोज़ टेस्ट के उत्तर

- स्वरचित कविताएँ
- लिखी हुई घटनाओं, कहानियों पर चित्र आदि।

उपरोक्त सभी तरीकों को अपनी सुविधा व बच्चों की सुविधा के अनुसार आकलन के लिए अपनाया जा सकता है। इन्हें ध्यान में रखते हुए यदि हम कक्षा एक एवं दो और फिर कक्षा तीन से पाँच के लिए सतत आकलन के कुछ प्रमुख बिन्दुओं को आधार स्वरूप रखना चाहें तो ये इस प्रकार हो सकते हैं।

कक्षा एक और दो हेतु सतत आकलन के महत्त्वपूर्ण बिंदु[2]

सुनने और बोलने से संबन्धित

- भाषा की स्पष्टता, बोलने का आत्मविश्वास, कल्पना, तार्किकता, मौलिकता

पढ़ने से सम्बंधित

- समझकर पढ़ना, पढ़ने में प्रवाह, चित्रों से जोड़कर पढ़ना, तरह-तरह की सामग्री को पढ़ने की उत्सुकता

लिखने से सम्बंधित

- भाषा की स्पष्टता और प्रवाह, भाषा और विचारों की स्पष्टता, मौलिकता, कल्पनाशीलता

अभिव्यक्ति के अन्य माध्यम

- अभिनय के विभिन्न रूप
- चेहरे के हावभाव, शरीर के अंगों का इस्तेमाल, मौलिकता, आवाज़ का उतार-चढ़ाव, कल्पनाशीलता, स्थान का इस्तेमाल

चित्रांकन

- कल्पनाशीलता या सृजनशीलता

देखना या अवलोकन करना

- बारीकी
- कल्पना
- अनुमान
- तार्किकता

कक्षा तीन, चार और पाँच हेतु सतत आकलन के महत्त्वपूर्ण बिंदु

इन कक्षाओं में आकलन के बिन्दुओं की बात करें तो कक्षा एक और दो के लिए सुझाए गए उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखने के साथ ही साथ पढ़ने-लिखने के विस्तार को ध्यान में रखते हुए निम्न बिन्दु सुझाए जा सकते हैं:

लिखने से संबन्धित

- सहज एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति
- उद्देश्य को ध्यान में रखकर लिखना
- मौलिकता

2 शिक्षक संदर्शिका 'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम-2' से

- पढ़ी हुई सामग्री को अपने शब्दों में लिख पाना
- विषयवस्तु चुनने में हिस्सेदारी आदि।

पढ़ने से संबन्धित

- पुस्तकें चुनने और पढ़ने में दिलचस्पी
- चयन में विविधता या पसंदीदा सामग्री ही पढ़ना
- पढ़ते समय तरह-तरह की विधियों का इस्तेमाल, जैसे- महत्त्वहीन शब्द को छोड़ देना, संदर्भ से अर्थ का अंदाज़ा लगाना, अक्षरों को जोड़कर अपरिचित शब्द को पढ़ना।
- समझ या अर्थ के लिए पढ़ना

मौखिक अभिव्यक्ति

- भाषा की स्पष्टता
- सृजनशीलता व कल्पनाशीलता
- संदर्भ के अनुरूप उचित भाषा प्रयोग
- मौलिकता
- तार्किकता

2.12.4 सतत आकलन की प्रक्रिया में पाठ के अभ्यास प्रश्नों का महत्त्व

एनसीएफ़-2005 के अनुसार, अभ्यास प्रश्न ऐसे होने चाहिए जिनमें अत्यंत सूक्ष्म अवलोकन व विश्लेषण की ज़रूरत पड़े। यहीं यह भी कहा गया है कि अभ्यास प्रश्नों का मुख्य उद्देश्य भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार करना व सराहने की संवेदनशीलता विकसित करना है। पुस्तकों में विविध विषयों के संदर्भ में परिवेश और समाज के अवलोकन और सूक्ष्म विवरण से संबन्धित प्रश्न होने चाहिए। पाठ्यपुस्तकों में रुचिपूर्ण रचनाओं के समावेश के साथ-साथ अभ्यास प्रश्न पाठ्यपुस्तक को प्रभावी बनाते हैं। वहीं दूसरी ओर ये शिक्षण और परीक्षण दोनों के लिए ही अत्यंत समर्थ उपकरण हैं।

यदि हम विभिन्न राज्यों की पाठ्यपुस्तकों के अभ्यास प्रश्नों की उपरोक्त अपेक्षाओं से तुलना करें तो एक-दो राज्यों को छोड़कर बहुधा निराशा ही हाथ लगती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि इतना सब कुछ कहे और लिखे जाने के बावजूद आज भी अधिकतर अभ्यास प्रश्न सूचनात्मक या ज्ञानात्मक प्रश्नों से भरे नज़र आते हैं। इसके अतिरिक्त भाषा के विभिन्न आयामों व संज्ञानात्मक क्षमताओं से संबन्धित प्रश्न बहुत ही सीमित होते हैं। हालाँकि एनसीईआरटी की रिमझिम पाठ्यपुस्तक में निहित अभ्यास प्रश्नों में इनके प्रचुर उदाहरण देखे जा सकते हैं। अतः यह श्रेयस्कर रहेगा कि प्रश्नों के निर्माण के लिए इस पुस्तक के अभ्यास प्रश्नों को उदाहरण के रूप में देखा जाए। इस पुस्तक के अभ्यास प्रश्नों का संक्षिप्त वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है।

ज्ञानात्मक / सूचनात्मक प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों से एकमात्र सही उत्तर की मांग करते हैं। ये मुख्यतः स्मृति पर आधारित होते हैं। इनके उत्तर पाठ में ही मौजूद होते हैं, जो कि पाठ की ऊपरी सतह से ही सरोकार रखते हैं। अतः प्रश्न बच्चों की स्मरण क्षमता की जाँच करने में सहायक होते हैं।

उदाहरण

- दोनों बिल्लियों के बीच झगड़े की जड़ क्या थी?
- उनके झगड़े का हल कैसे निकाला गया?
- कविता की वो पंक्तियाँ छाँटकर लिखो जिनसे पता चलता है कि काबुलीवाला कुछ शब्द अलग तरीके से बोलता था।

अर्थग्रहण / अनुभवपरक प्रश्न

ये प्रश्न विद्यार्थियों के अनुभवों व समझ पर आधारित होते हैं। ये प्रश्न विद्यार्थियों की अवबोधात्मक क्षमता की जाँच करते हैं और साथ ही उन्हें प्रश्नों के उत्तर व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर प्रदान करने के अवसर उपलब्ध कराते हैं।

उदाहरण

- *मक्खी ने जब शेर को जगाया तो वह आग बबूला हो गया। तुम्हें जब कोई गहरी नींद से जगाता है तो तुम क्या करते हो?*
- *तुम्हारी समझ में, "कभी कभी जिद्दी बन करके, बाढ़ नदी नालों में लाते", बादल नदी-नालों में बाढ़ कैसे लाते होंगे?*
- *तिल का किन-किन रूपों में तेल बनता है? और किन चीज़ों से तेल बनता है और कैसे? हो सके तो तेल की दुकान में जाकर पूछो।*
- *अपने आसपास अलग-अलग तरह के पेड़ देखो। तुम्हें उनमें कौन-कौन-सी आकृतियाँ दिखाई देती हैं? सब मिलकर पेड़ों पर एक कविता भी तैयार करो।*

चिंतनपरक व सृजनात्मक प्रश्न

चिंतनपरक प्रश्न विद्यार्थियों की सोचने, समझने और तर्क करने व साथ ही उसकी विवेकशीलता का प्रयोग करने के अवसर भी प्रदान करते हैं। इनमें प्रतीकात्मक व व्यंजनात्मक प्रश्नों का समावेश रहता है, जहाँ बच्चों को व्यक्तिगत अनुभवों का प्रयोग कर उपस्थित समस्या को समाधान तक पहुँचाने का कार्य करना होता है। वहीं सृजनात्मक प्रश्न विद्यार्थियों को स्वतंत्र चिंतन के आधार पर मौलिक विचारों को प्रकट करने के भी पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाते हैं। ये प्रश्न विद्यार्थियों को बँधी-बँधाई परिपाटी का शिकार होने से बचाते हैं।

उदाहरण

- अगर तुम बित्तो की जगह होती तो शेर से कैसे निपटती?
- यह कहानी एक ऐसे दिन की है जब मूसलाधार बारिश हो रही थी। अगर मूसलाधार बारिश की बजाय बूँदाबाँदी होती तो क्या होता?
- तुम्हें काबुलीवाला ज़्यादा अच्छा लगा या पढ़क्कू? या कोई भी अच्छा नहीं लगा?
- राजा किसी को दान देना पसंद नहीं करता था। तुम्हारे विचार से राजा सही था या गलत? अपने उत्तर का कारण भी बताओ।
- नाटक का नाम 'थप्प रोटी थप्प दाल' क्यों है?
- कविता के पहले पद को दोबारा पढ़ो। वर्णन पर ध्यान दो। इसे पढ़कर जो चित्र तुम्हारे मन में उभरा, उसे बनाओ। बताओ, चित्र में तुमने क्या-क्या दर्शाया?
- डायरी में तुम अपने स्कूल के बारे में क्या लिखना चाहोगे?

- 'बाघ आया उस रात' कविता के आधार पर 'समाचार' लिखो।
- विद्यालय, गुरुजी, छुट्टी, बंदर, डंडा, पेड़, केला, ताली, बच्चे, भूख। इन शब्दों को पढ़कर तुम्हारे मन में कुछ बातें आई होंगी। इन सब चीज़ों के बारे में एक छोटी-सी कहानी बनाओ और अपने साथियों को सुनाओ।

भाषा / व्याकरणिक प्रश्न

ये प्रश्न विशेषतः भाषाई तत्त्वों पर आधारित होते हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों की भाषा संबंधी आधारभूत संकल्पना व प्रयोग कुशलता की जाँच की जाती है।

उदाहरण

- पाँच-पाँच बच्चों की टोली बना लो। अब अपनी-अपनी टोलियों के बच्चों के नाम रेल के डिब्बों पर लिखो। ...

  वर्णमाला याद है न? चलो, अब इन नामों को वर्णमाला के हिसाब से क्रम में लगाते हैं।
- नीचे कुछ वाक्य लिखे हैं। तुम्हें इनका अभिनय करना है। तुम चाहो तो कहानी में देख सकते हो कि इन कामों का ज़िक्र कहाँ आया है।

  i. बनठन कर घूमने के लिए निकलना

  ii. घड़ों पानी पड़ना

  iii. गर्मजोशी से स्वागत करना
- "पापा को वायुयान का चालक बनने की सूझी। इसके बाद उन्होंने अभिनेता बनने की सोची। इसके अलावा वे जहाज़ी भी बनना चाहते थे।"

  ऊपर के वाक्यों में 'उन्होंने' और 'वे' का इस्तेमाल पापा की जगह पर हुआ है। हम अक्सर एक ही शब्द को दोहराने की बजाय उसकी जगह किसी दूसरे शब्द का इस्तेमाल करते हैं। 'मैं', 'तुम', 'इस' भी ऐसे ही शब्द हैं।

  i. पाठ में से ऐसे शब्दों के पाँच उदाहरण छाँटो।

  ii. इनकी मदद से वाक्य बनाओ।
- नीचे लिखे वाक्य पढ़ो:

  i. मैं बस में बैठकर स्कूल जाती हूँ।

  ii. ख्वाजासारा का बस चलता तो वे बीरबल को निकाल देते।

  iii. बस! रुक जाओ। बस दो दिन की तो बात है। मैं आ जाऊँगी।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'बस' शब्द के अर्थ अलग-अलग हैं। अब इसी तरह 'चल' शब्द से वाक्य बनाओ।

संवेदनशीलता से संबन्धित प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों को विभिन्न मुद्दों (जैसे- समाज, पर्यावरण, जेंडर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों/व्यक्तियों तथा विविधता आदि से संबन्धित) के प्रति संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से रखे जाते हैं। ये प्रश्न विद्यार्थियों को समसामयिक विश्व से जोड़ने का कार्य भी करते हैं तथा उनमें सामान्य जागरूकता को भी विकसित करते हैं।

उदाहरण

- गुजरात में आदर के लिए नाम के साथ भाई, बहन जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। तेलुगु में नाम के आगे 'गारू' और हिन्दी में 'जी' जोड़ा जाता है। तुम्हारी कक्षा में भी अलग-अलग भाषा बोलने वाले बच्चे होंगे। पता करो और लिखो, वे अपनी भाषा में किसी को आदर देने के लिए किन-किन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं?
- इस कहानी में सेबों के खेतों और सीढ़ीनुमा खेत का ज़िक्र आया है। अनुमान लगाकर बताओ कि यह कहानी भारत के किस भौगोलिक क्षेत्र की होगी और वहाँ सीढ़ीनुमा खेती क्यों की जाती होगी?
- कई जगहों पर गाँवों में औरतें खेतों में काम करती हैं। तुम्हारे आसपास की औरतें और लड़कियाँ क्या-क्या काम करती हैं?
- स्वामीनाथन दादी के पास बहुत प्रसन्न और सुरक्षित महसूस कर रहा था। तुम इन हालातों में कैसा महसूस करती हो?

  i. दोस्त के घर में

  ii. जब तुम पहली बार किसी के घर जाती हो

  iii. रेलगाड़ी या बस में किसी सफ़र पर

  iv. जब तुम मुख्याध्यापक के कमरे में जाती हो
- क्या इला अपने पैर के अंगूठे से कुछ भी करना सीख पाती, अगर उसके आसपास के लोग उसको कुछ करने का मौका नहीं देते?

यदि हम रिमझिम के अभ्यास प्रश्नों का उपरोक्त वर्गीकरण के आधार पर विश्लेषण करें तो इन पाठ्यपुस्तकों में अधिकांश अभ्यास प्रश्न रुचिकर व स्तरानुसार हैं। ये अभ्यास प्रश्न बच्चों को मुख्य भाषाई कौशलों में शामिल होने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराते हैं। इसके साथ ही विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता, रचनात्मकता, सृजनात्मकता आदि क्षमता का विकास करने में सक्षम दिखाई देते हैं। इन प्रश्नों की विविधता व रोचकता बच्चों की हिन्दी भाषा अध्ययन में रुचि को बढ़ाने में भी सहायक है। बच्चों में भाषा के व्यावहारिक ज्ञान व समझ हेतु, पुस्तक में संवाद निर्माण, कला व अभिनय आदि पर आधारित प्रश्नों को उपयुक्त स्थान दिया गया है। चिंतनपरक प्रश्नों के माध्यम से बच्चों को कई सामाजिक व पर्यावरण से जुड़े संवेदनशील मुद्दों के प्रति भी सजग बनाने का प्रयास किया गया है। भाषा विश्लेषण व व्याकरण से जुड़े प्रश्न संदर्भगत भाषा प्रयोग को मुख्य आधार बनाकर निर्मित किए गए हैं। अतः हमारा प्रयास रहना चाहिए कि हम इस प्रकार के प्रश्नों का उपयोग पाठ्यपुस्तक से करें और यदि ऐसे प्रश्नों की संख्या सीमित हो तो हम नए प्रश्नों का निर्माण करें या उनमें आवश्यकतानुसार बदलाव करें।

2.13 पाठ्यपुस्तक केन्द्रित शिक्षण की सीमाएँ और सुझाव

“शायद ही कोई साल ऐसा जाता हो जब स्कूली सत्र की शुरुआत के साथ पाठ्यपुस्तकों को लेकर हाय-तौबा न मचती हो। इस साल का शोर अब सुनाई पड़ने लगा है और हम यह मानकर चल सकते हैं कि शोर बारिश के अंत के साथ समाप्त होगा। इस सालाना शोर का स्रोत यह मान्यता है कि पाठ्यपुस्तकें न हों तो पढ़ाई नहीं हो सकती। यानी बच्चों को शिक्षा देना मुख्यतः पाठ्यपुस्तकों की व्याख्या करना है। इस मान्यता में थोड़ा और गहरे उतरें तो हम पाएँगे कि मूल विचार दरअसल यह है कि जो कुछ पाठ्यपुस्तक में लिखा है, वही शिक्षक के लिए महत्त्वपूर्ण है और वही छात्रों के लिए भी। विद्या, ज्ञान और व्यक्तित्व के विकास के दायरे जितने मर्ज़ी खुले हुआ करें, कक्षा में अध्यापक की वाणी तो उन्हीं स्वर्णाक्षरों की मीमांसा करेगी जो पाठ्यपुस्तक के शासन द्वारा स्वीकृत पन्नों में छपे हैं और परीक्षा के लिए निश्चित पाठ्यक्रम की तंग तालिका में समाए हैं।

इस विचारधारा की तह में जाने के लिए हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था के उस दौर पर दृष्टि डालनी होगी जब उसका आधारभूत ढाँचा विकसित हुआ था। हमें इस लोकप्रिय मान्यता से अपने को मुक्त भी करना होगा कि हमारी शिक्षा पद्धति ब्रितानी पद्धति पर ढली है। दरअसल भारत की शिक्षा पद्धति और ब्रिटेन की शिक्षा पद्धति में कोई बड़ी समानता न आज है, न कभी पहले थी। इतना अवश्य है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था का ढाँचा ब्रितानी साम्राज्यवादी प्रशासन ने तैयार किया। पाठ्यपुस्तकों के ज़रिए अध्यापक और छात्रों पर नियंत्रण उस ढाँचे का महत्त्वपूर्ण अंग था और यह अंग शेष ढाँचे की तरह आज भी तंदुरुस्ती से जीवित है।

पाठ्यपुस्तकों को पाठ्यक्रम का पर्याय मानने की प्रवृत्ति की बुनियाद हमें उपनिवेशवाद की इस मूल अवधारणा में मिलती है कि गुलाम बना हुआ समाज ज्ञान का उपभोक्ता तो हो सकता है, उत्पादक नहीं हो सकता। इस अवधारणा के बल पर उपनिवेशवादी शिक्षा व्यवस्था जिसे हम आज तक भोग रहे हैं, ज्ञान की पुनर्रचना करने का अधिकार बच्चे से छीन लेती है। सारा ‘ज़रूरी’ माना गया ज्ञान उसे ‘मान्यता प्राप्त’ पाठ्यपुस्तकों की शक्ल में परोस दिया जाता है। छात्र से कहा जाता है कि वह इसी ज्ञान का सेवन करे, उसे कंठस्थ कर ले। अध्यापक की ज़िम्मेदारी इसी रूप में परिभाषित की जाती है कि वह ज्ञान की ‘स्वीकृत’ खुराक छात्र के गले उतारे। कितनी खुराक गले उतरी, इसी बात की जाँच के लिए परीक्षा ली जाती है। इस समूची प्रक्रिया में यह गुंजाइश कहीं नहीं है कि छात्र और शिक्षक प्रकृति व समाज के अवलोकन और दैनिक जीवन के अनुभवों के परीक्षण से ज्ञान पैदा करें और विरासत से प्राप्त ज्ञान की समीक्षा करें।
(कृष्ण कुमार जी के लेख ‘सरस्वती जहाँ पाठ्यपुस्तकों में कैद हैं’ का अंश)”

वर्तमान परिस्थितियों और पाठ्यपुस्तकों पर शिक्षकों की निर्भरता के आलम को देखकर हमारे लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि हम पूरी तरह से उनकी शिक्षण प्रक्रियाओं को बदलने का प्रयास न कर इस ओर चरणों में बढ़ें। इस हेतु हमें

हमें शिक्षकों की प्रक्रियाओं के बीच उन छोटे-छोटे अवसरों की तलाश करनी होगी जिनमें थोड़े-बहुत परिवर्तन या जोड़-घटाव के साथ उन्हें बच्चों के सीखने की दृष्टि से अधिक सार्थक और रुचिकर बनाया जा सके।

शिक्षकों की प्रक्रियाओं के बीच उन छोटे-छोटे अवसरों की तलाश करनी होगी जिनमें थोड़े-बहुत परिवर्तन या जोड़-घटाव के साथ उन्हें बच्चों के सीखने की दृष्टि से अधिक सार्थक और रुचिकर बनाया जा सके।

आमतौर पर अध्यापकों के पास एक ही चीज़ नज़र आती है और वह है- पाठ्यपुस्तक। उसमें दिए पाठों को पढ़ना, उन्हें याद करना, पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों का लिखित और कभी-कभी मौखिक रूप से उत्तर देना, बस यही सब क्रियाएँ समूची अधिगम प्रक्रिया का आधार होती हैं। नियमित रूप से होने वाली ये समस्त गतिविधियाँ बहुत ही सीमित, बाध्यकारी और उकताहट भरी होती हैं, और इनका बच्चों की समझ और क्षमताओं से बहुत ही सीमित संबंध होता है।

उपरोक्त परिस्थितियों में ज्ञान सृजन में बच्चों की सक्रिय भूमिका को सुनिश्चित करने के लिए हमें प्रमुख रूप से दो कार्य करने होंगे–

- पहला तो यह कि पाठ्यपुस्तकों को कक्षा में बरतने की प्रक्रिया में परिवर्तन किया जाए, जिससे कि इनके द्वारा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जा सके।
- दूसरा यह कि भाषा की कक्षा को मात्र पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित न रखकर इसके साथ ही साथ कुछ इस तरह की पाठ्य सामग्री जुटाना जो एक तरफ तो बच्चों को अपनी समझ निर्मित करने की स्वाभाविक क्षमता के विकास में सहयोग करे, दूसरी तरफ उन पाठों को भी वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में समझने में मदद करे।

यहाँ हम इन्हीं दोनों बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तकों से जुड़ी धारणाओं, इनकी प्रकृति, इनसे जुड़ी अपेक्षाओं, और इनके साथ कार्य की प्रक्रियाओं को प्रस्तुत करेंगे।

अगर पाठ्यपुस्तकों के लेखक अवधारणाओं के विस्तार, गतिविधियों, समस्याओं पर अचरज करने के अवसर देने पर, चिंतन को बढ़ावा देने वाले अभ्यासों पर एवं छोटे समूह में कार्य करने पर ध्यान दें तो कक्षा में जल्दी-जल्दी पढ़ाने, भारी-भरकम गृहकार्य और निजी ट्यूशन के तनाव वाले त्रिकोणीय संबंध को कमज़ोर किया जा सकता है।

सहायक पुस्तकों, कार्यपुस्तिकाओं और अतिरिक्त पठन की बारी इसके बाद आती है। कुछ विषयों, यथा भाषा, के लिए ऐसी सामग्री की आवश्यकता को दोबारा से पहचानने की ज़रूरत नहीं है। ऐसी सामग्री की ज़रूरत तो अच्छे से पहचानी जा चुकी है। लेकिन इस प्रकार की सामग्री की अवधारणा पर एक नई सोच की ज़रूरत है। वर्तमान पुस्तकों में विभिन्न विधाओं के अरुचिकर पाठ हैं, और कार्यपुस्तिकाओं में उसी तरह के अभ्यासों को दोहरा दिया जाता है जो पहले से ही पाठ्यपुस्तकों में मौजूद होते हैं।

बहुश्रेणीय कक्षाओं (बहुश्रेणी या बहुक्षमता) को उन पाठ्यपुस्तकों के उपयोग से हटने की ज़रूरत है जो एकल श्रेणी कक्षाओं के लिए बनाई जाती हैं। एकल श्रेणी कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें इस मान्यता पर आधारित होती हैं कि शिक्षक सभी बच्चों को एक साथ ही संबोधित करेगा, सभी बच्चों का स्तर एक ही है और उनसे एक ही तरह की उम्मीदें की जाएँगी। बल्कि ज़रूरत इस बात की है कि शिक्षकों को अन्य

वैकल्पिक सामग्री उपलब्ध कराई जाए, जो पाठ एवं इकाई योजनाएँ बनाने में मदद करे।

भारतीय समाज की बाहुल्यवादी और विविध प्रकृति निश्चित रूप से यह मांग करती है कि न केवल विविध प्रकार की पाठ्यपुस्तकें छापी जाएँ, बल्कि अन्य सामग्री भी तैयार की जाए, ताकि बच्चों की रचनात्मकता, सहभागिता और रुचियों का इस तरह विकास हो सके कि उनके अधिगम में बढ़ोत्तरी हो।

कोई एक पाठ्यपुस्तक विविध समूह के बच्चों की विस्तृत आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती है। साथ ही, किसी भी विषयवस्तु या अवधारणा को पढ़ाने के कई ढंग हो सकते हैं। स्कूल चाहे सरकारी हों या निजी, उनके पास अलग-अलग विषयों के लिए पाठ्यपुस्तकों के विकल्प होने चाहिए। अलग-अलग बोर्ड या पाठ्यपुस्तक ब्यूरो एक से अधिक पुस्तकों की शृंखला प्रकाशित करने के बारे में सोच सकते हैं या अन्य प्रकाशकों की पुस्तकों को चुन सकते हैं, ताकि स्कूलों को चयन के कई विकल्प दिए जा सकें।

1953 में माध्यमिक शिक्षा आयोग की रपट में इस बात पर ज़ोर दिया गया था कि "किसी विषय के अध्ययन के लिए केवल एक पाठ्यपुस्तक का प्रावधान नहीं होना चाहिए, बल्कि दिए गए मानकों के अनुसार कई पुस्तकें प्रस्तावित होनी चाहिए, और विकल्प चुनने की छूट स्कूल को मिलनी चाहिए।" (एन॰सी॰एफ़॰ 2005 से)

भाषा शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों के उपयोग से संबन्धित संभावित अवलोकनीय कक्षा प्रक्रियाएँ (ऑब्ज़र्वेबल क्लासरूम प्रैक्टिसेज़) और उनके संकेतक

कक्षा एक व दो के लिए	कक्षा तीन से पाँच के लिए
1. कक्षा 1 में शुरुआत सीधे वर्णमाला लेखन के कार्य की बजाय बातचीत, खेल, कविता-कहानी, चित्रकला जैसी गतिविधियों से की जाती है। 2. पाठ्यपुस्तक के प्रारंभ में दिए गए चित्रों और चित्र कथाओं का और कविता-कहानी आदि का अच्छा रचनात्मक उपयोग कक्षा में किया जाता है। 3. पाठ्यपुस्तक में दी गई बातों को परिवेश और बच्चों के अनुभवों से जोड़ा जाता है। 4. शिक्षक पाठों से परिचित हैं और पाठ की तैयारी से कक्षा में आते हैं। 5. पाठ से संबंधित TLM बनाए जाते हैं और उनका उपयोग भी किया जाता है।	1. कक्षा में केवल पाठ्यपुस्तक केंद्रित काम नहीं होता है, वरन् बाहरी सन्दर्भ भी कक्षा में लाए जाते हैं। 2. सभी बच्चों को पाठ पढ़ने के मौके दिए जाते हैं। जिन बच्चों को पढ़ने में मुश्किल आती है, उन पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है। 3. पाठ पढ़ने के बाद बातचीत में भी सभी बच्चों को समान अवसर दिए जाते हैं। 4. शिक्षक उन बच्चों पर भी योजनाबद्ध रूप से ध्यान दे पाते हैं जिन्हें पढ़ने या लिखने में विशेष मदद की ज़रूरत होती है। 5. शिक्षक का मुख्य ध्यान पाठ्यपुस्तक में दिए गए पाठों के ज़रिए भाषा क्षमताओं के विकास पर रहता है, जो सोचने-समझने और उसको अभिव्यक्त करने के अवसरों में स्पष्ट नज़र आता है।

कक्षा एक व दो के लिए	कक्षा तीन से पाँच के लिए
6. पाठ्यपुस्तकों में दिए गए अभ्यासों के अलावा भी नए अभ्यास कराए जाते हैं। 7. पाठ्यपुस्तक की सीमा से आगे बढ़कर, बच्चों को खुद सोचकर लिखने-सोचने के अवसर दिए जाते हैं। 8. पाठ्यपुस्तक में दी गई कविता-कहानी पर संवाद और उसे पढ़ने-लिखने से जोड़ने के लिए शिक्षक अपनी ओर से कविता-कहानी शिक्षण के अभ्यास करवाते हैं। 9. पाठ्यपुस्तक के अलावा जिस सामग्री का चयन किया जाता है, वह कक्षा और बच्चों के स्तर और सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ को ध्यान में रखकर किया जाता है। 10. पाठ्यपुस्तक शिक्षण के दौरान मौखिक और लिखित रूप से (जैसे कार्यपत्रक द्वारा) व्यक्तिगत, छोटे समूह या पूरी कक्षा के स्तर पर आकलन किया जाता है। 11. आकलन का सतत दस्तावेज़ीकरण किया जाता है और उसके आधार पर आगे की योजना बनाई जाती है।	6. पाठ पढ़ाने के लिए आवश्यक सामग्री क्या होगी, इसकी समझ है और उसका सहजता से कक्षा में उपयोग भी करते हैं। 7. पाठ्यपुस्तक में उपलब्ध सामग्री के साथ ही अन्य पठन सामग्री का स्तर और प्रासंगिकता अनुसार चयन कर कक्षा में उपयोग किया जाता है। 8. पाठ्यपुस्तक में दिए अभ्यास तो किए ही जाते हैं, साथ ही स्वतंत्र लेखन के अवसर भी दिए जाते हैं और इस दिशा में प्रयास सराहे जाते हैं। 9. बच्चों की प्रगति का आकलन नियमित रूप से मौखिक और लिखित दोनों प्रकार से किया जाता है और उसका उचित दस्तावेज़ीकरण भी किया जाता है। 10. आकलन के आधार पर फीडबैक भी बच्चे को दिया जाता है, उसके आधार पर स्वयं आगे की योजना बनाई जाती है। 11. बच्चे की प्रगति को अभिभावकों के साथ भी समय-समय पर साझा किया जाता है। 12. बच्चों द्वारा लिखी गई सामग्री को पहले कक्षा में डिस्प्ले किया जाता है, उसके बाद पोर्टफोलियो में रखा जाता है और उस पर समग्र टिप्पणी लिखी जाती है। 13. कक्षा में आकलन के लिए पाठ से संबंधित और भाषा के कौशलों से संबंधित कार्यपत्रकों का प्रयोग किया जाता है। 14. केवल बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यपुस्तक के अलावा भी अन्य बेहतर पाठ्यपुस्तकों की मदद ली जाती है और उन्हें बच्चों को भी उपलब्ध कराया जाता है।

पाठ्यपुस्तक का उपयोग और पढ़ना-लिखना (कक्षा1-2)

वर्तमान परिदृश्य में देखें तो पाते हैं कि पाठ्यपुस्तकें कक्षा में सबसे सशक्त उपस्थिति दर्ज कराती हैं और पूरी कक्षा इन्हीं के इर्द-गिर्द संचालित होती है। लेकिन यदि बात आरंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण की करें तो कोई एक स्पष्ट तस्वीर नहीं उभरती। कहने का तात्पर्य यह कि भाषा सीखने की अपनी एक प्रचलित परिपाटी है, जहाँ भाषा सिखाने की शुरुआत वर्णमाला सिखाने से होती है और पाठ्यपुस्तकें इस प्रक्रिया के जितनी नजदीक या दूर होती हैं, कक्षा में उनका स्थान भी वैसा ही होता है। आमतौर पर जहाँ पाठ्यपुस्तकें वर्णपद्धति की नुमाइंदगी करती हैं, वहाँ तो कक्षा में उनका उपयोग नज़र आता है, लेकिन जहाँ वे ऐसा नहीं करती, वहाँ अधिकतर शिक्षक इनका उपयोग नहीं करते।

यहाँ कहने का आशय यह है कि विभिन्न राज्यों में भाषा शिक्षण के लिए भिन्न-भिन्न अप्रोच को लेकर प्रयोग किए जा रहे हैं, किन्तु अनुभव यही कहता है कि इन सभी राज्यों में पढ़ने-लिखने से जुड़ी समस्याएँ कमोबेश एक जैसी ही हैं। इसका प्रमुख कारण यही है कि पाठ्यपुस्तक की अप्रोच चाहे जैसी हो, अधिकतर शिक्षक आज भी भाषा को उसी तरह से पढ़ाते हैं जैसे कि वे पढ़कर आए थे। इस विषय पर और बात अध्याय के अंतिम खंड में की जाएगी, यहाँ हम पाठ्यपुस्तक से जुड़ी प्रक्रियाओं और चुनौतियों को समझने का प्रयास करेंगे। जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है, अधिकतर विद्यालयों में बच्चों के पास उपलब्ध एकमात्र पठन सामग्री पाठ्यपुस्तक ही होती है। इस स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि हम इस संसाधन के अपेक्षित और समुचित उपयोग के लिए प्रयास करें। प्रस्तुत हैं इस प्रयास के समक्ष आने वाली चुनौतियाँ और संबन्धित मान्यताएँ–

सभी राज्यों में पढ़ने-लिखने से जुड़ी समस्याएँ कमोबेश एक जैसी ही हैं। इसका प्रमुख कारण यही है कि पाठ्यपुस्तक की अप्रोच चाहे जैसी हो, अधिकतर शिक्षक आज भी भाषा को उसी तरह से पढ़ाते हैं जैसे कि वे पढ़कर आए थे।

- एक बड़ी चुनौती कक्षाओं के पूरी तरह पाठ्यपुस्तक केन्द्रित हो जाने की है। इसके कारण शिक्षक का पूरा ध्यान और प्रयास पाठ्यक्रम को पूरा कराने पर होता है। इस कारण बच्चे और उनका सीखना कभी मुद्दा बन ही नहीं पाता।
- पाठ्यपुस्तक केन्द्रित होने की एक वजह यह भी है कि सम्पूर्ण शिक्षा तंत्र जाने-अनजाने विद्यालयों और शिक्षकों पर यह दबाव भी बनाता है कि प्राथमिकता कोर्स पूरा करना है।
- तो शिक्षक की पहली जवाबदेही कोर्स को लेकर बन जाती है, और बच्चे का सीखना पार्श्व में चला जाता है।
- कुछ शिक्षक कक्षा एक और दो में पाठ्यपुस्तकों का उपयोग ही नहीं करते और इसके पीछे उनकी मान्यता यह होती है कि किताब तक पहुँचने से पहले बच्चे को पूरी वर्णमाला और बारहखड़ी का ज्ञान होना आवश्यक है।
- आरंभिक कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों के उपयोग का एक उद्देश्य बच्चों को किताबों की ओर आकर्षित करना भी होता है। सत्र के आरंभ में नई किताबों की प्रतीक्षा और पहले ही दिन उन्हें पूरा पलट जाना हमें भी याद होगा। किन्तु कुछ स्कूलों में किताबें आवश्यक संख्या में पहुँचती ही नहीं, जिसके कारण आगे की कक्षाओं में जा चुके बच्चों से किताबें लेकर दूसरे बच्चों को दे दी जाती हैं। ये किताबें पुरानी, फटी, कई हाथों से गुज़री हुई होती हैं और बच्चे को स्वयं की ओर आकर्षित करने में पूरी तरह असमर्थ भी। फलस्वरूप पूरे साल में एक बार मिलने वाला टेक्स्ट का आनंद भी बच्चे से छिन जाता है।

पाठ्यपुस्तक केन्द्रित होने की एक वजह यह भी है कि सम्पूर्ण शिक्षा तंत्र जाने-अनजाने विद्यालयों और शिक्षकों पर यह दबाव भी बनाता है कि प्राथमिकता कोर्स पूरा करना है।

- पाठ्यपुस्तकों पर ज़रूरत से अधिक आत्मनिर्भरता के कारण शिक्षकों के लिए पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम

का एक मूर्त रूप बन जाती है। उसमें जो कुछ भी है, केवल उसे ही पढ़ाया जाना ज़रूरी समझा जाता है। दिए गए पाठों को पढ़ाना, उन्हें याद कराना, पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों का लिखित, कभी-कभी मौखिक रूप से उत्तर देना जैसी प्रक्रियाएँ ही समूची अधिगम प्रक्रिया का आधार होती हैं।

- नियमित रूप से होने वाली ये गतिविधियाँ बहुत ही सीमित, बाध्यकारी और बोरिंग हैं, जिनका बच्चों की समझ और क्षमताओं से बहुत कम संबंध होता है।
- पाठ योजना निर्माण और उसका कक्षा में क्रियान्वयन एक महत्त्वपूर्ण अपेक्षा है, किन्तु शिक्षक इस प्रक्रिया का पालन नहीं करते। विभागीय मजबूरियों के कारण यदि शिक्षक योजनाओं को लिखने की खानापूर्ति करते भी हैं तो उनकी उस कागज़ी योजना का उनके स्वयं के पढ़ाने के तरीके से कोई लेना-देना नहीं होता।
- पाठ पढ़ाए जाने के क्रम में यह भी होता है कि कक्षा में मौजूद अलग-अलग स्तर के बच्चों के लिए भी एक ही प्रक्रिया का पालन किया जाता है, जो कि सबके लिए समान होती है। परिणामस्वरूप होता यह है कि वह प्रक्रिया कुछ बच्चों के लिए तो कारगर होती है, लेकिन कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जिनके लिए वह निरर्थक और समझ में न आने वाली होती है।

पाठ पढ़ाए जाने के क्रम में यह भी होता है कि कक्षा में मौजूद अलग-अलग स्तर के बच्चों के लिए भी एक ही प्रक्रिया का पालन किया जाता है, जो कि सबके लिए समान होती है। परिणामस्वरूप होता यह है कि वह प्रक्रिया कुछ बच्चों के लिए तो कारगर होती है, लेकिन कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जिनके लिए वह निरर्थक और समझ में न आने वाली होती है।

- इससे विभिन्न बच्चों के शैक्षणिक स्तर में पहले से मौजूद अंतर बढ़ता जाता है और यह कुछ बच्चों की निराशा और स्कूल से दूरी का कारण भी बनता है।
- एक ही पुस्तक साल भर पढ़ाने का एक परिणाम यह भी होता है कि बार-बार पढ़ने से कुछ पाठों की पंक्तियाँ याद हो जाती हैं और फिर शिक्षक के समक्ष उन्हें हूबहू उच्चरित करने से शिक्षक को यह महसूस होता है कि बच्चा पाठ को पढ़ रहा है, लेकिन वह बस रटे हुए को दोहरा रहा होता है, जिसका कि पढ़ने से दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं होता।
- कक्षा 2 और 3 की पाठ्यपुस्तकों में कहानी, कविताएँ आदि दी जाती हैं और अपेक्षा यह रहती है कि बच्चे इन्हें समझते हुए पढ़ने का आनंद लें। लेकिन इन पाठों को जिन प्रक्रियाओं के तहत कक्षाओं में पढ़ाया जाता है (एक-एक बच्चे से पाठ पढ़वाना, शिक्षक द्वारा पाठ को समझा दिया जाना और निहित अभ्यास बोर्ड पर करा देना), उनसे पाठ्यक्रम पूरा होने का भ्रम तो बन जाता है, मगर भाषा के उद्देश्य और कौशल विकसित होने के कोई अवसर इन कक्षाओं में दिखाई नहीं देते।
- कक्षा में होने वाले अधिकतर लिखित अभ्यास निहायत ही नीरस और प्रक्रिया में नकल या दोहरान से जुड़े हुए होते हैं। इसके अतिरिक्त पाठ के अंत में दिए गए अभ्यास प्रश्न भी अधिकतर ऐसी ही नीरस कवायद को समेटे रहते हैं जिनको करते हुए बच्चों को ज़रा भी आनंद नहीं आता और वे ठीक-ठीक लिखना सीखने से पहले ही लिखने से ठीक-ठाक नफरत करने लगते हैं।
- बात आकलन की करें तो कुछ राज्यों की पाठ्यपुस्तकें यहाँ भी निराश करती हैं और उनके पाठों के अंत में दिए गए अभ्यास के अधिकतर प्रश्न विषयवस्तु में दी गई जानकारियों से अधिक कुछ और जाँचते नज़र नहीं आते।

- बात आरंभिक भाषा की कक्षाओं की करें तो यहाँ स्थिति और भी गंभीर नज़र आती है। इसका कारण है शिक्षण प्रक्रियाओं में पाठ्यपुस्तक की अपेक्षाओं की भी पूरी तरह अवहेलना। अधिकतर कक्षाओं में भाषा सिखाने के तरीके और पाठ्यपुस्तक की अप्रोच में कोई तालमेल नज़र नहीं आता।
- पाठ्यपुस्तकें भी इस बात पर ज़ोर देती हैं कि बच्चों की मातृभाषा को कक्षा में स्थान दिया जाए, किन्तु यह भी मुश्किल से ही होता दिखाई देता है।

बात कक्षा एक की पाठ्यपुस्तकों की करें तो वर्तमान में इनमें एकरूपता नज़र नहीं आती। विभिन्न राज्यों में लागू ये पाठ्यपुस्तकें भाषा शिक्षण के भिन्न-भिन्न नज़रियों को पोषित करती चलती हैं। उदाहरण के लिए,

- कहीं तो पाठ्यपुस्तकें सीधे वर्णमाला वाले क्रम में ही अक्षर ज्ञान कराती नज़र आती हैं। यहाँ हम देखते हैं कि सिखाए जाने वाले वर्ण से आरंभ होने वाले दो से चार शब्दों को चुना गया है और फिर इन्हीं शब्दों के साथ अभ्यास से इस वर्ण को सिखाया जाना अपेक्षित है।
- वहीं कुछ अन्य राज्यों में वर्णमाला के क्रम से इतर वर्णों को 3-3 या 4-4 के समूहों में रखते हुए सिखाने का प्रयास है। यहाँ भी हम देखते हैं कि वर्णों के समूह अलग-अलग बने हैं। जैसे यदि एक पाठ्यपुस्तक में पहला समूह 'घ, र, च, ल' वर्णों का है तो वहीं दूसरी पाठ्यपुस्तक में यह 'ग, म, न, र' वर्णों का है।
- अंतर और भी रूपों में नज़र आते हैं, जैसे यदि एक पाठ्यपुस्तक में इन वर्ण समूहों को सीखने-सिखाने के लिए संदर्भ के रूप में एक ऐसी कविता का उपयोग किया गया है जिसमें उन वर्णों से संबन्धित शब्द डाल दिए गए हैं। वहीं दूसरी पाठ्यपुस्तक में प्रत्येक वर्ण के लिए उसी से आरंभ होने वाले एक शब्द का चुनाव करते हुए उस शब्द के इर्द-गिर्द दो छोटी लयात्मक पंक्तियों की रचना कर दी गई है और अपेक्षा यह है कि शिक्षक बच्चों को उन पंक्तियों से शुरू करके दिए गए शब्द और उसके चित्र तक आएँगे, और फिर शब्द से उसके प्रथम ध्वनि और उसके लिपि चिह्न तक।
- इसके अतिरिक्त जब हम एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक देखें तो पाते हैं कि यहाँ आरंभ संदर्भों (कविता/कहानी) से हो रहा है और फिर उसी संदर्भ से शब्द और वर्ण की यात्रा।

2.13.1 पाठ्यपुस्तक पर काम के सुझाव

- यह ध्यान रखना कि पाठ्यपुस्तकें माध्यम हैं, लक्ष्य नहीं। इसका तात्पर्य यह है कि पाठ्यपुस्तक में दिए गए पाठ को पढ़ाने का उद्देश्य उसकी विषयवस्तु में दी गई जानकारियों को रटाना या याद कराना नहीं, बल्कि विषयवस्तु की सहायता से अपेक्षित भाषाई कौशलों को हासिल करना है।
- पाठों पर काम के लिए पूर्व तैयारी आवश्यक है। इस तैयारी का मतलब है- पाठ को भाषाई उद्देश्यों, बच्चों की रुचियों, उनके परिवेश, उनके पूर्वानुभवों, स्तर और परिचित संदर्भों से जोड़कर पढ़ाने की तैयारी।
- शिक्षक सामान्यतः कुछ परम्परावश और कुछ विभागीय आदेशों के चलते पाठ्यपुस्तक को पाठ के क्रमानुसार ही पढ़ाते हैं। जब शिक्षक 'सीखने के प्रतिफलों' को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य की योजना बनाने का महत्त्व समझेंगे, पाठ्यपुस्तक को माध्यम के रूप में देखेंगे तो उन्हें यह भी समझ आएगा कि

पाठ्यपुस्तक के अंत में दी गई कविता-कहानियों से भी कक्षा की शुरुआत की जा सकती है।

- और उस क्रम में पाठ के शुरू में दिए गए वर्ण, शब्द आदि भी सीखे जा सकते हैं।
- यदि पाठों के अंत में दिए गए अभ्यास अधिकतर जानकारी वाले प्रश्नों तक ही केन्द्रित हों तो कक्षावार सीखने के प्रतिफलों के अनुरूप अभ्यास कार्य हेतु कार्यपत्रकों का उपयोग किया जाना चाहिए। इस प्रकार के कुछ कार्यपत्रक हैंडबुक के अंत में परिशिष्ट में दिए गए हैं।
- भाषा की कक्षाओं में कार्य के दौरान कक्षा 1 से 5 तक के लिए निर्मित एनसीईआरटी की 'रिमझिम' पाठ्यपुस्तक और इससे जुड़ी शिक्षक संदर्शिका 'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम' की सहायता लेनी चाहिए।

जब शिक्षक 'सीखने के प्रतिफलों' को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य की योजना बनाने का महत्व समझेंगे, पाठ्यपुस्तक को माध्यम के रूप में देखेंगे तो उन्हें यह भी समझ आएगा कि पाठ्यपुस्तक के अंत में दी गई कविता-कहानियों से भी कक्षा की शुरुआत की जा सकती है।

चित्रों, कहानी, कविता आदि पर कैसे कार्य किया जाए, इस पर विस्तार से बात की जा चुकी है। मूल काम यही है कि कैसे दिए गए पाठ को आधार बनाकर बोलने-सुनने और पढ़ने-लिखने से जुड़ी सार्थक संभावनाएँ तलाशी जाएँ।

अतः पाठ्यपुस्तकों पर कार्य के दौरान कुछ सामान्य चरणों को अपनाया जा सकता है, जैसे- शीर्षक पर चर्चा, पाठ में आए चित्रों पर चर्चा और उनकी सहायता से पाठ की विषयवस्तु या घटनाक्रम का अनुमान, पाठ में आए पात्रों पर चर्चा, पाठ को पढ़ना, फिंगर-रीडिंग कराना, पाठ में आए प्रमुख पात्रों, घटनाओं या स्थानों के नामों को चिह्नित करना, उन्हें लिखना, उनसे जुड़े अनुभवों पर चर्चा करना और उन्हें भी लिखना आदि।

पाठ्यपुस्तकों के साथ कार्य की प्रक्रिया (कक्षा 3-5)

कक्षा 1 और 2 में जहाँ बच्चे पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रिया में होते हैं, वहीं कक्षा 3 से लेकर आगे की कक्षाओं में इसे पढ़ने-लिखने के विस्तार के रूप में देखा जाता है, जिसके अंतर्गत पढ़ने-लिखने के क्षेत्र में कुछ अपेक्षित कौशलों की प्राप्ति का लक्ष्य रहता है। इसके लिए अपेक्षित है कि कक्षा में विविध प्रकार की सामग्री, जिसमें पाठ्यपुस्तक, बाल साहित्य और अन्य परिवेशीय सामग्री शामिल होती है, इनके द्वारा पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाएँ संचालित की जाएँ। कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों को क्या-क्या आना चाहिए, इसे इन कक्षाओं के लिए निर्धारित लर्निंग आउटकम्स के द्वारा समझा जा सकता है।

सीखने के ये प्रतिफल अपने आप में कक्षा प्रक्रियाओं का भी अनुमान देते हैं, अर्थात् हरेक प्रतिफल को पढ़कर यह समझा जा सकता है कि उसे पूरा करने के लिए कक्षा की प्रक्रियाएँ किस तरह की होंगी। उदाहरण के लिए,

यदि निम्नलिखित प्रतिफलों को देखें जिनमें कहा जा रहा है कि:

- दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते और प्रश्न पूछते हैं।
- सुनी रचनाओं की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बातों के लिए तर्क देते हैं।

उपरोक्त दोनों बिन्दु स्पष्टतः यह बता रहे हैं कि कक्षा में सीखने के इन दोनों प्रतिफलों की प्राप्ति तभी हो सकेगी जब कक्षा में बच्चों को अलग-अलग तरह की बातें, रचनाएँ आदि सुनने के अवसर मिलेंगे और उन पर व्यवस्थित बातचीत हो रही होगी, जिसमें कहानी की घटनाओं, पात्रों, चित्रों, शीर्षक आदि पर बातचीत शामिल होगी।

पाठ्य सामग्री

कक्षा 3 से 5 में शिक्षकों के द्वारा सामान्यतः पाठ्यपुस्तक का इस्तेमाल किया जाता है। इन पाठ्यपुस्तकों में शुरुआत में अधिगम प्रतिफल दिए होते हैं, जिनमें पाठ को पढ़ाने के उद्देश्य दिए गए होते हैं। कक्षा की प्रक्रियाएँ इन्हीं के द्वारा संचालित होती हैं। कुछ स्थानों पर पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य सामग्री जैसे- अन्य कहानी-कविताओं की पुस्तकें तथा पोस्टर, होर्डिंग आदि का भी प्रयोग किया जाता है।

2.13.2 कक्षा में अपनाई जा रही शिक्षण प्रक्रियाओं की चुनौतियाँ

1. अधिकांश शिक्षक इस बात को लेकर सचेत नहीं होते हैं कि भाषा पढ़ाने का मूल उद्देश्य बच्चों में भाषाई कौशलों का विकास करना है और उसके लिए पाठ्यपुस्तकें एक साधन मात्र है, साध्य नहीं और एक मात्र साधन भी नहीं। परिवेश में उपस्थित कोई भी प्रिंट सामग्री भाषा की कक्षा में काम में लाई जा सकती है।
2. हरेक पाठ को पढ़ाने के तत्कालीन उद्देश्य तो पाठ की शुरुआत में दिए होते हैं, जैसे- इस पाठ से मुहावरे सीखेंगे, सहायता के भाव को समझेंगे, विराम-चिह्न सीखेंगे आदि, मगर इस पाठ के द्वारा बच्चों में भाषाई कौशलों का विकास कैसे किया जाएगा, बहुतेरे शिक्षक इस बात के प्रति अनभिज्ञ होते हैं। इसी के चलते कक्षा में चाहे कुछ भी पढ़ाया जा रहा हो, कक्षा की प्रक्रियाएँ एक जैसी ही हुआ करती हैं, जिनमें शिक्षक पाठ को पढ़कर अर्थ समझा रहे होते हैं, बच्चे एक-एक करके पाठ को ज़ोर से पढ़ रहे होते हैं, उसके बाद पाठ के अभ्यास कराए जाते हैं।
3. यह भी देखा जाता है कि पाठ के बाद योग्यता-विस्तार या भाषा-कौशल की श्रेणी में कुछ ऐसे अभ्यास दिए होते हैं जो अपेक्षित कौशलों की ओर ले जाते हैं, मगर अक्सर कक्षा में या तो उस हिस्से को बिल्कुल छोड़ दिया जाता है या फिर उसे गृहकार्य के रूप में दे दिया जाता है।

> अधिकांश शिक्षक इस बात को लेकर सचेत नहीं होते हैं कि भाषा पढ़ाने का मूल उद्देश्य बच्चों में भाषाई कौशलों का विकास करना है और उसके लिए पाठ्यपुस्तकें एक साधन मात्र है, साध्य नहीं और एक मात्र साधन भी नहीं।

कक्षाओं में प्रायः तीन स्तर हो सकते हैं / अक्सर पाए जाते हैं। पहला स्तर उन बच्चों का होता है जो पढ़ना-लिखना सीख चुके हैं और उनके साथ पढ़ने-लिखने के विस्तार पर काम किया जाना है। दूसरा स्तर उन बच्चों का है जो कक्षा 3, 4 या 5 में आ चुके हैं, मगर पढ़ने-लिखने में अभी वे पहली-दूसरी के स्तर पर ही हैं। तीसरा स्तर उन बच्चों का होता है जो इन कक्षाओं में आ तो गए हैं, मगर उनके साथ पढ़ने-लिखने की शुरुआती प्रक्रियाओं पर ही काम किया जाना है। एक ही कक्षा में विविध स्तर के बच्चों के साथ काम कैसे किया जाना होगा, शिक्षक प्रायः इस बात से अनभिज्ञ रहते हैं और सभी बच्चों के लिए शिक्षण की एक ही प्रक्रिया अपनाते नज़र आते हैं।

बच्चों के सीखने के स्तर की चुनौतियाँ

1. कक्षा में अपनाई जा रही पारंपरिक कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं के चलते कक्षा 3 से 5 तक में भी अक्सर यह देखा जाता है कि बच्चे जो कुछ पढ़ रहे हैं, उसे ठीक से समझने और उस पर किसी तरह की बात करने में असमर्थ होते हैं।
2. इन कक्षाओं में आमतौर पर जिस तरह की प्रक्रियाएँ अपनाई जा रही होती हैं, उनके चलते अधिकांश बच्चों में वर्गीकरण, तुलना, विश्लेषण आदि कौशलों के विकास की संभावना न के बराबर होती है। इसी तरह से वाक्यों को क्रमबद्ध तरीके से संरचनाबद्ध करते हुए अपनी बात को मौखिक और लिखित रूप से अभिव्यक्त कर पाना भी बच्चों के लिए उतना ही कठिन होता है।
3. कक्षाओं में बच्चों के अनुभवों, सन्दर्भों को कम स्थान मिलता है, जिससे वे पाठ्यवस्तु से जुड़ने में कठिनाई महसूस करते हैं।
4. बहुत-से बच्चे एक ही कक्षा में पढ़ने-लिखने के अलग-अलग स्तरों पर होते हैं, जबकि कक्षा में शिक्षण एक ही तरीके से हो रहा होता है। इसके चलते जो बच्चे पीछे होते हैं, वे पीछे छूटते ही जाते हैं।

हमारे सामने उपस्थित चुनौतियाँ और अपेक्षाएँ

1. भाषा शिक्षण के वृहद उद्देश्य क्या हैं, किसी पाठ को पढ़ाने के उददेश्य क्या हैं, और किसी पाठ को पढ़ाने का तरीका क्या होगा जिसके आधार पर सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति की जा सकेगी, इन बातों की स्पष्टता हमें भी होनी चाहिए।
2. शिक्षकों की शिक्षण प्रक्रिया में दिक्कतें हैं, यह हमें समझ में आ रहा है। इसमें ऐसा क्या किया जा सकता है जिससे शिक्षकों के आत्मसम्मान को ठेस न लगे और उनकी कक्षा प्रक्रियाओं में वे सब बातें शामिल की जा सकें जिनसे अपेक्षित कौशलों को हासिल किया जा सके, इस बात की समझ होनी ज़रूरी है।

ऐसा क्या किया जा सकता है जिससे शिक्षकों के आत्मसम्मान को ठेस न लगे और उनकी कक्षा प्रक्रियाओं में वे सब बातें शामिल की जा सकें जिनसे अपेक्षित कौशलों को हासिल किया जा सके, इस बात की समझ होनी ज़रूरी है।

3. पाठ्यपुस्तक के कुछ पाठ (किन्हीं-किन्हीं राज्यों में पूरी पाठ्यपुस्तक) इस तरह से लिखे गए हैं कि न तो वे बच्चों के लिए रुचिकर हैं, न वे स्तरानुकूल हैं, और न ही वे भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। ऐसे में हम बिना पाठ्यपुस्तकों को कोसे या तो उन पाठों के साथ कुछ अतिरिक्त अभ्यास सुझा सकें, अतिरिक्त या वैकल्पिक टेक्स्ट सुझा सकें, या उन पाठों के साथ काम करने का तरीका सुझा सकें, जिनसे सीखने के प्रतिफलों तक पहुँचा जा सके, इस बात की स्पष्ट समझ होनी ज़रूरी है।
4. पाठ्यपुस्तकों में दिए गए अभ्यास (प्रश्न-उत्तर) अधिकतर जानकारीपरक होते हैं, अतः हर पाठ में कुछ कौशल आधारित प्रश्न कैसे बनाए जा सकेंगे, इसकी स्पष्टता होनी आवश्यक है।

2.13.3 पाठ्यपुस्तकों में विविध विधाओं को शामिल करने के उद्देश्य

पाठ्यपुस्तक में सामान्यतः विविध प्रकार के टेक्स्ट नज़र आते हैं, जिन्हें कविता, कहानी, एकांकी, संस्मरण, जानकारी परक आलेख आदि के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। बच्चे अपने जीवन में भाषा को अनेक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल करते हैं और विभिन्न प्रकार के टेक्स्ट का एक्स्पोज़र मिलना भाषा के इस्तेमाल को मज़बूत बनाता है। कविताओं और कहानियों से संबन्धित टेक्स्ट एक ओर जहाँ भाषा के रचनात्मक उपयोग को समझने में मदद करते हैं, वहीं यात्रा वृत्तांत या संस्मरण जैसे टेक्स्ट भाषा में विवरणों को रोचक ढंग से शामिल करने के तरीके को समझने में मदद करते हैं। यह एक्स्पोज़र बच्चों को लेखन की विविध शैलियों से परिचित कराता है, जिससे कि वे लिखने के अपने तरीके को विकसित करने की ओर बढ़ सकें। साथ ही साथ उनमें पढ़ने-लिखने के प्रति रुचि जाग्रत हो सके और वे उत्साही पाठक और अच्छे लेखक बन सकें।

> पाठ्यपुस्तकों में दिए गए अभ्यास (प्रश्न-उत्तर) अधिकतर जानकारीपरक होते हैं, अतः हर पाठ में कुछ कौशल आधारित प्रश्न कैसे बनाए जा सकेंगे, इसकी स्पष्टता होनी आवश्यक है।

> कविताओं और कहानियों से संबन्धित टेक्स्ट एक ओर जहाँ भाषा के रचनात्मक उपयोग को समझने में मदद करते हैं, वहीं यात्रा वृत्तांत या संस्मरण जैसे टेक्स्ट भाषा में विवरणों को रोचक ढंग से शामिल करने के तरीके को समझने में मदद करते हैं ।

स्पष्ट है कि यदि विविध प्रकार के इन टेक्स्ट को उपरोक्त उद्देश्यों के लिए पढ़ाना है तो कक्षा की प्रक्रियाएँ इन्हें ध्यान में रखकर ही निर्धारित की जानी चाहिए। और इन प्रक्रियाओं की बात पूर्व में ही विस्तार से की जा चुकी है।

शिक्षा के उद्देश्यों तक पहुँचना

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को पढ़ाए जाने वाले विषयों में पारंगत करना भर ही नहीं होता, बल्कि इससे कहीं आगे जाकर उनमें संवैधानिक और मानवीय मूल्यों का विकास करना भी होता है। इसकी ज़िम्मेदारी केवल भाषा की कक्षा की न होकर पाठ्यचर्या के सभी पक्षों और पाठ्यक्रम के सभी विषयों में निहित होनी चाहिए। बावजूद

इसके भाषा के शिक्षक की ज़िम्मेदारी इसे लेकर सबसे अधिक होती है। भाषा शिक्षक को यह ध्यान रखना होता है कि शिक्षण के दौरान ऐसी विषयवस्तु और कक्षा प्रक्रियाओं का चुनाव किया जाए जो भाषाई उद्देश्यों को पूरा करने के साथ ही साथ एक भारतीय नागरिक के लिए निर्धारित मूल्यों को भी स्वयं में समाहित किए हुए हों। *कहने का आशय यह है कि हम ऐसी विषयवस्तु के चयन से बचें जो लिंगभेद, जातिभेद, शोषण, अन्याय, अंधविश्वास, धर्मांधता आदि को किसी भी तरीके से महिमामंडित करता हो या उसका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से समर्थन करता हो। यदि पाठ्यपुस्तक में ऐसे संदर्भ आते हैं तो उनपर बच्चों के साथ आलोचनात्मक विमर्श किया जाए।* साथ ही प्रक्रियाएँ इस तरह की भी होनी चाहिए जिनसे समता, समानता, निष्पक्षता, बंधुत्व, मानवीय संवेदनाएँ आदि की प्राप्ति को भी सुनिश्चित किया जा सके। उदाहरण के लिए- कक्षा और स्कूल की गतिविधियों में हरेक बच्चे को समान अवसर, हरेक बच्चे को सम्मान, कक्षा में किसी भी धर्म, जाति या लिंग (लड़के-लड़कियों में, विविध धर्मों और जाति के बच्चों में) के आधार पर भेदभाव न हो, इसे सुनिश्चित करना।

भाषा शिक्षक को यह ध्यान रखना होता है कि शिक्षण के दौरान ऐसी विषयवस्तु और कक्षा प्रक्रियाओं का चुनाव किया जाए जो भाषाई उद्देश्यों को पूरा करने के साथ ही साथ एक भारतीय नागरिक के लिए निर्धारित मूल्यों को भी स्वयं में समाहित किए हुए हों।

2.14 कक्षा 3 से 5 में पढ़ने-लिखने में संघर्ष कर रहे बच्चों के साथ कार्य कैसे करें

आमतौर पर हम पाते हैं कि कक्षा 3 और इससे ऊपर की कक्षाओं में भी कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो पढ़ने और लिखने से संबन्धित स्तर आधारित अपेक्षित दक्षताओं से पीछे होते हैं। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि इन्हें जल्दी से जल्दी कक्षा स्तर की दक्षताओं तक लाया जाए और इस प्रक्रिया में इनके समृद्ध शब्द भंडार, विकसित मौखिक भाषाई क्षमताओं, और प्रिंट की समझ का भरपूर उपयोग किया जाए। इस हेतु यहाँ कुछ कक्षा प्रक्रियाओं को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, जिनका उपयोग बच्चों को अपेक्षित भाषाई दक्षता स्तर तक लाने के लिए किया जा सकता है।

वर्ड बिंगो

इसे शब्दों के साथ खेला जा सकता है। इसके लिए कुछ पाठों के नवीन शब्दों (20-25) को बोर्ड पर लिखा जाए। बच्चों को निर्देश दिया जाए कि अपनी कॉपी में एक चेकर बोर्ड बना लें (नीचे टेबल देखें)। बोर्ड पर जो शब्द लिखे हैं, उनमें से अपनी पसंद के 15 शब्द चुनकर कॉपी में लिख लें। अब आप रैंडमली कुछ शब्द बोलते जाएँ और बच्चों से कहा जाए कि बोले गए शब्द अपनी कॉपी में काटते चलें। जिन बच्चों की दो पंक्तियाँ कट जाएँ या तीन पंक्तियाँ कट जाएँ या कुल दस शब्द भी कट जाएँ तो वे उठकर 'बिंगो' बोलेंगे। अब जिसका बिंगो हो जाएगा, वह बच्चा आकर अपने-अपने शब्दों को पढ़ेगा और उन्हें बोर्ड पर कहाँ लिखा गया है, उसे दिखाएगा।

इसी की अगली कड़ी में बच्चों को समूह में बिठा दिया जाएगा और हर समूह बोर्ड पर लिखे गए शब्दों का इस्तेमाल करके कहानी बनाएगा और उसे सुनाएगा। बाद में वह कहानी चार्ट पर लिखी जाएगी और उसे हर बच्चे द्वारा पढ़ा जाएगा।

सुहाना	दराज़	जीवन	पट्टा	गुंजन
बेरहम	साम्राज्य	विस्तार	भ्रम	विहंगम
मृतप्राय	मस्तिष्क	रेवांचल	रंगभेद	कल्लोल

सांकेतिक श्रुतलेख

इसके लिए बच्चों को कुछ संकेत दिए जाएँगे, जिनके आधार पर उन्हें शब्द पहचानकर बताना और उसे लिखना होगा। जैसे- एक ऐसा शब्द जो चार अक्षरों का है और जिसका उपयोग सोने के लिए किया जाता है, .. ऐसा शब्द जिसके अंत में 'ज' आता है और वह शब्द कक्षा में लगा हुआ है आदि। इस तरह के संकेतों को आगे जाकर पहेलियों के रूप में बदला जा सकता है।

शब्द अंत्याक्षरी

इसे दो तरह से खेला जा सकता है। शुरुआत बोर्ड पर एक शब्द लिखकर की जाए, जिसके अंतिम अक्षर से बच्चा नया शब्द बोले, उसके बाद इसे थोड़ा जटिल करते हुए शब्द के बीच के अक्षर से नया शब्द बोलने या

लिखने को कहा जाए, उसके बाद उस अक्षर से शुरू होने वाली किसी विशेष मात्रा के या विशेष अर्थ वाले शब्द बोलने और लिखने को कहा जाए, इसके अगले चरण में इसमें संयुक्ताक्षर वाले शब्दों को शामिल किया जा सकता है। इसके बाद किसी कहानी को देते हुए उसमें किसी अक्षर या मात्रा से आने वाले शब्दों को खोजकर लिखने और बोलने के लिए कहा जा सकता है। इससे बच्चों का शब्द भण्डार बढ़ेगा और नए-नए शब्द खोजकर पढ़ने के प्रति उनकी रुचि जागेगी।

शब्द कहानी, शब्द कविता / चित्र कहानी, चित्र कविता

इसमें कक्षा में लगे हुए शब्दों से बच्चों को कहानी बनाने को कहा जा सकता है। एक बच्चा एक वाक्य बोले और अगला बच्चा उस वाक्य और उन शब्दों का सन्दर्भ लेते हुए कहानी की नई पंक्ति बनाएगा। इसी तरह से किसी चित्रकथा को देखकर उसके संवाद लिखने या चित्र को देखकर कहानी लिखने का काम करवाया जा सकता है। इसी तरह का काम विविध ध्वन्यात्मक शब्दों को देते हुए कविता बनाने, एक पंक्ति देकर उस कविता को आगे बढ़ाने, या चित्र को देखकर कविता बनाने को लेकर भी किया जा सकता है।

सहज पठन की प्रक्रियाएँ

कक्षा तीन से पाँच के स्तर पर ऐसे बच्चे भी हैं जिन्हें पढ़ने-लिखने में चुनौती आ रही है। इन बच्चों के साथ पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में सहजता लाने के लिए इनके साथ कार्य की रूपरेखा इन बच्चों की उम्र और इनके अनुभवों को ध्यान में रखकर बनाई जा सकती है। सहज पठन की इस पूरी प्रक्रिया में शुरू से अन्त तक एक प्रोग्रेशन हो, इस बात को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। प्रोग्रेशन से हमारा आशय कक्षा एक से लेकर पाँच तक भाषा शिक्षण की दक्षताओं से है। इन दक्षताओं को केन्द्र में रखकर इस पूरी प्रक्रिया को आगे बढ़ाना चाहिए। सैद्धान्तिक रूप से इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि इन बच्चों को यह भी आभास न हो कि उनके साथ कुछ विशेष उपक्रम अपनाए जा रहे हैं। बच्चों को इस बात के लिए विश्वास दिलाया जाना चाहिए कि उन्हें पढ़ना-लिखना आता है।

प्रक्रिया

तीसरी से पाँचवीं कक्षा तक के बच्चे वर्ण या शब्दों से पूरी तरह अनभिज्ञ नहीं होते। उन्हें कुछ वर्णों की पहचान होती है, कुछ बच्चे शायद सरल शब्द भी पढ़ पाते हैं, उन्हें मात्राओं वाले शब्दों को पढ़ने में दिक्कत होती है। साथ ही उनका संज्ञानात्मक स्तर कक्षा 1-2 की तुलना में विकसित होता है, अतः उनके साथ की जाने वाली गतिविधियाँ उनके मानसिक स्तर के अनुकूल हों, साथ ही गतिविधियाँ इस तरह की होनी चाहिए जिनमें उन्हें मिलेजुले शब्द पढ़ने को मिल सकें और उनके माध्यम से पढ़ना उनके लिए सहज और रुचिकर बन सके। सहज पठन की पूरी प्रक्रिया को हम आठ दिनों में विभाजित कर सकते हैं। इसमें हर दिन कुछ नई गतिविधियाँ शामिल होंगी, जिनके आधार में शब्द और उनके माध्यम से कुछ वर्णों पर काम करना तथा नए-नए शब्दों से परिचित होना निहित होगा। गतिविधियों का क्रम निम्नानुसार होगा।

पहला दिन

गतिविधि 1

सामान की सूची बनाना

(अ) बच्चों को कहा जाए कि उन्हें बाज़ार में या मेले में ले जाया जा रहा है। ऐसा कौन-सा सामान होगा जिसे वे बाज़ार से या मेले से खरीदना चाहते हैं? हर बच्चा अपनी पसंद की पाँच वस्तुओं को बताए। शिक्षक उन वस्तुओं को बोर्ड पर दर्ज कर ले। इन्हीं शब्दों को कक्षा में लगे चार्ट में भी लिख लिया जाए। अब इन सभी शब्दों को बोर्ड पर इंगित करते हुए बारी-बारी से पढ़ा जाए (कम से कम 3 से 4 बार), जिससे बोले गए शब्द लिखे कैसे जा रहे हैं, इसे बच्चे समझ पाएँगे। गतिविधि के अगले चरण में हर बच्चा अपने बोले हुए शब्दों को पहचानकर पढ़े, उन्हें कॉपी में उतारे और चार्ट पर लिखे शब्दों से उनका मिलान कर सके।

(आ) यही गतिविधि रसोई के सामान के साथ या किराने के सामान के साथ की जाए और नए आए शब्दों को बोर्ड पर और चार्ट पर लिखकर पढ़ा जाए। इन शब्दों में बच्चों की स्थानीय भाषा के शब्द भी आएँगे (आने देना चाहिए), उन्हें भी उसी तरह से दर्ज किया जाना चाहिए और पढ़ा जाना चाहिए।

दूसरा दिन– शुरुआत पहले दिन के शब्दों को दोहराने के साथ होनी चाहिए। इसके बाद अगली गतिविधि की ओर बढ़ा जाएगा।

गतिविधि 2

देखो और बोलो– बच्चों को कक्षा के बाहर भेजा जाए और उन्हें कहा जाए कि बाहर जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, उसे ध्यान से देखकर कक्षा में वापस आएँ। उन्होंने क्या-क्या देखा, वे बताते जाएँ और उन वस्तुओं को शिक्षक बोर्ड पर दर्ज करते जाएँ। ये शब्द चार्ट में भी लिखे जाएँगे।

अब इन शब्दों को 3 से 4 बार समूह में पढ़ा जाएगा, इसके बाद हर बच्चा अपने शब्दों को पहचानकर पढ़ेगा। अगले चरण में इसे थोड़ा और बढ़ाते हुए यह कहा जाए कि अब हर बच्चा अपने शब्द के साथ-साथ अपने दो दोस्तों के द्वारा बोले गए शब्द भी पढ़ेगा। इस तरह से हरेक बच्चा लगभग चार से पाँच शब्द पढ़ रहा होगा।

इसके बाद एक चरण और आगे बढ़ते हुए बच्चों को इसे पूरे वाक्य में बोलने को कहा जा सकता है। इसके लिए बोर्ड पर एक सैंपल वाक्य लिखा जाए।

जैसे- खेलंता ने कुत्ता और बच्चे देखे।

अब बच्चों को खेलंता के स्थान पर अपने या अपने मित्रों के नाम और उनके द्वारा देखी गई वस्तुओं के नाम बोलने को कहा जाए। बेहतर तो यही होगा कि कक्षा में बच्चों के नामों का चार्ट लगा हुआ हो, यदि चार्ट मौजूद न हो तो बच्चों के नामों को बोर्ड पर एक तरफ लिखा जा सकता है। इन वाक्यों को बच्चे अपनी-अपनी कॉपी में दर्ज कर लें। फिर दर्ज किए हुए वाक्यों को पढ़ा जाए।

तीसरा दिन

गतिविधि 3

दिन की शुरुआत कक्षा में लगे शब्दों को एक बार पढ़ने से ही होगी

इस दिन तक कक्षा में करीब 60-70 शब्दों का जखीरा इकट्ठा हो चुका होगा। इनमें से कुछ ऐसे वर्ण छाँट लिए जाएँ जिनका बातचीत में अधिकाधिक उपयोग होता है, उदाहरण के लिए- क, न, म, द, स, ल, प, र।

अब इन वर्णों को एक-एक करके बोर्ड पर लिखा जाए और बच्चों को कक्षा में घूमकर ऐसे पाँच-पाँच शब्दों को खोजकर कॉपी में लिखने के लिए कहा जाए जिनमें यह वर्ण या तो शब्द की शुरुआत में, बीच में या अंत में आ रहा हो। जब बच्चे उन शब्दों को लिख लें तो उन्हें उन शब्दों को पढ़ने के लिए कहा जाए। इसमें भी बच्चे को अपने और अपने दोस्त द्वारा लिखे हुए शब्दों को पढ़ने को कहा जाए।
इसके बाद बच्चों को समूह में बाँटकर उन्हें नीचे दी गई गतिविधि करने को कहा जा सकता है।

अंतिम शब्द तक पहुँचें
ककड़ी .... रोटी .... बेलन .... मकान .... बकरी .... ताला .... पतंग
माला .... बारिश .... मूली .... चाय .... बादल .... दाल .... बच्चे
(समूह की संख्या के मुताबिक इसे और बढ़ाया जा सकता है।)

चौथा दिन
गतिविधि 4 (अ)
पढ़ो और अभिनय करो
इस दिन चार्ट पर लगे सारे शब्दों को दोहराने के बाद बच्चों को कुछ चिट्स दी जाएँ, जिन पर कुछ मज़ेदार वाक्य लिखे हुए हों। हर बच्चे को अपना-अपना वाक्य पढ़कर उसमें लिखे मुताबिक अभिनय करके दिखाना होगा और बाकी बच्चे यह बताएँगे कि चिट में क्या लिखा हो सकता है। बच्चों के द्वारा अनुमान लगा चुकने के बाद चिट का वाक्य बोर्ड पर लिखा जाए और समूह में उसे पढ़ा जाए।
इस बात का ध्यान रखा जाए कि चिट्स में अधिकांश शब्द वे ही आएँ जो कक्षा में पहले पढ़े जा चुके हों। वाक्यों के नमूने कुछ इस तरह से हो सकते हैं–
1. घर से बाहर निकले और तेज़ बारिश आ गई।
2. घूमने गए और कुत्ता पीछे पड़ गया।
3. स्कूल आते समय चप्पल टूट गई।
4. काँच का गिलास हाथ से गिरकर टूट गया।
5. साइकिल की चेन उतर गई।

गतिविधि 4 (ब)
बूझो पहेली
इस गतिविधि में बच्चों को समूह में बैठाया जाए और उन्हें पहेलियों की चिट पढ़ने को और उसे बूझने को दी जाए।
1. मैं स्टील, काँच, पीतल का बनता हूँ और पानी पीने के काम आता हूँ।
2. मैं रंग-बिरंगी हूँ और हवा में उड़ती हूँ।
3. मेरा नाम तीन अक्षर का है और मैं लिखने के काम आता हूँ।
4. मैं हरा हूँ और टें-टें करता हूँ।

इन दोनों गतिविधियों में बच्चे पूरे वाक्यों को पढ़ने के अनुभव से गुज़र रहे होंगे और उन्हें समझने की प्रक्रिया में जा रहे होंगे।

पाँचवाँ दिन

गतिविधि 5

इस दिन कक्षा में एक कविता पर काम करवाया जाएगा। कविता नीचे दी जा रही है।

मेरा बस्ता

मेरा बस्ता बड़ा बेकार
बोझ है इसमें बेशुमार
रोज़-रोज़ जाना पड़ता है
इसको स्कूल लेकर यार
कॉपी किताबें ढेर सारी
पन्ने... उफ़! कई हज़ार
टिफिन है छोटा, बड़ी किताबें
एक विषय की कॉपी चार
मेरा बस्ता बड़ा बेकार

कविता पर काम करने के चरण

1. कविता को चार्ट पर लिखकर कक्षा में इस तरह लगाया जाएगा कि बच्चे उसे देख सकें, उस पर उँगली रखकर पढ़ सकें।
2. कविता को पहले हावभाव के साथ कक्षा में गाया जाए। इसके लिए दो बार शिक्षक इसे गाएँ और बच्चे दोहराएँ। तीसरी बार में इसे दोनों मिलकर एक साथ गाएँ। इसके बाद कक्षा में दो समूह बनाकर इसे गाया जाए, जिसमें एक समूह एक पंक्ति गाए और अगला समूह अगली पंक्ति गाए।
3. अब कविता पर बात की जाए कि कविता किसके बारे में है, इसमें किसके बारे में क्या कहा जा रहा है...।
4. अगले चरण में कविता को चार्ट से दो या तीन बार पढ़ा जाए। पढ़ते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि कविता के हरेक शब्द पर बच्चों का ध्यान दिलाया जा सके।
5. इसके बाद कविता में कुछ शब्दों की पहचान कराने का काम किया जाए। जैसे इस कविता में बस्ता, टिफिन, कॉपी, किताब, स्कूल आदि शब्दों की पहचान पर काम किया जा सकता है। इसके लिए हर बच्चे से पूछा जाए कि बताओ, कविता में स्कूल कहाँ लिखा है, किताब कहाँ लिखा है...।
6. अगले चरण में इस कविता में जो वर्ण बार-बार दोहराया जा रहा है (जैसे ब, र, क, स), उनके शब्दों को पहचानकर रेखांकित करने को कहा जाए। उन वर्णों से संबंधित शब्द कक्षा में और कहाँ-कहाँ दिखाई दे रहे हैं, उनकी भी पहचान कराई जाए।
7. कविता में से ध्वन्यात्मक शब्दों (समान तुक वाले शब्दों) की पहचान कराई जाए और कुछ नए शब्द देकर उनसे कविता बनाने की गतिविधि कराई जाए।

छठा दिन

गतिविधि 6

कल की कविता को फिर से दो बार चार्ट से पढ़ा जाएगा और शब्दों की पहचान को पुख्ता किया जाएगा। अब बच्चों को समूह में बाँटा जाएगा और उन्हें कविता की पंक्तियों की पट्टियों को देते हुए उन्हें क्रम से जमाने को कहा जाए। पहली बार यह काम वे चार्ट को देखते हुए कर सकते हैं, उसके बाद यह काम वे अनुमान के आधार पर करेंगे। समूह का हर बच्चा अपने समूह को मिली पट्टी/पट्टियों को पढ़ेगा।

इसके अगले चरण में कविता की पट्टियों को शब्दों में विभाजित करके बच्चों को क्रम से जमाने के लिए दी जाए। यह गतिविधि अकेले-अकेले ही की जाए और क्रम जमाने के बाद हर बच्चा अपनी पट्टी को पढ़कर दिखाए।

गतिविधि के अंत में कविता को फिर से गाया जाए।

सातवाँ दिन

गतिविधि 7

आज कक्षा में कहानी पर काम किया जाएगा। इसके लिए ऐसी कहानी चुनी जाएगी जो बच्चों के लिए मज़ेदार हो, सुनने और पढ़ने में मज़ा आए और अब तक पढ़े हुए शब्दों के साथ कुछ नए शब्द उसमें शामिल हों। नीचे एक कहानी और उस पर काम करने के चरण दिए जा रहे हैं।

शलजम

एक बूढ़े ने शलजम बोया और कहा, "उगो-उगो, शलजम, मीठे बनो। उगो-उगो, शलजम, मज़बूत बनो।"

तो उग आया मीठा-मीठा, बहुत ही बड़ा शलजम। बूढ़ा उसे निकालने के लिए गया। वह उसे खींचता रहा, अपना पूरा ज़ोर लगाकर खींचता रहा, मगर शलजम को निकाल न पाया। तो उसने बुढ़िया को बुलाया।

बुढ़िया ने थामा बूढ़े को,
बूढ़े ने थामा शलजम को।

दोनों उसे खींचते रहे, अपना पूरा ज़ोर लगाते रहे, मगर शलजम को निकाल न पाए। अब बुढ़िया ने पोती को बुला लिया।

पोती ने थामा दादी को,
दादी ने थामा दादा को,
दादा ने थामा शलजम को।

सभी मिलकर उसे खींचते रहे, पूरा ज़ोर लगाते रहे, मगर शलजम को निकाल न पाए। तब पोती ने बुलाया अपने कुत्ते को।

कुत्ते ने थामा पोती को,
पोती ने थामा दादी को,
दादी ने थामा दादा को,
दादा ने थामा शलजम को।

सभी मिलकर उसे खींचते रहे, अपना पूरा ज़ोर लगाते रहे, मगर शलजम को निकाल न पाए।
फिर कुत्ते ने बुला लिया बिल्ली को।
बिल्ली ने थामा कुत्ते को,
कुत्ते ने थामा पोती को,
पोती ने थामा दादी को,
दादी ने थामा दादा को,
दादा ने थामा शलजम को।
सभी मिलकर उसे खींचने लगे, अपना पूरा ज़ोर लगाते रहे और निकाल लिया उन्होंने शलजम को।

कहानी पर काम करने के चरण

1. कहानी को चार्ट पर लिखकर कक्षा में इस तरह लगाया जाएगा कि बच्चे उसे देख सके, उस पर उँगली रखकर पढ़ सकें।
2. कहानी को पहले हावभाव के साथ कक्षा में सुनाया जाए।
3. अब कहानी पर बात की जाए कि कहानी किसके बारे में है, इसमें किसके बारे में क्या कहा जा रहा है...।
4. अगले चरण में कहानी को चार्ट से दो या तीन बार पढ़ा जाए। पढ़ते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि कहानी के हरेक शब्द पर बच्चों का ध्यान दिलाया जा सके।
5. वैसे यह कहानी बच्चों के अनुकूल है और इसमें शब्दों का दोहराव भी है, बावजूद इसके यदि कहानी एक साथ पढ़ने और याद रखने में दिक्कत महसूस होती हो तो इसे हिस्सों में बाँटकर पढ़ा जाए।
6. कहानी पढ़ने की यह प्रक्रिया दो से तीन बार दोहराई जानी चाहिए।
7. इसके बाद कहानी में जो शब्द बार-बार आ रहे हों, उनकी पहचान कराने का काम किया जाए। जैसे- इस कहानी में दादा, दादी, शलजम, पोती, कुत्ता, बिल्ली, ज़ोर, पूरा, थामा, निकाला आदि शब्दों की पहचान पर काम किया जा सकता है। इसके लिए हर बच्चे से पूछा जाए कि बताओ, कहानी में कुत्ता कहाँ लिखा है, दादा कहाँ लिखा है...।
8. अगले चरण में इस कहानी में जो वर्ण बार-बार दोहराया जा रहा है (जैसे द, र, श, स, थ), उनके शब्दों को पहचानकर रेखांकित करने को कहा जाए। उन वर्णों से संबंधित शब्द कक्षा में और कहाँ-कहाँ दिखाई दे रहे हैं, उनकी भी पहचान कराई जाए और उन्हें मिलकर पढ़ा जाए।

आठवाँ दिन

गतिविधि 8

कहानी पर आगे काम करने के चरण

1. कहानी को एक बार फिर से चार्ट से देखकर पढ़ा जाए और कल के शब्दों को भी दोहराया जाए। अब उन वर्णों को बोर्ड पर लिखकर बच्चों से उन वर्णों से बनने वाले नए शब्द बताने को कहा जाए और उन सारे शब्दों को बोर्ड पर लिख लिया जाए।
2. अब कहानी के क्रम पर मौखिक बात की जाए कि पहले क्या हुआ, कौन आया, इसके बाद कौन आया, किसके आने के बाद शलजम बाहर आई आदि...।

3. कविता के समान ही कहानी को भी छोटे-छोटे हिस्सों में विभाजित करके बच्चों को समूह में उसे क्रम देने के लिए दिया जाए। पहली बार में वे चार्ट में देखकर क्रम लगा सकते हैं, दूसरी बार में कोशिश की जाए कि वे अनुमान से कहानी को क्रम में लगाएँ।
4. इस गतिविधि को थोड़ा बदलते हुए ऐसा भी कर सकते हैं कि समूह में कहानी के हिस्से दिए जाएँ, शिक्षक अपने पास का एक हिस्सा बच्चों को दिखाएँ और उसे नए चार्ट पर लगा दें। उसके आगे का हिस्सा जिस समूह के पास है, वह आकर अपना हिस्सा पढ़े और चार्ट पर लगा दे। इस तरह से सारे समूह अपने-अपने हिस्से को क्रमवार लगाएँ। अंत में कहानी को फिर से पढ़ा जाए और क्रम सही है या नहीं, इसकी जाँच की जाए।
5. कहानी को आगे बढ़ाना, कहानी के शब्दों से नई कहानी बनाना, कहानी के चित्र बनाना आदि जैसी गतिविधियाँ भी इस दिन कराई जाएँ।
6. इसी प्रकार कुछ अन्य कविताओं-कहानियों को चुनकर उन पर काम किया जाना अपेक्षित है।

संदर्भ

हैंडबुक को इस रूप में लाने में विभिन्न स्रोतों की सहायता ली गई है। यह सहायता सैद्धान्तिक और कंटेन्ट के स्तर पर ली गई है। हमारा प्रयास रहा है कि जिन अंशों या विचारों का उपयोग जिस खंड में किया गया है, वहीं संबन्धित संदर्भों का उल्लेख भी किया जाए। इसके बाद भी विभिन्न कारणों से कतिपय स्थानों पर यह संभव नहीं हो पाया है। अतः हम साभार उन संदर्भों का उल्लेख यहाँ करने का प्रयास कर रहे हैं।

- एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'पढ़ने की समझ'
- एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'पढ़ना सिखाने की शुरुआत'
- एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'पढ़ने की दहलीज़ पर'
- एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'लिखने की शुरुआत– एक संवाद'
- एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'समझ का माध्यम'
- एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित शिक्षक संदर्शिका 'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम, भाग 1 व 2'
- अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'प्राथमिक शाला में शिक्षण के अनुभव– मेरी स्कूल डायरी'
- एनसीआरईटी तथा अन्य राज्यों की पाठ्यपुस्तकें
- कृष्ण कुमार जी द्वारा लिखित पुस्तकें 'पढ़ना, ज़रा सोचना', 'बच्चे की भाषा और अध्यापक'; 'दीवार का इस्तेमाल' और अन्य लेख
- एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित 'प्राथमिक शिक्षक' पत्रिका के विभिन्न अंकों में प्रकाशित आलेख
- एकलव्य द्वारा प्रकाशित 'संदर्भ' पत्रिका के विभिन्न अंकों में प्रकाशित आलेख
- लैंग्वेज लर्निंग फाउंडेशन तथा अर्ली लिट्रेसी इनीशिएटिव के विभिन्न मॉड्यूल एवं हैंडआउट
- एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका 'फ़िरकी' की कुछ रचनाएँ
- अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथियों के कक्षा-कक्ष में कार्य व अवलोकन से जुड़े अनुभव व आलेख

अध्याय 3- शिक्षकों के साथ काम की रूपरेखा और उसका क्रियान्वयन

इस अध्याय के द्वारा शिक्षकों के साथ हमारे काम को लेकर जिन बिन्दुओं पर स्पष्टता बनाने का प्रयास है, वे इस प्रकार हैं–

- **शिक्षकों की अकादमिक आवश्यकता पहचान और आवश्यकता आधारित समूहों के साथ योजनाबद्ध तरीके से काम करने की ज़रूरत को समझना**
- **आवश्यकता पहचान से लेकर शिक्षकों के कक्षा कार्य में और बच्चों की उपलब्धियों में दिखने वाले सकारात्मक बदलाओं के आकलन तक के कार्य की रूपरेखा समझना**
- **भाषा में कक्षा कार्य के लिए उन अपेक्षित शिक्षण प्रक्रियाओं को जानना जिन्हें केंद्र में रखकर ही शिक्षक आवश्यकता पहचान और प्रभाव का आकलन किया जाना है**
- **यह समझना कि आवश्यकता आधारित समूह (need cohorts) किस प्रकार बनाए जा सकते हैं और उनमें किस तरह की विषयवस्तु और मोड्स के साथ जाना चाहिए**

3.1 आवश्यकता-आधारित शिक्षक समूह (नीड कोहॉर्ट) निर्मित करने की ज़रूरत

शिक्षक पेशेवर विकास के क्षेत्र में लंबे समय तक काम करने के बाद अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की यह समझ बनी है कि शिक्षकों के साथ एक ही समय में एक ही तरह की विषयवस्तु पर काम करना कारगर तरीका नहीं है। इस तरह से कक्षागत अभ्यास और बच्चों के सीखने को प्रभावित करना मुश्किल लगता है। टीचर एजुकेशन की समझ भी यह कहती है कि इस तरह के प्रशिक्षणों का आवश्यकता आधारित होना अधिक प्रभावी होगा और बेहतर परिणाम की संभावनाओं को बढ़ाएगा। फील्ड से मिले अनुभव बताते हैं कि शिक्षक उन विषयों या मुद्दों में अधिक रुचि लेते हैं जो उनके काम की ज़रूरतों से जुड़े हों।

आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण का अर्थ यह नहीं है कि इसमें प्रत्येक शिक्षक की विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित किया जाए, क्योंकि व्यावहारिक तौर पर यह एक मुश्किल काम है। बल्कि ज़रूरत इस बात की है कि हम मिलती-जुलती आवश्यकताओं को एक साथ लाते हुए इनके आधार पर ही शिक्षक समूहों का गठन करें, ताकि ऐसे समूहों को प्रासंगिक और सार्थक प्रक्रियाओं से गुज़ारा जा सके। सीखने की दृष्टि से शिक्षकों के ऐसे समूह स्थायी नहीं माने जा सकते; जैसे-जैसे शिक्षक 'विकास के सोपानों' से गुज़रेंगे, वैसे-वैसे वे अन्य समूहों में जुड़ सकते हैं।

संक्षेप में यह कह सकते हैं कि:

- शिक्षकों के साथ एक समय में एक तरह की विषयवस्तु काम नहीं करती।
- एक तरह की विषयवस्तु में पहले से प्रशिक्षणों में शामिल शिक्षक बोरियत महसूस करते हैं।
- आवश्यकता आधारित समूह प्रशिक्षकों को सही और प्रभावी रूप से तैयारी करने का मौका देते हैं।
- जेनेरिक यानी सबके लिए कुछ सामान्य मुद्दों पर एक समान प्रशिक्षणों की सीमाएँ समझ में आती हैं।
- कक्षा प्रक्रियाओं के निर्धारण और उनके क्रियान्वयन में आ रही चुनौतियों से अलग हटकर जब प्रशिक्षण किए जाते हैं तो शिक्षक उसे व्यवहार में लागू नहीं कर पाते। इसलिए प्रशिक्षण अच्छे / बुरे जैसे भी हों, शिक्षकों के मन में उनका कक्षा-कक्ष से जुड़ाव नहीं बन पाता।
- शिक्षक क्षमता संवर्द्धन में शिक्षकों की आवश्यकता को पहचानना और फिर मिलती-जुलती आवश्यकता वाले समूहों में फोकस होकर काम करना प्रभाव की दृष्टि से अधिक उचित है।
- आवश्यकता आधारित समूह गठित करने के लिए आवश्यकता का ज्ञान होना ज़रूरी है, और आवश्यकता समझ में तब आएगी जब अपेक्षा के बारे में स्पष्टता हो। इसलिए भाषा शिक्षण के हर पक्ष से संबन्धित अपेक्षाओं की स्पष्टता होनी चाहिए।
- अपेक्षाएँ स्पष्ट होने पर कार्यशाला की तैयारी को भी दिशा मिलती है।
- जब प्रशिक्षणों से आवश्यकताओं की पूर्ति होगी तो प्रतिभाग करने वाले शिक्षकों की प्रशिक्षणों में रुचि बढ़ेगी।
- यदि आवश्यकताओं की समझ हो तो मिश्रित किस्म के शिक्षक-समूहों के साथ भी कुछ हद तक आवश्यकता आधारित कार्य किया जा सकता है।

3.2 हिन्दी भाषा शिक्षण में नीड कोहॉर्ट यानी आवश्यकता आधारित समूहों के लिए निर्धारित फ्रेमवर्क

हिंदी विषय में शिक्षकों के नीड कोहॉर्ट बनाने के लिए जो फ्रेमवर्क तय किया गया है, उसमें तीन प्रमुख आयाम हैं– प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के साथ काम करने के लिए निर्धारित दो स्तर (आरंभिक पढ़ना-लिखना और पढ़ने-लिखने का विस्तार), भाषा दक्षता विकसित करने के लिए चयनित पाँच कार्यक्षेत्र (जैसे- कक्षा में बातचीत को दिया जाने वाला महत्त्व) और प्रत्येक कार्यक्षेत्र में अपेक्षित क्लासरूम प्रैक्टिस। निम्न तालिका इन तीनों को एक साथ देखने का एक प्रयास है, हालाँकि इसमें कक्षागत प्रक्रिया के केवल उदाहरण दिए गए हैं, जिससे हम फ्रेमवर्क को समझ सकें। इन प्रक्रियाओं का विस्तार आगे दिया गया है। यही प्रक्रियाएँ यानी प्रैक्टिसेज नीड कोहॉर्ट बनाने का मुख्य आधार हैं।

क्र. सं.	कार्यक्षेत्र	आरंभिक पढ़ना-लिखना (कक्षा 1-2) के स्तर पर अपेक्षित कक्षागत प्रक्रियाएँ	पढ़ने-लिखने का विस्तार (कक्षा 3, 4, 5) के स्तर पर अपेक्षित कक्षागत प्रक्रियाएँ
1	कक्षा में बातचीत और उसके द्वारा पढ़ना-लिखना सीखना	e.g. बच्चों के साथ बातचीत में बच्चों की भाषा को महत्त्व देते हैं।	e.g. बातचीत को लेखन के अनुभवों में बदलने के प्रयास भी होते दिखाई देते हैं।
2	कविताएँ और पढ़ना-लिखना सीखना	e.g. कविताओं के पोस्टर बनाकर दीवारों पर लगाया जाता है और उन पर बात होती है।	e.g. कविता की लय और तुक पर भी बात होती है। स्वयं कविता बनाने के अवसर दिए जाते हैं।
3	कहानियाँ और पढ़ना-लिखना सीखना	e.g. कक्षा में कहानी के पोस्टर लगे हैं और उन्हें अक्सर बदला भी जाता है।	e.g. कक्षा में अधिकांश बच्चे स्वतंत्र रूप से कहानी के आधार पर सरल वाक्य और अनुच्छेद लेखन कर पाते हैं।
4	पाठ्यपुस्तक और पढ़ना-लिखना सीखना	e.g. पाठ्यपुस्तक में दी गई बातों को परिवेश और बच्चों के अनुभवों से जोड़ा जाता है।	e.g. पाठ्यपुस्तक में दिए अभ्यास तो किए ही जाते हैं, साथ ही स्वतंत्र लेखन के अवसर भी दिए जाते हैं।
5	भाषा समृद्ध कक्षा	e.g. कक्षा में कविता-कहानियों के चार्ट और अन्य सामग्री प्रदर्शित की गई हैं, जो बच्चों की रुचि और कक्षा में हो रहे कार्य के अनुरूप हैं।	e.g. कक्षा में पाठ्यपुस्तक के अलावा भी किताबें व सामग्री मौजूद हैं और उनका उपयोग भी किया जाता है।

प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा में होने वाले कार्य को हम मुख्यतः दो स्तरों पर देख रहे हैं– एक को हम 'आरंभिक पढ़ना-लिखना' कह रहे हैं, जिसके अंतर्गत बच्चों द्वारा पढ़ने-लिखने का बुनियादी ज्ञान अर्जित करना मुख्य लक्ष्य होता है, जिसे कक्षा 1 और 2 में हासिल किया जाना अपेक्षित होता है। एक बार बच्चा पढ़ना-लिखना शुरू कर लेता है तो उसके साथ पढ़ने-लिखने के कौशल के आधार पर कक्षा 3 से 5 में भाषा दक्षता सम्बन्धी दूसरे बहुत-से कार्य संभव हो जाते हैं, जिन्हें हम 'पढ़ने-लिखने के विस्तार' के तहत देख रहे हैं। इस हैंडबुक में दूसरे अध्याय में जो 'सीखने के प्रतिफल' (learning outcomes) दिए गए हैं, उन्हें भी

इसी आधार पर वर्गीकृत किया गया है। शिक्षकों के साथ नीड कोहॉर्ट बनाते समय भी इन दो स्तरों का ध्यान रखना ज़रूरी होगा।

यहाँ इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है कि 'आरम्भिक पढ़ना-लिखना सीखना' और 'पढ़ने-लिखने का विस्तार' स्वयं में कोहॉर्ट नहीं हैं। ये केवल प्राथमिक कक्षाओं में होने वाले काम के दो बड़े दायरे हैं, जिनके अंतर्गत बच्चों द्वारा कुछ विशेष उपलब्धियाँ (यानी भाषा दक्षताएँ) हासिल की जानी हैं, और इसलिए इन दायरों के तहत ही शिक्षकों की आवश्यकता पहचान करके उनके आवश्यकता आधारित समूह (नीड कोहॉर्ट) बनाए जाएँगे। आवश्यकता पहचान के लिए उपरोक्त निर्धारित पाँच क्षेत्रों में हमने अपेक्षित कक्षा प्रक्रियाओं (desired क्लासरूम प्रैक्टिसेज) की सूची तैयार की है, जिनका अवलोकन किया जा सकता है यानी कोई भी साथी कक्षा में जाकर देख सकता है कि ये प्रक्रियाएँ हो रही हैं अथवा नहीं। इन्हीं कक्षागत प्रक्रियाओं के अवलोकन के आधार पर स्थानीय स्तर पर एक ब्लॉक टीम के सदस्य मिलकर यह तय कर पाएँगे कि किन शिक्षकों के साथ किन प्रैक्टिसेज पर काम करने की ज़रूरत है। समान प्रैक्टिसेज वाली आवश्यकता के आधार पर नीड कोहॉर्ट बनेंगे। जैसा हम सभी समझते हैं कि शिक्षकों की अकादमिक ज़रूरतें उनके द्वारा पढ़ाई जा रही कक्षा और सत्र के हिस्से पर भी निर्भर करेंगी। जैसे- कक्षा एक और दो में काम करने वाले शिक्षक की ज़रूरत सत्र के आरम्भ में और दिसम्बर के आसपास एक जैसी नहीं होंगी। इसलिए यह ध्यान में रखना होगा कि शिक्षक किस कक्षा को पढ़ा रहे हैं और पाठ्यक्रम के कौन-से हिस्से पर शिक्षण कार्य चल रहा है। प्राथमिक स्तर पर सामान्यतः एक ही शिक्षक सभी 5 कक्षाओं को भाषा सिखा रहा होता है, इसलिए एक ही शिक्षक अलग-अलग कक्षा और उसकी अकादमिक ज़रूरत के आधार पर अलग-अलग नीड कोहॉर्ट का सदस्य हो सकता है। एक और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि नीड कोहॉर्ट स्थायी नहीं होंगे। जिन प्रैक्टिसेज के आधार पर कोहॉर्ट बना है, उन पर काम करने की योजना बनेगी और जब कक्षागत अपेक्षित प्रैक्टिसेज होने लगेंगी तो उस शिक्षक को किन्हीं अन्य अपेक्षित प्रैक्टिसेज के आधार पर नए कोहॉर्ट का सदस्य बनाया जा सकता है।

शिक्षक के काम के अवलोकन के दौरान कुछ ऐसी बातों को भी ध्यान में रखना ज़रूरी है जो न केवल भाषा बल्कि शिक्षा और स्कूलिंग मात्र के संदर्भ में बेहद महत्त्वपूर्ण हैं और जिनके बगैर बेहतर शिक्षण की कल्पना नहीं की जा सकती। ऐसी कुछ चुनिन्दा बातों को यहाँ रखा जा रहा है:

- शिक्षक भयमुक्त वातावरण बनाने के लिए प्रयास करते हैं और किसी प्रकार के दंड-भय-दबाव का इस्तेमाल नहीं करते हैं।
- शिक्षक बच्चों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, लैंगिक पहचान, रूप-रंग आदि को आधार बनाकर न तो स्वयं कोई नकारात्मक और अपमानजनक टिप्पणी करते हैं और कोई ऐसा करता है तो उसे भी रोकते/समझाते हैं।
- बच्चों की विविध ज़रूरतों को समझते हैं और उन्हें पूरा करने के लिए धैर्य और कुशलतापूर्वक निरंतर प्रयासरत रहते हैं। किन्हीं कारणों से यदि कुछ बच्चे पिछड़ रहे हों तो उन पर अतिरिक्त ध्यान देते हैं और विविध ज़रूरतों के हिसाब से अपनी शिक्षण प्रक्रिया में आवश्यक बदलाव कर पाते हैं।
- शिक्षक की सभी बच्चों का सीखना सुनिश्चित करने के प्रति प्रतिबद्धता नज़र आती है; इसके अंतर्गत सभी बच्चों के प्रति सम्मान और स्वीकृति का भाव रखते हैं और जाति, लिंग, धर्म या किसी अन्य पूर्वाग्रह के आधार पर बच्चों के बीच भेदभाव नहीं करते, सभी के साथ समान और निष्पक्ष व्यवहार करते हैं।
- बच्चों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के प्रति संवेदनशीलता रखते हैं और इस सन्दर्भ में चुनौतीपूर्ण पृष्ठभूमि के बच्चों के प्रति समानुभूति का भाव रखते हैं।

3.2.1 काम का चरणबद्ध प्रवाह

आवश्यकता पहचान से लेकर समान आवश्यकता वाले समूहों के साथ काम के लिए योजना बनाना और योजना क्रियान्वयन के बाद काम के प्रभाव का आकलन करना और पुनः समूह बनाने की प्रक्रिया को एक रेखाचित्र के ज़रिए यहाँ दिखाया जा रहा है:

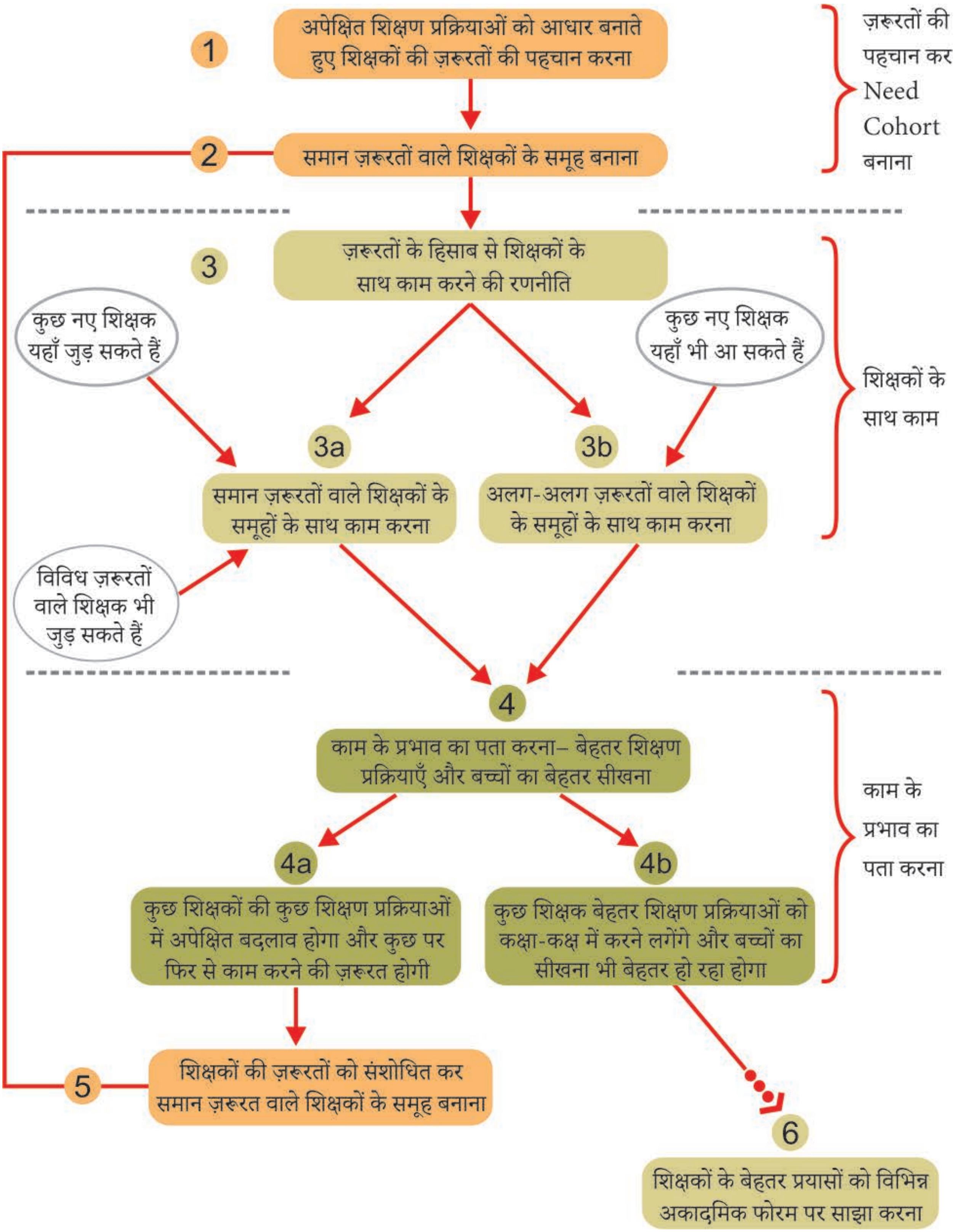

3.3 कक्षा अवलोकन के दौरान आवश्यकता पहचान और प्रभाव आकलन के लिए अपेक्षित शिक्षण प्रक्रियाएँ

प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण में एक शिक्षक से क्या-क्या अपेक्षित है, किस तरह की प्रक्रियाएँ भाषा सीखने में सहायक होती हैं; चयनित पाँच क्षेत्रों में कक्षा 1-2 और कक्षा 3 से 5 के लिए इनकी पहचान की गई है। यहाँ इनकी एक सूची दी जा रही है।

1. कक्षा में बातचीत और उसके द्वारा पढ़ना-लिखना सीखना

1.1. कक्षा एक व दो के लिए

1.1.1. बच्चों के साथ आम दिनचर्या पर बातचीत करते हैं।

1.1.2. बातचीत के मुद्दे आमतौर पर सरल और रोज़मर्रा के कामकाज और गतिविधियों से जुड़े होते हैं।

1.1.3. बातचीत में बच्चों के अनुभवों और उनकी आपसी बातचीत को भी मुद्दा बनाते हैं।

1.1.4. कहानी-कविता सुनाने के बाद भी बच्चों के साथ बातचीत होती है।

1.1.5. कक्षा की बातचीत को लिखने-पढ़ने के अवसर के रूप में उपयोग कर पाते हैं।

1.1.6. बच्चों के साथ बातचीत में बच्चों की भाषा को महत्त्व देते हैं।

1.1.7. कक्षा में हावभाव के साथ कहानियाँ और कविताएँ सुनाते हैं।

1.1.8. बच्चों को भी कहानियाँ और कविताएँ सुनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

1.1.9. कहानी-कविता को पढ़ने-लिखने से जोड़ने की गतिविधियाँ करते हैं।

1.1.10. बच्चों के स्तरानुसार कहानियों, कविताओं को सुनाने के साथ वर्ण, शब्द एवं ध्वनियों पर चर्चा करते हैं।

1.1.11. सुनी या पढ़ी गई बातों को बच्चों की भाषा में लिखने एवं कहने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं।

1.1.12. पढ़ने के विभिन्न तरीकों, जैसे- मौन वाचन, मुखर वाचन या समूह के साथ पढ़ने-लिखने आदि के मौके उपलब्ध करवाते हैं।

1.1.13. बच्चों को कक्षा में कहानियों के आधार पर बातचीत को आगे बढ़ाने के अवसर देते हैं।

1.1.14. कहानियों, कविताओं के क्रम, चित्रों के क्रम एवं वर्ग पहेलियों आदि को शिक्षण में टूल की तरह उपयोग कर उस आधार पर भी बातचीत करते हैं।

1.1.15. नए सीखे जा रहे शब्दों को दीवार पर लगाया जाता है और इन्हें बातचीत में प्रयोग करने के अवसर दिए जाते हैं।

1.1.16. कक्षा की बातचीत का कक्षा में लगे प्रिन्ट, पठन-लेखन प्रक्रिया, लिखित सामग्री से जुड़ाव दिखाई देता है।

1.1.17. सामान्य वार्तालाप में, अपनी बात रखने में बच्चों की प्रगति को दस्तावेज़ीकृत करते हैं और उसके आधार पर अधिक आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान करके उन्हें अधिक मौके देने का प्रयास करते हैं।

1.1.18. इस बात के प्रयास होते हैं कि सभी बच्चे खुलकर अपनी बात कह सकें। इस सन्दर्भ में कुछ बच्चों के साथ धैर्य भी रखा जाता है और बच्चों की झिझक कम करने के लिए अतिरिक्त प्रयास किए जाते हैं।

1.2. कक्षा तीन से पाँच के लिए

1.2.1. कक्षा में बातचीत के पर्याप्त अवसर उपलब्ध रहते हैं।

1.2.2. कक्षा में हो रही बातचीत को बच्चों के संदर्भ से जोड़ने के प्रयास किए जाते हैं।

1.2.3. बातचीत में पाठ्यपुस्तक के बाहर से भी कविता-कहानियों के संदर्भ लाने के प्रयास किए जाते हैं।

1.2.4. बातचीत में बच्चों के व्यक्तिगत अनुभवों को उपयुक्त स्थान दिया जाता दिखाई देता है।

1.2.5. किताब में दिए गए अर्थ के साथ-साथ नए शब्दों के प्रयोग और उनके अर्थ खोजने के प्रयास भी कक्षा में होते दिखाई देते हैं।

1.2.6. कक्षा की बातचीत का प्रिन्ट, पठन-लेखन, लिखित सामग्री से जुड़ाव दिखाई देता है।

1.2.7. कक्षा में बातचीत के अवसर हैं और पाठ के अतिरिक्त भी संदर्भ पर बात होती है।

1.2.8. बातचीत को बच्चों के संदर्भ से जोड़ने के प्रयास किए जाते हैं।

1.2.9. शब्दकोश का उपयोग होता दिखाई देता है।

1.2.10. बातचीत में सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। हर बच्चे को बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

1.2.11. बातचीत को लेखन के अनुभवों में बदलने के प्रयास भी होते दिखाई देते हैं।

1.2.12. बच्चों को बातचीत के सायास अवसर देते हुए उनकी अभिव्यक्ति की प्रगति को दस्तावेज़ीकृत करते हैं।

1.2.13. जिन बच्चों को अधिक सहायता की आवश्यकता होती है, उनकी आवश्यकता का आकलन करके उपयुक्त मदद दी जाती है।

2. कविताएँ और पढ़ना-लिखना सीखना

2.1. कक्षा एक व दो के लिए

2.1.1. कक्षा में पाठ्यपुस्तक की ही कविताओं का इस्तेमाल किया जाता है।

2.1.2. कक्षा में पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ अन्य कविताओं को भी सुनाया जाता है।

2.1.3. कविताओं को हावभाव के साथ गाया जाता है।

2.1.4. कविताओं के पोस्टर बनाकर दीवारों पर लगाया जाता है और उन पर बात होती है।

2.1.5. कविताओं पर होने वाली बात में कविता शिक्षण की व्यवस्थित योजना की समझ दिखाई देती है।

2.1.6. कक्षा में शिक्षक जिन कविताओं को लेकर काम करते हैं, ये कविताएँ छोटी-छोटी हैं, स्तरानुकूल हैं और ऐसी हैं जिन्हें बोलने में बच्चों को मज़ा आ रहा है।

2.1.7. कविता सुनने-सुनाने की इस प्रक्रिया में बच्चे सक्रिय हिस्सा लेते नज़र आते हैं।

2.1.8. कविताओं को पढ़ना-लिखना सिखाने से जोड़ा जाता है, जैसे: कौन-से शब्द बार-बार आए हैं, समान ध्वनि वाले शब्द कौन-से हैं, किसी वर्ण विशेष से शुरू होने वाले शब्द कितनी बार आए हैं आदि।

2.1.9. रेखांकित शब्दों को बच्चों के द्वारा पढ़ा जा रहा है और अर्थ बताया जा रहा है।

2.1.10. कविता की पंक्तियों का क्रम पहचानने/क्रम जमाने की गतिविधि समूह में और व्यक्तिगत रूप से कराई जा रही है।

2.1.11. नए शब्दों की पहचान पर काम किया जाता है।

2.1.12. कविता सुनाने और उस पर बात करने का अवसर हर बच्चे को दिया जाता है और उनके प्रदर्शन के बारे में टिप्पणियाँ दर्ज की जाती हैं।

2.1.13. कविता में आए शब्दों की पहचान का मौक़ा हर बच्चे को बारी-बारी से दिया जाता है और उसके आधार पर उनके पठन कौशल का आकलन किया जाता है।

2.1.14. कविता तथा शब्द-जाल के शब्दों को बोर्ड, दीवार या कॉपी पर लिखने के अवसर दिए जाते हैं और उनके आधार पर लेखन की प्रगति के बारे में टिप्पणियाँ दर्ज की जाती हैं।

2.1.15. दर्ज अवलोकनों के मुताबिक बच्चों की आवश्यकताओं को समझकर उनकी यथायोग्य मदद करते हैं।

2.2. कक्षा तीन से पाँच तक के लिए

2.2.1. कक्षा में बच्चों के साथ पाठ्यपुस्तक की कविताओं के साथ-साथ अतिरिक्त कविताओं को भी स्थान मिलता है।

2.2.2. कक्षा में कविताओं के छपे हुए या हाथ से लिखे हुए कुछ पोस्टर लगे हुए हैं।

2.2.3. बच्चों से कविताओं पर चर्चा होती है। जैसे- कविता किसके बारे में है, कविता में कौन-कौन है, क्या हो रहा है?

2.2.4. कविता के आधार पर कल्पनाशीलता के विकास और तर्क करने के अवसर दिए जाते हैं।

2.2.5. कविता की लय और तुक पर भी बात होती है। स्वयं कविता बनाने के अवसर दिए जाते हैं।

2.2.6. 'तुकांत शब्द' या 'समान ध्वनि वाले शब्द' कौन-से हैं आदि मुद्दों तक बातचीत होती है। साथ ही इस बातचीत को आगे बढ़ाकर लिखने के अवसरों में भी बदला जाता है।

2.2.7. रेखांकित शब्दों को बच्चों के द्वारा पढ़ा जाता है और अर्थ बताया जाता है।

2.2.8. कविता की पंक्तियों का क्रम पहचानने/क्रम जमाने की गतिविधि समूह में और व्यक्तिगत रूप से कराई जाती है।

2.2.9. नए शब्दों की पहचान पर पर्याप्त काम किया जाता है।

2.2.10. कक्षा के काम पढ़ने और बातचीत से लिखने तक जाते दिखाई देते हैं।

2.2.11. कुछ बच्चे जिनको पढ़ने में ज़्यादा दिक्क़त है, उन पर अलग से ध्यान दिया जाता है।

2.2.12. कक्षा का काम पाठ्यपुस्तकों से आगे भी जाता है। अपने मन से या सोचकर लिखने के अभ्यास दिए जाते हैं।

2.2.13. कविता सुनाने और उस पर बात करने का अवसर हर बच्चे को दिया जाता है और उसके प्रदर्शन के बारे में टिप्पणियाँ दर्ज की जाती हैं।

2.2.14. दर्ज अवलोकनों के मुताबिक बच्चों की आवश्यकताओं को समझकर उनकी यथायोग्य मदद की जाती है।

3. कहानियाँ और पढ़ना-लिखना सीखना

3.1. कक्षा एक व दो के लिए

3.1.1. कक्षा में पाठ्यपुस्तक के अलावा अन्य कहानियों को सुनाया जाता है और उन पर चर्चा होती है।

3.1.2. कहानियों को हावभाव और आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ सुनाया जाता है।

3.1.3. कक्षा में कहानी के पोस्टर लगे हैं और उन्हें अक्सर बदला भी जाता है।

3.1.4. शिक्षक कहानी को पढ़ने-लिखने से जोड़ने सम्बन्धी गतिविधियाँ करते हैं।

3.1.5. कहानी को पुस्तक से, चार्ट या बोर्ड पर लिखकर पढ़ा जाता है। उसमें से शब्दों को रेखांकित किया जाता है।

3.1.6. शब्दों की पहचान पर काम किया जाता है और शब्दों के द्वारा कुछ वर्णों और मात्राओं पर काम किया जाता है।

3.1.7. कहानी के वर्णों से शब्द-जाल आदि की गतिविधियाँ करवाई जाती हैं।

3.1.8. कहानी के पात्रों और क्रम पर बच्चों से बात की जाती है। इसके लिए कहानी के क्रम को पहचानने/क्रम में जमाने की गतिविधि समूह में एवं व्यक्तिगत रूप से कराई जाती है।

3.1.9. बच्चे कहानी से कुछ शब्दों/वाक्यों को कॉपी में, बोर्ड पर लिख पा रहे हैं।

3.1.10. कहानी से सम्बंधित गतिविधियों में बच्चों की प्रगति का नियमित आकलन किया जाता है, उसे दर्ज भी किया जाता है।

3.1.11. जिन बच्चों को विशेष सहायता की आवश्यकता होती है, उनकी पहचान करके उचित सहायता प्रदान की जाती है।

3.2. कक्षा तीन से पाँच तक के लिए

3.2.1. पाठ्यपुस्तकों से और बाल साहित्य से भी चुनकर कहानियाँ कक्षा में सुनाई जाती हैं।

3.2.2. बच्चों की कहानी के चयन को लेकर एवं उसकी कक्षा स्तर पर प्रासंगिकता को लेकर स्पष्टता दिखाई देती है।

3.2.3. कहानियों का बच्चों के सन्दर्भ से जुड़ाव दिखाई देता है।

3.2.4. कहानियों को पढ़ने-लिखने से बखूबी जोड़ा जाता है।

3.2.5. कक्षा में पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य किताबें उपलब्ध कराई जाती हैं और उनके आधार पर अभिव्यक्ति और पढ़ने-लिखने के अवसर नियमित रूप से उपलब्ध कराए जाते हैं।

3.2.6. बच्चों की भाषा एवं किताब की भाषा की शब्दावलियों पर कोड मिक्सिंग करके अर्थ निर्माण करने का अभ्यास करवाया जाता है।

3.2.7. बच्चों को एकल और समूह में कहानी को चार्ट से पढ़ने के अवसर दिए जाते हैं और उसके आधार पर उनके पठन कौशल का आकलन किया जाता है।

3.2.8. कक्षा के आधे से ज़्यादा बच्चे किताब को पढ़ लेते हैं। जो गति के साथ नहीं पढ़ पाते, वे भी अटक-अटककर कुछ पढ़ने में सफल हो जाते हैं। उन बच्चों की मदद की जाती है।

3.2.9. बच्चों को अपने मन से कहानी सुनाने और लिखने के अवसर दिए जाते हैं और इस आधार पर उनकी मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति का आकलन किया जाता है।

3.2.10. कक्षा में अधिकांश बच्चे स्वतंत्र रूप से कहानी के आधार पर सरल वाक्य और अनुच्छेद लेखन कर पाते हैं।

3.2.11. कहानी पर विविध गतिविधियाँ, जैसे- चित्र देखकर पात्रों के नाम लिखना, शब्दों से कहानी बनाना, अधूरी कहानी को पूरा करना आदि कराई जाती हैं और उनके आधार पर बच्चों की अभिव्यक्ति, लेखन कौशल आदि का आकलन किया जाता है।

3.2.12. जिन बच्चों को मुश्किलें आती हैं, उनके साथ अतिरिक्त काम की योजना बनाई गई है।

4. पाठ्यपुस्तक का उपयोग और पढ़ना-लिखना सीखना

4.1. कक्षा एक व दो के लिए

4.1.1. कक्षा 1 में शुरुआत सीधे वर्णमाला लेखन के कार्य की बजाय बातचीत, खेल, कविता-कहानी, चित्रकला जैसी गतिविधियों से की जाती है।

4.1.2. पाठ्यपुस्तक के प्रारंभ में दिए गए चित्रों और चित्र कथाओं का और कविता-कहानी आदि का अच्छा रचनात्मक उपयोग कक्षा में किया जाता है।

4.1.3. पाठ्यपुस्तक में दी गई बातों को परिवेश और बच्चों के अनुभवों से जोड़ा जाता है।

4.1.4. शिक्षक पाठों से परिचित हैं और पाठ की तैयारी से कक्षा में आते हैं।

4.1.5. पाठ से संबंधित टीएलएम बनाए जाते हैं और उनका उपयोग भी किया जाता है।

4.1.6. पाठ्यपुस्तकों में दिए गए अभ्यासों के अलावा भी नए अभ्यास कराए जाते हैं।

4.1.7. पाठ्यपुस्तक की सीमा से आगे बढ़कर, बच्चों को खुद सोचकर लिखने के अवसर दिए जाते हैं।

4.1.8. पाठ्यपुस्तक में दी गई कविता-कहानी पर संवाद और उसे पढ़ने-लिखने से जोड़ने के लिए शिक्षक अपनी ओर से कविता-कहानी शिक्षण के अभ्यास करवाते हैं।

4.1.9. पाठ्यपुस्तक के अलावा जिस सामग्री का चयन किया जाता है, वह कक्षा और बच्चों के स्तर और सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ को ध्यान में रखकर किया जाता है।

4.1.10. पाठ्यपुस्तक शिक्षण के दौरान मौखिक और लिखित रूप से (जैसे कार्यपत्रक द्वारा) व्यक्तिगत, छोटे समूह या पूरी कक्षा के स्तर पर आकलन किया जाता है।

4.1.11. आकलन का सतत दस्तावेज़ीकरण किया जाता है और उसके आधार पर आगे की योजना बनाई जाती है।

4.2. कक्षा तीन से पाँच के लिए

4.2.1. कक्षा में केवल पाठ्यपुस्तक केंद्रित काम नहीं होता है, वरन् बाहरी सन्दर्भ भी कक्षा में लाए जाते हैं।

4.2.2. सभी बच्चों को पाठ पढ़ने के मौके दिए जाते हैं। जिन बच्चों को पढ़ने में मुश्किल आती है, उन पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है।

4.2.3. पाठ पढ़ने के बाद बातचीत में भी सभी बच्चों को समान अवसर दिए जाते हैं।

4.2.4. शिक्षक उन बच्चों पर भी योजनाबद्ध रूप से ध्यान दे पाते हैं जिन्हें पढ़ने या लिखने में विशेष मदद की ज़रूरत होती है।

4.2.5. शिक्षक का मुख्य ध्यान पाठ्यपुस्तक में दिए गए पाठों के ज़रिए भाषा क्षमताओं के विकास पर रहता है, जो सोचने-समझने और उसको अभिव्यक्त करने के अवसरों में स्पष्ट नज़र आता है।

4.2.6. पाठ पढ़ाने के लिए आवश्यक सामग्री क्या होगी, इसकी समझ है और उसका सहजता से कक्षा में उपयोग भी करते हैं।

4.2.7. पाठ्यपुस्तक में उपलब्ध सामग्री के साथ ही अन्य पठन सामग्री का स्तर और प्रासंगिकता अनुसार चयन कर कक्षा में उपयोग किया जाता है।

4.2.8. पाठ्यपुस्तक में दिए अभ्यास तो किए ही जाते हैं, साथ ही स्वतंत्र लेखन के अवसर भी दिए जाते हैं और इस दिशा में बच्चों के प्रयासों को सराहा जाता है।

4.2.9. बच्चों की प्रगति का आकलन नियमित रूप से मौखिक और लिखित दोनों प्रकार से किया जाता है और उसका उचित दस्तावेज़ीकरण भी किया जाता है।

4.2.10. आकलन के आधार पर फीडबैक भी बच्चे को दिया जाता है, उसके आधार पर स्वयं आगे की योजना बनाई जाती है।

4.2.11. बच्चे की प्रगति को अभिभावकों के साथ भी समय-समय पर साझा किया जाता है।

4.2.12. बच्चों द्वारा लिखी गई सामग्री को पहले कक्षा में डिस्प्ले किया जाता है, उसके बाद पोर्टफोलियो में रखा जाता है और उस पर समग्र टिप्पणी लिखी जाती है।

4.2.13. कक्षा में आकलन के लिए पाठ से संबंधित और भाषा के कौशलों से संबंधित कार्यपत्रकों का प्रयोग किया जाता है।

4.2.14. केवल बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यपुस्तक के अलावा भी अन्य बेहतर पाठ्यपुस्तकों की मदद ली जाती है और उन्हें बच्चों को भी उपलब्ध कराया जाता है।

5. भाषा समृद्ध कक्षा

5.1. कक्षा एक व दो के लिए

5.1.1. कक्षा में कविता-कहानियों के चार्ट और अन्य सामग्री प्रदर्शित की गई हैं, जो बच्चों की रुचि और कक्षा में हो रहे कार्य के अनुरूप हैं।

5.1.2. बच्चे कक्षा में प्रदर्शित की गई सामग्री को देख सकें, पढ़ सकें, इस दृष्टि से उसे अपेक्षित ऊँचाई पर लगाया जाता है।

5.1.3. कक्षा में बाल साहित्य, अन्य पाठ्यपुस्तकों और पठन सामग्री की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जाता है।

5.1.4. कक्षा में उपलब्ध सामग्री पर बात करने या उसका संबंध पढ़ने-लिखने से जोड़ने के अवसर निर्मित किए जाते हैं।

5.1.5. बच्चे जिन शब्दों से पूर्व से ही परिचित हैं और जिन चीज़ों पर बात करना पसंद करते हैं, उन्हें दीवारों पर प्राथमिकता से लगाया जाता है।

5.1.6. बच्चों द्वारा किए गए काम को सप्ताह/महीनेवार कक्षा में डिस्प्ले किया गया है।

5.1.7. शब्द सूची बनी हुई है और उसमें लगातार नए शब्द जोड़े जाते हैं।

5.1.8. कक्षा में पुस्तकों का कोना बनाया हुआ है। पुस्तकों के चयन एवं रखरखाव पर पूरा ध्यान है।

5.1.9. बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए अलग से नियमित रूप से समय दिया जाता है।

5.1.10. बालसभा आदि में पुस्तकों पर बातचीत की जाती है। शिक्षक स्वयं भी अपनी पढ़ी कहानियाँ सुनाते हैं।

5.2. कक्षा तीन से पाँच के लिए

5.2.1. कक्षा में कुछ कविताओं, कहानियों के चार्ट लगे हुए हैं, जो बच्चों की पहुँच में हैं। शिक्षक उस सामग्री को एक योजना के अनुसार उपयोग में लाते हैं।

5.2.2. कक्षा में पाठ्यपुस्तक के अलावा भी किताबें व सामग्री मौजूद है और उसका उपयोग भी किया जाता है।

5.2.3. बच्चों को पढ़ने का चाव हो, इस पर शिक्षक सचेत हैं और इसके लिए नियमित पढ़ने के मौके दिए जाते हैं।

5.2.4. बच्चे अपने मन से किताबें पढ़ते भी हैं और शिक्षक उनको सीखने के मौके में बदलने का प्रयास करते दिखाई देते हैं।

5.2.5. अधिकतर बच्चों को ठीक से पढ़ना आता है, लेकिन कुछ बच्चों को दिक्क़त है। शिक्षक उन बच्चों की तरफ आवश्यक ध्यान देते हैं।

5.2.6. कक्षा में जो पढ़ने के मौके उपलब्ध कराए जाते हैं, उनका लिखने में उपयोग किया जाता है।

5.2.7. कक्षा में पुस्तकों के चयन एवं रखरखाव में बच्चों को भी ज़िम्मेदारी दी जाती है।

5.2.8. बालसभा में बच्चों को भी पुस्तकों पर विचार प्रस्तुत करने के मौके उपलब्ध कराए जाते हैं।

5.2.9. बाल साहित्य अध्ययन, उस आधार पर पढ़ने-लिखने के अभ्यास और बालसभा आदि में बच्चों के प्रदर्शन का भी आकलन कर दस्तावेज़ीकृत किया जाता है।

3.4 आवश्यकता समूह के आधार पर अपने काम को व्यावहारिक रूप देना

3.4.1 ऊपर जो क्षेत्रवार प्रैक्टिस सूची दी गई है, उसके आधार पर हम शिक्षकों की आवश्यकता पहचान आसानी से कर सकते हैं। या तो प्रत्यक्ष रूप से शिक्षक के शिक्षण के अवलोकन के आधार पर, या परोक्ष रूप से बच्चों के स्तर की जाँच द्वारा और शिक्षक से संवाद के आधार पर प्राप्त जानकारी के माध्यम से हमें समझ आ जाएगा कि भाषा में कौन-कौन सी प्रक्रियाएँ की जा रही हैं। इस जानकारी को नीचे दी जा रही तालिका में सीधे 'हाँ' अथवा 'नहीं' में भरा जा सकता है। कुछ इस प्रकार:

कक्षा में बातचीत और उसके द्वारा पढ़ना लिखना सीखना कक्षा 1 और 2 के स्तर पर अपेक्षित प्रैक्टिस	हाँ/नहीं
1.1.1 बच्चों के साथ आम दिनचर्या पर बातचीत करते हैं।	हाँ
1.1.2 बातचीत के मुद्दे आमतौर पर सरल और रोज़मर्रा के कामकाज और गतिविधियों से जुड़े होते हैं।	हाँ
1.1.3 बातचीत में बच्चों के अनुभवों और उनकी आपसी बातचीत को भी मुद्दा बनाते हैं।	हाँ
1.1.4 कहानी-कविता सुनाने के बाद भी बच्चों के साथ बातचीत होती है।	हाँ
1.1.5 कक्षा की बातचीत को लिखने-पढ़ने के अवसर के रूप में उपयोग कर पाते हैं।	नहीं
1.1.6 बच्चों के साथ बातचीत में बच्चों की भाषा को महत्त्व देते हैं।	नहीं
1.1.7 कक्षा में हावभाव के साथ कहानियाँ और कविताएँ सुनाते हैं।	हाँ
1.1.8 बच्चों को भी कहानियाँ और कविताएँ सुनाने के लिए प्रेरित करते हैं।	हाँ
1.1.9 कहानी-कविता को पढ़ने-लिखने से जोड़ने की गतिविधियाँ करते हैं।	नहीं
1.1.10 बच्चों के स्तरानुसार कहानियों, कविताओं को सुनाने के साथ वर्ण, शब्द एवं ध्वनियों पर चर्चा करते हैं।	नहीं
1.1.11 सुनी या पढ़ी गई बातों को बच्चों की भाषा में लिखने एवं कहने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं।	नहीं
1.1.12 पढ़ने के विभिन्न तरीकों, जैसे- मौन वाचन, मुखर वाचन या समूह के साथ पढ़ने-लिखने आदि के मौके उपलब्ध करवाते हैं।	नहीं
1.1.13 बच्चों को कक्षा में कहानियों के आधार पर बातचीत को आगे बढ़ाने के अवसर देते हैं।	नहीं
1.1.14 कहानियों, कविताओं के क्रम, चित्रों के क्रम एवं वर्ग पहेलियों आदि को शिक्षण में टूल की तरह उपयोग कर उस आधार पर भी बातचीत करते हैं।	नहीं

कक्षा में बातचीत और उसके द्वारा पढ़ना लिखना सीखना कक्षा 1 और 2 के स्तर पर अपेक्षित प्रैक्टिस	हाँ/नहीं
1.1.15 नए सीखे जा रहे शब्दों को दीवार पर लगाया जाता है और इन्हें बातचीत में प्रयोग करने के अवसर दिए जाते हैं।	नहीं
1.1.16 कक्षा की बातचीत का कक्षा में लगे प्रिन्ट, पठन-लेखन प्रक्रिया, लिखित सामग्री से जुड़ाव दिखाई देता है।	नहीं
1.1.17 सामान्य वार्तालाप में, अपनी बात रखने में बच्चों की प्रगति को दस्तावेज़ीकृत करते हैं और उसके आधार पर अधिक आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान करके उन्हें अधिक मौके देने का प्रयास करते हैं।	नहीं
1.1.18 इस बात के प्रयास होते हैं कि सभी बच्चे खुलकर अपनी बात कह सकें। इस सन्दर्भ में कुछ बच्चों के साथ धैर्य भी रखा जाता है और बच्चों की झिझक कम करने के लिए अतिरिक्त प्रयास किए जाते हैं।	नहीं

जहाँ भी कोई प्रैक्टिस नहीं होती पाई जाएगी, वह शिक्षक की आवश्यकता के रूप में हमें नज़र आएगी। ऐसी बहुत-सी प्रैक्टिसेज हो सकती हैं। ऊपर दिया गया उदाहरण मात्र एक क्षेत्र का ही है। जब एक जैसी आवश्यकता वाले पर्याप्त शिक्षक उपलब्ध होंगे तो उनके साथ चुनिन्दा प्रैक्टिसेज को लक्ष्य बनाकर एक समूह में काम की योजना बनाई जाएगी। जैसे ऊपर वाली सूची से यह स्पष्ट है कि शिक्षक बातचीत तो करते हैं, लेकिन उसे पढ़ने-लिखने से जोड़ नहीं पा रहे हैं। और न ही मौखिक अभिव्यक्ति में बच्चों की प्रगति के दस्तावेज़ीकरण पर ध्यान है।

एक शिक्षक को हम भाषा के सभी 5 क्षेत्रों में आँक रहे होंगे। हर क्षेत्र में कुछ प्रैक्टिसेज आवश्यकता के रूप में नज़र आएँगी। कोहॉर्ट बनाते समय एक से अधिक क्षेत्रों में समान आवश्यकताओं को भी देखा जा सकता है और उस आधार पर भी समूह बनाए जा सकते हैं।

एक समूह के साथ काम करने के बाद जब उसके प्रभाव का आकलन किया जाएगा तो हो सकता है कि कुछ शिक्षकों की कक्षा में अब वे अभ्यास होने लगे होंगे, तो इनको अब आवश्यकता के किसी अन्य कोहॉर्ट में जुड़ने की ज़रूरत होगी, जबकि बाकी शिक्षक जिनकी कक्षा में स्थिति पूर्व जैसी ही है, उनके साथ और प्रयास करने होंगे।

3.4.2 कक्षा 1-2 और 3 से 5 के स्तर पर कार्य हेतु विषयवस्तु चयन सम्बन्धी सुझाव

कक्षा 1-2 और कक्षा 3 से 5 में क्योंकि भाषा शिक्षण में अपेक्षाएँ अलग-अलग होती हैं, इसलिए यहाँ उन कंटेंट मुद्दों की एक सूची दी जा रही है जिन पर इस स्तर पर काम किया जाना चाहिए।

स्तर	चर्चा की विषयवस्तु (कंटेंट)
आरम्भिक पढ़ना-लिखना	• भाषा के उद्देश्यों पर चर्चा • बच्चों की भाषा का स्कूली स्तर पर दूसरी भाषा सीखने में महत्त्व • कक्षा में बच्चों से बातचीत का महत्त्व एवं शिक्षण प्रक्रिया में बातचीत को शामिल करना • कक्षा-कक्ष में प्रिंट रिच वातावरण की ज़रूरत और उसका बच्चों के संदर्भ पर आधारित होने की आवश्यकता • भाषा शिक्षण में शारीरिक हावभाव और गतिविधियों का महत्त्व (Total Physical Response) • भाषा शिक्षण TLM निर्माण एवं उनके उपयोगों पर बातचीत • भाषा की कक्षा में शिक्षण योजना • सार्थक संदर्भों के साथ ध्वनि जागरूकता पर काम करने की समझ • बच्चों के साथ पठन एवं लेखन पर रोचक तरीके से काम करने की समझ • कक्षा में भाषा शिक्षण में कहानी एवं कविता/बालगीत का उपयोग कैसे करें • भाषा शिक्षण के लिए रचनात्मक TLM निर्माण एवं उपयोग • भाषा शिक्षण में पुस्तकालय के महत्त्व को समझना और पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पुस्तकों का उपयोग करने की समझ • भाषा शिक्षण में प्रिंट रिच वातावरण का महत्त्व समझना और तदनुसार कक्षा में वातावरण तैयार करना • भाषा में आकलन कैसे करें • भाषा की कक्षा के लिए शिक्षण योजना
पढ़ने-लिखने का विस्तार	इन शिक्षकों के साथ निम्नांकित विषयवस्तुओं पर चर्चा की ज़रूरत है: • शब्दावली विकास पर काम करना (Vocabulary Development) • भाषा में पठन एवं लेखन की रणनीति • भाषा की कक्षा में प्रिंट रिच वातावरण- शाला एवं परिवेशीय लिखित सामग्री का उपयोग • भाषा शिक्षण में कहानी के विभिन्न उपयोगों की समझ • भाषा सीखने-सिखाने में पुस्तकालय के उपयोग की समझ • भाषा में आकलन कैसे करें • भाषा की कक्षा के लिए शिक्षण योजना • भाषा में पठन एवं लेखन की रणनीति पर काम की समझ • भाषा शिक्षण में विभिन्न तरह के लेखन के अवसर खोजने की समझ। टास्क बेस्ड लेखन पर काम की समझ

3.4.3 विविध कोहॉर्ट के साथ काम करने के मोड्स (modes)

स्तर	मोड्स
आरम्भिक पढ़ना-लिखना	कार्यशालाएँ, क्लस्टर / पंचायत स्तर की अकादमिक बैठकें, शिक्षक मंच की बैठकें
	कार्यशालाएँ, क्लस्टर / पंचायत स्तर की अकादमिक बैठकें, कक्षा में कार्य का प्रदर्शन, शिक्षक मंच की बैठकें, थैला पुस्तकालय का उपयोग
पढ़ने-लिखने का विस्तार	कार्यशालाएँ, क्लस्टर / पंचायत स्तर की अकादमिक बैठकें, कक्षा में कार्य का प्रदर्शन, शिक्षक मंच की बैठकें, थैला पुस्तकालय का उपयोग, समर-कैंप, कक्षा अवलोकन, बाल शोध मेला, लार्ज स्केल कैंप

Note:

1. ऐसे मोड्स जो विशेष आवश्यकता आधारित हों (जैसे ऐसे शिक्षक जिन्हें कविता-कहानी से पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया तक जाने की स्पष्टता नहीं है) और जिनमें कुछ ही शिक्षकों को बुलाना संभव हो।
2. कक्षा में शिक्षण प्रक्रियाओं का प्रदर्शन (Demonstration classes) (4-5 शिक्षकों के लिए)– कक्षा में बातचीत द्वारा पढ़ना-लिखना सिखाना, पुस्तक पर चर्चा और कहानी सुनाने के चरणों पर बातचीत।
3. कई बार ऐसा भी हो सकता है कि कुछ शिक्षक साथी आरंभिक भाषा शिक्षण एवं कुछ शिक्षक जिनके साथ पढ़ने-लिखने के विस्तार से संबंधित कार्य हो रहा है, एक जगह किसी स्वैच्छिक कार्यशाला, मंच पर आते हैं तो वहाँ पर विषयवस्तु की प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए हमें कंटेन्ट मैपिंग की मदद लेनी होगी। इसके साथ ही यदि पूर्व में हमारे द्वारा व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के बारे में कोई टिप्पणी लिखी गई होगी तो उन आधारों को भी देखना होगा। इससे हमें यह तय करने में आसानी होगी कि ऐसे समूह के साथ कार्य को किस प्रकार से आगे बढ़ाया जाए।

3.4.4 आवश्यकताओं (needs) को पहचानने के तरीके

शिक्षकों की आवश्यकताओं की पहचान करने का आदर्श तरीका तो यही होगा कि उनकी कक्षाओं में जाकर कक्षा प्रक्रियाओं को देखा जाए और उसके आधार पर शिक्षकों की आवश्यकता को पहचाना जाए। किन्तु हर शिक्षक की कक्षा में जाने या कक्षा अवलोकन के अवसर हर सदस्य को मिल पाएँ, ऐसा हमेशा संभव नहीं होगा। ऐसे में शिक्षकों की आवश्यकताओं को पहचानने के कुछ वैकल्पिक और प्रभावी तरीके खोजने होंगे।

1. **ऐसे शिक्षक जो हमसे लम्बे समय से जुड़े हुए हैं, उनके बारे में पूर्व-ज्ञान के आधार पर एक अनुमान–** ऐसे कई शिक्षक हैं जो पिछले 4-5 वर्षों से हमारे साथ जुड़े हुए हैं, हमारी विविध गतिविधियों में भागीदारी करते हैं। उनके बारे में हम टीचर डेवलपमेंट ट्रैकिंग दस्तावेज़ में भी टिप्पणियाँ दर्ज करते हैं। इस दस्तावेज़ से और शिक्षक के साथ किए गए काम के हमारे अनुभवों से शिक्षक की आवश्यकताओं का पता लगाना एक प्रभावी तरीका हो सकता है।
2. **कक्षा अवलोकन–** हालाँकि प्रत्येक सदस्य को संबंधित शिक्षकों की कक्षाओं के अवलोकन का अवसर हमेशा मिल पाए या जब हम जाएँ तो शिक्षक कक्षा शिक्षण कर ही रहे हों, ऐसा ज़रूरी नहीं। मगर जब भी ऐसा अवसर मिले या किसी भी कारणवश स्कूल जाना हो तो बच्चों से बातचीत करके, कक्षा का

वातावरण देखकर या शिक्षक की कक्षा का अवलोकन करके शिक्षकों की अकादमिक आवश्यकताओं का पता लगाया जा सकता है। इसके लिए हमें ऊपर दिए गए 5 क्षेत्रों का और टीचर-स्टडी दस्तावेज़ में दिए गए संकेतकों को ध्यान में रखते हुए अवलोकन करना होगा।

3. **हमारी विविध गतिविधियों में चर्चा के द्वारा–** इसके लिए हमें कार्यशाला या अन्य शिक्षक क्षमता सम्वर्द्धन से जुड़े मंचों पर सत्र योजनाओं को इस तरह से निर्मित करना होगा जिसमें चर्चा की शुरुआत में हम शिक्षकों की कक्षा प्रक्रियाओं का आकलन कर पाएँ या उनका अंदाज़ा लगा पाएँ। यह कार्य चर्चा के प्रारंभ में रखे गए प्रश्नों, कार्यपत्रक या किसी केस स्टडी पर बातचीत के माध्यम से भी हो सकता है। इस पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया का विश्लेषण करके उनकी आवश्यकताओं का पता लगाया जा सकता है।
4. **कार्यशाला में कुछ टूल्स के इस्तेमाल द्वारा–** किसी कार्यशाला की योजना बनाते समय उसमें हिस्सा लेने वाले शिक्षकों के लिए कुछ ऐसे कार्यपत्रक या प्रश्न सूची आदि बनाई जा सकती है जो कार्यशाला से पहले, दौरान और अंत में उनकी प्रतिक्रियाओं को समाहित करें, जिनका विश्लेषण करके उनकी आवश्यकताओं को समझा जा सके। जैसे- कक्षा में बातचीत की अवधारणा और उसके तरीके को समझने के लिए कुछ केस स्टडीज देना और उन पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया जानना।

बच्चों के सीखने के स्तरों के आकलन द्वारा– संभव है कि हमें शिक्षकों की कक्षा प्रक्रिया के अवलोकन के अधिक अवसर न मिलें, मगर बच्चों से बातचीत करने के अवसर मिल रहे हों। ऐसे में हम FOSL (Framework of Student Learning) दस्तावेज़ में दिए गए संकेतकों का इस्तेमाल करते हुए स्कूल विजिट के दौरान बच्चों

<table>
<tr><th colspan="3">कक्षा 1 और 2</th></tr>
<tr><th></th><th>संकेतक</th><th>प्रक्रिया</th></tr>
<tr><td>H1</td><td>सुनी हुई सामग्री (कविता, कहानी आदि) के बारे में अपनी भाषा / स्कूल की भाषा में बातचीत करते हैं।</td><td rowspan="7">• बच्चों को कोई छोटी कविता / कहानी सुनाकर या कक्षा में लगे कविता / कहानी पोस्टर पर या पाठ्यपुस्तक की किसी पढ़ी हुई कहानी / कविता पर बच्चों से बातचीत की जा सकती है।
• ब्लैकबोर्ड पर बच्चों के स्तर के अनुरूप कोई छोटी कविता / कहानी को लिखकर पढ़ना, बाल साहित्य / बरखा सीरीज की पुस्तकों / रीडिंग कॉर्नर / पुस्तकालय से जुड़ी किताबों / बाल-पत्रिकाओं पर बात करते हुए बच्चों के साथ कार्य किया जा सकता है।
• कक्षा में एक वाक्य बोलकर (जैसे- एक जंगल था, आदि) बच्चों को कहानी आगे बढ़ाने का मौका दिया जा सकता है।
• बच्चों को बाल साहित्य / बरखा सीरीज की किताब सुनाकर चित्र बनाने का मौका दिया जा सकता है।</td></tr>
<tr><td>H2</td><td>बाल साहित्य / पुस्तकालय की पुस्तकों को देखकर उसके चित्रों, घटनाओं के बारे में बता पाते हैं।</td></tr>
<tr><td>H3</td><td>बच्चे बाल साहित्य / पुस्तकालय की पुस्तकों को देखने / पढ़ने में रुचि प्रदर्शित करते हैं।</td></tr>
<tr><td>H4</td><td>बोले गए वाक्यों के आधार पर कहानी आगे बढ़ा पाते हैं।</td></tr>
<tr><td>H5</td><td>अपने मन से चित्र बनाकर उसका नाम लिख पाते हैं।</td></tr>
<tr><td>H6</td><td>बाल साहित्य / पुस्तकालय की पुस्तकों को अनुमान लगाते हुए पढ़ने का प्रयास करते हैं / पढ़ पाते हैं।</td></tr>
<tr><td>H7</td><td>संदर्भयुक्त चित्र पर आधारित कुछ वाक्यों को लिख पाते हैं।</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th colspan="3">कक्षा 3 से 5</th></tr>
<tr><td>H8</td><td>सुनी हुई सामग्री (कहानी, कविता आदि) के बारे में बातचीत करते हैं।</td><td rowspan="4">• कक्षा में लगे कविता / कहानी पोस्टर, ब्लैकबोर्ड पर कोई छोटी कविता / कहानी लिखकर, पाठ्यपुस्तक की किसी पढ़ी हुई कहानी / कविता, पुस्तकालय, बरखा सीरीज की पुस्तकों, रीडिंग कॉर्नर से पढ़ी किताबों या किसी स्थानीय घटना जैसे- स्थानीय मेले, त्योहार आदि पर बच्चों से बातचीत की जा सकती है और उस पर लिखने का काम करवाया जा सकता है।
• बच्चों से बातचीत की जा सकती है। आपने पिछले दिनों कौन-सा पाठ पढ़ा, उसमें क्या था, आपको कैसा लगा आदि बिंदुओं पर चर्चा की जा सकती है। कहानी के पात्रों, मूल भाव को लेकर चर्चा की जा सकती है।
• बच्चे अपने मन से चित्र बनाते हैं और बनाए गए चित्रों पर स्वयं से लिखते हैं।
• बच्चों के साथ वर्कशीट, क्लोज टेस्ट के माध्यम से कार्य करवाया जा सकता है।
• पढ़ी गई सामग्री के बारे में अपने विचार लिखवाने का काम किया जा सकता है।</td></tr>
<tr><td>H9</td><td>परिचित, अपरिचित लिखित सामग्री में रुचि दिखाते हैं, बातचीत करते हैं और अर्थ की खोज में विविध प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं। जैसे- चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर और ध्वनि संबंध का इस्तेमाल करना, शब्दों को पहचानना, पूर्व-अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अर्थ का अनुमान लगाना।</td></tr>
<tr><td>H10</td><td>बच्चे चित्रों, बाल साहित्य व विभिन्न तरह की पाठ्य सामग्री पर चर्चा में शामिल होते हैं और अपने अनुभवों को रख पाते हैं।</td></tr>
<tr><td>H11</td><td>अलग-अलग तरह की रचनाओं, सामग्री को समझकर पढ़ने के बाद उस पर अपनी प्रतिक्रिया चित्रों के द्वारा अपने अनुभवों में व्यक्त करते हैं।</td></tr>
<tr><td>H12</td><td>कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से सुनते हैं और अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। प्रश्न पूछते हैं।</td><td rowspan="4">• कक्षा में लगे कविता / कहानी पोस्टर, ब्लैकबोर्ड पर कोई छोटी कविता / कहानी लिखकर, पाठ्यपुस्तक की किसी पढ़ी हुई कहानी / कविता, पुस्तकालय, बरखा सीरीज की पुस्तकों, रीडिंग कॉर्नर से पढ़ी किताबों या किसी स्थानीय घटना जैसे- स्थानीय मेले, त्यौहार आदि पर बच्चों से बातचीत की जा सकती है और उस पर लिखने का काम करवाया जा सकता है ।
• बच्चों से बातचीत की जा सकती है । आपने पिछले दिनों कौन सा पाठ पढ़ा, उसमें क्या था, आपको कैसे लगा, आदि बिंदुओं पर चर्चा की जा सकती है।
• बच्चों के साथ वर्कशीट, क्लोज टेस्ट के माध्यम से कार्य करवाया जा सकता है ।
• बच्चों को अधूरी कहानी को पूरा करना, किसी चित्र पर लिखना, कुछ शब्दों को देकर कहानी बनाने के अभ्यास करवाए जा सकते हैं।</td></tr>
<tr><td>H13</td><td>पढ़ी हुई रचनाओं की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक अदि के बारे में चर्चा करते हैं / प्रश्न पूछते हैं / अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं / निष्कर्ष निकालते हैं।</td></tr>
<tr><td>H14</td><td>पढ़ने के प्रति उत्सुक रहते हैं और रीडिंग कॉर्नर / पुस्तकालय से किताबें पढ़ते हैं और उनके बारे में बता पाते हैं।</td></tr>
<tr><td>H15</td><td>अपनी कल्पना से कविता, कहानी आगे बढ़ाते हैं और स्वयं भी लिखते हैं।</td></tr>
</table>

से पूछे जाने वाले प्रश्नों का खाका बना सकते हैं और बच्चों के सीखने के स्तर तथा उसके अनुरूप शिक्षक की कक्षा प्रक्रिया का पता लगा सकते हैं।

कोहॉर्ट के अनुसार शिक्षक के साथ काम करने के मोड्स तय करने की प्रक्रिया में कुछ बातें ध्यान में रखना आवश्यक है:

- यह तय करना ज़रूरी है कि किसी मुद्दे पर काम करने के लिए कितने समय की ज़रूरत होगी। इसके आधार पर ही मोड निर्धारित किया जाए। जैसे 2-3 घंटे का काम करने के लिए वीटीएफ़ या स्कूल विजिट जैसे मोड को निर्धारित करना होगा। या इसी प्रकार के कुछ मुद्दों को चुनकर एक कोर्स (शॉर्ट कोर्स जो 12-15 घंटे की अवधि में पूरा हो सके) के तौर पर भी देखा जा सकता है।
- इसी तरह अगर आप किसी मिश्रित समूह के लिए कार्यशाला कर रहे हैं तो उसके मुद्दे भी कुछ इस प्रकार चुनने होंगे जो सभी की ज़रूरतों से जुड़ते हुए चलें।

नोट–

उपरोक्त पाँच क्षेत्रों के लिए एक-एक सैंपल प्लान बनाया गया है, जिसे अनुलग्नक (annexure) के रूप में दिया जा रहा है। शिक्षकों को हमसे इस तरह की मदद की भी ज़रूरत होती है कि कक्षा कार्य की योजना किस प्रकार बनाई जाए, इसलिए बच्चों के साथ कार्य हेतु कुछ पाठ योजना / शिक्षण योजना के उदाहरण भी सहायक सामग्री के रूप में अलग से दिए गए हैं।

आभार

हैंडबुक के इस प्रारूप को आकार देने में बहुत-से साथियों के सामूहिक प्रयास की भूमिका रही है। यहाँ हम उन सभी का आभार व्यक्त करना चाहते हैं जिन्होंने किसी-न-किसी रूप में इस हैंडबुक को समृद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हमारे फील्ड संस्थानों में कार्यरत बहुत-से सदस्यों के साझा अनुभवों की इस हैंडबुक को रचने में प्राथमिक भूमिका रही है। उन्हें ये अनुभव मुख्य रूप से शासकीय विद्यालयों और उनके शिक्षकों के साथ सघन रूप से कार्य करते हुए हासिल हुआ, इसलिए हम सभी शिक्षकों और शिक्षा विभाग के अधिकारियों के प्रति भी धन्यवाद व्यक्त करते हैं, क्योंकि हमारे प्रति उनके विश्वास, परस्पर सम्मान, निरंतर संवाद और साथ मिलकर शासकीय शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार लाने की प्रतिबद्धता और पहल की पृष्ठभूमि में ही इस तरह की हैंडबुक का विचार आया और साकार हुआ। शिक्षकों और विभागीय अधिकारियों को उनके अपने विद्यालयों और कार्यों से संबन्धित चित्रों के इस्तेमाल से जुड़ी अनुमति के लिए विशेष रूप से धन्यवाद।

हम भाषा शिक्षण के क्षेत्र में अनुभव रखने वाले दूसरे बहुत-से संस्थानों और उनके प्रकाशनों, शिक्षाविदों, विचारकों, शोधार्थियों और शिक्षकों के विशेष रूप से आभारी हैं, जिन्होंने हमारी समझ को समृद्ध किया है और जिनके अनुभवों और प्रकाशनों की सहायता इस दस्तावेज़ को मूर्त रूप देने में ली गई है। हमारा प्रयास रहा है कि जिन अंशों या विचारों का उपयोग जिस खंड में किया गया है, उससे संबन्धित संदर्भ का उल्लेख भी वहीं किया जाए। फिर भी विभिन्न कारणों से कतिपय स्थानों पर यह संभव नहीं हो पाया है। विशेष रूप से हम एनसीईआरटी, विभिन्न राज्यों के एससीईआरटी और उसके प्रकाशनों, अर्ली लिट्रेसी इनीशिएटिव के प्रकाशनों, लैंग्वेज लर्निंग फाउंडेशन, प्रो॰ कृष्ण कुमार जी की पुस्तकों और आलेखों का ज़िक्र करना चाहेंगे। अंत में, जिनके योगदान का ज़िक्र हम सीधे तौर पर नहीं कर पा रहे हैं, उनके प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष योगदान के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं।

- एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित विभिन्न पुस्तकें एवं सामग्रियाँ
  - एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'पढ़ने की समझ'
  - एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'पढ़ना सिखाने की शुरुआत'
  - एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'पढ़ने की दहलीज़ पर'
  - एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'लिखने की शुरुआत– एक संवाद'
  - एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'समझ का माध्यम'
  - एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित शिक्षक संदर्शिका 'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम, भाग 1 व 2'
  - एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित 'प्राथमिक शिक्षक' पत्रिका के विभिन्न अंकों में प्रकाशित आलेख
  - एनसीआरईटी द्रारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकें
  - एनसीआरईटी द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका 'फ़िरकी' की कुछ रचनाएँ
- अन्य राज्यों की पाठ्यपुस्तकें
- लैंग्वेज लर्निंग फाउंडेशन तथा अर्ली लिट्रेसी इनीशिएटिव के विभिन्न मॉड्यूल एवं हैंडआउट
- प्राची कालरा जी के आलेख 'Books that Worm into You' का एक अंश
- कृष्ण कुमार जी द्वारा लिखित पुस्तकें 'पढ़ना, ज़रा सोचना', 'बच्चे की भाषा और अध्यापक'; 'दीवार का इस्तेमाल' और अन्य लेख
- एकलव्य द्वारा प्रकाशित 'संदर्भ' पत्रिका के विभिन्न अंकों में प्रकाशित आलेख
- अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथियों के कक्षा-कक्ष में कार्य व अवलोकन से जुड़े अनुभव व आलेख
- विभिन्न संदर्भों और सामग्रियों का इस्तेमाल करते हुए कोडेव प्रक्रिया के अंतर्गत निर्मित आलेख

आवश्यक पठन सामग्री की सूची

अध्याय 1

1. भाषा शिक्षण के उद्देश्य (NCERT Focus Group Paper- भारतीय भाषाओँ का शिक्षण, 2009)
2. भाषा सिखाना माने क्या (हृदयकांत दीवान- डी.एल.एड. छत्तीसगढ़-भाषा नामक चिड़िया- पृष्ठ 35 से 39)
3. सही मायनों में आखिर पढ़ना क्या है (शारदा कुमारी, प्रारम्भिक शिक्षक अंक 4, आलेख – 2, October 2007)
4. पढ़ना किसे कहते हैं (रमाकांत अग्निहोत्री, अनुवाद संदर्भ - अंक 87, July-August 2013, पृष्ठ 89-90, Becoming a nation of readers- the report of commission of reading Washington DC से अनुवादित))
5. लिखना क्या है (कृष्णकुमार, बच्चे की भाषा और अध्यापक: एक निर्देशिका, अध्याय 4, पृष्ठ 36)
6. अनुभव के खोये से बनती हैं अवधारणाओं की मिठाइयाँ (पारुल बत्रा, संदर्भ - अंक 125, एकलव्य प्रकाशन, November-December 2019)

अध्याय 2

1. उच्चारण दोष के मायने (भारती पंडित, पाठशाला- अंक 1, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी प्रकाशन, July 2018)
2. पढ़ना-लिखना सीखना – एक वैकल्पिक प्रयास (कमलेश जोशी, संदर्भ - अंक 50, एकलव्य प्रकाशन, October 2004-September 2005)
3. पढ़ना यानी अनुमान लगाना (भारती पंडित, पाठशाला- अंक 2 अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, February 2019)
4. प्रिंट रिच कक्षा (कीर्ति जयराम, सार्थक और सक्रिय लिखित माहौल विकसित करने के प्रयास, संदर्भ - अंक 61, एकलव्य प्रकाशन, July-October 2008)
5. बात (कृष्णकुमार, बच्चे की भाषा और अध्यापक: एक निर्देशिका, अध्याय 2 पृष्ठ 10)
6. गोलू ने पढ़ना सीखा (ब्रजेश वर्मा, संदर्भ - अंक 106, एकलव्य प्रकाशन, September-October 2016)
7. कहानी सुनाने का हुनर (कृष्णकुमार, संदर्भ - अंक 77, एकलव्य प्रकाशन, September-October 2011)
8. कक्षा में गीत कविता की ज़रूरत (प्रभात, संदर्भ - अंक 103, एकलव्य प्रकाशन, March-April 2016)
9. भाषा की कक्षा में मूल्यांकन (मध्य प्रदेश D.El.Ed. कोर्स)

Azim Premji Foundation
#134, Doddakannelli,Sarjapur Road
Next to WIPRO Corporate Office
Bengaluru – 560035

+91 80 6614 4900/01/02

Facebook: facebook.com/azimpremjifoundation

www.azimpremjifoundation.org